

# सुगन्धाभरणसंग्रहालय

श्रीमत्सुखल विद्या विज्ञानेन प्रेरित यशोव्रति पूरिता शालाएणा चालाएणितान्त्रिकां निरुहसीरुहखिलव्या-  
कृति काव्य तथायनेक विद्याभिन्न श्रयोध्या निकट वर्ति नोएही सन्निभिरुन्नाह शमवासि द्विजेदि  
वंशोवतंस श्रीपरिडत सरसु प्रसाद कृतः

यत्र

अनेक ज्योतिष पुराण स्थिति गुन्येय आश्रयातीव परिश्रमा दावश्यक कृत्य वियथा सर्व विद्वानो पका  
रयाति सरल तथा वर्णिताः सम्यक्कार महेष्टा इत्याभ्यांशोचितं

सुगन्धाभरणसंग्रहालय

श्रीयुत सुन्दरी नवल किशोर नामक पायाल यन्त्रा लये सुदृष्टिः

फर्परीरुम्भरुम्भ



# बिद्वत्सिपत्र

प्रकट हो कि यह संग्रह शिरोमणि नाम पुस्तक जिस को अयोध्या निकट वर्ति नौराही सन्धि  
सन्नाह ग्राम वासी श्री परिदत्त सरूप प्रसाद जो सम्पूर्ण विद्या में बृहस्पति के तुल्य हैं उन्होंने ने अतीव परि  
श्रम कर ज्योतिष पुराण स्मृति के अनेक ग्रन्थों को एकत्र कर्क इस अपूर्व ग्रन्थ की वनाया इत्कारण  
कि वे परिदत्त जो इन पुस्तकों को दूकट्टा न करने के कारण इन वियों को नही जान सक्ते और अपनी  
प्रतिष्ठा के कारण घृच्छकों को कुछ का कुछ बतला देते हैं इत्कारण अयन तिथि वार नक्षत्र योग तारी  
मुभाशुभ वर्ज्य लग्न गोचर विवाह मन्वाधान यात्रा गृह प्रवेश मिश्र तिथि निर्वायादि प्रकरणों के साथ  
नक्षत्रद्वियों को अति सुगमता से वर्णन किया है और अधिक इसके बहुधा ग्रन्थों में दो चार प्रसंग वर्णित हैं  
और इसमें जो आवश्यक कार्य का विचार दृष्टिये सब हैं जैसे उत्तम शुक्रन स्वप्न परीक्षा हस्त रेखा विचार हि-  
चटिका तिथि निर्णय आदि ऐसी अनेक बातें हैं इसी कारण मुग्ध नवल किशोर सार्हव ने अपने छोपे खाने  
में रूप दृष्टा ॥

## सूचीपत्र

| अथ प्रथम प्रश्नः      | पृष्ठ पङ्क्तिः | पृष्ठ संख्या | पृष्ठ पङ्क्तिः | पृष्ठ संख्या | पृष्ठ पङ्क्तिः | पृष्ठ संख्या | पृष्ठ पङ्क्तिः | पृष्ठ संख्या |
|-----------------------|----------------|--------------|----------------|--------------|----------------|--------------|----------------|--------------|
| मङ्गला चरण            | २              | ६            | ४              | ४            | ८              | ८            | ८              | ८            |
| सम्बन्धः              | २              | ६            | ७              | ७            | ८              | ८            | ८              | ८            |
| प्रयोजन               | २              | ६            | ८              | ८            | ८              | ८            | ८              | ८            |
| वियय                  | २              | ६            | ९              | ९            | ८              | ८            | ८              | ८            |
| अधिकारी               | २              | ६            | १०             | १०           | ८              | ८            | ८              | ८            |
| शस्त्र प्रशसा         | २              | ६            | ११             | ११           | ८              | ८            | ८              | ८            |
| शस्त्र धारक प्रशंसा   | २              | ६            | १२             | १२           | ८              | ८            | ८              | ८            |
| नसन् सूची             | २              | ६            | १३             | १३           | ८              | ८            | ८              | ८            |
| प्रकरण सूची           | २              | ६            | १४             | १४           | ८              | ८            | ८              | ८            |
| सम्बन्धः क्लान        | २              | ६            | १५             | १५           | ८              | ८            | ८              | ८            |
| वृद्धि सम्बन्धः क्लान | २              | ६            | १६             | १६           | ८              | ८            | ८              | ८            |
| वत्सर फल              | २              | ६            | १७             | १७           | ८              | ८            | ८              | ८            |

वत्सर स्वामी

वत्सर भेद

अयन विचार

अयन फल

ऋतवः

ऋतु पतयः

मास द्वानं

मासानां नामानि

मास संज्ञा

मास भेद

भेदानां फलानि

पक्ष विचार

# सूचीपत्र

|                       |    |    |                      |    |    |                    |    |    |                     |    |    |
|-----------------------|----|----|----------------------|----|----|--------------------|----|----|---------------------|----|----|
| वारकृत्यं             | १६ | २  | नक्षत्राणां सख्याः   | २४ | १० | योगानां शुभाशुभफलं | ३१ | ६  | भद्रा कर्माणि       | ३४ | ८  |
| वारदीयादीनी           | १७ | ८  | भुवादि संज्ञा        | २४ | ११ | अथ पञ्चमी प्रभा    | ३१ | ११ | भद्रायां दोषापवादः  | ३४ | १० |
| तैलान्धयोगे शुभाशुभं  | १७ | १० | नक्षत्र मुखकृत्ये    | २४ | ८  | अथ करणान्नानं      | ३१ | २  | भद्रा विषये विशेषः  | ३४ | २  |
| तैलान्धयोगे दोषापवादः | १८ | ३  | पञ्चकं               | २४ | ८  | करणं स्वामिनः      | ३१ | ४  | नक्षत्रसप्तमी प्रभा | ३४ | २  |
| वारहोरा               | १८ | ६  | अन्धादि संज्ञा       | २६ | १० | करण कृत्यं         | ३१ | ४  | तारा विचारः         | ३४ | १० |
| अथ चतुर्थी प्रभा      | १८ | ४  | नक्षत्र चार्द        | २७ | ४  | भद्रायां विशेषः    | ३१ | १० | तारायः              | ३४ | १० |
| नक्षत्राणि            | १८ | ४  | चक्षुर्ध्वं क्षानं   | २७ | ७  | भद्रांगविभागफलौ    | ३१ | २  | नक्षत्राणां चरणाः   | ३४ | ११ |
| नक्षत्रेभ्यः          | १८ | ८  | गत रात्रि ज्ञानं     | २७ | १० | भद्रा वास्तु       | ३१ | ६  | चंद्रस्य शुभाशुभफलं | ३४ | ८  |
| शुभाशुभ नक्षत्राणि    | २० | ६  | दिवा रात्री मुहूर्तः | २७ | १  | वारयोगेन भद्राफलं  | ३१ | ४  | शुक्लपक्षे विशेषः   | ३४ | ११ |
| नक्षत्राणां कृत्यं    | २० | ७  | वारपरत्नेन ज्ञानं    | २८ | ३  | अथ पञ्चमी प्रभा    | ३१ | ११ | तारा वलं            | ३४ | ८  |
| पुण्य प्रशंसा         | २० | ८  | अथ पञ्चमी प्रभा      | २८ | ३  | अथ पञ्चमी प्रभा    | ३१ | २  | दुष्ट तारा सुखानं   | ३४ | ८  |
| नक्षत्राणां स्वल्पं   | २४ | २  | योग ज्ञानं           | २८ | ३  | भद्रायां सुखं      | ३१ | ४  | चंद्रा तारम्भा      | ३४ | ८  |



# सूचीपत्र

| क्र.सं.             | पृष्ठ | पंक्ति | पृष्ठ | पंक्ति | पृष्ठ | पंक्ति | पृष्ठ | पंक्ति | पृष्ठ | पंक्ति |
|---------------------|-------|--------|-------|--------|-------|--------|-------|--------|-------|--------|
| कार्यविशेषे महत्तले | ४०    | १      | ४२    | ५      | ४२    | ५      | ४२    | ५      | ४२    | ५      |
| चंद्रवले विशेषः     | ४०    | ४      | ४२    | ८      | ४२    | ८      | ४२    | ८      | ४२    | ८      |
| नावस्ये स्वमं       | ४०    | ६      | ४२    | १०     | ४२    | १०     | ४२    | १०     | ४२    | १०     |
| अथाष्टमीप्रभा       | ४०    | १०     | ४२    | १०     | ४२    | १०     | ४२    | १०     | ४२    | १०     |
| प्रभा शुभं          | ४०    | १२     | ४२    | १०     | ४२    | १०     | ४२    | १०     | ४२    | १०     |
| पर्वणी              | ४०    | १२     | ४२    | १०     | ४२    | १०     | ४२    | १०     | ४२    | १०     |
| तात्कालिकीतिथिः     | ४०    | १२     | ४२    | १०     | ४२    | १०     | ४२    | १०     | ४२    | १०     |
| कार्यं परत्वेन      | ४१    | ४      | ४२    | १०     | ४२    | १०     | ४२    | १०     | ४२    | १०     |
| इग्धयोगः            | ४१    | ८      | ४२    | १०     | ४२    | १०     | ४२    | १०     | ४२    | १०     |
| विययोगः             | ४१    | ११     | ४२    | १०     | ४२    | १०     | ४२    | १०     | ४२    | १०     |
| हुताशनयोगः          | ४२    | २      | ४२    | १०     | ४२    | १०     | ४२    | १०     | ४२    | १०     |
| यम घण्ट             | ४२    | २      | ४२    | ११     | ४२    | ११     | ४२    | ११     | ४२    | ११     |

**सूची पत्र**

[illegible]

| पृष्ठ | पंक्ति | पृष्ठ | पंक्ति | पृष्ठ | पंक्ति | पृष्ठ | पंक्ति | पृष्ठ | पंक्ति | पृष्ठ | पंक्ति |
|-------|--------|-------|--------|-------|--------|-------|--------|-------|--------|-------|--------|
| ७२    | २      | २२    | ११     | २२    | ११     | २३    | ७      | २३    | ७      | २५    | ३      |
| ७२    | २      | २२    | १२     | २२    | १२     | २३    | ८      | २३    | ८      | २५    | ७      |
| ७२    | ११     | २२    | ३      | २२    | ३      | २३    | ९      | २३    | ९      | २५    | ६      |
| ७२    | २      | २२    | ४      | २२    | ४      | २३    | १०     | २३    | १०     | २५    | ५      |
| ७२    | ११     | २२    | ७      | २२    | ७      | २३    | ११     | २३    | ११     | २५    | ४      |
| २०    | २      | २२    | ८      | २२    | ८      | २३    | १२     | २३    | १२     | २५    | ३      |
| २०    | ४      | २२    | २      | २३    | २      | २३    | १३     | २३    | १३     | २५    | २      |
| २०    | ११     | २२    | ३      | २३    | ३      | २३    | १४     | २३    | १४     | २५    | १      |
| २१    | २      | २३    | ४      | २३    | ४      | २३    | १५     | २३    | १५     | २५    | ०      |
| २१    | ४      | २३    | ५      | २३    | ५      | २३    | १६     | २३    | १६     | २५    | २      |
| २१    | ६      | २३    | ६      | २३    | ६      | २३    | १७     | २३    | १७     | २५    | ३      |
| २१    | ८      | २३    | ७      | २३    | ७      | २३    | १८     | २३    | १८     | २५    | ३      |

सूची पत्र

| पृष्ठ            | पंक्ति | पृष्ठ | पंक्ति              | पृष्ठ | पंक्ति | पृष्ठ                 | पंक्ति | पृष्ठ | पंक्ति          |
|------------------|--------|-------|---------------------|-------|--------|-----------------------|--------|-------|-----------------|
| नवांगनाशोगः      | ८७     | ५     | सर्ववस्तु विक्रयः   | ८८    | ३      | वृद्धार्थधान्यप्रयोगः | ८९     | ४     | नवान्नचक्रम्    |
| जीतचतुल्यास्मः   | ८७     | ६     | अथगृहसंश्रमः        | ८८    | ५      | गृहार्थधारणम्         | ९०     | ६     | कोष्ठादौधान्य-  |
| नटक्रिया         | ८७     | ७     | स्यादीनां क्रयवि-   | ८८    | ६      | हलप्रवाहः             | ९०     | ७     | स्थापनम्        |
| वृक्षवृत्ता रोपः | ८७     | ८     | क्रयो               | ८८    | ७      | हलवक्रम्              | ९०     | ८     | वीजसंग्रहः      |
| आगम चक्रम्       | ८७     | ९     | वाणिज्यम्           | ८८    | ८      | वीजोत्तिः             | ९१     | ९     | तरालज्जुतिर्था  |
| नीकावहनम्        | ८८     | १०    | निधिद्रव्यादिद्रुहि | ८८    | ९      | प्रस्थारोपणः          | ९१     | १०    | न्यबंधः         |
| पशुकृत्यं रक्षाच | ८८     | ११    | संग्रहो.            | ८८    | १०     | धान्यच्छेदः           | ९१     | ११    | ऊखल मृश्रलो     |
| चरही चक्रम्      | ८८     | १२    | अथद्रव्यादीनां गु   | ८८    | ११     | कणमर्दनम्             | ९१     | १२    | चूर्णमर्दनचक्रं |
| चतुर्भुज्यादिफलं | ८८     | १३    | संस्थाने स्थापनम्   | ८८    | १२     | धान्यानयनं            | ९१     | १३    | सूर्यचक्रम्     |
| अथवनचारिकृत्यं   | ८८     | १४    | द्रव्यप्रयोगः       | ८८    | १३     | फलपुव्योत्तारणं च     | ९१     | १४    | चुल्ही चक्रम्   |
| पक्षीकृत्यम्     | ८८     | १५    | धान्यविक्रयः        | ८८    | १४     | अन्नपाकक्रिया         | ९१     | १५    | मार्जनी चक्रम्  |
|                  | ८८     | १६    | ससंग्रहः            | ८८    | १५     | नवान्नभीजनम्          | ९१     | १६    | गोमयपिंडचक्रं   |



# सूचीपत्र

| सं.सं.              | पृष्ठ | वै.क्रि. | पृष्ठ | वै.क्रि. | पृष्ठ                | वै.क्रि. | पृष्ठ | वै.क्रि. | पृष्ठ |
|---------------------|-------|----------|-------|----------|----------------------|----------|-------|----------|-------|
| कुंभकार चक्रम्      | १०३   | १        | १०५   | १०       | कलत्रम्              | १०६      | ११    | १०७      | १२    |
| काष्ठसिल्विस्तम्भम् | १०३   | ३        | १०६   | २        | कर्त्तृविशेषिणोप     | १०६      | ३     | १०७      | १३    |
| स्वर्णकारकृत्यम्    | १०३   | ५        | १०६   | ३        | पक्षाः               | १०६      | ३     | १०७      | १४    |
| वर्मकारकृत्यम्      | १०३   | ६        | १०६   | ३        | संक्रान्तिर्विहिताभि | १०६      | ३     | १०७      | १५    |
| लोहस्समलीनकृत्यम्   | १०३   | ८        | १०६   | ७        | संक्रान्तिप्रकरणम्   | १०६      | ७     | १०७      | १६    |
| नासिककृत्यम्        | १०३   | ८        | १०७   | ८        | वस्त्राणि            | १०७      | ८     | १०८      | १७    |
| आभीरजन कृत्यम्      | १०३   | ११       | १०७   | ११       | भक्ष्याणि            | १०७      | ११    | १०८      | १८    |
| चौरकृत्यम्          | १०४   | १        | १०८   | ८        | विलेपनानि            | १०८      | ८     | १०९      | १९    |
| प्रेतसङ्गः          | १०४   | ३        | १०८   | १०       | जातयः                | १०८      | १०    | १०९      | २०    |
| सामाहितिकृत्यम्     | १०४   | ६        | १०८   | १०       | पुण्याणि             | १०८      | १०    | १०९      | २१    |
| वस्त्रावली          | १०५   | ६        | १०८   | १०       | आभरणानि              | १०८      | १०    | १०९      | २२    |
| सूत्रिकादृशेभ्यः    | १०५   | ०        | १०८   | ६        | माणा                 | १०८      | ६     | १०९      | २३    |

## सूचीपत्र

| सूचापत्र       |              |              |                   |              |              |                      |              |              |                     |              |
|----------------|--------------|--------------|-------------------|--------------|--------------|----------------------|--------------|--------------|---------------------|--------------|
| पृष्ठ संज्ञा   | पृष्ठ संज्ञा | पृष्ठ संज्ञा | पृष्ठ संज्ञा      | पृष्ठ संज्ञा | पृष्ठ संज्ञा | पृष्ठ संज्ञा         | पृष्ठ संज्ञा | पृष्ठ संज्ञा | पृष्ठ संज्ञा        | पृष्ठ संज्ञा |
| अथ गारादि नलघु | ११३          | ७            | ग्रहाणां क्रमवैधः | ११३          | ६            | शनिस्सार्द्धसप्तवारि | ११७          | ७            | ग्रहस्योद्योगतयेरा  | १२३          |
| इति द्वादशोऽथ  | ११३          | ८            | रवेः              | ११३          | ६            | कौमो गविचारः         | ११७          | ७            | मान्यो यथीलानं      | १२३          |
| अथ गेवर प्रकला | ११३          | ९            | भौमशनि केतूनां    | ११३          | ८            | शनिस्सर्वराणादि वि-  | ११७          | ७            | ग्रहप्रीतये रत्नधा- | १२३          |
| अथ रवेः फलम्   | ११३          | १०           | बुधस्य वैधः       | ११३          | ८            | चारः                 | ११७          | ७            | राणं                | १२३          |
| चन्द्रस्य      | ११३          | ११           | गुरोर्वैधः        | ११३          | ८            | शनिवाहनम्            | ११७          | ७            | नवग्रह मुद्रा       | १२३          |
| भौमस्य         | ११३          | १२           | शुक्रोर्वैधः      | ११३          | ८            | ग्रहाणां फलसमयः      | ११७          | ७            | ग्रहपीडितप्रश्नो    | १२३          |
| बुधस्य         | ११३          | १३           | अथ देशविभागन      | ११३          | ८            | ग्रहाणां फलम्        | ११७          | ७            | पाकः                | १२३          |
| गुरोः          | ११३          | १४           | वैधः              | ११३          | ८            | विषमस्य ग्रहे वर्ज्य | ११७          | ७            | दूतित्रयोदशी        | १२३          |
| शुक्रस्य       | ११३          | १५           | अष्टवर्गानुसारेण  | ११३          | ८            | नि                   | ११७          | ७            | प्रमा पूर्णा        | १२३          |
| शनेः           | ११३          | १६           | फलं               | ११३          | ८            | ग्रहाणां दानानि      | ११७          | ७            | अथ संस्कारप्रकरणं   | १२३          |
| राहु केतुः     | ११३          | १७           | अथ गेवर प्रकला    | ११३          | ८            | ग्रहदुःखहासौख्य-     | ११७          | ७            | रजोदर्शनम्          | १२३          |
| अथ फलदा ग्रहः  | ११३          | १८           | मानं              | ११३          | ८            | धीलानम्              | ११७          | ७            | अनुत्पन्नम्         | १२३          |

सूची पत्र

| वृत्त             | पंक्ति | श्लोक | वृत्त             | पंक्ति | श्लोक | वृत्त          | पंक्ति | श्लोक | वृत्त           | पंक्ति |
|-------------------|--------|-------|-------------------|--------|-------|----------------|--------|-------|-----------------|--------|
| गर्भाधानम्        | १२४    | ८     | अधुक्तशूलम्       | १२८    | २     | सतेतुष्टकालाः  | १३४    | २     | कर्मस्थानस्य    | १३६    |
| पुनरावृत्तिः      | १२४    | १०    | मूलजननेपादफलं     | १२८    | ४     | गृहाणांजननेहा- | १३४    | ४     | लाभस्थानस्य     | १३६    |
| जन्मभंसीमंतेनि-   | १२४    | ३     | मूलदक्षम्         | १२८    | १     | दृष्टा भावफलम् | १३४    | ६     | व्ययस्थानस्य    | १३६    |
| यितुं             | १२४    | ६     | कन्याजन्मनेगविभा- | १२८    | ८     | तनोःफलम्       | १३४    | ६     | मृत्युयोगः      | १३६    |
| पुंसवनसीमंते      | १२४    | १०    | गः                | १२८    | ८     | धनस्य          | १३४    | ८     | स्त्रीहिंसायोगः | १३६    |
| मासेष्वरः         | १२४    | १०    | श्लेयाफलं कन्यासु | १२८    | ८     | सहजस्य -       | १३४    | १०    | परक्रम योगः     | १३६    |
| संस्कारेविशेषः    | १२४    | १०    | तयोः              | १२८    | ८     | सुहृत्स्थानस्य | १३४    | १०    | तुर्वल योगः     | १३६    |
| विस्तु पूजा       | १२४    | ३     | श्लेयादक्षः       | १२८    | ८     | सुतस्य         | १३४    | १०    | जातिश्रस्योगः   | १३६    |
| सती गृहप्रवेशः    | १२४    | ४     | ज्येष्ठापादफलं    | १२८    | ८     | रिपोः स्थानस्य | १३४    | १०    | मातृपितृनाशक    | १३६    |
| जातकर्म           | १२४    | ६     | तिथिगंडम्         | १२८    | ८     | जायास्थानस्य   | १३४    | १०    | योगः            | १३६    |
| नामकरणम्          | १२४    | ८     | स्तेयादनम्        | १२८    | ८     | मृत्युस्थानस्य | १३४    | १०    | मृत्युकारकयोगः  | १३६    |
| जनन समयेतुष्टकालं | १२४    | ८     | त्रिदोषः          | १२८    | ८     | धर्मस्थानस्य   | १३४    | १०    | अथगणनादि        | १३६    |



प्रति

[illegible]

# सूचीपत्र

| पृष्ठ                | पंक्ति | पृष्ठ | पंक्ति            | पृष्ठ | पंक्ति | पृष्ठ               | पंक्ति | पृष्ठ | पंक्ति |
|----------------------|--------|-------|-------------------|-------|--------|---------------------|--------|-------|--------|
| निःक्रमणम्           | १५२    | १०    | सौरेजन्मलग्नम्    | १५०   | १०     | प्रतिवेदनसन्तारिणि  | १६०    | ४     | १६४    |
| कटिसूत्रं भूत्युपवे- | १५३    | ४     | शस्त्रं           | १५०   | १०     | साधारणोनसन्त        | १६०    | ४     | १६४    |
| यानम्                | १५३    | ४     | सौरेलमफलम्        | १५०   | १०     | विशेषः              | १६०    | ४     | १६४    |
| शान्न प्राशनम्       | १५३    | ४     | मातुर्लज्जोद्योषः | १५०   | १०     | अतिनिविद्धम्        | १६०    | ४     | १६४    |
| तांबूलभक्षणम्        | १५३    | ४     | मातुर्लज्जोद्योषः | १५०   | १०     | अथानाध्यायः         | १६०    | ४     | १६४    |
| कर्णविधेः            | १५३    | ४     | अथोपनयनम्         | १५०   | १०     | प्रदोयस्त्वत्पत्रम् | १६०    | ४     | १६४    |
| अब्जमुहूर्तम्        | १५३    | ४     | वर्णप्रणः         | १५०   | १०     | गलगुहः              | १६०    | ४     | १६४    |
| चूडाकर्म             | १५३    | ४     | वेदेष्टाः         | १५०   | १०     | लग्नवलस्            | १६०    | ४     | १६४    |
| शुक्रोद्देश्यस्तमानं | १५३    | ४     | गुर्वार्हिवलम्    | १५०   | १०     | केंद्रस्यवेदफलं     | १६०    | ४     | १६४    |
| गुरुद्वयास्तमानम्    | १५३    | ४     | उपनयनेमासशु       | १५०   | १०     | व्रतयोगः            | १६०    | ४     | १६४    |
| दंडोर्वालवृद्धत्वं   | १५३    | ४     | दिः               | १५०   | १०     | चैत्रप्राशस्त्यम्   | १६०    | ४     | १६४    |
| केतुद्वयम्           | १५३    | ४     | तिथयः             | १५०   | १०     | मातुःलज्जोद्योषेवि  | १६०    | ४     | १६४    |

## सूची पत्र

| क्रम | पृष्ठ संकि | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृ |
|------|------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|----|
|------|------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|----|

# सूची पत्र

| विषय                   | पृष्ठ | पंक्ति | सतस्यचक्रम्      | पृष्ठ | पंक्ति | चक्रम्            | पृष्ठ | पंक्ति | पृष्ठ | पंक्ति | विषय               | पृष्ठ | पंक्ति |
|------------------------|-------|--------|------------------|-------|--------|-------------------|-------|--------|-------|--------|--------------------|-------|--------|
| विषयविचार-<br>सूत्राणि | १८०   | ७      | अथोपग्रहदोषः     | १८३   | ४      | चक्रम्            | १८३   | ८      | १८३   | ८      | रेखाप्रदाग्रहाः    | १८३   | ७      |
| दशगहादोषाः             | १८०   | ११     | क्रांतिरास्यदोषः | १८३   | ७      | तिथिविषयनाडीचक्रं | १८३   | ९      | १८३   | ९      | दिनज्ञानम्         | १८३   | ८      |
| लजा - - -              | १८१   | ३      | दृग्दोषः -       | १८३   | ८      | विषयनाडीदोषाः     | १८३   | ९      | १८३   | ९      | सूकालास्त्रिमानं   | १८३   | ९      |
| पातः - - -             | १८१   | ८      | अथेदोषाः         | १८३   | ११     | वादः - - -        | १८३   | ९      | १८३   | ९      | यनं - - -          | १८३   | ९      |
| युतिदोषः - -           | १८२   | २      | दशदोषाः          | १८३   | ११     | ग्रहदृष्टिः - - - | १८३   | ९      | १८३   | ९      | स्यललादिहका        | १८३   | ९      |
| वेधः - - -             | १८२   | ५      | यमपंदयोगः        | १८३   | ३      | लग्नपुष्टिः - - - | १८३   | ९      | १८३   | ९      | लज्ञानम् -         | १८३   | ९      |
| यामिन्नः               | १८३   | ६      | कर्त्तरीदोषः     | १८३   | ८      | पवंधादित्याज्यल   | १८३   | ९      | १८३   | ९      | प्रयत्नयोगः        | १८३   | ९      |
| सुधपंचकम्              | १८३   | १०     | महाकर्त्तरी - -  | १८३   | १०     | मानि - -          | १८३   | ९      | १८३   | ९      | नेष्टयोगः          | १८३   | ९      |
| सुक्ष्माण्पंचकं        | १८४   | ३      | दोषापवादः -      | १८३   | ११     | हेलाष्टकम्        | १८३   | ९      | १८३   | ९      | गोपूतिकज्ञानम्     | १८३   | ९      |
| एकांगिलदोषः            | १८४   | १०     | अथापरोदोषः -     | १८३   | ३      | सुभनवांशाः        | १८३   | ९      | १८३   | ९      | ग्रहवसातज्ञानं     | १८३   | ९      |
| रतस्योदाहरणं           | १८५   | १      | मसुत्रविषयनाडी   | १८३   | ३      | भंगसाग्रहाः       | १८३   | ९      | १८३   | ९      | राज्याखड्ग विग्रहः | १८३   | ९      |
|                        |       |        |                  |       |        |                   |       |        | १८३   | ९      | हीनजातीनांवि०      | १८३   | ९      |



## सूचीपत्र.

| पृष्ठ पंक्ति         | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति       | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति       | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति        | पृष्ठ पंक्ति |   |
|----------------------|--------------|--------------|--------------------|--------------|--------------|--------------------|--------------|--------------|---------------------|--------------|---|
| अपरस्त्रिकूलपरिहार   | २१२          | ४            | वर्णास्वरः         | २१४          | ८            | घातस्रोणि          | २१०          | ५            | ग्रहणां घातचक्रं    | २२२          | ५ |
| समयविशेषेत्याज्या-   |              |              | तिथिस्वरः          | २१५          | ९            | घातवारः            | २१०          | ८            | घातगुरुः            | २२३          | २ |
| निभानि               | २१२          | ११           | पथिराहुचक्रम्      | २१५          | ४            | घाततिथयः           | २१०          | ११           | घातशुक्रः           | २२३          | ३ |
| सर्वकालेनेष्टनक्ष    |              |              | तिथिचक्रंगोरस्यमते |              |              | घाततिथीर्नात्या-   |              |              | घातशनिः             | २२३          | ४ |
| नालि                 | २१३          | ४            | न                  | २१६          | २            | ज्यघत्तः           | २११          | २            | स्त्रीणां घातचंद्रः | २२३          | ६ |
| युद्धनात्रायांविशेषः | २१३          | ५            | सवकियोगः           | २१८          | २            | घातचंद्रेनसूत्रपा- |              |              | चंद्रवासीलोकत्रये   | २२३          | ७ |
| जीवमृतपक्षौ          | २१३          | ६            | आहलश्रमौ           | २१८          | ५            | दाष्ट्याज्यः       | २११          | ५            | चंद्रांगवास्तुः     | २२६          | ३ |
| शयांकुलकुलकुली       |              |              | प्रशस्तीहैरवः      | २१८          | ८            | घातसूर्यः          | २११          | १०           | सन्मुखचंद्रफलं      | २२५          | ७ |
| कुलगणाः              | २१३          | ११           | घवाडयोगः           | २१८          | ११           | घातचंद्रः          | २११          | ११           | तत्कालचन्द्रोद      |              |   |
| आदीअकुलम्            | २१४          | १            | देलकयोगः           | २१८          | २            | घातभौमः            | २१२          | २            | हिंसु               | २२५          | ४ |
| कुलगणाः              | २१४          | ३            | गौरवयोगः           | २१८          | ३            | घातबुधः            | २१२          | ३            | योगिनीवासः          |              |   |
| कुलीकुलगणाः          | २१४          | ६            | घातचंद्रः          | २१८          | ६            | सर्वघातचक्रं       | २१२          | ५            | फलत्रय              | २२५          | ८ |

# सूची पत्र

| पृष्ठ                | पंक्ति | पृष्ठ | पंक्ति              | पृष्ठ | पंक्ति | पृष्ठ            | पंक्ति | पृष्ठ | पंक्ति             | पृष्ठ | पंक्ति |
|----------------------|--------|-------|---------------------|-------|--------|------------------|--------|-------|--------------------|-------|--------|
| नत्कालयोगिनी         | २२६    | ५     | शुक्रदोषापवादः      | २२६   | २      | दिगासयः          | २२६    | ५     | संज्ञा             | २२६   | २०     |
| कालपाशो              | २२६    | ६     | शुक्रास्तादिदोषः    | २२६   | ५      | दिगीशः           | २२६    | ८     | हृदयमावफलं         | २२६   | १      |
| ग्रामार्द्धराहुः     | २२७    | २     | बुधोःपितृमुख        | २२६   | ८      | ललाटीस्वष्टम्    | २२६    | ११    | योगप्रशंसायात्राया | २२६   | १      |
| मुहूर्त्तौत्तमकराहुः | २२७    | ४     | स्त्याज्यः          | २२६   | ८      | कालंशराष्टयं स-  | २२६    | १०    | अथयोगयात्रा        | २२६   | ५      |
| राहोफलम्             | २२७    | ६     | शुक्रदोषाभावः सा-   | २२६   | ८      | वीभावः           | २२६    | १०    | समरयात्रा          | २२६   | १      |
| परिघदंडः             | २२७    | ८     | मान्येन             | २२६   | ८      | सजीवलिङ्गीवकाश   | २२६    | ३     | राधायादिपाल        | २२६   | १      |
| आनयकैपरिघोः          | २२७    | ११    | तीर्थयात्रायां दोषा | २२६   | ११     | यान्नानाम        | २२६    | ८     | प्रशंसा            | २२६   | १      |
| स्वर्णं              | २२७    | ११    | भावः                | २२६   | ११     | यात्रावाहनम्     | २२६    | ८     | मध्याह्ने विरेकः   | २२६   | ६      |
| वक्रगृहस्य वारादि    | २२७    | ११    | गुरुशुक्रवृथास्ते   | २२६   | ११     | फलं च            | २२६    | ८     | छायावलयात्रा       | २२६   | २      |
| स्त्याज्यं           | २२८    | ४     | विवेकः              | २२७   | २      | यात्रादृशा       | २२६    | ८     | विजयशान्यात्रा     | २२६   | ८      |
| अपनानुकूलम्          | २२८    | ६     | लग्नविचारश्च गु     | २२७   | २      | अथानिष्टगुहः     | २२६    | ८     | शस्त्यं            | २२६   | ८      |
| त्रिविधः शुक्रः      | २२८    | ११    | आनिष्टगुलभानि       | २२७   | २      | लग्नाद्वावादीनां | २२६    | ८     | नत्कालपंचांगम्     | २२६   | २०     |

# सूचीपत्र

| पृष्ठ                | पंक्ति               | पृष्ठ | पंक्ति | पृष्ठ | पंक्ति | पृष्ठ | पंक्ति | पृष्ठ | पंक्ति |
|----------------------|----------------------|-------|--------|-------|--------|-------|--------|-------|--------|
| २५१                  | १                    | २५२   | २      | २५३   | ३      | २५४   | ४      | २५५   | ५      |
| उत्पातगुणानि         | सतेयाचक्रम           | २५६   | ६      | २५७   | ७      | २५८   | ८      | २५९   | ९      |
| निनीलाहादिभुम्भं     | स्वनिचारः            | २५९   | ९      | २६०   | १०     | २६१   | ११     | २६२   | १२     |
| उत्पादादिभ्रंशो      | स्वेतिथिचिचारः       | २६०   | १०     | २६१   | ११     | २६२   | १२     | २६३   | १३     |
| प्रकालगर्जने         | वारस्वरोहयः          | २६१   | ११     | २६२   | १२     | २६३   | १३     | २६४   | १४     |
| भावप्रलक्षणेघनगर्जने | स्वरपूर्वमुत्पानं    | २६२   | १२     | २६३   | १३     | २६४   | १४     | २६५   | १५     |
| एकासिन्दिने निर्गो   | प्रातः               | २६३   | १३     | २६४   | १४     | २६५   | १५     | २६६   | १६     |
| संभवयो               | चंद्रस्वरकृत्यम्     | २६४   | १४     | २६५   | १५     | २६६   | १६     | २६७   | १७     |
| पानाविधिः            | सूर्यस्वरकृत्यम्     | २६५   | १५     | २६६   | १६     | २६७   | १७     | २६८   | १८     |
| नसत्रोहदम्           | वहन्नाडीस्वरकृत्यम्  | २६६   | १६     | २६७   | १७     | २६८   | १८     | २६९   | १९     |
| दिग्दोहदम्           | स्वरपल्ले तत्त्वोदयः | २६७   | १७     | २६८   | १८     | २६९   | १९     | २७०   | २०     |
| नारदोहदम्            | तत्त्वानां प्रन्वारः | २६८   | १८     | २६९   | १९     | २७०   | २०     | २७१   | २१     |
| तिथिदोहदम्           | युद्धे विप्रोधः      | २६९   | १९     | २७०   | २०     | २७१   | २१     | २७२   | २२     |



# सूची पत्र

|                   |     |    |                   |     |   |                  |     |   |                  |     |    |
|-------------------|-----|----|-------------------|-----|---|------------------|-----|---|------------------|-----|----|
| दुःशकुनाः --      | २७६ | ६  | त्याज्यस्येयगता   | २७६ | ६ | नामएधिप्राधा-    | २७७ | ३ | भूःधनं दृढी      | २७९ | २१ |
| महापशकुनानि       | २७७ | ७  | संग्रहः --        | २७७ | २ | न्यम् --         | २७७ | ३ | कराणं --         | २७९ | २१ |
| दुस्सकुन त्यागः   | २७७ | १  | द्यूतशकुनम्       | २७७ | २ | एशीनां ग्रामवा-  | २७७ | ३ | समभूयोदिक        | २७९ | २१ |
| दक्षिणभागेऽपुमा   | २७७ | २  | द्युतेस्वरवलम्    | २७७ | ७ | सेफलम् --        | २७७ | ३ | प्रोधनं --       | २७९ | २१ |
| तेव्यपि विशेषः -- | २७७ | ३  | यात्रानिद्वितीया  | २७७ | २ | ग्रामचक्रम् --   | २७७ | ३ | गृहस्थायाः       | २७९ | २१ |
| युनश्चैव्याशकुनं  | २७७ | ४  | हप्रवेशः --       | २७७ | २ | वर्गमैत्री --    | २७७ | ३ | आयानां त्रयो-    | २७९ | २१ |
| प्रवेशे शकुनः --  | २७७ | ५  | प्रवेशे किंचिन्नि | २७७ | १ | काकिणी --        | २७७ | ३ | जनम् --          | २७९ | २१ |
| शयशकुनानां काल    | २७७ | ६  | वेधः --           | २७७ | ७ | दिक्परक एशिः     | २७७ | ३ | आरंभे निवेधः     | २७९ | २१ |
| विशेषे नैवल्य     | २७७ | ७  | लग्नवलम्          | २७७ | ७ | दृशा विचारः --   | २७७ | ३ | क्षेत्रफलानयनं   | २७९ | २१ |
| माह --            | २७७ | ८  | द्वत्येकोनविंशति  | २७७ | १ | दृशाफलम् --      | २७७ | ३ | दृष्टक्षेत्रोधनं | २७९ | २१ |
| चायोऽपुमाऽपुम     | २७७ | ९  | काप्रभासमाप्ता    | २७७ | २ | भूमि विचारः --   | २७७ | ३ | दीर्घविस्तृतिना  | २७९ | २१ |
| शकुनम् --         | २७७ | १० | शयवास्तुप्रकारां  | २७७ | २ | प्रत्यक्षानम् -- | २७७ | ३ | नै --            | २७९ | २१ |



| सूची पत्र          | पृष्ठ | पंक्ति | पृष्ठ              | पंक्ति | पृष्ठ | पंक्ति            |     |    |                     |     |    |
|--------------------|-------|--------|--------------------|--------|-------|-------------------|-----|----|---------------------|-----|----|
| रूपः               | ३०६   | ४      | गृहसमीपेऽन्यथा     | ३१२    | १     | देवालयमहाधारं     | ३१३ | २  | जलज्ञानम्           | ३१५ | ५  |
| सूरस्योच्चता       | ३०६   | ६      | हफलम्              | ३१२    | ४     | मः                | ३१३ | ४  | कूपे निर्भरविचारः   | ३१५ | ८  |
| नीलोच्चता          | ३०६   | ७      | गृहांगणोद्युभवस्तः | ३१२    | ४     | जेन्यालयप्रपाद    | ३१३ | ४  | कूपचक्रम् चतुष्टयम् | ३१५ | ८  |
| हारादीवधविचारः     | ३०६   | १०     | गृहस्वतितिरिगिच    | ३१२    | ७     | रीणा मारंभः       | ३१३ | ४  | नेवारचक्रम्         | ३१६ | ३  |
| विधापवादः          | ३०६   | ११     | सा रोपः            | ३१२    | ७     | कूपखनचप्रदेशः     | ३१३ | ४  | दृष्टिकारंभः सु-    | ३१६ | ३  |
| वेधफलम्            | ३१०   | १      | गृहांगणोद्युभवम्   | ३१२    | ७     | जलाश्यांभः        | ३१३ | ७  | धालेपः              | ३१६ | ५  |
| अंधांगणज्ञानम्     | ३१०   | ४      | दृष्टाः            | ३१२    | ८     | क्षपारंभेवारफलं   | ३१३ | १० | दृष्टिकाचक्रम्      | ३१६ | ७  |
| प्रवविचारः         | ३१०   | ११     | अंगणो सर्वदृष्टा   | ३१२    | १०    | रोहिण्युसात्कूप   | ३१३ | ३  | दृष्टिकायामग्नित    | ३१६ | ८  |
| पौंड्रशृगृहनिर्मा- | ३१०   | ११     | नियिष्टः           | ३१२    | १०    | चक्रम्            | ३१३ | ३  | दानं                | ३१६ | ८  |
| रामम्              | ३११   | १      | पुरगमप्राकार       | ३१२    | १०    | भौमभात्कूपचक्रं   | ३१३ | ८  | तडागचक्रम्          | ३१६ | ११ |
| चित्रारंभः         | ३११   | ६      | दीनानिर्मोणस       | ३१२    | १०    | सूर्यभात्कूपचक्रं | ३१३ | १० | दूनिविंशतिप्र       | ३१६ | ११ |
| गुल्मीस्थापनम्     | ३११   | ८      | त्रसाधनम्          | ३१२    | १०    | एहुभात्कूपचक्रम्  | ३१३ | १० | भासमाप्ता           | ३१७ | ६  |



|                    | सूचीपत्र          | पृष्ठ | पंक्ति | पृष्ठ | पंक्ति | पृष्ठ             | पंक्ति | पृष्ठ | पंक्ति |
|--------------------|-------------------|-------|--------|-------|--------|-------------------|--------|-------|--------|
| मुद्देअर्थलक्षणम्  | अन्येऽप्युत्पाताः | ३३३   | ८      | ३४३   | ४      | अन्येऽप्युत्पाताः | ३४६    | ३४६   | ५      |
| अथापुरुषप्रकारः    | निर्घातस्वरूपम्   | ३३३   | १०     | ३४३   | ६      | उत्पातदोषापवादः   | ३४७    | ३४७   | ६      |
| स्वप्नवर्णिनम्     | उत्कालक्षणम्      | ३३४   | ८      | ३४४   | २      | उत्पातानामुपहारः  | ३४७    | ३४७   | ८      |
| सुभफलदाः स्वप्नाः  | दिग्दहफलम्        | ३३४   | ११     | ३४४   | ५      | इत्युत्पाताः      | ३४७    | ३४७   | ८      |
| अशुभ स्वप्नाः      | भूकंपफलम्         | ३३६   | ८      | ३४४   | ६      | महर्षिकांडम्      | ३४७    | ३४७   | ८      |
| स्वप्नफलदाच्यवस्था | रज्ज्विच्छिः      | ३३६   | ५      | ३४५   | १      | वर्षराजादिविचारः  | ३४७    | ३४७   | ८      |
| दुष्टस्वप्नश्रुतिः | गंधर्वनगंतत्क     | ३३६   | ६      | ३४५   | १      | विशेषकापनयनम्     | ३४८    | ३४८   | १      |
| वायोत्पाताः        | तन्म              | ३३६   | १०     | ३४५   | ५      | क्षुधाधानयनम्     | ३४८    | ३४८   | ४      |
| उत्पातानांसंग्रहः  | सवा मुत्पातानां   | ३४०   | १      | ३४५   | ५      | अश्वत्थानयनम्     | ३४८    | ३४८   | ५      |
| उत्पातज्ञानायच-    | फलसमयः            | ३४०   | १      | ३४५   | ५      | शलिगच्छानयनम्     | ३४८    | ३४८   | ५      |
| बुद्धिमंडलानि      | दृष्टिविभ्रतिः    | ३४०   | ३      | ३४५   | ६      | पुनरुत्पन्नभाषा   | ३४८    | ३४८   | ५      |
| कौतवः              | पक्षीशृङ्गादिवि-  | ३४०   | ६      | ३४६   | २      | उद्भिदादि         | ३४८    | ३४८   | ५      |

**सं**

| सूचीयत्र           |        |   |                     |        |   |                   |        |    |                  |        |    |
|--------------------|--------|---|---------------------|--------|---|-------------------|--------|----|------------------|--------|----|
| पृष्ठ              | पंक्ति |   | पृष्ठ               | पंक्ति |   | पृष्ठ             | पंक्ति |    | पृष्ठ            | पंक्ति |    |
| यफलम्              | ३६३    | ३ | ज्ञानम्             | ३६८    | १ | उपश्रुतिनञः       | ३७२    | १० | सामुद्रिकपरिक्षा | ३७७    | ८  |
| आवराशुक्तपंचमी     | ३६३    | ३ | साद्दिनसूत्रं       | ३६८    | १ | उपश्रुतिवासः      | ३७३    | ६  | स्त्रीएणंविशेषः  | ३७६    | १० |
| फलम्               | ३६३    | ३ | प्रवेशपुंलीनपुंल    | ३६८    | १ | रघुयंशगदृशकु-     | ३७३    | ६  | स्त्रीयांशुभचि-  | ३७६    | १० |
| सूर्यस्वरेत्वाहिने | ३६३    | ३ | कज्ञानम्            | ३६८    | १ | नाः               | ३७३    | ६  | न्हानि           | ३७६    | १० |
| पुष्टिफलम्         | ३६३    | ३ | सूर्यस्वचंद्रदीप्तौ | ३६८    | १ | अंगनिद्याग्रन्थः  | ३७३    | ६  | सानान्यतश्रुभ    | ३७६    | १० |
| संक्रांतौष्टिफलं   | ३६३    | ३ | उष्टिज्ञानम्        | ३६८    | १ | सर्वग्रन्थनिर्णयः | ३७३    | ६  | लक्षणं           | ३७६    | १० |
| काकनीडफलम्         | ३६३    | ३ | आढकप्रमाणम्         | ३६८    | १ | नक्षत्रग्रन्थः    | ३७३    | ६  | स्त्रीपुंसोरुभ   | ३७६    | १० |
| हिडिभांडफलम्       | ३६३    | ३ | रविनक्षत्रवाहनं     | ३६८    | १ | गुराग्रन्थः       | ३७३    | ६  | व्यापारः         | ३७६    | १० |
| रोहिणीचक्रम्       | ३६३    | ३ | सद्योष्टिज्ञानं     | ३६८    | १ | आगतुकप्रश्नः      | ३७३    | ६  | इतित्रयोविंश     | ३७६    | १० |
| सप्तनाडीचक्रम्     | ३६३    | ३ | याकाले              | ३६८    | १ | गर्भिणीप्रश्नं    | ३७३    | ६  | तिप्रभापूणा      | ३७६    | १० |
| नाडीस्वग्रहफलं     | ३६३    | ३ | इतिष्टिकांडः        | ३६८    | १ | नष्टपशुलाभप्र     | ३७३    | ६  | अथतिथिनिर्ण      | ३७६    | १० |
| ग्रहयोगवशादृष्टि   | ३६३    | ३ | उपश्रुतिशकुनां      | ३६८    | १ | श्रुः             | ३७३    | ६  | मप्रकरणम्        | ३७६    | १० |

[illegible]



|                      | एट  | पंक्ति |                        | एट  | पंक्ति |                       | एट  | पंक्ति |                    | एट  | पंक्ति |
|----------------------|-----|--------|------------------------|-----|--------|-----------------------|-----|--------|--------------------|-----|--------|
| पूज्यता माह          | ४०४ | २      | चैत्र शुक्ल द्वितीया   | ४०४ | ५      | चैत्र शुक्ल चतुर्थी   | ४१५ | १      | धरती निरायः        | ४१६ | १२     |
| अथ प्रतिपत्तिर्षयः   | ४०४ | ६      | प्रावण हल द्वितीया     | ४०६ | ७      | ज्येष्ठ शुक्ल चतुर्थी | ४१५ | ३      | आपाट शुक्ल पथी     | ४१६ | ११     |
| चैत्र शुक्ल प्रतिपत् |     |        | कार्तिक शुक्ल द्वितीया | ४०६ | १०     | प्रावण हल चतुर्थी     | ४१५ | ५      | आद्र शुक्ल धरती    | ४१६ | १०     |
| संनारंभः             | ४०५ | ६      | तृतीया निरर्षयः        | ४१० | ११     | आद्र शुक्ल चतुर्थी    |     |        | हल धरती            | ४११ | १      |
| चैत्र शुक्ल प्रतिपदि |     |        | चैत्र शुक्ल तृतीया     | ४११ | ७      | चंद्र दर्शने निधि     | ४१५ | ८      | आश्विन शुक्ल पथी   | ४११ | १      |
| वत्सरंभः             | ४०५ | ११     | वैशाख शुक्ल अक्ष       |     |        | माघ शुक्ल चतुर्थी     | ४१६ | १०     | कार्तिक शुक्ल पथी  | ४११ | ५      |
| ज्येष्ठ शुक्ल प्रतिप |     |        | यत्तृतीया              | ४११ | ८      | अथ पंचमी              | ४१७ | ५      | मार्गशिर शुक्ल पथी | ४११ | ८      |
| निर्दशहरंभः          | ४०६ | ३      | ज्येष्ठ शुक्ल तृतीया   | ४१३ | ५      | चैत्र शुक्ल पंचमी     | ४१७ | ७      | अथ सप्तमी          | ४११ | १      |
| आश्विन शुक्ल प्रति   |     |        | आद्र शुक्ल तृतीया      |     |        | प्रावण शुक्ल पंचमी    | ४१७ | ११     | चैत्र शुक्ल सप्तमी |     |        |
| पदिनवरात्रारंभः      | ४०६ | ४      | हरिनालिका              | ४१४ | १      | आद्र शुक्ल पंचमी      | ४१८ | ४      | सूर्य पूजा         | ४११ | ७      |
| कार्तिक शुक्ल प्रतिप |     |        | माघ शुक्ल तृतीया       | ४१४ | ८      | आश्विन शुक्ल पंचमी    | ४१८ | १०     | वैशाख शुक्ल सप्त   |     |        |
| न द्वितीया निरर्षयः  | ४०६ | ४      | अथ चतुर्थी             | ४१४ | १०     | माघ शुक्ल पंचमी       | ४१८ | ३      | व्यांगंगा पूजा     | ४११ | ८      |

[illegible]

| पद्य               | पंक्ति | पद्य             | पंक्ति | पद्य                | पंक्ति | पद्य              | पंक्ति | पद्य | पंक्ति |
|--------------------|--------|------------------|--------|---------------------|--------|-------------------|--------|------|--------|
| वैलव स्वल्पम्      | ४४८    | अनाकरोप्रायश्चि  | ४४८    | लादिनिवेधः          | ४४९    | चैत्रैकादशी       | ४४९    | पद्य | ४५०    |
| वैलवैकादशीमाध      | ४४९    | तम्              | ४४९    | सकादश्यासंकल्पम्    | ४५०    | ज्येष्ठशुक्लेकाद- | ४५०    |      | ४५०    |
| वयनेन              | ४५०    | काम्यजनविधिः     | ४५०    | द्वादश्यानिवेदनं    | ४५१    | श्रीनिज्जिला-     | ४५१    |      | ४५१    |
| निर्णयसंग्रहः      | ४५१    | दशम्यांविधिः     | ४५१    | द्वादश्यांतुलसीप्रा | ४५२    | हरिप्रयनीत्राया   | ४५२    |      | ४५२    |
| सार्धैकादशी        | ४५२    | ततश्चानि         | ४५२    | शस्त्रं             | ४५३    | तुमुल्लैकादशी     | ४५३    |      | ४५३    |
| हेमाद्रिनेतेकादशी  | ४५३    | अशक्ते           | ४५३    | द्वादश्यावज्ज्यानि  | ४५४    | भाद्रैकादशीयसि    | ४५४    |      | ४५४    |
| तद्दुवाक्यविरोधेनि | ४५४    | नियमसंगेप्राप्त  | ४५४    | गारुणेविशेषः        | ४५५    | वर्तिनी           | ४५५    |      | ४५५    |
| सायः               | ४५५    | श्रितम्          | ४५५    | द्वादश्यांनिविद्या  | ४५६    | कार्तिकैकादशी     | ४५६    |      | ४५६    |
| दशम्यामेवमोजनम्    | ४५६    | सकादश्यांप्राप्त | ४५६    | चरुलोप्रायश्चित्तम् | ४५७    | सत्यापनी          | ४५७    |      | ४५७    |
| सकादश्यापुषासाधि   | ४५७    | प्राप्ते         | ४५७    | अश्लीचे             | ४५८    | फाल्गुनैकादशी     | ४५८    |      | ४५८    |
| गारी               | ४५८    | आजनम्रानि        | ४५८    | रजोदरिने            | ४५९    | चामर्दकी          | ४५९    |      | ४५९    |
| उपवासासामर्थ्य     | ४५९    | प्रयनीवीधिनीक    | ४५९    | अवलाहदशी            | ४६०    | अथ दशरीनिर्णय     | ४६०    |      | ४६०    |

| पृष्ठ                | पंक्ति | पृष्ठ | पंक्ति               | पृष्ठ | पंक्ति | पृष्ठ              | पंक्ति | पृष्ठ | पंक्ति               | पृष्ठ | पंक्ति |
|----------------------|--------|-------|----------------------|-------|--------|--------------------|--------|-------|----------------------|-------|--------|
| चैत्रशुक्लद्वादशी    | ४६३    | २०    | चैत्रशुक्लचतुर्दशी   | ४६८   | २०     | वैशाखपूर्णिमा      | ४७८    | ३     | अमावस्यानिर्गमः      | ४८८   | ३      |
| आषाढशुक्लद्वादशी     | ४६३    | २१    | वैशाखशुक्लचतुर्दशी   | ४७७   | २१     | ज्येष्ठपूर्णिमा    | ४७८    | ६     | ज्येष्ठमायावदसप्तमि  | ४८८   | ६      |
| आवणशुक्लद्वादशी      | ४६६    | २     | ज्येष्ठशुक्लचतुर्दशी | ४७१   | २      | आषाढपूर्णिमा       | ४७८    | ८     | भाद्रमायांकुलमहः     | ४८०   | ८      |
| भाद्रशुक्लद्वादशी    | ४६६    | ६     | भाद्रशुक्लचतुर्दशी   | ४७१   | ४      | आवणीपूर्णिमा       | ४७८    | ८     | कार्तिकषमादिपमा      | ४८१   | ४      |
| कार्तिकद्वादशी       | ४६६    | ७     | कार्तिकशुक्लचतुर्दशी | ४७२   | ४      | उपाकर्म            | ४७८    | १०    | साचीअमावास्या        | ४८१   | १०     |
| माघशुक्लद्वादशी      | ४६६    | ८     | कार्तिकशुक्लचतुर्दशी | ४७४   | ५      | भाद्रीपूर्णा       | ४७८    | ५     | अत्रैवाहोदययोगः      | ४८३   | ५      |
| अथत्रयोदशीनि-        | ४६६    | ८     | मार्गशुक्लचतुर्दशी   | ४७४   | ८      | आश्विनपूर्णा       | ४७८    | ८     | आहोऽमा निर्गमः       | ४८४   | ६      |
| गमिः                 | ४६७    | ७     | माघशुक्लचतुर्दशी     | ४७४   | ८      | कार्तिकीपूर्णा     | ४७८    | ८     | मलाभारेवर्ष्यनिर्गमः | ४८५   | ५      |
| चैत्रशुक्लत्रयोदशी   | ४६७    | २१    | फाल्गुनशुक्लचतुर्दशी | ४७५   | ८      | मार्गशिर्षीपूर्णा  | ४७८    | ११    | मन्तराणिर्गमः        | ४८७   | ८      |
| भाद्रशुक्लत्रयोदशी   | ४६८    | २०    | शिवरात्रिपालाविषये   | ४७५   | ८      | पौषीपूर्णा         | ४७८    | ४     | महारायोगविषये        | ४८८   | २      |
| कार्तिकशुक्लत्रयोदशी | ४६८    | २     | अथपूर्णिमानिर्गमः    | ४७५   | ६      | साचीपूर्णा         | ४७८    | ५     | इतिश्रीसंग्रहः       | ४८८   | २      |
| अथचतुर्दशी           | ४६८    | ८     | चैत्रपूर्णिमा        | ४७७   | ८      | फाल्गुनीपूर्णाहेला | ४७८    | ११    | गोमरिगस्तुती-        | ४८८   | १०     |

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्री सरस्वत्यै नमः ॥ ॐ गुरु चरण कमले भ्यो नमः ॥ अथ संपद्य शिरो  
 मणि प्रारंभः ॥ श्रीचाणो ध्वेत वर्णाभां वाग्दानं चतुरां धिवा म् ॥ गणेश सहितं वंदे व  
 न्दनीय पदां वुजाम् ॥ १ ॥ श्री ज्योतिषं सुभांस्वतं जगद्धेतुं जगन्मयम् ॥ तं नो मि नमनी  
 यो धिं गुरु मूर्तिं न्दिवा करम् ॥ २ ॥ अस्य शास्त्रस्य संबंधो वेदांग मिति धातुतः ॥ त-  
 स्मा ज्ञगद्धिता येदं ब्रह्मणा निर्मितं पुरा ॥ ३ ॥ गृहणा ग्रह संक्रांति यक्षाध्ययन कर्म-  
 णाम् ॥ प्रयोजनं व्रतो द्वाह क्रियाणां काल निश्चयः ॥ ४ ॥ सिद्धांतं संहिता होरा रूपं स्कं-  
 धत्रयात्मकम् ॥ वेदस्य निर्मलं चक्षु ज्योति प्रशास्त्रमकल्मषम् ॥ ५ ॥ विनै तन्त्रि-  
 लं कर्म श्रौतं स्मार्त्तं न सिद्ध्यति ॥ अत एव हि जैरेतदध्ये तव्यं प्रयत्नतः ॥ ६ ॥ वेदाहि  
 यन्त्रार्थनांश्च प्रवृत्ताः कालानुपूर्वा विहिताश्च यन्त्राः ॥ तस्यादिहं काल विधानं शास्त्रं यो ज्यो  
 तियं वेदं संवेदयन् जान् ॥ ७ ॥ यथा शिखा गयूराणां नागानां मणयो यथा ॥ तद्वद्देवांगं प्रा-  
 णाणां ज्योतिषं मूर्ध्नि स्थितम् ॥ ८ ॥ विद्याह वै ब्राह्मणसाजगाम नोपायमाप्नोवधिष्ठे ह महि-

अस्मै काया नृज वेहिताय न मां नृया अवीर्यं वती यथा स्याम् ॥ ८ ॥ नैतद्व्यं दुर्विनीना  
 य जातु ज्ञानं गुप्तं तद्वि सम्यक् फलाय ॥ अस्याने हि स्थाप्य सानैव वाचां देवी को यान्ति  
 ईहेतं चिराय ॥ १० ॥ होहा ह्योमाच्च मोहाच्च यो विप्रोऽ ज्ञान तोऽपि दा ॥ अद्भ्यासां सुप-  
 रंशं तु दद्यात्स नरक म्भजेत् ॥ ११ ॥ एवं विधम्य श्रुति नेत्र प्रास्त्र स्वरूप सत्तुः खलु द-  
 शीने वै ॥ निहन्य प्रोपं कलुषं जनानां षडब्जं धर्म्म सुखास्य दं स्यात् ॥ १२ ॥ दश  
 दिन कृत पापं हन्ति सिद्धान्त वेत्ता त्रि दिन जनित दोषं तत्र वैशिष्ट्य एव ॥ क्षण भ-  
 गण वेत्ता हंत्य होरात्र दोषं जनयति च न महस्तत्र नक्षत्र सूची ॥ १३ ॥ अवि हित्वैव  
 य प्रणालं देव त्वं प्रपद्यते ॥ संपत्ति दूषकः पापो दोषो नक्षत्र सूचकः ॥ १४ ॥  
 तिथ्युत्पत्तिं न जानाति ग्रहाणां नैव साधनम् ॥ परवाक्येन वर्तन्ते ते वै नक्षत्र सूच-  
 काः ॥ १५ ॥ नक्षत्र सूचको हिष्ट मुप वासं करोति यः ॥ सत्रजत्संधता मिश्रं क्षा-  
 र्द्धं मृक्ष विडं विना ॥ १६ ॥ नक्षत्र जीविनं पापं भिषजं शुल्क जीविनम् ॥ ताहव्यौ

राणि का दींश्च वाङ्मात्रेणापि नाच्चेयेत् ॥ १७ ॥ देव द्वैष्टास्त्रतत्व द्वौ सुहृत्तो ऽन्वि-  
 ष्यते यदि ॥ सुसुहृत्तः सप्तन्वेय्यो नान्यैर्न सत्र सूचकैः ॥ १८ ॥ ज्योतिश्चक्रे तुलो-  
 कस्य सर्वल्योक्तं शुभाशुभम् ॥ ज्योतिर्द्वानिंतु योवेव सयाति परमां गतिम् ॥ १९ ॥  
 ॥ शुभ स्मृण क्रियारम्भ जनिता पर्व सम्भवाः ॥ सम्पद स्सर्व लोकानां ज्योतिस्त-  
 त्र प्रयोजनम् ॥ २० ॥ सुपरीक्षितं विलग्नं धर्मार्थं सुखाय दंपत्योः ॥ अपरीक्षितं  
 विलग्नं नहि देयं पंडितेन देव विवा ॥ २१ ॥ स्वभावा देव कालोयं शुभाशुभ सम-  
 न्वितः ॥ अनादि निधन स्सर्वो न निर्देवो न निर्गुणः ॥ २२ ॥ तस्मान्निर्देव  
 कालार्थं सुहृत्तं मधि गच्छताम् ॥ काल प्रशुभो गुणैर्युक्ता वलवद्भि प्रशुभ प्रदः  
 ॥ २३ ॥ वषिष्ठ गार्गी गिरसा मत्र्या दीनाम्मतं तथा ॥ रैभ्य कपयप रामाणा म्भरद्वा-  
 ज बराहयोः ॥ २४ ॥ गणेषु श्रीपति मतं ज्ञात्वा सिद्धांत सम्भवम् ॥ वाल बोधा-  
 य क्रियते सुहृत्तानां शिरोमणिः ॥ २५ ॥ द्विवेदिवं प्राकह्लार भानुना प्लिव दोमया ३

यथा शास्त्रे च सरस्य प्रसादे नैव सङ्ग्रहः ॥ २६ ॥ ऋतोऽस्मात्स्थ च तिथेः नारजस्तन  
 यो स्तथा ॥ योगस्य करणाल्यस्य ताणयाश्च यथा क्रमात् ॥ २७ ॥ शुभाशुभस्य  
 त्याज्यस्य मुहूर्त्तानां तथैव च ॥ संक्रांते गोचिरस्यैव संस्कारो द्वाहयोस्तथा ॥ २८ ॥  
 बधू प्रवेष्टानस्या ग्न्या धानराज्याभिषेकयोः ॥ यान्नायाश्चैव वालोश्च प्रवेष्टास्य  
 प्रतिष्ठिते ॥ २९ ॥ मिश्राणां च तिथीनां च निर्णयं च यथार्थतः ॥ एवं प्रकारा-  
 न्यत्र तत्त्व संख्या न्यनुक्रमात् ॥ ३० ॥ अथ कलां गत्वेन संवत्सराग्र नर्तुं दासादीनां  
 ज्ञानम् आदौ संवत्सरपरिज्ञानम् ॥ पूर्वैकं कालार्कयुतः कृत्वा पूज्यरसैर्ह-  
 तः ॥ शेषाः संवत्सराब्देयाः प्रभवाद्याबुधैः क्रमात् ॥ ३१ ॥ स एव पंचांगि कुम्भि-  
 र्युक्तः स्याद्विक्रमस्य हि ॥ रेवाया उत्तरे तीरे संवन्ता म्नाति विश्रुतः ॥ ३२ ॥ अथ  
 संवत्सरनामानि प्रभवो १ विभवः २ युक्तः ३ प्रमोदोऽथ ४ प्रजायतिः ५  
 जंगिराः ६ श्रीमुखो ७ भावो ८ युवा ९ धाता १० तथेष्ट्वरः ११ ३३ ॥ बहुधान्यः १२ ४



प्रमाथीच १३ त्रिक्रमो १४ त्वयभस्तथा १५ चित्रभानुः १६ सुभानुश्च १७ तार-  
 गाः १८ पार्थिवो १९ व्ययः २० ॥ ३४ ॥ ब्रह्मणो विंशति स्तत्र सृष्टिरेव प्रजा  
 पतेः॥ सर्वं नित् १ सर्वं धारीच २ विरोधी ३ विकृतिस्तथा ४ ॥ ३५ ॥ स्वरो ५ न-  
 न्दल नामाच ६ विजयश्च ७ जयस्तथा ८ मन्मथो ९ दुर्भुरव १० श्रान्यो द्वे-  
 मलं ११ विलंबको १२ ॥ ३६ ॥ विकारो १३ सर्वरीचान्यः १४ सत्वश्च १५ दु-  
 भक्तस्तथा १६ शोभनश्च १७ तथाक्रोधी १८ विप्रवावसु १९ भवोपरः २० ॥  
 ३७ ॥ विलोरेतेच विंशत्या पालना नत्र जायते सत्वंगः १ कीलकः २ सौम्यः ३  
 तथा साधारणोपरः ४ ॥ ३८ ॥ विरोध कृत्समाख्यातः ५ परिधावी ६ प्रमाद्ययि  
 ७ ॥ ३९ ॥ आनंदो दण्डसश्चाथ ८ नलश्च १० पिंगलस्तथा ११ कालः १२ सिद्धार्थ  
 १३ ऐन्दोच १४ दुर्मति १५ दुन्दुभिस्तथा १६ ॥ ४० ॥ अक्षरोरुधिरौङ्गरी १७ रक्षास  
 १८ क्रोधन १९ तथा क्षय २० कृत्स्नश्चान्यो रुद्रस्या मीचविंशतिः ॥ ४१ ॥ वत्सरायदि ४

शिखाता नाम तुल्य फल प्रदाः ॥ ४१ ॥ अथ संवत्सराणो फलम् ॥ प्रभवा द्विगुणं  
 कृत्वा त्रिभिर्न्यूनं चकारयेत् ॥ सप्त भित्तु हे द्वागं प्रोषं द्वेयं शुभाः शुभम् ॥ ४२ ॥  
 एकं चत्वारि दुर्भिक्षं पचद्वाभ्यां सुभिक्षकम् ॥ त्रिषष्टेतु समं द्वेयं प्रून्ये पीडा न संशयः  
 ॥ ४३ ॥ अथ संवत्सराणां स्वामिनः ॥ युगं भवेद्दत्तरं पंच केन युगानि च द्वादश  
 वर्षं यक्या ॥ भवंति ते वा मधि देवता अ क्रमेण वक्ष्यामि मुनिप्रणीताः ॥ ४४ ॥  
 विलु जीवः शक्तो दहनं स्वयं अहिर्बुध्न्यः पितरः ॥ विप्रवे देवाश्चन्द्र ज्वलनौ नास-  
 त्य नामानौ च भगः ॥ ४५ ॥ अथ संवत्सराणां भेदाः ॥ संवत्सरः प्रथमकः परिवत्स  
 रोन्य तस्मादिडां न्विदितं पूर्व पदाद्भवेत्सुः ॥ एवं युगेषु सकलेषु तदीयं नाथा वन्द्य  
 कींशीतयु विरंचि शिवाः क्रमेण ॥ ४६ ॥ अथायनं विचारः ॥ शिशिरं पूर्वं मृतु त्रयं सुतरे  
 ह्ययनं माहुरहं तदा परम् ॥ भवति दक्षिणं मन्यं क्रतु त्रयं निगदितारं जनी म  
 रुतां हिंसा ॥ ४७ ॥ अथायन फलम् ॥ गृहं प्रवेष्टा त्रिदशं प्रतिष्ठा विवाहं चैल

व्रत नन्ध दीदृशः॥ सोम्यायने कर्म शुभ त्विधेयं यद्गृहितं तत्त्वन्नु दक्षिणेन्दु ॥ ४८ ॥  
 अथर्तवः ॥ मृगादि राशिं ह्य भानु भोगात् षडर्तवस्त्युः शिप्रिरो वसंतः ॥ ग्रीष्म  
 श्रवर्षाच्च प्रारब्धतद्द्वे संतनामा कथित श्रवर्षः ॥ ४९ ॥ अथर्तुपतयः ॥ मारुतो  
 ऽग्निश्च स्वर्गेशो विष्टेव देवाः प्रजापतिः सोम्यश्च षट् ऋतूनां हि पतयः परिक्ता  
 र्तिताः ॥ ५० ॥ अथ मास परिद्धानं ॥ पूर्व राशिं परित्यज्य उत्तरं याति भास्करः  
 ॥ सा राशिः संक्र मारब्धा स्यान्मास त्वय न हायने ॥ ५१ ॥ अथ मासानां नामानि  
 ॥ मासश्चैत्रो ऽथ वैशाखो ज्येष्ठ आषाढ संज्ञकः ॥ ततस्तु आवरणो भाद्र पदो ऽ  
 धाश्चिन संज्ञकः ॥ ५२ ॥ कार्तिको मार्ग शीर्षश्च यौवो माघो ऽथ काल्युनः ॥  
 अथ मासानां संज्ञाः ॥ मधु स्तथा माधव संज्ञकश्च शुक्रः शुचिश्चाथन भोन-  
 भस्यः ॥ तथेष कर्जश्च सहा सहस्य स्तप स्तपस्यश्च यथा क्रमेण ॥ ५३ ॥ अथ  
 मास प्रचतुर्विधः ॥ चान्द्रः शीतः सावनिकः नासत्रेति दशर्षवधि मास सुप्रति-

राख्याता नाम तुल्य फल प्रदाः ॥ ४१ ॥ अथ संवत्सराणां फलम् ॥ प्रभवा ह्यगुणो  
 क्तत्वा त्रिभिर्न्यूनं चकारयेत् ॥ सप्त भिक्षु हे द्वागं प्रोषं क्षेयं शुभाः शुभम् ॥ ४२ ॥  
 एकं चत्वारिंशद्विंशं पच द्वाभ्यां सुभिक्षकम् ॥ त्रिषष्टे तु सप्त क्षेयं शून्ये पीडा न संशयः  
 ॥ ४३ ॥ अथ संवत्सराणां स्वामिनः ॥ युगं भवेद्दत्तरं पंच केन शुभानि च द्वादश  
 वर्षं वक्ष्या ॥ भवंति ते वा मधि देवताश्च क्रमेण वक्ष्यामि मुनि प्रणीताः ॥ ४४ ॥  
 विसृज्य जीवः शक्तो दहनं स्वथ अहिर्बुध्न्यः पितरः ॥ विप्रै देवाश्चन्द्र ज्वलनौ नास-  
 त्य नामानौ च भगाः ॥ ४५ ॥ अथ संवत्सराणां भेदाः ॥ संवत्सरः प्रथमकः परिवत्स  
 रो न्यस्तस्मादिहान्वि दित पूर्व पदाद्भवेद्युः ॥ एवं युगेषु सकलेषु तदीय नाथा वक्ष्य  
 र्कं शीतगु विरंचि शिवाः क्रमेण ॥ ४६ ॥ अथायनं विचारः ॥ शिशिरं पूर्वं स्रुतं त्रयं सुतं  
 ह्ययनं मादुराहं तदा परम् ॥ भवति दक्षिणं मन्यं क्रतु त्रयं निर्गादि तारजनी म  
 रुतां हिता ॥ ४७ ॥ अथायन फलम् ॥ गृहं प्रवेशं त्रि दश प्रतिष्ठा विवाहं चैव

व्रत बन्ध दीदृशः॥ सौग्यायने दर्भ शुभ त्विधेयं यद्गर्हितं तत्त्वन्तु दक्षिणेच ॥ ४८ ॥  
 अथर्तवः ॥ मृगादि राशि द्वय भानु भोगात् षडर्तवस्स्युः शिष्टिरो वसंतः ॥ ग्रीष्म  
 अर्धचि शरच्चतुर्दशे मंत नामा कथितश्च षष्ठः ॥ ४९ ॥ अथर्तु पतयः ॥ मारुतो  
 ऽग्नि पृच स्वर्गेशो विप्रवे देवाः प्रजापतिः सौम्यपृच षट् ऋतूनां हि पंतयः पारिक्ती  
 र्तिताः ॥ ५० ॥ अथ मास परिज्ञानं ॥ पूर्व राशिं परित्यज्य उत्तरं याति भास्करः  
 ॥ सारणिः संक्र मारव्या स्यान्मास त्वय न हायने ॥ ५१ ॥ अथ मासानां नामानि  
 ॥ मास श्रैत्रो ऽथ वैशाखो ज्येष्ठ आषाढ संज्ञकः ॥ ततस्तु आवर्णो भाद्र पदो ऽ  
 थाश्विन संज्ञकः ॥ ५२ ॥ कार्तिको मार्ग शीर्षपृच चौवो माघो ऽथ फाल्गुनः ॥  
 अथ मासानां संज्ञाः ॥ मधु स्तथा माघव संज्ञकश्च शुक्रः शुचिश्चायन भोन-  
 भस्यः ॥ तथेष कर्जश्च सहा सहस्य स्तप तपस्यश्च यथा क्रमेण ॥ ५३ ॥ अथ  
 मास पृचतुर्विधः ॥ चांद्रः श्रेष्ठः सावनिकः नाक्षत्रेति दशर्णवधि मास मुद्रंति

चांद्रं सौरं तथा भास्करं गणि भोगात् त्रिंशद्दिनं सावन सप्त मास्यं नाक्षत्रमि-  
 हो भर्गवा अथाह ॥ ५४ ॥ सासानां फलम् ॥ सौरं कार्त्तिकं विवाहादि ग्रह चारा  
 दिकं तथा ॥ व्रत यज्ञादिकं चांद्रं मास परिगण्यः क्वचित् ॥ ५५ ॥ चांद्रस्तु द्विविधो मा-  
 से दर्शतः पूर्णिमातिमः ॥ देवार्थं योर्गं सास्यतः दर्शतः पितृ कर्मणि ॥ ५६ ॥  
 सावने गर्भ वृद्धादि नक्षत्रे मेघ गर्भनिम् ॥ प्रोक्त कार्त्तिके त्विमासा विज्ञेयाः को विदे-  
 स्सदा ॥ ५७ ॥ अथ पञ्चविचारः ॥ पूर्वा परं मास दलं द्विपक्षौ पूर्वा परो तोसितनील संज्ञौ  
 ॥ पूर्वस्तु देवस्त्व परश्च पैत्र्यः केचित्तु कुलेशित पंचमीतः ॥ ५८ ॥ आदि शुक्लः प्रवक्त-  
 व्यः केचित्कुलोपि मास के ॥ अथ अधिक मास ॥ प्राक् वार्षा कैरं के के विरहिते न देह्युभि-  
 भोजिते ॥ प्रथे न्वनि भयो न साधवश्चिन्वे ज्येष्ठे ५ दोर चाष्टके ॥ आवादे नृपतौ न भञ्च  
 प्रार के आद्रे च विज्यां सके नेत्रे चाश्विन के ५ धि मास सुदितं प्रथे ५ न्य के स्या न्नाहि ॥  
 अथ क्षय मासः ॥ ६० ॥ असं ज्ञाति मासोधि मासः सुखं स्याद्दिसं ज्ञाति मासः क्षया

ल्यः कदाचित् ॥ श्रूयः कार्तिकादित्रये नान्यतः स्यात्तदा वर्ष मध्येऽपि मासद्वयं च ॥ ६१ ॥  
 गतोऽयं द्विने दैमिने प्राक् काले तिथी यो भविष्यत् यथा ग्राह्य सूर्यः ॥ गजाद्विने भू-  
 मिस्तथा प्रायशो यं कुर्वेदं वर्षः क्वचिद्भेदं कुंभिश्च ॥ ६२ ॥ हि वेदि कुलसंभूत सस्य क-  
 तसंग्रहे ॥ शिरो मलो समाप्ते वा प्रथमेयं प्रभां शुभा ॥ ६३ ॥ इति श्री संग्रह शिरो मलोऽंश-  
 यनादि प्रकाशनम्प्रथम प्रभा ॥ ९ ॥ अथ तिथिप्रकरणम् ॥ प्रति पञ्च द्वितीया च तृतीया  
 तदनंतरम् ॥ चतुर्थी पंचमी षष्ठी सप्तमी चाष्टमी ततः ॥ १ ॥ नवमी दशमी चैकादशी द्वि-  
 दशी ततः ॥ त्रयोदशी ततो ज्ञेया ततः प्रेक्ता चतुर्दशी ॥ २ ॥ पौर्णिमा शुक्ल पक्षे तु कृत्स्न  
 पक्षे त्वमास्त्यता ॥ अथ तिथि पतयः ॥ तिथी प्रावद्भिर्को गोरी गणेशः हि सुहो रविः ॥ ३ ॥  
 ॥ शिवो दुर्गातः को विश्वे हरिः कामः शिवः प्रशशी ॥ अमावास्या तिथौ रीधराः पितरः परी-  
 कीर्त्तिताः ॥ ४ ॥ नन्दा भद्रा जया ऋक्ता पूर्णा पितृ प्रति पन्मुखाः ॥ वरुणाद्याश्च क्रमाद्देवा  
 स्तथैवैकादशी मुखः ॥ ५ ॥ असन्मध्यं शुभं शुक्ले तिथीनां पंचकं क्रमात् ॥ कृत्स्नपक्षे

प्रभुसंमध्यं नैष्टु द्वेयं शुभे सदा ॥ ६ ॥ अथ नवरादिषु कृत्यम् ॥ गीतं नृत्यं तथा क्षत्रं चित्रोत्सव  
 गृहादिकं ॥ वस्त्रालंकारं शिल्पादि नन्दा स्वेत च्छुभं स्मृतम् ॥ ७ ॥ विवाहो वनयात्रा च  
 भूषा शिल्प्य कलादिकम् ॥ गजा प्रवरथ कृत्यं च भद्रातिथिषु सिद्धिदम् ॥ ८ ॥ सैन्य  
 संग्राम शस्त्रादि यात्रोत्सव गृहादिकम् ॥ भेषज्यं चैव वारिण्यं सिद्धे त्सर्वज्ञया सुच ॥  
 ९ ॥ शत्रूणां वध वंधादि विय शस्त्राग्नि योजनम् ॥ कर्तव्यं तच्च ऋक्तायां नैव सन्मं  
 गलं क्वचित् ॥ १० ॥ व्रत बंध विवाहादि यात्रा राजा भिषे च नम् ॥ प्राति कं योद्धि कं  
 कर्म सिद्धे त्स्वर्गं स्वमांविना ॥ ११ ॥ विवाहो वनयात्रा च प्रातिष्ठा वास्तु कर्म च ॥  
 कुर्व्यां चोलादिकं कृत्स्नं प्रकुले प्रति पत्तिथो ॥ १२ ॥ राज्य कार्य्यं विवाहादि मंगलं  
 वास्तु भूयणं ॥ व्रत वंधं प्रतिष्ठा च द्वितीयायां तिथौ स्मृताः ॥ १३ ॥ अन्न प्राशन  
 सं गीत विद्या शरीरं शिल्प्य कं ॥ द्वितीयां प्रोक्तं मखिलं तृतीयायां प्रप्रस्यते ॥ १४ ॥  
 शत्रूणां वध वंधादि विय शस्त्रादि योजनं ॥ कर्तव्यं तच्च पुण्यां तु नैव सन्मंगलं क्वचित् ॥ १०



॥ १५ ॥ शुभ कर्म्मणि सर्वाणि स्थिराणि च चरणि च ॥ ऋण दानं विनायाति सुसि-  
द्धिं पंचमी तिथौ ॥ १६ ॥ दंत काष्ठंगमं म्यंगे त्यक्वा यो पितृव्य कर्म्म च ॥ रणे वास्तु वि-  
भूषाद्यं वक्ष्या सिद्ध्यति मंगलम् ॥ १७ ॥ गज कृत्यं विवाहादि संगीतं चरत्र भूषणम् ॥  
यात्रा प्रवेश सङ्गमाः सिध्येच्च सप्तमी तिथौ ॥ १८ ॥ नृत्यं स्त्री रत्न भूषादि मंगलम् ॥ श-  
स्त्र धारणम् ॥ वास्तु पितृव्यादिकं कार्यं मष्टम्यां सिद्धि माप्नुयात् ॥ १९ ॥ विद्युत्त-  
कल होद्युत मद्य माखेटकस्तथा ॥ विद्याग्नि प्राल्म कृत्यं चनवम्यां सिद्धि माप्नुयात्  
॥ २० ॥ विवाहादि शुभं सर्वं भूषा यात्रा प्रवेशानम् ॥ गजा प्रव न्द्रप कार्य्याणि सिद्ध-  
न्ति दशमी तिथौ ॥ २१ ॥ व्रतबंधो विवाहादि रणविश्लेषं सुरोत्सवः ॥ गमा गमौ चि-  
भूयादि एका दस्यां प्रशस्यते ॥ २२ ॥ चरस्थिराणि कार्य्याणि विवाह व्रत बंधनम्  
॥ द्वादश्यां तत्प्रकुर्वीत तैलं यात्रादिकं त्यजेत् ॥ २३ ॥ यात्रा प्रवेश सङ्गम वस्त्रभूष-  
ण मंगलम् ॥ व्रतबंधं विनान्यत्र शुभा शुक्ल त्रयोदशी ॥ २४ ॥ विष बंधाग्नि प्राञ्चा ॥ २५

शि रो प्रकुप्यादुय कर्म च ॥ चतुर्दश्या शुभं कर्म क्षौर यात्रां च वर्जयेत् ॥ २५ ॥ मा-  
 गल्यं श्रूयणं श्रित्यं प्रतिश्रायज्ञं कर्म च ॥ संगामो गृह कृत्यं च पौर्णमास्यां प्रसिद्धानि  
 ॥ २६ ॥ अग्न्या धानं महादानं पितृ यात्रादिकं च यत् ॥ प्रोक्तं कर्म प्रकर्तव्यं दर्शना-  
 न्या शुभा क्रिया ॥ २७ ॥ इति तिथीनां कृत्यम् ॥ सामान्यतः प्रशुभास्तिथयः ॥ द्वितीया पं-  
 चमी चैव तृतीया सप्तमी तथा ॥ दशम्येकादशी कृष्णा प्रतिपच्च त्रयोदशी ॥ २८ ॥ पू-  
 र्णिमा स्तिथयो ध्येताः सर्वे कार्ये शुभा वहाः ॥ अन्यास्तु तिथयो नेष्टाः प्रोक्तं कृत्ये शु-  
 भमताः ॥ २९ ॥ कृष्णा चतुर्दशी शुक्ला प्रतिपद्दर्श संज्ञका ॥ एताः शुभेषु कार्ये-  
 शु वर्जनीयाः प्रयत्नतः ॥ ३० ॥ चतुर्थी धरसर्द्धवस्त्वेकं ह्येकादशी १२ प्राक् १४  
 संमिताः ॥ तिथयः पक्षरंध्राख्या स्याज्या त्सर्वेषु कर्मसु ॥ ३१ ॥ एतास्तु वसु ८ नंद-  
 देन्द्र १४ तत्त्व २४ दिक् १० प्रारं ५ संमिताः ॥ हेयास्त्युरादि माना इयः क्रमा च्छेद्यास्तु  
 योगभनाः ॥ ३२ ॥ अथ दंत धावने निषिद्धाः ॥ अमायां च तथा वक्ष्यामेकादश्यां रेवर्दिने

प्रति पशु दिते ऽर्के च न कुर्यादित धावनम् ॥ ३३ ॥ ग्रामलक स्नाने निषेधः ॥ दशमी मप्तमी र-  
 श्च द्वितीया नवमी दिने ॥ त्रयोदश्या तथा नैव स्नाया दामल कैर्नरः ॥ ३४ ॥ अथोक्त का-  
 र्ये निषिद्धाः ॥ क्षौरे चतुर्दशी चैव षष्ठी तैले पले ऽष्टमी ॥ दशौ स्त्री सेवने जह्या ज्जर्सी नोद्दी-  
 र्घ जी वितम् ॥ ३५ ॥ अथ प्रति पशुदियुनिषिद्धाः ॥ त्यजेत्प्रति पशुदया सुकृष्णोऽङ्गं दहत्य फल-  
 म् ॥ लवनं मूलकं चैव पनसं तैले सेवनम् ॥ ३६ ॥ धात्री फलं नारिकेलं फलतुल्याः पले-  
 लकम् ॥ निःपावान्नं मसूरं श्वदन्ताकं माक्षिकं क्रमात् ॥ ३७ ॥ अमायां सुरतं चैव पूरि-  
 सायां सुरेदरम् ॥ अमायां विशेष योग माहा पर्यर्कं शातातपः ॥ ३८ ॥ अमावास्या भवेद्द्वारे  
 यदा भूमि सुतस्य वै ॥ जाह्नवी स्नान मात्रेण गो सहस्र फलं लभेत् ॥ ३९ ॥ अमावासो म-  
 वारेण रवि वारेण सप्तमी ॥ चतुर्थी भौम वारेण विषुवत्सदृशं फलम् ॥ सिनी वाली कुहू वापि  
 यदि सोम दिने भवेत् ॥ ४० ॥ गो सहस्र फलं दद्यात्स्नानं चेन्मोनि नाच्छतम् ॥ अत्रैवासायां  
 व्यती पात योगः ॥ अवराणां धनिष्ठा द्वा नाग देवैर्न मस्तकैः ॥ यद्यमा रवि वारेण व्यती

पातः स उच्यते ॥ ४१ ॥ अथाहोदययोगः ॥ माघे मासि रवौ दर्श व्यती पाते अवाप्तिवते ॥ अर्द्धो-  
 दया मिथो योगः सूर्य्य पर्व शताधिकः ॥ ४२ ॥ अथ मुक्तो दिवा योगः किं चिन्मूनं महोद-  
 यः ॥ अथ गजच्छाया ॥ पितृ पक्षे त्रयोदश्यां हस्ते ऽर्के ऽङ्गे मघां गते ॥ गजच्छाया मिथो यो-  
 गः आर्द्धे ऽक्षय्य फल प्रदः ॥ ४३ ॥ अथ कपिला वक्ष्ये ॥ आश्विने कलष पक्षे च वक्ष्या भौमो-  
 ऽथ रोहिणी ॥ व्यती पात स्तदा वक्ष्ये कपिला नंत पुरयदा ॥ ४४ ॥ अथ व्यती पातः ॥  
 पंचानन स्यौ गुरु भूमि पुत्रौ मेघे रवि स्याद्यदि शुक्ल पक्षे ॥ मासाभिधाना करभेण युक्ता  
 तिथिर्व्यती पात इतीह योगः ॥ ४५ ॥ अथ गोविंद द्वादशी योगः ॥ यदा चाप्ये जीवो भवति घ-  
 टराशौ दिनसणिस्तथा तारा नाथ स्व भवन गतः ॥ फाल्गुने श्रिते यदा र्के द्वादस्या म-  
 दिति भयुतः शोभनयुतस्तदा गोविंदरात्र्य हरि दिव समस्मिन्नुवितले ॥ ४६ ॥ अ-  
 थ वारुणी योगः ॥ वारुणेन समायुक्ता मघौ कलषा त्रयोदर्श गंगायां यदि लभ्येत सूर्य्य  
 ग्रह धृतैस्समा ॥ ४७ ॥ शनिवार समा युक्ता सा महाचारुणी स्मृता ॥ शुभ योग समा

युक्ता शनौ घात भिषा यदि ॥ ४८ ॥ महा महेति विख्याता त्रिकोटि कुल मुद्धरेत् ॥ अ-  
 थ प्रसंगाद्यु गादि मन्वादि तिथयः ॥ नवमी कार्तिके शुक्ला वैशाखे च तृतीयका ॥ त्रयोद-  
 प्याश्वेने कृष्णा तथा दर्शश्च फाल्गुणे ॥ ४९ ॥ कार्तिके शुक्लानां रमे स्त्रे तारं भस्तु-  
 माधवे ॥ फाल्गुणे द्वापरां रमः चारं भश्चाश्विने कलेः ॥ ५० ॥ क्रमाच्छं मुहूर्तिर्व-  
 धाः पितरस्तत्र देवताः ॥ तिलान् लवणं सौवर्णं गंधं दद्याद्युगादिषु ॥ ५१ ॥ एता यु-  
 गा द्यः प्रुण्याः शुभे वज्र्या मनीषिभिः ॥ तत्राय्य ह्य तृतीयो तु सर्वं कार्यं यु प्रोभना  
 ॥ ५२ ॥ आश्विने नवमी शुक्ला माघ मासे तु सप्तमी ॥ भाद्रे चैत्रे तृतीया च कार्तिके  
 द्वादशी तथा ॥ ५३ ॥ आषाढे दशमी प्रोक्ता ज्येष्ठ मासे तु पौर्णिमा ॥ आषाढी फाल्गु-  
 नी चैत्री कार्तिकी पौर्णिमा तथा ॥ ५४ ॥ भाद्रे कृष्णाष्टमी प्रोक्ता पौषे त्वका दशी सिता  
 ॥ अमा भाद्र पदे मासि मन्वाद्या तिथयः स्त्विमाः ॥ ५५ ॥ अत्र मासास्तुराकांताः वि-  
 ज्ञेयाः परि कीर्तिताः ॥ हिवे दि कुल संभूत संस्कृत संग्रहे ॥ शिरो मणौ समाक्षेया -

द्वितीयेयं प्रभा शुभा ॥ इति श्री संग्रह शिरो मणौ तिथि कथनं नाम द्वितीया प्रभा ॥  
 २ ॥ अथवारप्रकरणम् ॥ आदित्य प्रचंद्र मा भौमो बुध प्रचाथ इह स्मतिः ॥ शुक्र प्रग्र-  
 ने प्रचर प्रचेते वासराः परिकीर्तिताः ॥ १ ॥ शिवो दुर्गा शुभो विष्णु ब्रह्मेन्द्र काल सं-  
 ज्ञकाः ॥ सूर्यो दीनां क्रमा देते स्वामिनः परिकीर्तिताः ॥ २ ॥ गुरु प्रचंद्रो बुधः शुक्रः  
 शुभा वाराः शुभे स्मृताः ॥ कूरास्तु क्रूर कृत्येषु ग्रहणा भौमाक्षे सूर्यजाः ॥ ३ ॥ सूर्य-  
 प्रचण्डस्थिर प्रचंद्रो भौम प्रचो गे बुध स्समः ॥ लघु जीवो मृदुः शुक्रः प्रगि स्तीक्ष्णा  
 स्समीरितः ॥ ४ ॥ अथवारकृत्यम् ॥ राज्या भिषे को त्सव यान सेवा गो बन्धि संज्ञो व-  
 धप्रश्न कर्म्म ॥ सुवर्ष तासो रिक् चर्म काष्ठ संग्राम पर्यादि रवौ विद् ध्यात् ॥ ५  
 ॥ प्रांखा ज्ञ मुक्ता रजते स्तु भोज्य स्त्री वृक्ष कक्ष्यां बु विभूयणाद्याः ॥ गौतं क्रतु क्षी-  
 र विकार प्रंगी पुष्याम्बरा रंभला मिन्दु वार ॥ ६ ॥ भेदा नृतं स्तेय विवाग्नि शस्त्र  
 वध्या भिधाना ह वश लब्ध दं भान् ॥ सेना नि वैशा कर धातु हेम प्रचाल रत्नानि कुं

संश्रिजे विदध्यात् ॥ ७ ॥ नैऋत्यपुर्याध्ययनं कलाधूच शिल्प्यादि सेवा लिपिलेख-  
 नानि ॥ धातुक्रियाकांचनयुक्तिं संधिव्यायामवादाश्च बुधे विधेयाः ॥ ८ ॥ धर्म-  
 क्रिया पौष्टिक यज्ञ विद्या मांगल्य हेमां वरवे प्रमयात्राः ॥ रथाश्व भैषज्य विभूषणा-  
 दि कार्थ्यं विदध्यात्सुरमंत्रिवारे ॥ ९ ॥ स्त्री गीत प्रथ्या मणिरत्न गंधवस्त्रोत्सवाले-  
 करणादि कर्म ॥ भूषणयोगो कोष्प कृषि क्रियाश्च सिद्धांति शुक्रस्य दिने समस्ताः  
 ॥ १० ॥ लोहा प्रससी सत्र पुष्टास्त्र दाण पापानृतस्ते यवियार्क विद्यं ॥ गृह प्रवेश द्विपवं-  
 ध दीक्षा स्थिरं च कर्मांकं सुतेहि कुर्यात् ॥ ११ ॥ पतंग सूनो दिव साधिपत्यनि प्रा-  
 प्य हृश्चैव तु तिग्म भानोः ॥ एतत्र हूयं चैक दिने च सेसे प्रेष ग्रहाणा मुदय प्रवृत्तिः  
 ॥ १२ ॥ अथ दोषा दोष माह ॥ नवार दोषाः प्रभवंति एतौ देवे ज्य देत्येज्य दिवा करणा-  
 न् ॥ दिवा प्राणं कार्कज भूसुतानां सर्वत्र निंचो बुधवार दोषः ॥ १३ ॥ अथ तैलामगे-  
 सुभा शुभं ॥ रवि स्तापं कांतिं वितरति प्राणी भूमि तनयो मृतिं लक्ष्मी सौम्यः सुरपति

गुरुर्विन्नहरणाय ॥ विपत्तिं दैत्यानां गुरु रत्निलभोगानु गमनं नृणां तैला भ्यंगात्स पदिकुरुते  
 १८ सूर्यतनयः ॥ १४ ॥ रवौ भौमे व्यतीपाते संक्रांतौ वैधृतावपि ॥ यक्षुष्टम्यो प्रच विद्यांच  
 तैला भ्यंगो न पवर्तु ॥ १५ ॥ अथ दोषापवादः ॥ तैलाभ्यंगे न दोषश्च प्रत्यहं क्रियते चयः ॥  
 उत्सवे वात्त रोगो वा यंत्रवाचनि केऽपि वा ॥ १६ ॥ भागवर्गे गोमयं भौमे सहं पूर्वो हृहस्पती ॥  
 १७ ॥ रवौ पुष्यं निधायाथ तैला भ्यंगो न दोष दत्त ॥ मंत्रितं कथितं तैलं सार्वपं पुष्यवा सि-  
 तम् ॥ द्रव्यां तरयुतं वापि नैव दुष्येत्कदाचन ॥ १८ ॥ अथ तात्कालिक वार कालार्थे होरा ॥ स्त-  
 १९ ॥ मध्यरेखातो योजनिः पाद चर्जितैः ॥ तावत्पलैर्बुधो नास्त्युत्तिथयः पर पूर्वतः ॥  
 यात् ॥ २० ॥ वारा रम्भाद्रता नाड्यो द्विजाः पञ्च विभाजिताः ॥ ऊर्ध्वं आधः क्रमा द्धारमवेषा स्तपनोद-  
 वोसरे प्रणवितः क्रमात् ॥ २१ ॥ रविशुक्रौ बुधश्चंद्र प्रश्नानि जीव स्ततः कुजः ॥ सते  
 क्रमानु विक्षयाः काला होरे पूर्वराग्रहाः ॥ २२ ॥ यस्मिन्वारो तु यत्कृत्यं पूर्वाचार्यै रुह्य

१८ सूर्यतनयः ॥ १४ ॥ रवौ भौमे व्यतीपाते संक्रांतौ वैधृतावपि ॥ यक्षुष्टम्यो प्रच विद्यांच



द्रुतम् ॥ तत्कृत्यं तस्य खेटस्य द्दोशयां खलु सिद्ध्यति ॥ २३ ॥ खेटस्यो पचयस्यस्य चोरे  
 कार्यं शुभावहम् ॥ तदेवापचयस्य स्नायत्वेनापि न सिद्ध्यति ॥ २४ ॥ द्विवेदिकुलसंभू-  
 तसस्य कृत संयुहे ॥ शिरोमणौ समोक्षे चातृतीयं प्रभा शुभा ॥ २५ ॥ इति श्री संग्रह-  
 शिरोमणौ चारकथनं नाम तृतीया प्रभा ॥ ३ ॥ अथ नक्षत्रप्रकरणम् ॥ अश्विनी भरणी  
 चैव कुत्तिका रोहिणी मृगः ॥ आर्द्रपुनर्वसुः पुष्यस्ततः श्लेषा मघा ततः ॥ १ ॥ पूर्वाफाल्गु-  
 णिका तस्मादुत्तरा फाल्गुणी ततः ॥ हस्तचित्रा तथा स्वाती विष्णवा तदनंतरम् ॥ २ ॥  
 अनुराधा ततो ज्येष्ठा ततो मूलं निगद्यते ॥ पूर्वाषाढोत्तराषाढस्त्वभिजित् अवरास्ततः ॥  
 ३ ॥ धनिष्ठा प्रतताराख्यं पूर्व भाद्र पश्चा ततः ॥ उत्तर भाद्र पद प्रचैवैवत्येतानि भानि च  
 ॥ ४ ॥ अथ नक्षत्रेणः ॥ अश्विनी भरणी चमदेवता ॥ आग्नेयी कृत्तिका प्रोक्ता  
 विधाता रोहिणी प्रवरः ॥ ५ ॥ मृगश्रिर्षि प्रवरश्चंद्रस्तथैवार्द्र प्रवरः शिवः ॥ अदितिस्तु  
 पुनर्वसोः पतिः पुष्यस्य वाक्यतिः ॥ ६ ॥ श्लेषाधिपतिस्सर्पो मघेषुः पितरस्मृतः ॥ १४

किं भगश्च पूर्वा फाल्गुन्याः ऊफायाः पतिरर्थ्यमाः ॥ ७ ॥ हस्तस्याधिपतिस्सूर्यस्तथा  
 चित्राभिधस्यच ॥ स्वातेश्च देवतं बासु विशाखेद्राग्नि देवतम् ॥ ८ ॥ अनुराधे प्रवरे  
 मित्रो ज्येष्ठाया बुद्ध उच्यते ॥ मूलस्य देवतं रक्षः पूर्वाषाढे प्रवरे जलम् ॥ ९ ॥ आषाढादे-  
 वतं विश्वे विधि प्रचाभिजितोऽधिपः ॥ अवराणाधिपतिर्विशुधनिष्ठा वसुदेवता ॥ १० ॥  
 चरुणा प्रशत तारायाः पूमे प्राः कथितोऽजपात् ॥ अहिर्बुध्न्यस्तथो भायाः पूषोक्तो रेव-  
 ती पतिः ॥ ११ ॥ अथ सामान्यतश्शुभाशुभनक्षत्राणि ॥ रोहिण्यश्विनमृगाः पुष्यो हस्तचि-  
 त्तोत्तराश्रयम् ॥ रेवती अवराणाश्चैव धनिष्ठा च पुनर्वसुः ॥ १२ ॥ अनुराधा तथा स्वाती शु-  
 भान्येतानि भानि च ॥ सर्वाणि शुभकार्याणि सिद्धे देतेषु चोद्भु ॥ १३ ॥ पूर्वार्द्रय  
 विशाखा च ज्येष्ठा र्द्र्य मूल मेव च ॥ शत ताराभिधेय्वेव कृत्यं साधारणं स्मृतम् ॥ १४  
 ॥ अरणी कृत्तिका चैव मघा प्रलेषा तथैव च ॥ अतुंगं दुष्ट कार्यं च प्रोक्तं मेघु विधीयते  
 ॥ १५ ॥ यात्रौ षध विभूषाश्च विद्याशिल्य कलादिकम् ॥ गजकार्यं विवाहं गं मांग-

ल्यं चाश्विने चरेत् ॥ १६ ॥ साहसं दारुणं शत्रुनाशनं विषबन्धनम् ॥ भरण्या कूपक-  
 व्याद्यमग्निं दान्हादिकं चरेत् ॥ १७ ॥ कृत्ति कायां सप्त कुर्व्यात्साह साग्निं परिग्रहम्  
 रियोर्वध विवादंच लोहं मरणोश्च कर्मसु ॥ १८ ॥ रोहिण्यां मष्टकां कुर्व्याद्विवाहं धनं  
 संप्रहम् ॥ आसाव सअनां कृत्यं मागल्यं भूषणादिकम् ॥ १९ ॥ विवाहो वनजायाणां  
 मृगाशीर्धेच शोभनम् ॥ सुरसंस्थापनं वास्तु क्षेत्रां रमादिसिद्धति ॥ २० ॥ आर्द्रायां  
 निग्रहं कुर्व्यां हूधनं छेदनं वधम् ॥ विषसंधान विद्यादि दारणोच्चादने तथा ॥ २१ ॥  
 प्रगतिं कं पौष्टिकं यात्रा भूषा वास्तु व्रतादिकम् ॥ बाहनं कृषि विद्याच पुनर्वसौ विधीय-  
 ते ॥ २२ ॥ चरस्थिगण कायार्थिणि प्रगतिं कं पौष्टि कोत्सवम् ॥ विवाहं वर्जयित्वान्यत्स-  
 मस्तं पुष्यभे चरेत् ॥ २३ ॥ ज्येष्ठायां चारि पौर्णमासीं चारि ज्येष्ठां साहसं तथा ॥ विषसर्पा-  
 दि कृत्यं च स्तेयादिकमुपाचरेत् ॥ २४ ॥ मघायां पैतृकं कार्यं तथा शस्त्रादि रोपणम् ॥  
 जलाभयं विवाहंच कुर्व्यां शुद्धादि साहसम् ॥ २५ ॥ बंधनं दारुणं शिल्पं कापर्धे ररा

कृतानि शुद्धे ॥ ४४ ॥ गृहेण विदोष्य शुभान्वितोऽपि विरुद्ध तारोऽपि विलोम गोपि ॥  
 करोत्यवश्यं सकलार्थसिद्धिं विहाय पाणि गृहाण नुपुष्यः ॥ ४५ ॥ अथ नक्षत्राणां  
 स्वस्त्वम् ॥ तुरगमुख सदृशं योनिरूपं ध्रुवमक्ष्णं प्राकट सममथैण स्योत्र संगे ननु-  
 ल्यम् ॥ मणि गृह शर चक्रं भाति प्रणलोपमम् प्रपन्न सदृशं मन्यञ्चात्र पर्येक रू-  
 पम् ॥ ४६ ॥ हस्ताकारमतश्च मीति कसमंचान्यत् प्रवालोपमं धि श्नं तोरणव-  
 त्स्थितं चलिनिभं सत्कुण्डलाभं परम् ॥ कुथ्यत्केशरिवि क्रमेण सदृशं प्राच्या समा-  
 नं परंचान्य दंति विला सबत्स्थित मतः त्रैकोणकं च्यक्तिमतम् ॥ ४७ ॥ त्रिविक्रमा-  
 भं च सदंग रूपं दृढं ततो न्यद्वलय द्वाभं ॥ पर्येक रूपं मुरजानु कारी व्यत्येव मप्रव्या-  
 दि च चक्र रूपम् ॥ ४८ ॥ अथ नक्षत्राणां संख्या ॥ वन्दि त्रिऋत्विषु गुणेषु दृष्टादि  
 भूत वाणा श्विनेत्र शर भूकु युगाब्धि रामाः ॥ रुद्राभि राम गुण वेद भूत द्वि युगम  
 दंता बुधै निर्गदिताः क्रम शोभ ताराः ॥ ४९ ॥ अथ नक्षत्राणां संख्या ॥ भवं स्थिर

संक्षिप्तमिति ख्यातं रोहिणी चोत्तरात्रयं ॥ तत्रा एम मत्तग्रामा भित्ते काद्याः स्थिर क्रियाः  
 २५ ॥ ५० ॥ मृगश्रिचत्रा नुराधाचरेवती मृदु मैत्रकम् ॥ तत्र गीतं रतं कुर्व्यादृषा मांग-  
 ल्यं मंवरम् ॥ ५१ ॥ पुष्या श्रिवन्य भिजिहस्तं लघुष्विप्र सुषाहतम् ॥ तत्र भू-  
 बध द्वानं शिल्प कंच तथा रतिः ॥ ५२ ॥ ज्येष्ठा र्द्रा मूल मण्डले पाती क्षां वारुणा सु-  
 च्यते ॥ तत्र भेदो वधो वंधो मंत्र भूतादि साधनम् ॥ ५३ ॥ अवर्णादि त्रिभंखातीषु  
 नर्वसु चरंचलम् ॥ तस्मिन्वाजिगजा रमा कर मोक्ष गमा दिकम् ॥ ५४ ॥ भरणी  
 च मघा पूर्वा क्रूर सुगमसुषाहतम् ॥ विष शस्त्राग्नि घातादि तत्रोच्छेद विनाशन-  
 म् ॥ ५५ ॥ विषाखा कृतिका प्राक्सेर्मिभ्रं साधारणं स्मृतम् ॥ नीलोत्तर्गाग्निक्ता-  
 र्य्यंच मिभ्रं तत्र च सिद्धाति ॥ ५६ ॥ अथ नक्षत्र सुखतत्कृत्यंच ॥ मूला प्लेवा मघा पूर्वा वि-  
 शाखा भरणी ह्वयम् ॥ अधोमुखानि भान्यत्र कर्म सिद्धे दधो मुखम् ॥ ५७ ॥ एषु  
 वापी तडा गादि कूप भूमि तरणा निच ॥ देवा गारस्य खननं निधान खननं तथा ॥

कर्मचिं ॥ पूर्वा फाल्गुनिकायां तु चित्रकर्मोद्दि साधयेत् ॥ ३६ ॥ विवाहो ब्रतबंधप्रवस्थि-  
 रंकर्मविभूषणं ॥ उत्तरा फाल्गुनि मे स्याद्दुहारश्च प्रवेशने ॥ ३७ ॥ यात्रा विद्या विवाहा-  
 दिविभूषां वरसौवधम् ॥ गृहहारं प्रप्रतिष्ठां च विदुष्याद्भूतभेदं ॥ ३८ ॥ ग्रंथिकं  
 प्रौढिकं शिल्पं चालुः भूषां वरादिकम् ॥ ब्रतबंधं स्थिरं कार्यं चित्राया कथिकर्मच ॥  
 ३९ ॥ सुरसंघविधानं च संगलां वरभूषणम् ॥ बीजा रोपं च संग्रहं शास्त्राद्यं स्वातिभेदे-  
 रित् ॥ ४० ॥ वास्तु संग्रहणं भूषा शिल्पं चित्रप्रहारकम् ॥ रथकार्यं विभूषायां कुर्व्यवि-  
 षथ सेवनम् ॥ ४१ ॥ पाणिग्रहं ब्रतं यात्रांगजाप्रवां वरभूषणम् ॥ चरं स्थिरं शुभं कुर्व्या-  
 दनुराधाभिधेऽरिवलं ॥ रिहणं हनने भेदे प्रहारे लोहकर्मणि ॥ शिल्पे खेह विधौ  
 चित्रे ज्येष्ठा श्रेष्ठा समीरिता ॥ मूलभे मवनारुन संग्रामाः संधि विग्रहे ॥ वापी कूप तडागा-  
 द्याविधेयाः कृषयोऽपि च ॥ ४२ ॥ वापी कूपादिकं कृत्यं विग्रहं बंध मोक्षणम् ॥ ब्रू-  
 रकार्यं दुम क्षेपं पूर्वाषाढाभिधे चरेत् ॥ ४३ ॥ स्थापनं मंडलं वास्तुनिर्वेशश्च प्र-३२

वेदानम् ॥ वीजा रोपे विभूषाद्यं उत्तरा याद मे चरेत् ॥ ३९ ॥ देवता स्थापनं गेहं यो-  
 स्थिकं शिल्प कर्मच ॥ मांगल्या पनयं चित्रं प्रणति कं अवरणे चरेत् ॥ ४० ॥ चोलेचो-  
 पनये युद्धे राजा प्रबोद्धादि कर्मणि ॥ गेहोद्यान विभूषासु धनिष्ठा कथितोत्तमा ॥ ४१ ॥  
 च्छत मे चरेत् ॥ ४२ ॥ पूर्वभाद्र पदे शिल्पं साहसं छेदनं कविः ॥ विक्रयं महिषो  
 द्धाराणां जल यंत्रादिकं सुभम् ॥ ४३ ॥ विवाहो व्रत वंधनं देवता स्थापनं ग्रहम् ॥  
 वास्तु कर्माभिधानं च उत्तर भाद्र पदे भवेत् ॥ ४४ ॥ गेहं देवालयं भूषा विवाहं द्वे-  
 तं बंधनम् ॥ जल स्थानादिकं कार्यं रेवत्यां सिद्धि माप्नुयात् ॥ ४५ ॥ अथ पुण्य प्रशं-  
 सा ॥ पर कष्टं निखिलं निहंति युज्यो न खलु निहंति परंस्तु पुण्य द्रोणे ॥ अथ असुतक-  
 रेऽथ मे पि पुण्ये विहितं सृपैति सर्वेव कर्म सिद्धिम् ॥ ४६ ॥ सिंहो यथा सर्वं चतुर्व्य-  
 दानां तथैव पुण्यो बल वानुद्धनां ॥ चंद्रे विरुद्धे पृथग् गोचरेऽपि सिध्यति कार्याणि ॥

कृतानि शुष्ये ॥ ४४ ॥ गृहेण चिद्विष्य शुभान्वितोऽपि विरुद्ध तारोऽपि विलोम गोपि ॥  
 करोत्यवश्यं सकलार्थसिद्धिं विहाय पाणिग्रहाण न्युपुष्यः ॥ ४५ ॥ अथ नक्षत्राणां  
 स्वस्वम् ॥ तुरगमुखसदृशं योनिरूपं क्षुराभम् प्राकट समसथैण स्यात्तमंगो न तु-  
 ल्यम् ॥ मणिग्रहः शरचक्रं भाति प्रणलोपमम् प्रापन सदृशं मन्यच्चान्न पर्येक रू-  
 पम् ॥ ४६ ॥ हस्ताकारमतश्च मीनोक्ति कसमं चान्यत् प्रवालोपमं धिष्णं तोरणव-  
 त्स्थितं वलिनिभं सत्कुण्डलाभं परम् ॥ कुथत्केशरिविक्रमेण सदृशं प्रख्यासमा-  
 नं परं चान्यदंति विलासवत्स्थितमतः त्रैकोणकं च क्तिमतम् ॥ ४७ ॥ त्रिविक्रमा-  
 भं च सदृशं रूपं दत्तं ततो न्यद्वलयद्वयाभं ॥ यथैक रूपं मुरजानु कारीयत्थैव मश्या-  
 देवचक्ररूपम् ॥ ४८ ॥ अथ नक्षत्राणां संख्या ॥ वन्दित्रिंशत्त्रिंशद्गुरोर्गुणं दत्तारिणं  
 भूतवाणां प्रिवनेत्रशरभूकुयुगाद्धिरामाः ॥ रुद्राद्धिरामगुणं वेदप्रतद्विभुस-  
 र्गता बुधैर्निगदिताः क्रमशोऽभताराः ॥ ४९ ॥ अथ नक्षत्राणां संख्या ॥ भवं स्थिर



मिति ख्यातं रोहिणी चोत्तरात्रये ॥ तत्रा एव मृदुगमा यिवे काद्याः स्थिरक्रियाः  
 ॥ ५० ॥ मृगपिचित्रा नुराधाचरेवती मृदु मैत्रकाक्ष ॥ तत्र गीतं रतं कुर्व्याद्भूषा मांग-  
 ल्य संवरम् ॥ ५१ ॥ पुष्या शिवन्यभिजिहस्तं लघुक्षिप्रशुक्लहतम् ॥ तत्र भूषो  
 षध ज्ञानं धिल्य कंच तथा रतिः ॥ ५२ ॥ ज्येष्ठाद्रि मूल मन्त्रे प्राती क्षणं चारुणभु-  
 च्यते ॥ तत्र भेषो वधो वंधो मंत्र भूतादि साधनम् ॥ ५३ ॥ अवर्णादि त्रिभंखातीषु  
 नर्वसु चरंचलम् ॥ तस्मिन्वाजिगजा रमा कर मोक्षगमा दिकम् ॥ ५४ ॥ भरणी  
 च मघा पूर्वा क्रूर सुगमशुक्लहतम् ॥ विष शरत्प्राग्नि घातादि तत्रोच्छेद विनाशन-  
 म् ॥ ५५ ॥ विशाखा कृत्तिका प्राक्क्षैर्भिर्मिश्रं साधारणं स्थितम् ॥ नीलात्सर्गाधिक्या-  
 र्थं च मिश्रं तत्र च सिद्ध्यति ॥ ५६ ॥ अथ नक्षत्र युतं तत्त्वतः ॥ मूला प्लेया मघा पूर्वा वि-  
 शाखा भरणी हयम् ॥ अधोमुखानि भान्यत्र कर्म सिद्धे दधो मुखम् ॥ ५७ ॥ एषु  
 वापी तडा गादि कूपभूमि तरण निच ॥ सेवा गारस्य खननं निधान खननं तथा ॥

मं. ॥ ५८ ॥ गणितं ज्योतिषा रंभखनी विल प्रवेशनम् ॥ कुर्व्यो न्यधो गता न्येव काव्या-  
 र्दं लि ट्वम ध्वज ॥ ५९ ॥ रोहिण्या द्वा तथा पुर्व्यो धनिष्ठा चोत्तरा त्रयम् ॥ वारुणा  
 श्रवणा चैव नव चोर्द्ध सुखा स्तथा ॥ ६० ॥ प्रासादश्च ध्वज च्छत्राकार गृहतोर-  
 णाम् ॥ नृपा भिवेक प्पाराम उच्छ्राय स्तूर्द्ध्वक के ॥ ६१ ॥ रेवती चात्विनी चित्रा  
 स्वाती हस्त पुनर्वसू ॥ अनुराधा मृगो ज्येष्ठा एतास्त्रिथ्य ह्नुखाः स्मृताः ॥ ६२ ॥ गजे-  
 षा श्रव वली वर्द्धमनं सहिषस्य च ॥ वीजानां वसनं कुर्व्या इमना गमना दिकम् ॥  
 ६३ ॥ चक्र यंत्र रथा दीनां नौका दीनां प्रवाहनम् ॥ पार्श्वयो र्यानि कार्य्यणि कुर्व्या  
 देसु च तान्यपि ॥ ६४ ॥ अय पंचकम् ॥ धनिष्ठादौ त्रं पंच स्वर्क्षे ध्वेयु त्यजे बुधः ॥ याम्य  
 दिग्गमनं श्रव्या पूरणं ग्रहणी पनम् ॥ ६५ ॥ स्तंभो छाये प्रेत दाह तृण काष्ठादि संग्र-  
 हम् ॥ भवे त्यंच गुणं चात्र जातं लब्ध्वं मृता गतम् ॥ ६६ ॥ अथ नक्षत्राणा मंधादिमंज्ञा  
 ॥ अंधकं तदनु मं च लोचन म्माध्य लोचन मतः सुलोचनम् ॥ रोहिणी प्रभृति भं च तुल्यं सा

भिजिच्च गणायै तुनः पुनः ॥ ६७ ॥ अंधके पूर्वतो वस्तु मंदके दक्षिणे तथा ॥ पश्चिमे म-  
 ध्ये नेत्रे च उत्तरे तु सुलोचने ॥ ६८ ॥ अंधे सद्यः प्राप्यते वस्तु नष्टं कष्टात्प्राप्यं मंदने नेत्रे च  
 तद्धत् ॥ दूरात्प्राप्यं मध्यनेत्रे न लभ्यं न श्रोतव्यं नैव लभ्यं सुनेत्रे ॥ ६९ ॥ अथ गन्तव्य-  
 र्शनात् एविलग्नं ज्ञानं तत्राक्षौ नक्षत्रचारः ॥ पूर्वाषाढ द्वयं मूलाऽनु राधा द्भी मृगः करः ॥ ज्ये-  
 ष्ठा पुनर्वसु अश्लेषा तारा दक्षिणा गाः सदा ॥ ७० ॥ रोहिणी कृत्तिका प्लेयोरेवतो अवरात्रयम्  
 पुष्य अश्विना रात्रौ चैतानि मध्यचारीणि भानि हि ॥ ७१ ॥ अश्विनी द्वितयं स्वाती विशाखा  
 फाल्गुणी द्वयं ॥ मघा भाद्र पादा युगम मेता न्युत्तर गानि च ॥ ७२ ॥ अथ नभो मध्यभात् उदय  
 र्क्षं ज्ञानं ॥ विशाखा दित्रये पूर्वाषाढाऽप्लेवाद् भे यदा ॥ रोहिणी भनभौ मध्ये तदा स्या-  
 चाष्टमीद्वयः ॥ ७३ ॥ नवम क्षौद्रयो मूले मृगे चांवर मध्यगे ॥ श्रेष्ठे मध्यगते व्योम्नि स-  
 त्तम क्षौद्रयो भवेत् ॥ ७४ ॥ अथ रात्रिभात् मध्यभात् उदयभात् रात्रि ज्ञानम् ॥ रवि भाद-  
 स्त भं व्ये कं मध्य भं वाष्टहीन कम् ॥ उद्यमदतिथि १५ हीनं चानख २० द्यं न च भाजितम्

॥ ७५ ॥ लब्ध एति गन्ता नादृषः श्रेया लब्धा पलायिच ॥ जयत्वा ॥ अल्ल भाद कं भलिष्ठया २५  
 क्षीनं मध्य अतोष्ठभिः ॥ ७६ ॥ उवयर्क्ष निथावे कं विंशति प्रं ग्रहे भजित् ॥ लब्धा घण्ट्या  
 दि का द्वेया श्रेया रात्रि स्फुटा यवा ॥ ७७ ॥ सप्ताष्ट नवहीनं च स्वस्वीदय प्रना एतः ॥ म-  
 ध्यमेतु विश्वे पोचं क्षेयो युक्त्या विच क्षणैः ॥ ७८ ॥ अथ दिवा रात्रौ सुहृत्ताः ॥ शिवो हि हि-  
 त्र पितरौ च प्रभो विष्णु वेध सः ॥ विधि रिद्रो य प्रक्रा ग्नी रक्षोऽग्नी शौर्य मा भगः ॥ ७९  
 ॥ सुहृत्तैः प्रा द्भे प्रोक्ता दिवा पंच दशः क्रमात् ॥ सुहृत्ता रजनौ प्रभु रक्षै क चरणान्नयः  
 ॥ ८० ॥ दत्तात्यं न्वाविति जीवा विश्व कौ राष्ठा मारुतौ ॥ दिन मानस्य तिथ्यं श्रे रात्रे  
 रपि सुहृत्तैः ॥ ८१ ॥ नक्षत्र नाथ तुल्ये स्मिन् कार्यं कुर्यात्स्वभो दितं ॥ दिन म-  
 ध्ये ऽभिजित्वांक्षे दोय संघेद्यु सत्त्वपि ॥ सर्वं कुर्याच्छुभं कर्म याम्य दिग्गमने वि-  
 ना ॥ ८२ ॥ अथ रत्यादि वारेल्याज्य सुहृत्ताः ॥ प्रयमा भानु महारे चंद्रे हि विधि राक्षसौ  
 ॥ पित्राग्नी कुज वारिषु चंद्र पुत्रे तथा भिजित् ॥ ८३ ॥ पित्राक्षौ भृगो वारि राक्ष

|    |           |            |          |          |          |         |          |        |     |
|----|-----------|------------|----------|----------|----------|---------|----------|--------|-----|
| १  | नक्षत्रा  | उमा        | स्वामी   | नीर्यडमु | मदु      | मैत्र   | जंभास    | मृगं   | ११  |
| २  | रेवती     | व्यामदा    | पद्मा    | नीर्यडमु | मदु      | मैत्र   | जंभास    | मृगं   | ११  |
| ३  | उत्तराषाढ | लक्ष्मी    | नीर्यडमु | ऊईमु.    | भव       | स्थिर   | दिव्या   | पुम    | २   |
| ४  | पूर्वाषाढ | मृत्युदे   | ननुकपा   | नधोमु.   | उग्र     | कूर     | कारणा    | वर्तुल | २   |
| ५  | शतभिषा    | कल्याण     | वरुणा    | ऊईमु.    | चर       | चल      | जंभास    | मृदु   | १०० |
| ६  | धनिष्ठा   | शुभद       | वसु      | ऊईमु.    | चर       | चल      | जंभास    | वाम    | ४   |
| ७  | श्रवणा    | शुभद       | विष्णु   | ऊईमु.    | चर       | चल      | दिव्या   | अक्रा  | ३   |
| ८  | जमिजित    | सिद्धि     | घसा      | ०        | लघु      | क्षिप्र | कारणा    | त्रिको | ३   |
| ९  | उग्रपाद   | वृद्धि     | विमदेव   | ऊईमु.    | भव       | स्थिर   | जंभास    | गजाम   | ३   |
| १० | पूर्वाषाढ | हानिमद     | उदक      | नधोमु.   | उग्र     | कूर     | जंभास    | राप्पा | ४   |
| ११ | मूल       | नक्षत्रा   | राक्षस   | नधोमु.   | नीर्यडमु | दक्षिण  | दिव्या   | निर्गम | ११  |
| १२ | ज्येष्ठा  | धननाश      | देव      | नीर्यडमु | नीर्यडमु | दक्षिण  | कारणा    | ऊईल    | ३   |
| १३ | जनुषा     | सर्वसिद्धि | मित्र    | नीर्यडमु | मृदु     | मैत्र   | दिव्या   | वर्तुल | ४   |
| १४ | विशाखा    | जशुभ       | दंडाग्री | नधोमु.   | निम      | साधा    | जंभास    | तोरण   | ४   |
| १५ | स्वाती    | जशुभ       | वायु     | नीर्यडमु | चर       | चल      | दिव्या   | पुवाल  | १   |
| १६ | विभा      | शुभद       | त्वया    | नीर्यडमु | मदु      | मैत्र   | कारणा    | मौलिक  | १   |
| १७ | इस्त      | लक्ष्मी    | रवि      | नीर्यडमु | नधु      | क्षिप्र | जंभास    | दक्षिण | ५   |
| १८ | जमिजित    | विद्याप्र  | नक्षत्रा | ऊईमु.    | भव       | स्थिर   | जंभास    | मौलिक  | २   |
| १९ | पूर्वाषाढ | मृत्युदे   | भग       | नधोमु.   | उग्र     | कूर     | दक्षिण   | दक्षिण | २   |
| २० | मघा       | माशक       | पितर     | नधोमु.   | उग्र     | कूर     | मधु      | राणा   | ५   |
| २१ | जलया      | शोक        | सर्व     | नधोमु.   | नीर्यडमु | दक्षिण  | मधु      | वक्राम | ५   |
| २२ | पुष्य     | शुभ        | गुरु     | ऊईमु.    | नधु      | क्षिप्र | जंभास    | रागम   | ३   |
| २३ | पुनर्वसु  | मध्यम      | नक्षत्रा | नधु      | चर       | चल      | पुनर्वसु | गहाम   | ४   |
| २४ | आर्द्रा   | शुभ        | शिव      | ऊईमु.    | नीर्यडमु | दक्षिण  | मधु      | पुला   | १   |
| २५ | मृगशिर    | शुभ        | चंद्र    | नीर्यडमु | मदु      | मैत्र   | मधु      | मृग    | १   |
| २६ | रोहिणी    | सिद्धि     | चसा      | ऊईमु.    | भव       | स्थिर   | जंभास    | यकट    | ५   |
| २७ | लौकिका    | जशुभ       | अग्नि    | नधोमु.   | मित्र    | नधु     | पुनर्वसु | सुगम   | ६   |
| २८ | भरणी      | जशुभ       | धम       | नधोमु.   | उग्र     | कूर     | कारणा    | योनि   | ३   |
| २९ | आश्विनी   | शुभ        | नक्षत्रा | नीर्यडमु | नधु      | क्षिप्र | मधु      | जगद    | ३   |

॥ ७५ ॥ तस्य एव गता नाहुः श्रेया लब्धा पलानि च ॥ जपत्वा ॥ अल्लभादकं भंतिष्ठया १५  
 दीनं मध्य भतोद्युभिः ॥ ७६ ॥ उदयर्क्षं निधावेकं विंशतिं ग्रहे भजित् ॥ लब्धा घण्ट्या  
 दिक्का द्वेया श्रेया रात्रि स्फुटाथवा ॥ ७७ ॥ सप्ताष्टनवहीनं च स्वस्वीदय भूना एतः ॥ म-  
 ध्यमेव विशे योयं ज्ञेयो युक्त्या विचक्षणैः ॥ ७८ ॥ अथ दिवा रात्रौ सुहृताः ॥ शिवो हि हि-  
 त्तैरेव श्वंभो विष्व वेधसः ॥ विधि रिद्रिथ शक्राग्नी रक्षोऽभी श्रेयसा भगः ॥ ७९ ॥  
 ॥ सुहृत्तैः प्राज्ञैः प्रोक्ता दिवा पंच दशः क्रमात् ॥ सुहृत्तै रजनौ ग्रंथु रल्ले क चरण द्वयः  
 ॥ ८० ॥ दत्तात्यं चादिति जीवा विष्व कौ तप्त भारतौ ॥ दिनमानस्य तिथ्यं शो रान्ने  
 रपि सुहृत्तैः काः ॥ ८१ ॥ नक्षत्र नाथ तुल्ये स्मिन् कार्यं कुर्यात्स्वभो दितं ॥ दिन म-  
 ध्ये ऽभि जित्संक्षे दीय संघे न्यु सत्त्वपि ॥ सर्वं कुर्याच्छुभं कर्म याम्य दिगमनं वि-  
 ना ॥ ८२ ॥ अथ त्यादिवारैः त्याज्य सुहृताः ॥ श्रयसा भानु मद्गारे चंद्रे हि विधि राक्षसो  
 ॥ पित्राग्नी कुज वारितु चंद्र सुत्रे तथा भिजित् ॥ ८३ ॥ पितृ ब्राह्मो भूयो वीर राक्ष-

अथ योग प्रकरणम् ॥ वाक्पतेर्ह्ये नस्तत्र प्रवणाच्चान्द्रमेवच ॥ गणयेत्तद्वृत्तिं कुथ्याद्योगस्या  
दृष्टा प्रोक्तः ॥ १ ॥ विष्कुम्भः प्रीतिरायुष्मान् सौभाग्यः शोभनस्तथा ॥ अतिगण्डः  
सुकर्म्मनिधतिः शूलस्तथैवच ॥ २ ॥ गंडो वृद्धिर्धुवश्चैव व्याघातो हर्षणास्त-  
था ॥ वज्रसिद्धी व्यतीयातो वरियान् परिषः शिवः ॥ ३ ॥ सिद्धिः साध्यः शुभः शु-  
क्लो ब्रह्मेन्द्रो वैद्यतिः क्रमात् ॥ सप्त विंशतिर्योगास्तु कुपुर्णाम समं फलम् ॥ ४ ॥  
विरुद्धं संज्ञा दूहयेच योगास्तेषा मनिष्टः खलु पावजायः ॥ सर्वैर्धतिस्तु व्यतिपा-  
तनामा सर्वोप्यनिष्टः परिघस्य चार्द्धम् ॥ ५ ॥ तिस्रस्तु योगे प्रथमेच वज्रव्या-  
घातसंज्ञेन वपंच शूले ॥ गंडेति गंडेच षडेव नाड्यः शुभेषु कार्येषु विवर्तनी-  
याः ॥ ६ ॥ द्विवेदि कुलसंभूतसरयू कृतसंग्रहे ॥ शिरो मणौ समाप्ते वा पंचमी-  
ये प्रभा शुभा ॥ ७ ॥ द्वाविंश्रीसंग्रहशिरो मणौ योगकथनं नाम पंचमी प्रभा ॥  
५ ॥ अथ करणं प्रकरणम् ॥ गताश्च तिथयो निम्नाः द्वाभ्यां शुक्ला दितः क्रमात् ॥ एकोनशत

साम्बत् गुणं हिने ॥ रोद्रे सार्थे ग्रने रन्दि दमे त्याज्या मुहूर्त काः ॥ ८४ ॥ द्विवेदि कुल संभूत

| १     | २        | ३     | ४     | ५       | ६     | ७      | ८          | ९           | १०       | ११          | १२       | १३         | १४     | १५      | द्विवा मुहूर्तः |
|-------|----------|-------|-------|---------|-------|--------|------------|-------------|----------|-------------|----------|------------|--------|---------|-----------------|
| शिव   | सर्प     | मित्र | मित्र | मित्र   | मित्र | मित्र  | विधि       | वेधा        | द्वेद    | द्वेदगर्भा  | रक्षस    | वरुण       | सूर्य  | भग      | देवताः          |
| शार्द | प्लेया   | शत्रु | मथा   | धनिष्ठा | पूषा  | उत्तरा | भि-<br>जित | तेहि-<br>ली | ज्येष्ठा | विषा-<br>का | मूल      | शतभि-<br>ष | उत्तरा | शर्वाणा | नक्षत्राणि      |
| रुद्र | ज्येष्ठा | शत्रु | पूषा  | यम      | यम    | शमि    | मत्स्या    | चंद्र       | शरदि     | गुरु        | विजु     | सूर्य      | तया    | दायु    | रात्रि मुहूर्तः |
| शार्द | भद्र     | भद्र  | भद्र  | भद्र    | भद्र  | भद्र   | रोहिणी     | मृग         | पुनर्वसु | पुष्य       | ज्येष्ठा | हस्त       | चित्रा | स्वाती  | नक्षत्राणि      |

अथ रव्यादि वारे त्याज्य मुहूर्तः ॥

| गर्जन    | मत्स्या | पितृ  | शमि   | रक्षस | पितृ    | पितृ    | सूर्य   | कुहूर्तानि | सूर्य   | कृत संग्रहे ॥ शिरो मणो समा-       |
|----------|---------|-------|-------|-------|---------|---------|---------|------------|---------|-----------------------------------|
| उत्तराणा | रक्षस   | शमि   | शमि   | शमि   | मत्स्या | मत्स्या | मत्स्या | नक्षत्र    | मत्स्या | शैवा चतुर्थीयं प्रभा शुभा ॥ ८५    |
| दि २४    | दि २५   | दि २६ | दि २७ | दि २८ | दि २९   | दि ३०   | दि ३१   | दि ३२      | दि ३३   | ॥ दक्षिणी संग्रह शिरो मणो नक्षत्र |
| ३        | चं      | मं    | कुं   | हं    | सुं     | शं      | वाः     | वाः        | वाः     | कथनं नाम चतुर्थी प्रभा ॥ ८६ ॥     |



अथ योग प्रकरणम् ॥ वाक्पतेर्हर्क नक्षत्रे प्रवणा चान्द्र मेव च ॥ गणयेत्तद्वृत्तिं कुर्व्याद्योगस्य  
 दृष्टा प्रोयतः ॥ १ ॥ विष्कुम्भः प्रीति राशुष्मान् सौभाग्यः प्रोभन स्तथा ॥ अतिगण्डः  
 सुकर्मोच धृतिः शूल स्तथैव च ॥ २ ॥ गंडो वृद्धिर्भुवश्चैव व्याघातो हर्षणस्त-  
 था ॥ वज्रसिद्धी व्यती यातो वरियान् परिघः शिवः ॥ ३ ॥ सिद्धिः साध्यः शुभः शु-  
 क्तो ब्रह्मेन्द्रो वैधृतिः क्रमात् ॥ सप्त विंशति योगास्तु कुर्पुर्नाम समं फलम् ॥ ४ ॥  
 विरुद्धं संज्ञा द्दहयेच योगास्ते वा मनिष्टः खलु पाद जायः ॥ सवैधृतिस्तु व्यतिपा-  
 तनामा सर्वोप्यनिष्टः परिघस्य चार्द्धम् ॥ ५ ॥ तिलस्तु योगे प्रथमे च वज्र व्या-  
 धात संज्ञेन व पंच शूले ॥ गंडेति गंडे च षडेव नाड्यः शुभे शु कार्थ्ये शु विवर्जनी-  
 याः ॥ ६ ॥ द्विवेदि कुल संभूत सरयू कृत संग्रहे ॥ शिरो मणौ समाधे वा पंचमी-  
 ये प्रभा शुभा ॥ ७ ॥ वृत्तिश्री संग्रह शिरो मणौ योग कथनं नाम पंचमी प्रभा ॥  
 ५ ॥ अथ करण प्रकरणम् ॥ गताश्च तिथयो निम्नाः द्वाभ्यां शुक्ला दितः क्रमात् ॥ एकोनशत

हृत्वेयाः करणं स्याद्वादिक्म् ॥ ९ ॥ ववाद्वयं बालव कोल वा ख्यंतं तो भवेत्तैतिल  
 नाम धेयम् ॥ गणभिधानं वणिजं चविष्टि रित्याहुर्गर्वाः करणानि सप्त ॥ १० ॥ अंते क-  
 णा चतुर्दशां शकु निर्दृष्टं भागयोः ॥ गेयं चतुर्व्यवं नागं किं स्तु प्रं प्रतिपदले ॥ ११ ॥  
 तथ करणानां त्वामिनः ॥ इन्द्रो ब्रह्मा मित्र नामार्थ्य माभूः श्रीः की नाशु श्येति तिष्ठ्य धनाथा  
 ॥ कल्लु क्षाख्यौ सर्प वायु सौधे वये चत्वार स्तो स्थिराणां चतुर्णीम् ॥ १२ ॥ यौष्टिक स्थिरशु-  
 भानि ववार्ये बालवे द्विज हिता न्यपि कुर्यात् ॥ कोलवे प्रमद मित्र विधानं नै तिले शुभ  
 गता अय कर्म ॥ १३ ॥ गोरच बीजा अय कर्षणांनि वारिण्य के स्थेयं वशिक् क्रियाश्च  
 ॥ नसिद्धि माया ति कृतं च विष्णुं विधारि घातादिषु तत्र सिद्धिः ॥ १४ ॥ मंत्रोवधानि श-  
 कु नीनुस यौष्टिकानि गो विप्र राज्य पितृ कर्म चतुर्थ्य देविं ॥ सौभाग्य वारण यति धव  
 कर्म नागे किं स्तु घ्नान्नि निखिलं शुभ कर्म कार्यम् ॥ १५ ॥ अथ भद्रायां विशेषः ॥ ए-  
 कादश्यां चतुर्थ्यां च शुक्ले पक्षे येरदले ॥ अष्टम्यां पूर्णिमायां च भद्रा पूर्व दले स्मृता ॥

८ ॥ तृतीयायां दशम्यां च कृत्स्ने पक्षे ये दले ॥ सप्तम्यां च चतुर्दश्यां भद्रा पूर्व दले भ-  
वेत् ॥ ८ ॥ अथ भद्रायाः शृंगविभागः फलं च ॥ नाड्यस्तु पंच वदने च गले तथे का वक्षो  
दशैक सहितं निहितं च तस्यः ॥ नाभ्यां कटौयह य पुच्छ लतास्तु तिस्रो विष्टेर्वृद्धे रभि-  
हिलो गवि भाग एवः ॥ ९० ॥ स्थानफलम् ॥ मुखे कार्यध्वस्ति भवति मरणं चाथ गलके  
धना हानिर्वक्ष्यथ कटि तटे बुद्धि विलयः ॥ कलिर्नाभौ देशे विजय मय पुच्छे च  
जगदुः ॥ शरीरे भद्रायाः पुष्पगिति फलं पूर्व मुनयः ॥ ९१ ॥ अथ भद्रा वासः ॥ मीने मे  
वालिकर्के प्राणि निनि चसति स्वर्ग संस्थापि विष्टिः ॥ कन्यायां तौलि तस्ये धन मिथु-  
न गते नाग लोके निवासः ॥ ९२ ॥ कुंभे सिंहं हये वामकरं सुगते राज ते मृत्यु लोके ॥  
भद्रा चंद्र प्रभावाहि मकर तनया नो शुभा लोकि के स्यात् ॥ ९३ ॥ स्थान फलम् ॥ स्वर्गे  
भद्रा भवेत्सौरव्य पाताले च धनागमः ॥ मृत्यु लोके यदा भद्रा कार्यं सिद्धिस्तदा न-  
हि ॥ ९४ ॥ अथ वागणं फलम् ॥ मीमे सुक्रेच कल्याणी शनी चैव तु द्यश्च की ॥ गुप्ते पुण्य



वश्य के सन्ति ॥ २२ ॥ वैश्यतो व्याति पाता रव्ये विष्ट्या भोमे च वासरे ॥ तथैव दुष्टता  
 रासु मध्यान्ना त्परत प्रपुभः ॥ २३ ॥ अथ भक्ष्य विषये कस्य चिन्मते विशेषः ॥ प्रुले तु दृष्टि  
 की भद्रा कल पक्षे भुजं गमा ॥ सादिवा सृष्टिणी रात्रौ दृष्टि की त्य परे जगुः ॥ २३ ॥ सु-  
 खं त्याज्यं तु तृष्टिण्या दृष्टि च क्याः पुच्छ मेव च ॥ खरस्याः प्रसवे दुर्गा पूजने दान कर्म-  
 णि ॥ २४ ॥ दाह घातादि के भद्रा प्रस्ता नान्यत्र शोभनाथ दैत्यैः समरे मरेषु वि-  
 जिते ज्वीशः क्रुधा दृष्टवान् ॥ २५ ॥ स्वात्कायात्किल निर्गता रवर मुखी लो गूलि-  
 नी च त्रिपात् ॥ विष्टि सप्त भुजा महेन्द्र गल का क्षा मोदरी प्रेत गा दैत्यघ्नी मुद्दिता  
 सुरैरु कणा प्रांते नियुक्ता तुला ॥ २६ ॥ द्विवेदिकुल संभूत सरयू कृत संग्रहे ॥ प्रिणि  
 मणौ समाक्षे वा दक्षी यं हि प्रमा प्रुभा ॥ २७ ॥ द्रुति श्री संग्रह शिरो मणौ करण क-  
 थनं नाम वक्षी प्रभा ॥ २८ ॥ अथ तार प्रकरणम् ॥ सपाद र्क्ष द्वयं भोगे मेया दीना अनु-  
 क्रमात् ॥ अश्वि भाद्रेव तीया च द्वा प्रि भोगे न वं धिकः ॥ १ ॥ अथ एशयः ॥ अश्विनी

भरणे धिसे कृत्तिका प्रथमां धिकम् ॥ मेघस्या त्कृत्तिका पाद त्रितयं रोहिणी तथा ॥ २  
 ॥ दृष मी मृग पूर्वाङ्गं तदङ्गं च तथार्द्रम् ॥ पादत्रयं पुनर्वसुः सरणि म्मिथुना मि-  
 धः ॥ ३ ॥ तत्त्व्योऽङ्घ्रि स्तथा पुच्छो ह्यश्लेषा कर्कटा मिधः ॥ मया पूर्वोत्तराङ्गोऽङ्घ्रिः  
 सिंहस्तच्चरणत्रयम् ॥ ४ ॥ हस्त चित्राभ पूर्वाङ्गं कन्या चित्रोत्तरं दलम् ॥ स्वाति  
 मंच विशाखायाश्चरण त्रितयं तुला ॥ ५ ॥ तत्त्व्योऽङ्घ्रि नुराधारव्येज्येष्ठा भं च ध्रुवकः  
 स्मृतः ॥ मूलं पूर्वोत्तरायाहा प्रागङ्घ्रिः कथितो धनुः ॥ ६ ॥ उत्तराङ्घ्रित्रयं कर्को ध-  
 निष्ठा प्रथमं दलम् ॥ मकरारव्यो धनिष्ठा त्रिदलं च प्रात तास्का ॥ ७ ॥ पूर्वा पाद-  
 त्रयं कुम्भस्तदङ्घ्रि चरण स्तथा ॥ ऊर्मा भं रेवती चैव मीनराशिः प्रकीर्तिताः ॥ ८ ॥  
 अथावकहृद चक्रानुसारेण नक्षत्र चरणानां वर्णाः ॥ अश्विनी तु चुचे चोला लिखूलेलो भर-  
 रायपि ॥ कृत्तिका स्यादङ्गं रोहिण्या वा विबु स्मृता ॥ ९ ॥ चैवो ककि मृगश्या-  
 द्री कूटाडा छा प्रकीर्तिता ॥ केको हहि पुनर्भस्याङ्गं हे होता च पुष्यभम् ॥ १० ॥ अश्ले

पानुडिदुहेडो सागी मूमे मघा ह्वयम् ॥ सोढा दीटू तु पूर्वाख्या मुफा देहो पयि स्यता  
 ॥ ११ ॥ प्रीक्तः पूयण दोहस्तः पेपोरितु चित्रका ॥ स्मरेरोता तथा स्वातीति तूते तोवि-  
 षाधिका ॥ १२ ॥ अनुराधा ननीसूने ज्येष्ठा नोया यियुर्मता ॥ तथा येयो भभीमूलं  
 पूर्वाषाढा शुधाफटा ॥ १३ ॥ भेभोज्युत्तराषाढा जृजेजोषा तथा भिजित् ॥ रिब-  
 खूखेलो प्रवोक्ष्यः गगी गूगे धनिष्ठिका ॥ १४ ॥ गोसासिदूयता खंच पूभो-  
 सेतो ददी सता ॥ ऊभा दूया ऊजा क्षेया देहो चचिचरेवती ॥ १५ ॥ अयचइस्य पुभापु-  
 भफलम् ॥ स्वजन्म राशि मारभ्य चंद्र राशि स्थितं फलम् ॥ चंद्रे जन्म स्थिते शुष्टिः  
 द्वितीयेनो सुख भवेत् ॥ १६ ॥ तृतीये धन लाभश्च चतुर्थे रोग संभवः ॥ पंचमेका-  
 र्यं नाशश्च बलं इव्या गमो महान् ॥ १७ ॥ सप्तमे भूप सन्मानं त्वष्ट मे सरणं भवस-  
 ॥ नवमे च भयं क्षीयं दशमे कार्यं संपदः ॥ १८ ॥ एका दृष्टौ इर्थे लाभश्च द्वादशौ विवि-  
 द्वा पदः ॥ अथ शुक्ल पक्षे विशेषः ॥ द्वितीयः पंचरा प्रचन्द्ने नवमीऽपीज्य वच्छुभः ॥ शुक्ल

पक्षे विशेषो ऽयं तुल्यमन्यतयो अयोः ॥ २० ॥ चन्द्रस्यैव वलः शुक्ले न तु तारविधा-  
 नता ॥ सति कान्ते वलो येते स्वातं न्यन च योयितः ॥ २१ ॥ कक्ष पक्षेतु तारायाः वल-  
 ग्रहं सदा यतः ॥ क्षीणे च प्रोयिते कान्ते गार्हस्यं गेहिनी चरेत् ॥ २२ ॥ अथ तारावल-  
 ग् ॥ जन्म भाद्दिनाभं यावत्ताराक्षेत्रे न वोद्धते ॥ जन्म संपदि पक्षे मयाप सिद्ध च-  
 धाः क्रमात् ॥ २३ ॥ सिन्नाति मित्र संज्ञं च नाम तुल्य फला प्रचताः ॥ द्विप्रचतुः बहु-  
 नवाष्टम्यस्तारः श्रेष्ठतमा मताः ॥ २४ ॥ जन्मारब्धा मध्यमाक्षेत्रा नेष्टा स्त्वन्याः  
 प्रकान्तिताः ॥ अथावस्य के तार एणं त्याज्यं प्राः ॥ तारा पूर्णाः त्यज्ये दद्यावर्त्तं पंचत्रिंशत्त-  
 काः ॥ २५ ॥ द्वितीये चैव तत्यादः तुर्यं कायास्तृतीयकाः ॥ तृतीये तु शुभा स्सर्वाः  
 कार्ये त्यावप्रक्ष के स्मृताः ॥ २६ ॥ अथ बुधतार सुदानम् ॥ सप्तम्यां तार कायां च दद्या-  
 त्स्वर्णं तिलानपि ॥ गुडं तृतीय तारयां पंचम्यां लवणं तथा ॥ २७ ॥ दोषा यनुत्तये ता-  
 सां दद्याच्छाकं त्रिजन्म सु ॥ अथ चन्द्रवस्था ॥ निष्ठा करस्य यावस्था नर एधि सप्त-



विंता ॥ नरा गण्या च राक्षसायर्कं प्रेषिता ॥ ३८ ॥ वष्टिघ्नं गतमं भुक्तघटी  
 भुक्तं भुक्तं ॥ अणुभिर्हृत्तं व्यतोऽर्कं प्रेषेऽवस्थाः क्रिया द्विधोः ॥ ३९ ॥ अ-  
 नार्थः ॥ अण्विनी गारय गतमानि पख्या ६० गुणानि वर्तमानं नक्षत्रं भुक्तघटी युता  
 नितानि पुनर्युगे प्रत्युर्भिराह्वानि निश्ररणि इत पंच च त्वारि श्रता भाज्या निय  
 स्वभ्रमागतं गता वस्था स्ताः प्रेषं वर्तमाना वस्था या तत्र लब्धा कस्यापि ह्यवशगधि  
 वी ह्यपश्रभिर्भीगे प्रेषं प्रवासावस्था चंद्रस्य गताः स्युः ताः ॥ अवस्था मेय राशेः  
 पुनः प्रवासादि संज्ञाः ह्यप राशे नस्था संज्ञा सर्वसि पुनादि ह्यदश राशिवु मृतादि सं-  
 ज्ञा गण्या रिक्तो ह्यपश्र वस्थाः क्रमेण भवं तीत्यर्थः ॥ ३९ ॥ प्रवासोऽथ विनाशश्च  
 अणं उग हास्य के ॥ रतिः क्रीडा तथा सुप्ता भुक्ता चाथ जरा भिधा ॥ कपिता मुस्थिराव-  
 रणा ह्यपश्रे ता विधोऽस्तताः ॥ ४० ॥ ता सांमानं सपदि कादश नाडी सितं भवेत् ॥  
 मेवा रितः प्रवासाद्याः नाम तुल्य फल प्रत्यः ॥ ४१ ॥ मेघ राशे प्रवासाद्यानां प्रा-

शावपभविष्यो ॥ मृताद्या मिथुने चैवं ज्ञानाद्वाद्वा राक्षसु ॥ ३२ ॥ अथ काव्यं विधिः ॥ ३३ ॥  
 म ॥ उद्वाहे नीत्सवे जीवः सूर्यो मूषाल दर्शने ॥ संग्राने घरणी सुने ॥ विद्याभ्यासे पुनोत्तरे ॥  
 ॥ ३३ ॥ यात्रायां भार्गवः प्रीतो दीक्षायां च प्रानै प्रचरः ॥ चंद्रमाः सर्वकार्येषु प्रधरस्तो  
 गदत्यंतो बुधैः ॥ ३४ ॥ अथ चंद्रवले विशेषः ॥ शुभं चंद्रोऽप्य सत् पापा त्सप्तनः पाप युक् तथा  
 ॥ पाप मध्यगनः क्षीरलो नीच गणराजु वर्गिः ॥ ३५ ॥ असुभोऽपि शुभं प्रचंद्रो गुरुणा  
 लोकिनी युतः ॥ सार्धं चरण प्रशुभां भोगा त्वाधि मित्रांशकेऽथवा ॥ ३६ ॥ आपावदेदान-  
 न ॥ नंदु नोरच तिथौ पुष्टे वीरत्वं सकांचनम् ॥ ग्रासुक्षौ कनकं योगे करणे धान्यमेव च ॥  
 ३७ ॥ शंख रोप्य युतं चंद्रे तारायां सै भव तथा ॥ नाह्यां हेम नृयो दद्यात्कार्येऽत्यावश्यके-  
 सति ॥ ३८ ॥ हिते हि कुल संभूत सरसू कृत संग्रहे ॥ शिरो मणौ समाक्षेया सप्तमीयं प्रभा-  
 शुभा ॥ ४० ॥ इति णी संग्रह शिरो मणौ तारा कथनं नाम सप्तमी प्रभा ॥ ७ ॥ अथ शुभा-  
 शुभ नजराम् ॥ हस्ती सेवनं पर्व सुपक्ष मध्ये पलं च यक्षी बुच सर्व तैलम् ॥ तृणं विनाशम् ॥

य चतुर्दशी शुक्ल क्रिया स्याद् सकृत् दासु ॥ १ ॥ व्यती पतिच संक्रांता वेका दृष्ट्या च प-  
 र्वसु ॥ अर्द्धे भौम दिने चिख्यां नाभ्यंगं न च वैधृतौ ॥ २ ॥ पर्वणि ॥ चतुर्दश्यष्टमी  
 कृत्वा अमावास्या च पूरिमा ॥ पुण्यानि पंच पर्वणि संक्रांतिं दिने पस्य च ॥ ३ ॥  
 अत्र तिथि स्तात्कालिकी ॥ त्वाने वाम्यं जने चैव संत धावन भैथुने ॥ तिथि स्तात्कालि-  
 की ग्राह्या तथा मरण जन्मनोः ॥ ४ ॥ त्रयोदश्यां द्वितीयायां सप्तम्या च विशेषतः  
 ॥ षड्भूविदस्त्र त्रिधात्मानं नाचरेयुः कदाचन ॥ ५ ॥ कामदुर्गाति करविनष्टे द्व-  
 र्द्वे दिने बुध ॥ सहस्रदामलक रत्नानं संपत्सुत्र विना श्रानम् ॥ ६ ॥ सप्तम्यं च द्वा नवमी  
 शुद्धे श्री संतती रामल कै नरस्य ॥ त्वानं निहं त्यंत्य दिने तु धत्ते तिले मिश्रयं पुण्यं क-  
 रं सदैव ॥ ७ ॥ अथ दग्धयोगः ॥ एकोदशी चेन्नु चोरे ह्येदं दृष्टी चार्क वासरे ॥ षष्ठीदृ-  
 हसते वीरे तृतीया बुध वासरे ॥ ८ ॥ असृमो शुक्र वारे च नवमी शनि वासरे ॥ पंच-  
 मी भौम वारे च दग्ध योगाः प्रकीर्तिताः ॥ ९ ॥ अथ विषययोगः ॥ षष्ठी श्रां केनवमी च

शुक्रे बुधे द्वितीयं तपने चतुर्थी ॥ जीवेऽष्टमी सौरिकुजे न्हि सप्तमी योगा विग्रहः  
 तुल नाशनास्स्युः ॥ १० ॥ भद्रहृता प्रानयोगः ॥ सप्त यजुगदि तिथयः लोम वारादि  
 निर्धुताः ॥ अग्नि जिह्वा स्तप्त योगाः अंगले व्यतिदाहिताः ॥ ११ ॥ अथ यम बंदः ॥  
 मद्या विप्राया आर्द्रा च मूलं मूलं च कृत्तिका ॥ रोहिणी हस्त द्रुत्युक्ता यस्य वंताः क्रमा  
 द्रवेः ॥ १२ ॥ एयामपवादः ॥ दिवा मृत्यु प्रदाः पाप दोषा स्त्वे तेन रात्रिषु ॥ शुभ  
 कार्ये प्रसूतोच सर्वदा यरि वर्जयेत् ॥ १३ ॥ ज्ञानश्रवक कृत्ये ॥ यम घटे त्यजे द्यौः  
 लो हादश नाडिकाः ॥ अन्येषां पाप योगानां मध्याह्ना त्यत प्रशुभं म् ॥ १४ ॥  
 अथ चैत्रादिमासे तिथि श्रुत्याः ॥ असुमीनवमी चैत्रे पक्षयो रुमयो रपि ॥ माधवे द्वादशी  
 त्याज्या पक्षयो रुमयो रपि ॥ १५ ॥ ज्येष्ठे त्रयोदशी निंद्या श्रिते कृत्से चतुर्दशी  
 ॥ आर्द्राते कृत्स पक्षस्य षष्ठी शुक्ले तु सप्तमी ॥ १६ ॥ द्वितीया च तृतीया च प्राव-  
 र्णे श्रित कुलयोः ॥ प्रथमा च द्वितीया च नभस्ये मासि निर्दिते ॥ १७ ॥ दशम्ये

कादशी निंदा मासीधे शुक्ल कलयोः ॥ ऊर्ज्जे चतुर्दशी शुक्ला कल पक्षे तु पंचमी  
 ॥ १८ ॥ सप्तमी चाष्टमी मौम्ये पक्षयो रुमयोरपि ॥ पौथेयस ह्वये चैव चतुर्थी पंचमी न  
 या ॥ १९ ॥ माघे तु पंचमी षष्ठी शुक्ले कलसे यथाक्रमम् ॥ तृतीया च चतुर्थी च फा-  
 ल्गुने सित कलयोः ॥ २० ॥ तिथयो मासशून्याख्या वंश वित वित विना प्रकाः ॥ अत्र  
 शु श्राद्धं प्रकुर्वीत नैव सन्मगलं क्वचित् ॥ २१ ॥ अथ नक्षत्र दोषः ॥ द्वितीयया चतु-  
 राधा श्रुत्तरा च तृतीयया ॥ पंचमी च मघा युक्ता चित्रा स्वात्यो खयो दृशी ॥ २२ ॥ प्र-  
 तिपद्युत्तरा यादा नवम्या कृतिका यदि ॥ सप्तम्या हस्त मूले च यस्या ब्राह्मं भवेद्यदि  
 ॥ २३ ॥ पूवा षाढ पदाष्टम्या एका दश्या च रोहिणी ॥ द्वादश्या च यदाश्लेषा त्रयो-  
 दश्या भवा यदि ॥ २४ ॥ एतु कार्ये कृते चेत्स्यात्परमा सान्भरणं प्रवम् ॥ अथ से-  
 षादि मासे मूल्य नक्षत्राणि ॥ अश्विनी रोहिणी चैत्रे मूल्ये भे परि कीर्तिते ॥ चित्रा स्वानो  
 च वैशाखे ज्येष्ठे विश्वे ज्येष्ठे ॥ २५ ॥ भगवासव वायादे आवरो हरि विश्वभे ॥

॥ नभस्ये वारुणां त्यर्द्धमजपादप्रवयुज्यापि ॥ ३६ ॥ कार्तिके पितृब्रह्मर्क्षे सो-  
 म्ये चित्रा द्विदेवते ॥ यौये दस्रक रार्द्धस्यु मर्धे मूलं च विष्णुभम् ॥ ३७ ॥ तपस्ये-  
 श्चक्रभरणी मून्यभान्याङ्गराजाः ॥ एयुयचुकृतं कर्म धने स्सह विनश्यति ॥  
 ३८ ॥ अथ चैत्रादि नामे यु मून्ये राशयः ॥ चत मन्स्य दया युग्य मेप कन्या स्स दृष्टिचकाः ॥  
 तुला चापकुली राख्याः मृगसिंहा प्रच राशयः ॥ ३९ ॥ चैत्रा दो मास मून्या ख्यावे-  
 रा वित्त विना श्रानाः ॥ सथ विपमतिथि सु दग्ध लग्नानि ॥ मृगसिंहो तृतीयायां प्रथमा  
 यां तुला राशौ ॥ पचम्यां बुधराशी द्वी सप्तम्यां चापचंद्रमे ॥ ४० ॥ नवम्यां सिंहकी-  
 टारख्यावेका दश्यां गुरो र्दहे ॥ दृष मीनी त्रयो दश्यां दग्ध सृज्जास्त्वमी ग्रहाः ॥  
 ॥ ॥ दग्ध सप्त नि यत्कर्म कृतं सर्वमग्र श्रयति ॥ ४१ ॥ अथैतेयां दृष्ट योगानां आवपून-  
 क कृत्ये परिहारम् ॥ केन्द्रे चैव त्रिकोरोच शुभे सुपचयेऽपिवा ॥ एकोऽपि चलवां श्रा-  
 पि मून्यतिथ्युडु नाशकः ॥ ४२ ॥ तिथयो मास मून्याश्च मून्य लग्नानि यान्यपि

॥ मध्य देशे विवर्ज्यानि नदूध्याणी तरेयुत ॥ ३३ ॥ पंग्वंध काणा लग्नानि मास  
 मुन्या प्रचरणयः ॥ गौड - मालवयोस्त्याज्या अन्य देशे न गहिताः ॥ ३४ ॥ वज्रयेत्स  
 र्व कार्येयु हस्तार्क स्थंचमी तिथौ ॥ भौमाब्धिनीच सप्तम्या अक्ष्या चंद्रैदवं तथा ॥  
 ॥ ३५ ॥ बुधानुराधामलम्या दशम्या भृगुरेवतीम् ॥ नवम्या गुरुपुष्यं चैकादश्या श  
 नि रोहिणीम् ॥ ३६ ॥ ग्रहप्रवेशे यात्रायां विवाहेच यथा क्रमम् ॥ भौमेऽश्विनी  
 शनी ब्राह्मं गुरौ पुष्यं विवर्जयेत् ॥ ३७ ॥ हस्ते रवौ शशधरेण मृगोत्तमंगं भौमेऽ  
 श्विनी बुधदिनेच तथा नुराधा ॥ पुष्ये गुरौ भृगुसुतेऽपिच पौलधिदम्यरोहिण्यथार्कन  
 नयेऽमृतसिद्धि योगाः ॥ ३८ ॥ यदि विष्टिच्युती पातो दिने वाय्य शुभं भवेत् ॥ ह-  
 न्यतेऽमृतयोगेन भास्करेण तमोयथाऽर्द्धाया नंददि योगः ॥ आनंदः कालदंडप्रचधू-  
 म्नाक्षोऽथ प्रजापतिः ॥ सौम्यो ध्वांक्षोऽध्वजश्चापि श्रीवत्सो वज्रमुद्रौ ॥ ४० ॥  
 सत्रं नित्रं क्रमेणैव मानसः पद्मलुंवकौ ॥ उत्प्रांतमृत्युकाणाख्याः सिद्धिश्चैव शु-

आसुतो ॥ ४१ ॥ सुश्लेच गदाख्यश्च मातं गोरक्ष सप्रचरः ॥ स्थिरः प्रबद्धमानश्च  
 नाम तुल्य फलाभमी ॥ ४२ ॥ भानुवारिः शिवं नक्षत्रात्मा भिजि त्के प्रत्न सर्वभैः ॥  
 भवंति क्रमशो योगाः अष्टा विंशति संख्यकाः ॥ ४३ ॥ मृगादागम्य रात्री प्रो ज्ञे-  
 यातः कुज वासरे ॥ हस्ता ह्युधेऽनु राधायाः गुरु वारि तथैव च ॥ ४४ ॥ उत्तरा साढते  
 श्रुक्ने शत तारादि तः प्रानौ ॥ अथैतेषु कियद्गुह्ययोगाः त्वा न्याशाः ॥ ध्वान्भेद्रायुध सुदरेषु  
 घटिका स्त्याज्यास्तु पंचादितः पंचं लुंवक यो प्रच तत्न उदित धूम्रे सदे का पुनः ॥  
 देकारो सुश्लेच द्वयेऽपि च गदि संज्ञे वति स्त प्रच रे मृत्यु न्यात करक्ष संहि न गता स्ताः  
 काल दंडे तथा ॥ ४५ ॥ अथ दोषा मवाद भूतार वियोगाः ॥ सूर्या चतुर्थे दशमे च पष्ठे विज्व  
 र्क्ष के विंशति मे न वर्क्षे ॥ भवंति यज्ञानु सप्तस योगाः कुत्रो ग विज्व स करः प्रदिष्टः  
 ॥ ४६ ॥ सिद्धि योगः ॥ ज्येष्ठा वाहि मघा विशाख बसवो मेत्रं य माख्य रवौ सोमे सैव वि-  
 प्राय सुख्य पवना श्रित्रा त्व साढा ह्यम ॥ भौमे विश्व जलेश मित्र नसवः प्रागभाद्र



सर्वोऽशिवः प्रमूली रेवति पूर्वयोनि भरणी वसुशिव मूला बुधे ॥ ४७ ॥ जीवेमूल  
 मघाद्र्याम्य वरुणाः पूषा राशी रोहिणी शुक्रे स्वाति भुजंग देवत मघा पुथ्यो नरा-  
 रोहिणी ॥ सौरा वर्यम मूल हस्त वरुणा पादा हूयं रेवती चित्रा विष्णु मघाश्च सर्व  
 समये त्याज्या अयोग दमे ॥ ४८ ॥ अथसिद्धयोगः ॥ सूर्येऽर्क मूलोत्तर पुथ्य दासं चे-  
 न्दे शुनि ब्राह्म राशीज्य सैत्रम् ॥ भौमे ख्यहि बुधश्च कृशानु सार्यं द्वे ब्राह्म मैत्रा कर्क क-  
 शानु प्चाद्रम् ॥ ४९ ॥ जीवेन्त्य मैत्रा ष्व्य द्विती ज्य धि स्रं शुक्रं त्य मैत्रा ष्व्य द्विती ष्व-  
 वोभम् ॥ शनौ शुति ब्राह्म समीर भानि सर्वार्थ सिद्धौ कथितानि पूर्वैः ॥ ५० ॥ द्वितीया  
 सोया ह्यश्र वात्यौल्ल भाच्च ब्राह्मात्युख्या दर्य मर्क्षा च तुर्भैः ॥ स्या दुत्यातो मृत्यु कारो  
 च सिद्धि वारेऽर्कश्चै तत्फलं नाम तुल्यम् ॥ ५१ ॥ क्रयोगास्तिथि वारे तथा स्तिथि  
 भौत्या भवा रजाः ॥ हून वंग खसे खेव वर्ज्या स्थितय जास्तथा ॥ ५२ ॥ अथ चान-  
 क्षत्रोन्न्त सिद्धि योगः ॥ मूलं सर्वे श्रवश्चंद्रे भौमे चोत्तर भाद्र पात् ॥ कर्त्तिका बुधवारे

तु गुरु वारे पुनर्वसुः ॥ प्रधा शुक्रे शनौ त्वाती सिद्धियोग उदाहृतः ॥ ५३ ॥ अथ तिथि  
 वारेत्यादौ योगाः ॥ द्वादश्य के विधौ बली भौमे सप्ताष्टमी बुधे ॥ दशे शुक्रे शनौ रुद्रो गु-  
 रो नव हुता शनौ ॥ ५४ ॥ द्वादश्य के विधौ रुद्रे भौमे पंच बुधे ऽग्नयः ॥ गुरौ व-  
 ष्यष्टमी शुक्रे दग्धा रव्यो नवंमी शनौ ॥ ५५ ॥ चतुर्थ्य के विधौ बली द्वितीया द्वे-  
 ऽष्टमी गुरौ ॥ नव शुक्रे विशाखश्च सप्तमी कुज मंदयोः ॥ ५६ ॥ शनौ बली भौमे  
 सप्ताष्टमी जीवे बुधे नव ॥ कुजे दश विधौ रुद्राः कर्क चो द्वादशी रवौ ॥ ५७ ॥ प्रति  
 पत् द्वे रवौ सप्त सं वर्त्तो योग दर्शितः ॥ दग्धा दीन् तिथि वारेत्यान् त्यजेत् योगान्  
 शुभे सदा ॥ ५८ ॥ अथ नक्षत्रा द्विहितोऽपि त्याज्य स्थितिः ॥ द्वितीया मनु राधायां मघायां  
 पंचमी तिथिम् ॥ त्यजेत्पक्षी च रोहिण्यां पूर्व माद्र पदे ऽष्टमीम् ॥ ५९ ॥ अथ मृत्यु योगः ॥  
 अनु राधा रवौ सोमे उत्तराषाढ संभवम् ॥ बुधे ऽश्विनी मृगौ जीवे शुक्रे ज्येष्ठा शनौ  
 करः ॥ ६० ॥ भौमे शतं भिया चार्थे मृत्यु योगो ऽर्थ नाशकः ॥ अथ दग्धा तिथि योगः ॥

भरण्यर्के विधौ चित्रा जीवे चोत्तर फाल्गुणौ ॥ भौमे चैवोत्तरा पादा धनिष्ठा बुधवास  
 रे ॥ ६२ ॥ शुक्ले ज्येष्ठा त्यसं संदेत्यजे देत द्विदग्ध भस्म ॥ अथ त्रिविध गंडांतं ॥ नक्षत्र  
 तिथिराशीनां गंडांतं त्रिविधं त्यजेत् ॥ ६३ ॥ नव पंच चतुर्थी ते द्वे कार्द घटिका  
 मतम् ॥ तावन्मितं ततोऽग्राणां आदा वरि परित्यजेत् ॥ ६४ ॥ ज्येष्ठा मूल क्षयो  
 संधौ रेवत्यश्चि भयोस्तथा ॥ वृश्चिकारब्ध धनुः संधौ लग्नस्यैक घटी मतम् ॥ ६५  
 ॥ अथार्द्धयामः ॥ अर्द्धयामाः परित्याज्या वेदसप्त द्वि पंचमाः ॥ अथ त्रिजय संख्या  
 काः क्रम शीर विवात्तरात् ॥ ६६ ॥ अथ कुलिक कंटक काल वेला यम घंटा ख्याः त्याज्य मुह  
 र्ताः ॥ मन्वर्क दश नागार्तु वेद नेत्र मिताः क्षणाः ॥ कुलिकारख्या रेवे वार क्रमतः  
 कंटका बुधात् ॥ ६७ ॥ गुरोस्तु काल वेला ख्या शुक्रांति यम घंटकाः ॥ त्यजेद्दे  
 तान् शुभे कार्ये निशीघे तु गुहर्त कान् ॥ ६८ ॥ अथ द्वादशणाः ॥ क्षणः चतुर्दशः  
 सूर्ये नव द्वादश को विधौ ॥ सप्तमो निशि भौमे न्हितुर्य प्रचाथ बुधेऽष्टमः ॥ ६९ ॥

षष्ठ द्वादश को जीवे चतुर्थी नवमे भूगौ ॥ प्रनो चाद्य द्वितीयोच त्याज्या दुष्ट क्षणा

अथदुष्ट क्षणा चक्रम्

दिवाकुलिका दीनां चक्रम्

रात्रौकुलिका दीनां चक्रम्

| स  | व  | म | तु | व  | श  | सू | च  | म  | तु | व  | शु | श | र  | चं | मं | तु | व  | शु | प्र |
|----|----|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|---|----|----|----|----|----|----|-----|
| १४ | ६  | ७ | ८  | ९  | १० | ११ | १२ | १० | ८  | ६  | ४  | २ | १३ | ११ | ९  | ७  | ५  | ३  | १   |
| +  | १२ | ४ | +  | १२ | ६  | १३ | ५  | २  | १४ | १२ | १० | ८ | ५  | ३  | १  | १३ | ११ | ९  | ७   |

द्विमे ॥ ७० ॥ रवौषट् ६

दश १० सप्ता ७ सु ८ मनु १४

संख्य सुहूर्त्त काः ॥ चंद्रेऽधि ४ वसु ८ यदं द्वि श्व १३ मनु १४ खेदा ८ क १२  
 संमिताः ॥ ७१ ॥ भौमे द्वि २ त्रि ३ चतुः ४ षष्ठ ६ दश १० संख्या क्षणाः स्मृ  
 ताः ॥ बुधे वेदा ४ अथि २ वस्वंक मनु १४ दिक् १० प्रमिताः क्षणाः ॥ ७२ ॥  
 जीवे भूपा १६ शिव २ तिथ्यं १५ गर्द मनु १४ सूर्या १२ मिता ऋते ॥ शुक्रपंचां

५ क ८ घट् दं वेद ४ दिग १० कर्क १२ मनु १४ संमिताः ॥ ७३ ॥ मंदे भू १ नेत्र २  
 रुद्रा ११ च ८ दशग १० दित्य १२ मुहूर्तकाः ॥ त्याज्या पंच दशगं प्राद्यावुधै रुक्ता  
 रथादिबारे राज्ञी मुहूर्ती त्याज्याः ॥

| सू | च  | म  | तु | व  | सु | ग  |
|----|----|----|----|----|----|----|
| ६  | ४  | २  | ४  | १६ | ५  | १  |
| १० | ८  | ३  | २  | २  | ८  | २  |
| ७  | ६  | ४  | ८  | १५ | ६  | ११ |
| ८  | १३ | ६  | ८  | ६  | ४  | ८  |
| १४ | १४ | १० | १४ | १४ | १० | १० |
| +  | ८  | +  | १० | १२ | १२ | १२ |
| +  | १२ | +  | +  | +  | १४ | +  |

क्षणा दमे ॥ ७४ ॥ अथ देश भेदेन त्याज्य बोधाः ॥ विंध्य-  
 हे माद्रि मध्येतु मगधेय मघंठकः ॥ अंगोंधे मत्स्य देशे  
 वा दोय कल्ने तरन्नसः ॥ काप्रमीरे कुलिक स्याज्य स्त्व-  
 द्वयाम स्तु सर्वतः ॥ ७५ ॥ अथ संक्रांतौ त्याज्य कालः ॥  
 अर्पने विषवे त्याज्यं पूर्वं मध्य पदं दिने ॥ श्रेय संक्रम  
 णो पूर्वं पश्चा त्योहण नाडिकाः ॥ ७६ ॥ अथ तिथि क्षय दृ-  
 ष्टि बोधः ॥ तिथीनां नित्यं वारं संकस्य प्रगति यत्र वै ॥ अ-  
 व संत द्विं द्वेयं शुभ कर्म सुसं त्यजेत् ॥ ७७ ॥ वारा  
 णां नित्यं यत्र तिथिरेका स्थरे द्यं ॥ त्रिषु स्स्थरे ति

एवातान ग्राहं मंगलादिषु ॥ ७८ ॥ अथ त्रिपुष्कर यमल योगः ॥ राव रावज भाग्य पा०  
 भद्रायां वियस पाद मृक्षं चेत् ॥ त्रै पुष्कराख्य योगः त्रिगुण फलो द्विगुण भेजुगल  
 म् ॥ ७९ ॥ अर्थः ॥ भद्रा तिथौ यदा रवि भौम शनि वारे कृत्तिका पुनर्वसू ॥ विशाखा उत्तरा  
 फाल्गुणा पूर्व भाद्र पदा उत्तरा याद ॥ एतदृक्षं भवति तदा त्रिपुष्करः यदा पूर्वोक्तति  
 थौ वारे मृग शिरः चित्रा धनिष्ठा तदा द्विपुष्करः ॥ तत्फलम् ॥ तत्र दृष्टे मृते नष्टे शुभे वा  
 य्य शुभे पिवा ॥ त्रिगुणं द्विगुणं सर्वं जायते क्रमशः फलम् ॥ ८० ॥ नारदः ॥ तद्यत्ति  
 दोष प्रां त्यर्थं गोत्रयं मूल्य मेव वा ॥ द्विपुष्करे ह्ययं दद्यान्त दोष स्तृक्ष मान्नतः ॥  
 ८१ ॥ अथ ख्यादि वारे पुनः प्रशुभाश्रुभ योगः ॥ रवौ हस्ते ऽश्विनी मूलं धनिष्ठा चोत्तरा  
 न्नयम् ॥ मुख्य त्वाथ खमी चैव सिद्धि योगाद्वैमताः ॥ ८२ ॥ विशाखा भरणी स्तृ  
 र्थं मचा ज्येष्ठा ऽनु राधिका ॥ सप्तमी द्वादशी तद्वह्नि रुद्रा च चतुर्दशी ॥ ८३ ॥ चं  
 द्रे च श्रवणाः पुष्यो ऽनुराधा रोहिणी मृगः ॥ दशमी नवमी वाथ सिद्धि योग प्रशुभा

वहः ॥ ८४ ॥ पूर्वाषाढोत्तराषाढौ स्वाती चित्रा विशाखयोः ॥ सोमे चैकादशीषष्ठी  
 वर्जनीया त्रयोदशी ॥ ८५ ॥ भौमे श्लेषाश्विनी मूलमृग शीर्षस्त्रयोदशी ॥ तृतीया  
 चायमीषष्ठीसिद्धिर्दक्षिणार्तितावुधैः ॥ ८६ ॥ उत्तराषाढोभंचार्द्रोधनिष्ठा त्रितयं तथा ॥ द्वि-  
 तीया दशमी भौमे वर्जनीया प्रयत्नतः ॥ ८७ ॥ बुधे पुष्योऽनुराधा च कान्तिका  
 रोहिणी मृगः ॥ द्वितीया सप्तमी चैव द्वादशी च शुभप्रदा ॥ ८८ ॥ धनिष्ठा भरणी मू-  
 लमश्विनी रेवती बुधे ॥ तृतीया प्रतिपद्यपि विरुद्धा नवमी स्मृता ॥ ८९ ॥ गुरोः शु-  
 व्योऽनुराधा च विशाखाश्विपुनर्वसू ॥ रेवती दशमी चैव घृणिमा शुभदा स्मृता ॥  
 ९० ॥ जीवेयक्य मीनेया चतुर्थी शततारका ॥ कृत्तिकादिचतुष्कंच तथा चोत्तर-  
 फाल्गुनी ॥ ९१ ॥ मृक्रे चित्रा श्विनी पूर्वा रेवती च पुनर्वसू ॥ अवराः प्रतिपत्प-  
 क्षी सिद्धा चैकादशी तथा ॥ ९२ ॥ भार्गवे रोहिणीज्येष्ठा पुष्योऽश्लेषा मघा तथा ॥  
 द्वितीया सप्तमी चैव विरुद्धा सर्वकर्मसु ॥ ९३ ॥ शनौ स्वाती श्रवं पूर्वाफाल्गुनी च त-

आमृगः ॥ चतुर्थी नवमी चापि तिथिः सिद्धा चतुर्दशी ॥ ६४ ॥ पूर्वाषाढौ नरायादा चि-  
 न्नाहस्तोऽथरेवन्ती ॥ उत्तरा फाल्गुनी यक्षी निषिद्धा सप्तमी श्रवणौ ॥ ६५ ॥ द्विदशैः कुलसं-  
 भूत सरयू कृत संग्रहे ॥ शिरो मणौ समाप्तै वा जलखमीये प्रभाश्रुभा ॥ ६६ ॥ वृत्ति  
 श्रीसंग्रह शिरो मणौ शुभाशुभ कथनं नामाष्टमी प्रभा ॥ ६७ ॥ अथ त्याज्य प्रकरणम् ॥  
 तिथि नक्षत्र वारणा दुष्ट योगा न्यस्यम् ॥ अती पातादिदुर्घो गान् विष्टी दश्री के संक्रमा-  
 न् ॥ १ ॥ जन्म क्षीतिथि मासांश्च तिथ्यर्द्धमव मन्दि नम् ॥ गंडांतं त्रि विधं द्रुष्टं क्षीरोलु-  
 पाप कर्त्तरी ॥ २ ॥ पाप होराखले चोरा माह कूलिकादि कान् ॥ जन्म राशि विलम्बा-  
 भ्या मयमे लग्नमेव च ॥ ३ ॥ दिन मेकं तु मासां ते ऋक्षांते घटिका द्वयम् ॥ वटिके  
 कंच तिथ्यंते लग्नांते घटिका द्वयम् ॥ ४ ॥ विषाख्य नाडिका भानां पात मेकामेकं तस्या-  
 ॥ दग्धाहं क्रांति साम्यं च लग्ने शं शिषुन्धुगम् ॥ ५ ॥ क्षिनाहं चरजन्मर्धे संधौ तु-  
 पला विंशतिः ॥ रोगोत्पत्त्या च रिद्यानि सूतकं मातुर्गतं वम् ॥ ६ ॥ जन्मे श्रावस्तं मनो



भंगं शुभे व्येतानि संत्यजेत् ॥ एमः ॥ सर्वस्मिन्विधुपापयुक्तचुलवावर्द्धे निष्प्रान्हो  
 र्घटी न्यग्रंशैकुनवांशकं ग्रहणतः पूर्वदिनानां त्रयम् ॥ उत्प्रातः ग्रहतोऽद्यहो प्रच शुभ  
 हो त्याते पञ्चद्वयं दिनं य रासा संग्रह भिन्न संत्यज शुभे यौद्धं तथो त्यात भम् ॥ ७ ॥  
 अस्मार्थः ॥ सर्वस्मिन् दति सर्वस्मिन् शुभे कार्ये सतानि वै नि प्रचयेन त्यज परिह-  
 रेत्यर्थः ॥ विधुना पापे न वा पापैः क्षीणे हर्क मही सुतार्क तनये वी युजो युक्तो तनु ल-  
 वो लग्न लग्नपन वांशो त्याज्यो ॥ पूर्णः क्षीणोऽपि वा चंद्रो लग्ने सर्वत्र गार्हितः ॥ इति  
 कस्योक्तैः ॥ पापेन्दू लग्न गौ वांश गतौ वज्यो शुभे सदे निच ॥ निष्प्रान्हो र्द्धे रात्र्य-  
 र्द्धे दिनाद्धे च घटी त्र्यंशं विंशति पलानि दश पूर्व वश पञ्चात्र परि हर ॥ उक्तं च ॥ मू-  
 र्तः कालो निवसति मङ्गल निष्प्रयांच दिन बले यस्माद्दश पूर्व परस्वस्मा ह्यर्ज्यानि च प-  
 लानि ॥ कुन वांश कं पाप ग्रहन वांश कं परि हर ॥ अथ ग्रहणतः पूर्वदिनानां त्रयं परि  
 हर ॥ उत्प्रातः ग्रहतः उत्प्राताः दिव्य भौमां तरिक्षाः ॥ यस्मिन् दिने भवन्ति ततोऽद्य

होषत् सप्त दिनानि कर्ज्यानि ॥ ग्रहो ग्रहणं तस्मादपि सप्त दिनानि वर्ज्यानि ॥ उक्तं च ॥

चंद्र सूर्यो परागेयु अहं पूर्व शुभे त्यजेत् ॥ स साहस शुभं पश्चात् स्तुतं ग्रहणं सूत  
कम् ॥ निविधो त्यात तश्चोर्द्धं सिद्धिं कासूत्रं दर्शने ॥ सप्त रात्रं न कुर्वीति याज्ञोद्वाहा

दिमंगलमिति ॥ अंगिरा अपि ॥ सर्वे रासे तु रात्राद् मर्द्धं रासे दिनत्रयम् ॥ त्रिहोकागुलतो  
गामे दिनमेकं चिर्वर्जयेत् ॥ चण्डिः ॥ सर्व रासे दिना न्यहो सर्व कार्ये विवर्जयेत् ॥ प्र

गानि त्रिभागो न अर्द्धं रासे चतुर्दिनम् ॥ चतुर्थं रात्रिं रात्रं स्यात् ग्रहणं चंद्रसूर्यो  
॥ अत्र कार्यं स्यावश्यकत्वे परिहारे ज्योतिर्निबंधे ॥ पंच दिना निवर्षिषु स्त्रिदि

कोषिकस्त्वेकम् ॥ यवना चार्थस्य च सप्तं पंच सुहृत्तां निदूषयति राहुः ॥  
त्रेधो नित्येनैमिति कादि कृत्याति रित्त विषयः ॥ गुरुः ॥ नित्येनैमिति केका

होम क्रिया सुच ॥ उपा कर्मणि चोत्सर्गे ग्रहवेधो न विद्यते ॥ इति शुभदोषात्  
दिनमिति ॥ शुभदोषात् वाराह संहितायाम् ॥ चंडा प्रणि मही कं प संध्यानिर्घति

निश्वनाः ॥ परिवेष रजो धूम रक्ताकं स्तमनो दयाः ॥ दुर्लभं ध्यानं स स्नेह मधु पुष्य  
 फलोद्गमाः ॥ गो पक्षि मद वृद्धिश्च शुभा यमधु माधवे ॥ इत्यादयः ऋतु परत्वे नो-  
 क्ताः यद्दिने एते भवन्ति तद्दिनमेव त्यज ॥ अथ ग्रह भिन्नानं ग्रहैर्भोगादिभिर्भिन्नं भेदि-  
 तं तथा यौद्धं ग्रह योय्युद्धं यस्मिन्दिने नक्षत्रे युद्धं यातम् ॥ तथोत्पातभम् ॥ यस्मि-  
 न्दक्षे दिव्यां तरिक्ष भोगास्त्रि विधोत्पाताः संभूताः ॥ एतानि ग्रह भिन्न यौद्ध उत्पात न-  
 क्षत्राणि च एमा संत्यज ॥ भेद स्तार खेद यो यन्न वास्यादिति विवाह वृद्धावने ॥ ना-  
 रदः ॥ ग्रहणोत्पात भंत्याज्यं मंगलेषु ऋतु त्रयम् ॥ वृत्ति ॥ ननु नक्षत्र संधौ जायमाने  
 ग्रहणो किं नक्षत्रं दूषयेदित्यत आह ॥ शर्षः ॥ यस्मिन्विधुं राहु रि नं च धि क्षे ग्रहणा-  
 ति तत्त्याज्य मृतु त्रयं स्यात् ॥ याणि ग्रहेषु मरणं विधत्ते द्वयोर्भयोर्भूते हृदनेव जहात् ॥  
 अन्यच्च ॥ पक्षां तोरण ग्रहण छयं स्याद्यथा तदा तद्ग्रहणो यमं भम् ॥ पक्षादि शुद्धं भवति-  
 द्वितीयं पाणि ग्रहे शुद्ध्यति भोग पक्षादिति ॥ ७ ॥ नेष्टं ग्रह क्षे सकलाद्दृष्ट्या यसे क्रमात्

किं गुरोर्दुःसा सान् ॥ पूर्वं परस्तादुभयोस्त्रिघस्ताग्रस्तेऽस्तगेवाभ्युदितेऽर्द्धे रवंहे ॥ ८ ॥  
 अत्रार्थः ॥ नेष्टमिति ग्रहर्द्धं ग्रहणा नक्षत्रं क्रमात्संपूर्णाद्धी चतुर्थीश्रया से सानि षट् न्येकना-  
 सा न्नेष्टम् ॥ गुरुः ॥ सर्वग्रासे सुषणमासान्धी न्मासांस्तु दले ग्रहे ॥ ज्ञापान् ग्रहणो धिहो मा-  
 नेकम् विवर्जयेत् ॥ अथ क्रमात्ग्रस्तेऽस्तगे ग्रहणार्द्धं ग्रासे उभयोः प्राक् पश्चाच्च-  
 धत्वा नेष्टाः ॥ तथा ॥ अर्द्धं रवंहे ग्रस्ता स्त ग्रस्ती दययोरभावेऽपि ॥ अर्द्धं ग्रासे उभयोः  
 पश्चाच्च त्रिनिघस्तां नेष्टाः ॥ गुरुः ॥ ग्रस्तास्ते त्रिदिनं पूर्वं पश्चाद्गुस्तो दये तथा ॥ रवं-  
 ॥ त्रिनिदिनं निपश्ये ये सप्त सप्त च ॥ कल्पः ॥ ग्रस्ता दये परो देवो ग्रस्तास्तेऽर्द्धाक् श-  
 योः ॥ द्युनि शर्द्धित् भयं तत् रवंडी रवंड व्यवस्थयो रिति ॥ ८ ॥ जन्मर्क्षमास ति-  
 थयो व्यतिपात भद्रा वै धृत्य मापित् दिनानि तिथि क्षयर्द्धे ॥ न्यूनाधिमास कुलिक्र-  
 र्द्ध पात विष्कुंभवज्ज घटित्ता त्रय मेव नर्ह्यन् ॥ ९ ॥ जन्म क्षेति ॥ जन्म नक्षत्र ज-  
 र्द्ध मास जन्म तिथयः पुनर्कर्म सुवर्ज्याः ॥ अयं निषेध ज्ञाप्य गर्भस्थेव ॥ नारदः ॥

न जन्म मासि जन्म क्षेपे न जन्म दिवसे प्रिया ॥ आद्य गर्भ सुत स्याथ दुहितुर्हीकार्जु-  
 हः ॥ जन्म मासः सविज्ञेयो वर्जितः सर्व दर्मसु ॥ वस्तुतस्तु ॥ यत्र शुक्लादिचात्र मासि  
 चेन्नाहो जन्माभूत् ॥ सचांद्रो मासो जन्म मासः त्याज्यः ॥ इंद्राग्नी यत्र हूयेते मासा  
 हिः संप्रकीर्तितः ॥ अग्नीषोमो स्यतो मध्ये समासः पितृ सोमकः हरीलोक्त मासलक्ष-  
 णम् ॥ व्याती पाता द्यष्ट्व वर्ज्याः ॥ पितृ दिन म्माता पित्रोर्मर्माण दिनम् ॥ आद्व दिन मि-  
 त्यर्थः ॥ तिथि क्षयद्वा तिथि क्षयो वृद्धि पृच तल्लक्षण माह वशिष्ठः ॥ स्युस्तिरुस्तिथि  
 यो वारे एक स्मिन्नवमा तिथिः ॥ तिथि वार त्रये चैका त्रिद्युस्त्वर्क द्वेऽपि निर्दिते ॥ न्यूनमा-  
 सः ॥ अत्रिधिक मास पृच वर्ज्यः संक्रमहय सहितः क्षय मासः ॥ असंक्रांतोऽधिक मासः ॥  
 कुलिकाई ग्रहणौ ॥ पातो महापातः विकुम्भयोगा कज्योगयो राधं घटिका त्रयं वर्ज्यं ॥  
 एवं प्रकारेण कैश्चित् इज्य योगेन व घटिका वर्ज्या द्युत्क्रम ॥ यथा ॥ विष्णुं भा घ घटित्रयं  
 च नवकं व्याघातवज्रोद्भवे ॥ इति दृत प्रते तथा व्याघाते वज्रकेंका इति गणेश ज्योति

विद्वक्तिरपि निरस्ता ॥ चिच्छुं भवज्जयोस्तिष्ठः षड् गङ्गाति गङ्गयोः व्याघातेन व प्रहलेतुपं  
 च नाल्लो विगर्हिताः ॥ इतिकथ्यप्रोक्तेः ॥ परि घस्यार्द्धं वर्ज्यम् मूल स्याच्चाः पंच गङ्गाति गङ्ग-  
 यो राधाः पट्यट् चटिकाः व्याघाते चादिगाः नच घटिकाः वर्ज्याः ॥ ८९ ॥ वेदांगाष्ट नवा-  
 केन्द्र पक्षरं प्र तिद्यौ त्यजेत् ॥ वस्त्रं क मनु तत्त्वा द्वाभ्यं नाही पराः शुभाः ॥ ९० ॥ वाय्वा-  
 रम तद्भागं कूप भवना रं प्रतिष्ठा अतारं भोत्सर्गं वधू प्रवे श्न मन्त्र दानानि सोमाष्टके  
 ॥ गो दाना ग्रयण प्रपा प्रथम को पा कर्म वेदं ज्ञत नीलो द्वाह मध्याति पन्न क्षिप्रु संस्तु-  
 रान्मुत्थापनम् ॥ ९१ ॥ वाय्वा एवेति ॥ वापी दीर्घिका शारम उप वनम् ॥ तद्भागः पुष्क-  
 रिणी ॥ कूपः प्रसिद्धः एतेषामारंभ प्रतिष्ठा ॥ शारंभं निम्नार्णं प्रतिष्ठा उत्सर्गः ॥ तत्र गृह प्र-  
 तिष्ठा गृह प्रवेशो दीयः ज्ञताना मनंत व्रतादीना भारंभः गृहणम् ॥ उत्सर्ग उत्थापनम्  
 महा दानानि तुला पुरुषा दीनि सोमः ॥ सोमचागः । अष्टका द्वादशम् । गोदानं के ध्यात सङ्गं  
 कर्म । आग्रयणं नवान्नेष्टिः । प्रपा जल शाला । प्रथम को पा कर्म प्रथमारभ्यमाणं प्राव-

एषी कर्म वेद व्रतं महा नाभ्यादि त्रयम् ॥ सह्य नाम्नी उप निय व्रतम् ॥ वेद व्रतं च नीलो-  
 ह्वः ॥ काम्य द्वयोत्सर्गः ॥ अति यन्न शिशु संस्कारः अतिपन्थाः अतिक्रांताः जातकर्म-  
 दयः शिशुहानां संस्कारः देव स्थापनम् ॥ ११ ॥ दीक्षा मौजि विवाह मुंडनमपूर्वन्देव तीर्थे क्ष-  
 रणं संन्या साग्नि परि गृह्ये चपति संदर्शनेभ्ये कोशमम् ॥ चातुर्मास्य सप्तो व्रतो अवरायो  
 र्वधं परीक्षां त्यजेद्ब्रह्म स्त शिशु त्वद्वय सितयो न्यूनाधि मासे तथा ॥ १२ ॥ अत्र सूत्र्य-  
 नानि शतासयः ॥ अस्तं गते गुरौ प्रुक्ते चाले वृद्धे मलि म्लुचे ॥ उद्यापन सुपारंभं व्रतानां नैव  
 कारयेत् ॥ ऋक्षोच्चयः ॥ वापी कूप तडाग याग गमनं क्षीरं अति द्या व्रतं विद्या मंदिरं कर्णवेध-  
 न महा दानं वनं सेवनम् ॥ तीर्थं स्नान विवाह देव भवनं मंत्रादि देवे क्षणं दूरे शौचं जी वि-  
 द्युः परि हरे वस्तं गते भार्गवे ॥ १४ ॥ उप नयनं गोदानं पाणि ग्रहणं प्रवेश गमनानि ॥ अ-  
 स्तमितेषु न कुर्व्यात्तुर गुरु सुगु पुत्र चंद्रेषु ॥ १५ ॥ अस्तमयादि फल ग्राह वाद रायणः ॥ शु-  
 रोस्ते पतिं हन्या च्छुक्रास्ते चैव कन्यकाम् ॥ चन्द्रे नष्टे उभौ हन्या सत्या दस्तं विवर्जयेत् ॥ १६ ॥

॥ १६ ॥ बाल भावे स्त्रियं हन्यादृष्ट भावे नरं तथा ॥ तस्माद्बाल्ये च वार्द्धे च विवाहं नै-  
 व कारयेत् ॥ १७ ॥ अधि मासे वर्ज्यानि गृहस्य परि शिष्टे ॥ सोम यागादि कर्मणि निर्य-  
 न्यपि मलि म्लुचे ॥ तथैवाग्रयणाधान चानुष्मा स्यादि का न्यपि ॥ १८ ॥ महा लयाष्ट-  
 का श्राद्धो पा कर्मा द्वपि कर्तव्यम् ॥ स्पष्ट मास विशेषाख्य विहितं वर्जये न्नले ॥ १९ ॥  
 गर्गहृत्सनी ॥ अग्न्याधानां प्रति क्षांथ यज्ञ दान व्रता निच ॥ वेद व्रत दृष्टोत्सर्ग चूडा करण-  
 मेव च ॥ मांगल्य मग्नि वैकं च मल मासे विवर्जयेत् ॥ मरीचिः ॥ २० ॥ गृह प्रवेश-  
 गीर्वाण स्थाना अथ महोत्सवम् ॥ न कुर्व्या न्नल मासे तु संसर्ग्य हस्यतो ॥ २१ ॥  
 ॥ वशिष्ठः ॥ वापी कूप तडागादि प्रातिष्ठा यज्ञ कर्म च ॥ न कुर्व्या न्नल मासे तु संसर्ग्य हस्यतो  
 तथा ॥ २२ ॥ यदा क्षय मासो भवति तदा क्षय मास ए पूर्वोत्तरा वधि मासौ भवतः तत्र पु-  
 र्वः संसर्गः द्वितीयो हस्यतिः । गार्ग्यः । बाले वा यदि वा वृद्धे शुक्रे वास्तं गते युरे ॥ मल-  
 मास द्वौ तानि वर्जये देव दर्शनम् ॥ २३ ॥ अपूर्वं देवतां ह्यष्टा शुचः स्युर्नष्ट भार्गवे ॥



मल मासे त्व नाटुत तीर्थ यात्रां विवर्जयेत् ॥ २४ ॥ अनाहता अपूर्व तीर्थ यात्रा ॥ अत्र नि-  
यत कालानि सीमंत नाम करणा दीनि ॥ पूर्वदिस्तादिसत्वे ऽपि स्व त्वकाल एव कार्याणि  
॥ २५ ॥ गुरुः ॥ मास प्रयुक्त कार्येषु मूढत्वं गुरु युक्तयोः ॥ न दोष कुन्मले शासे गुर्वदि-  
त्यादि कं तथा ॥ २६ ॥ अन्यत्रापि ॥ सीमंत यात कार्दीनि प्राशनां तानि यानि वै ॥ न दोषो  
मल नासस्य सौहृदस्य गुरु युक्तयोः ॥ २७ ॥ वशिष्ठः ॥ अतीत काला न्य रिल्लानितानि  
कार्याणि सौम्या यन गे दिने प्रो ॥ सिते गुरौ वाप्यति दृश्य माने तदुक्त पंचांग दिनेष्व-  
खंडे ॥ देवी पुराणे ॥ सिंह संस्थे गुरौ यत्नात्सर्वारंभा न्विवर्जयेत् ॥ पुत्र भ्रातृ कलत्राणि  
हृन्वा च्छी घ्नं न संशयः ॥ २८ ॥ कार्की व्रजते नाशं संतानं सृयते ऽचिरात् ॥ देवा राम  
नद्यागानि प्रयोद्यान गृह्णाणि च ॥ २९ ॥ विवाह यज्ञोपनय चूडादि च न सिद्ध्यति ॥ य-  
था सिंह स्थितो जीव स्रष्टैव मकर स्थितः ॥ ३० ॥ अथ मपि निषेधो नियत कालानां न  
संपहः ॥ वशिष्ठः ॥ नीच राशि गतो जीवः प्रशस्तः सर्व कर्म सु ॥ नीचे नीचां प्र क-

स्त्याज्योयस्मादेशेषु नीचता ॥ ३२ ॥ विशेषासादये मोक्तः ॥ मवास्थी यदा जीवा वर्जयेत्  
 च सांश्रुत् ॥ प्रेषे खपि च भागेषु विवाह एषो मनो मतः ॥ ३३ ॥ तोवरा नन्दः ॥ अति चरे  
 सप्त दिनं वक्त्रे द्वादश मेकच ॥ नीचस्थितेऽपि वागीशे मासमेकं विवर्जयेत् ॥ ३४ ॥ ज्योति  
 निवधे ॥ हरिनी चारि भागेषु प्रतो द्वादहादि मंगलम् ॥ ननिषिद्धं यदि त्वोच्चै स्वभे वासं-  
 स्थितो गुरुः ॥ ३५ ॥ मघां त्यक्ता यदा गच्छेत्काल्युनी च बृहस्पतिः ॥ पुत्रिणी धनिनी-  
 कन्या सौभाग्यं सुरव नस्तुने ॥ ३६ ॥ कचिद् पूर्व तीर्था यात्रायां मौढ्यादि दोषो नास्ति ॥ गो-  
 दा चर्या गवायां च श्रीशैले गृह्णा हये ॥ सुरा सुराणां गुर्वोश्च मौढ्य दोषो न विद्यते ॥ ३७  
 दधुपराणे निस्थली सेतो ॥ गवायां सर्व कालेषु पिंडं दद्याद्दिधानतः ॥ अधि मासे जन्म दिने-  
 लेच गुरु शुक्रयोः ॥ ३८ ॥ नत्यक्तव्यं गया श्राद्धं सिंहस्थे च बृहस्पती ॥ अधि मासे सिं  
 ह गुरावस्ते च गुरु शुक्रयोः ॥ ३९ ॥ तीर्थ यात्रा न कर्त्तव्या गयां गोदावरीं विना ॥ वात्स्यव-  
 क्रान्ति चारणे सुरा वपि गुर्वाद्यस्त बह्वर्जम् ॥ यात्रोद्वाह प्रतिष्ठां च गृह चूडा व्रता दिकम् ॥ ४०

वज्रजयेद्यत्नतश्चैव जीवे वक्राति चारणे ॥ ४० ॥ अस्यापवादो राजमार्त्तगृहे ॥ वक्राति चार  
 ने जीवे वज्रजये तदनंतरम् ॥ व्रतो द्वाहादिचूडायाभष्टविंशति वासरम् ॥ अथदीपिकायाम्  
 त्रिकोणाजाया धनलाभग्रणौ वक्राति चारेण गुरुः प्रयातः ॥ यदा तदा प्राह शुभं विलगने  
 पिवाहं पालि ग्रहाण वशिष्ठः ॥ ४१ ॥ गुर्वदित्येऽपि सर्वशुभकर्मवर्ज्यम् ॥ शौनकः ॥ एक राशि  
 गतौ सूर्ये जीवोऽस्यातां यदा पुनः ॥ व्रत बंधविवाहादिशुभकर्मोऽखिलं त्यजेत् ॥ ४२ ॥  
 विग्रहपक्षेऽपि यस्मिन्मक्षेतिथिद्वयनाशः त्रयोदशदिनः पक्षः सोऽतिनिघ्नः ॥ उक्तं च ॥  
 पक्षस्य मध्ये द्वितियाप्येतां तदा भवेद्भौरव कालयोगः ॥ पक्षे विनष्टे सकलं विगद्य मि-  
 त्याह्मराचार्यवराहसस्ताः ॥ ४४ ॥ तथा ॥ त्रयोदशदिने पक्षे तदा संहर्तते जंगल् ॥ अ-  
 पि वर्ध तद्वहेण कालयोगः त्रयोऽर्त्तितः ॥ ४५ ॥ तौल्यमक्षे शुभकर्मवर्ज्यं चेत्तद्वरः ॥ त्र-  
 द्वाहशदिने पक्षे विवाहादि न कारयेत् ॥ गर्गादि सुनयः प्राहुः कृते नृन्त्युत्तदा मयेत् ॥  
 उपमयनं परिणयनं वेला रमादिपुण्य कर्त्तव्यम् ॥ यात्रादिक्षय पक्षे कुर्यान्नजिजी

विष्णुः पुरुषः ॥ ४७ ॥ अस्मिन्मूषादिकमपित्याज्यम् ॥ राजमार्तदः ॥ यान्त्रो चूडो वि-  
 धाहं ध्रुति विवर विधिं शंख सद्य प्रवेष्टः प्राप्ता बोधानहस्यं सुरनर भवना रंभ विधा  
 विधेनोमौजीवंधं प्रतिष्ठां मरिणक न करदा धारणां कुर्वते ये मृत्युः सिंह स्थिते ज्ये गुरू  
 दिन करयोरेक राशि स्थितो भवेत् ॥ ४८ ॥ सिंह स्थे गुरो सत्यपि सिंहं प्रोस न्यं प्रान्नयो  
 दृष्टां प्रो ॥ १३ २० भ्योऽनं तं संन्यं शमं प्रान्नयम् ॥ पंचमो नवो प्राप्तिं प्राप्तिं शुरो सति  
 विवाहो नैष्टः ॥ सिंह राशौ तु सिंहं प्रो यदा भवति वाक् पतिः ॥ सर्व देशे स्वयं त्याज्यो दे-  
 पत्यो निर्धन प्रादः ॥ इति राजमार्तदः ॥ सिंहपि भगदेवत्ये गुरो युन्न पती भवेत् ॥ अत्यंत  
 प्रमुग्गा साध्वी धन धान्य समृद्धिदा ॥ ४९ ॥ अथ देश भेदात् लक्षः ॥ गोदा वय्युत्तरे  
 तीरे यादवद्भागी रथी तलम् ॥ नेष्ट स्तत्र विवाहादि सिंह स्थे ज्ये सदा बुधैः ॥ ५० ॥ वशि-  
 षः ॥ भागीरथ्युत्तरे कूले गौतम्या दक्षिणे तथा ॥ विवाहो व्रत वंधो वा सिंह स्थे ज्ये न दु-  
 र्यति ॥ ५१ ॥ अत्र विवाह व्रत वंधान्यतम शुभ कर्माणि निषिद्धा न्येव ज्योतिर्निबंधे ॥ संग-

लानीह कुर्वीत सिंहस्यो वाक् पतिर्यदा ॥ भानौ भेषगते सम्यगित्याहु एषो न काश्यः ॥  
 ५२ ॥ कुत्रापि मकरस्योऽपि न वज्र्यः लक्षः ॥ नर्मदा शर्वभागेतु श्रेणस्यो नर दक्षिणे ॥ गंड  
 क्याः पश्चिमे भागे मकरस्यो न दोषभाक् ॥ ५३ ॥ अन्यथ ॥ आगधे गोड देशे न सिंधु देशे  
 च कौंक्षणे ॥ व्रतं चूडां विवाहं च वज्रिन्मकरे गुरौ ॥ ५४ ॥ लुप्तवस्त्रेऽपि शुभकृतो निधः ॥  
 गति चारगतो जीव सं राशिं नैति चेतुनः ॥ लुप्तः संवत्सरे ज्येष्ठे गृहिते स्तव कर्म सु ॥ ५५ ॥  
 गुरुः ॥ मेघे हृषे भये कुंभे यद्यानी चारणे गुरुः ॥ न तत्र काल लोप स्यादित्याहु भगवान्य  
 मः ॥ ५६ ॥ इयमांती नर न दोषः च्यवनः ॥ मासा न्दशे कादश्या प्रयुज्य राशे यदा राशि मुपैति  
 जीवः ॥ मुक्तेन पूर्वच पुन स्तथापि न लुप्त संवत्सर माहु राय्याः ॥ ५७ ॥ वैश्रभेन पराहारः ॥ लु-  
 प्त संवत्सरो रेवा नर्मदा सुर निम्नगा ॥ भागी रथी तयो नद्यो रंतरेऽति विविद्धः ॥ ५८ ॥  
 लुप्तं च ॥ लुप्ताब्दो घोः विमतेन मध्ये सोमोद्भवाया स्सुर निम्नगायाः ॥ इति नारदः ॥ सम-  
 हसि गुरे प्रभुं तन्मासे तु प्रयत्नतः ॥ विवाहादि न कुर्वीत नर्मदा तीर उत्तरे ॥ ५९ ॥ द्विवे

नन्दिदि कुल संभूत सरसूक्त संयुक्ते शिरो मणौ सन्नाहैषा नवर्गाय त्रभा प्रुभा ॥ ६० ॥ वृत्तिन्नी संग्र-  
 ह् ६ शिरो मणौ यज्य कथनं नाम नवमी प्रभा ॥ ६० ॥ अथ लग्नप्रकरणम् ॥ मेघो ह्योऽथ मि-  
 थुनं कर्कः सिंहोऽथ कन्यका ॥ तुलांथ दृष्ट्विको धन्वी सकरः कुंभ मीन कौ ॥ १ ॥ राश-  
 यस्तु क्रमा देते पुंस्त्रि दो दूर संज्ञ कौ ॥ दोयः चर स्थिर ऽथैप द्विस्त भावः क्रमास्तुनः ॥ २ ॥  
 प्रक्षोद्या धनुर्मयो मर्कर ह्य कर्कले ॥ चमयो द्यवान्मीन स्वतोऽन्ये मस्त को व्याः ॥ ३ ॥  
 मेघो ह्यो धनुर्गुमे कर्क न कोनि शावलः ॥ दिवा दत्तास्तु तेभ्योऽन्ये स्व स्व काले वला भिकाः  
 ॥ ४ ॥ अथ एष्टित्वामिनः ॥ मेघ दृष्ट्विक यो भौमः वुधो नियन कन्ययोः ॥ तुला ह्य भनो प्रयु-  
 क्रः कर्क दस्यतु चंद्रसाः ॥ ५ ॥ सिंह स्याधि पीत सूर्य्य शनि मंकर कुंभयोः ॥ स्थान्मीन धनु-  
 पो जीव ऽथैते राशी प्रवर मताः ॥ ६ ॥ अथ यद्देष्टानि ॥ मेघो ह्य स्तथा नक्रः कन्या कर्की म-  
 यस्तुला ॥ सूर्या दीनां क्रमा देते कथिता उच्च राशयः ॥ ७ ॥ परमोच्चो प्रकः सूर्य्यो दिशो रामग-  
 जाप्तिनः ॥ वाण चंद्र एष्ट एष्टेला दृष्टः रक्षाश्चि मिताः क्रमात् ॥ ८ ॥ अथ नीचम् ॥ सूर्या

दीनां जगृर्नीचं सोच्च भाद्यच्च सप्तमम् ॥ एहोस्तु कन्यका गेहं मिथुन त्वेच्च भं स्मृतम् ॥  
 १८ ॥ अथ मूलत्रिकोणम् ॥ सिंहो ह्ययम मेखाख्यं कन्या धन्वि तुला घटाः ॥ रव्यादीनां क्रमान्मू-  
 लात्रिकोणा राशयः स्मृताः ॥ १० ॥ अथ नेपादि लग्न कृत्यानि ॥ आक रोधातु कर्म्मणि भूनिपा-  
 लाभिधेचनम् ॥ निरोध स्नाह सं चैते मेय लग्ने प्रसिद्धाति ॥ ११ ॥ क्षेत्र कृपादिकं वानं कुमा-  
 री वरणं क्रवम् ॥ गृह प्रवेश उद्ग्रह सिद्धि देव ह्युद्योदये ॥ १२ ॥ कला विधूवा विद्वानं यत्काव्यं ह्यप-  
 भौ वितम् ॥ तत्सर्वं मिथुने प्रोक्तं हो राशस्त्राविचक्षणैः ॥ १३ ॥ वारि वंधन मोक्षं च पौष्टिकं  
 चर कर्म्म च ॥ यात्री कूप तथा गादीन् कर्कटे कथितं बुधैः ॥ १४ ॥ राज सेवा कृषिः परंपर  
 योगोवणिक्पथः ॥ सिंहे प्रसिद्धाति तत्सर्वं मेष लग्ने दिचं चयत् ॥ १५ ॥ भूषणं धिरत्न विद्वान्-  
 नं ज्ञीयधं पौष्टिकं तथा ॥ चर स्थिर च यत्कृत्यं कन्या लग्ने प्रसिद्धाति ॥ १६ ॥ यागिल्यं क-  
 र्णं सेवा यात्रा भांड तुला अयम् ॥ तुला लग्ने समाख्याता मुनिभि स्तत्त्व वेदिभिः ॥ १७  
 ॥ राज सेवा भिधे कौर्व साहसं दारुणं तथा ॥ उग्रं चौर्ध्वं स्थिरं कर्म्म कर्त्तव्यं तत्परी हृदये ॥

॥ २८ ॥ अथाहः नैष्टिकं यात्रा यादृशीं परिग्रहे धनुर्धने चरं कर्म काथितं पूर्व मूर्धनिः ॥  
 ॥ २९ ॥ दासी चतुः दशैः प्राति जन्म सो वंधमोक्षणम् ॥ तथा सेना श्रयं यात्रा ययसो मकरो  
 नृपे ॥ ३० ॥ चीजोद्वि संग्रहे लोकचर्चा वारिगमादिकम् ॥ पशु कर्म्मी वुकार्यच कुंभलक्ष्मि  
 नृसीर्हितम् ॥ ३१ ॥ उद्याह श्रमिभ्ये कथं विद्या लंकरणादिकम् ॥ दिशगनं कृषि रत्ना-  
 न्नप्राशनं भीन नाश्रितम् ॥ ३२ ॥ मेयादिके तु शुद्धेयु यथोक्तं कर्म्म सिद्धति ॥ पायेद्वि-  
 त्तुते ज्वेद्य नूरं सिद्धे न्ननेतम् ॥ ३३ ॥ अथ लग्न भुक्ति प्रमाणम् ॥ तिक्तो मीने च क्षेत्रे-  
 च पंती प्राग्नि चतुः पत्नीः ॥ चतस्रश्च दृढे कुंभे पलाशोक्तास्व वीडिष् ॥ ३४ ॥ मकरे  
 मिरुने पंच घटिकाच चतुः पत्नीः ॥ पंच कर्कशे च चापे च शशि वेदाः पत्नीः स्मृताः ॥ ३५  
 ॥ घटिका पंच सिंहः श्लो प्राग्नि वेदाः पत्नीः स्मृताः ॥ कन्यायान्च तुले पंच धलाश्चन्द्रा-  
 स्तथा ग्नयः ॥ ३६ ॥ अथ यद्वर्गाः ॥ यद्वर्गौ ग्रह होराख्ये द्वेः काणोद्व नवांशकः ॥ हो-  
 दशं प्रस्तथा त्रिंशं प्रश्च सुभजः सुभः ॥ ३७ ॥ त्रिंशद्वा गाल्मके लग्नं होरा तस्याह





| तंत्र्या | १  | २  | ३  | ४  | ५  | ६  | ७  | ८  | ९  | मेयाः | कर्काः | तुलाः | मकराः |
|----------|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-------|--------|-------|-------|
| मांशाः   | ३  | ६  | १० | १३ | १६ | २० | २३ | २६ | ३० | ११०   | ११८    | ७१३   | १०१२  |
|          | २० | ४० | ०० | २० | ४० | ०० | २० | ४० | ०० | ५     | १२     | ११    | ६     |

द्वादशमांशाः त्वराशितो ज्ञेयाः

|   | १ | २  | ३  | ४  | ५  | ६  | ७  | ८  | ९  | १० | ११ | १२ |
|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| १ | २ | ५  | ९  | १३ | १७ | २१ | २५ | २९ | ३३ | ३७ | ४१ | ४५ |
| २ | ५ | ९  | १३ | १७ | २१ | २५ | २९ | ३३ | ३७ | ४१ | ४५ | ४९ |
| ३ | ९ | १३ | १७ | २१ | २५ | २९ | ३३ | ३७ | ४१ | ४५ | ४९ | ५३ |

वियम एषौ विंशमांशसे समरषौ विंशमांशसे

| स्वामि | मं | श | व | तु | शु | च | श | म | स्वामि   |
|--------|----|---|---|----|----|---|---|---|----------|
| मांशाः | ५  | ५ | ८ | ७  | ५  | ७ | ८ | ५ | श्रांशाः |

यथा क्रमात् ॥ अथ जन्मादि भाव संज्ञा ॥

तनु एर्येनं २ सहोत्पारव्यं ३ सुहृत् ४ पुत्रो

भरि ६ द्योयितः ७ ॥ निधनं ८ धर्म ९ क

स्मा १० य ११ व्यया १२ भावास्तनोः क्र-

मात् ॥ ३२ ॥ केन्द्रं परां फरं चापौलि-

मं लग्ना तुनः पुनः ॥ नवमं पंच मस्थानं

त्रिकोणं स्थानमित्यपि ॥ ३३ ॥ त्रिदशैकादशं यक्षं प्रोक्तं चोपचयाद्भयम् ॥ यामि-  
 त्रं सप्तमं धूतं छिद्रं च मदनाद्भयम् ॥ ३४ ॥ रिक्तं तु द्वादशं द्वेयं दुष्टित्वं कं स्यात्तृतीयकम्  
 ॥ चतुरस्रं तुरीयाद्य संख्यं रंभ सथायमम् ॥ ३५ ॥ अथ वर्गोत्तम नवांशः ॥ आद्यप्रचरे नवांश  
 स्थात्स्वरे राशौ तु पंचमाः ॥ नवमो हिः स्वभावाख्ये शुभो वर्गेऽन्तिमस्त्वयम् ॥ ३६ ॥ ज्ञ-  
 यसाधारणा शुभकार्ये लग्नयत्नम् ॥ सर्वेषु शुभकार्येषु नेष्टाः खेदाः व्याख्याः ॥ लग्ने  
 पापा रिपौ सौम्याः पापाः केंद्रत्रिकोणगाः ॥ ३७ ॥ सौम्याः केंद्रत्रिकोणस्थाः पापा-  
 स्तु त्रिखंडाय गाः ॥ ते सर्वे लाभगाः खेदाः श्रेष्ठास्तु शुभकर्मणि ॥ ३८ ॥ भावः  
 स्वपतिना सौम्ये दृष्टौ युक्ते वलाधिकः ॥ पूर्णं फलं निजं धत्ते व्यस्तं पापैर्युते क्षितः ॥ ३९  
 ॥ लग्ने यद्गुर्गं संसृद्धे प्रोक्तं स्थानस्थिते ग्रहे ॥ शुभर्धेति धि वारेषु कार्थ्याः सर्वाः शुभाः  
 क्रियाः ॥ ४० ॥ द्विवेदि कुलसंभूत सरयूकृतसंग्रहे ॥ शिरोमणौ समाप्तेया दशमीयं प्र-  
 भाशुभा ॥ ४१ ॥ दूतिश्रीसंग्रहशिरोमणौ लग्नकथनं नाम दशमीप्रभा ॥ १० ॥

नय गृहर्चा प्रकरणम् ॥ अय नूतन वस्त्रा लंकारादि धारणम् ॥ हस्तादि पंचके पुख्ये धनिद्या रेवती  
 द्वये ॥ अतरे च पुनर्वसोः रोहिण्यां च शुभे तिथौ ॥ १ ॥ बुधे शुक्ले ज्य वारेषु नूतनां वस्त्रा  
 रणम् ॥ सोमं रोज रत्नादि प्रवालानां धृति प्रशुभा ॥ २ ॥ प्रागुक्त विह वारेच स्वर्णा-  
 या भरण दिक्म् ॥ एतं वासो बुधेऽर्घ्यं भौम भास्कर योग्यि ॥ ३ ॥ शुभगायाः विशेषः ॥ रो-  
 हेणी गुरु पुनर्वसु तरे या विभर्ति नव वस्त्र भूषणम् ॥ सान योग्यि दव लंघते यतिं स्नान या-  
 धरति नान्दयोग्यि या ॥ ४ ॥ अथात्रवार फलम् ॥ जीर्णं सर्का विधु प्रचार्द्र भीम प्रश्ले कं बुधो  
 धनम् ॥ गुरु क्षीर्णं त्रिया वाप्ति भोगीवे मलिनं शनौ ॥ ५ ॥ कुर्वन्ते वासरत्वे ते नूतनां वर  
 धारणात् ॥ अयर्क्षफलम् ॥ नव साहि ग्या श्विन्ना भरणं नदि नाशनम् ॥ छत्तिकाग्नि  
 भयं कुट्या रोहिण्यां सर्व संपदः ॥ ६ ॥ नृगे गूयक भीति स्या दार्द्र्या निधनं भवेत् ॥ पुन-  
 र्वसौ तदा पुख्ये धन धर्म महोत्सवाः ॥ ७ ॥ अश्लेषायां भवेच्छोको सघायां मरणं प्रवम्  
 ॥ एवो भयं तु पूषाया शुक्लरायां घना गमः ॥ ८ ॥ कर्म सिद्धि तु हस्त र्क्षे चित्राया मिष्ट सं-

पदः ॥ मिथु भोजन दा स्वाती विशाखा नंद दायिनी ॥ ७॥ मित्राक्षिरनु राधायां ज्येष्ठायां  
वाससो हतिः ॥ जलक्षु तिष्ठ मूलर्क्षे पूर्वाषाढा ति रोगदा ॥ १० ॥ मिथुान्न दो चरा बाढा  
अवरो नयनोत्कृत् ॥ धान्या गगौ धनिष्ठायां चिव मीति श्रुताभिधे ॥ ११ ॥ पूर्वाभा  
द्वेजला द्वीति रुक्मराया धना गमः ॥ रत्ना वासिस्तु रेवत्या भवे हस्त स्वधारणात् ॥ १२  
॥ अथ वल्गा भरणा विधारणे स्त्रीणां विशेषः ॥ अश्लेषन्यांच धनिष्ठायां रेवत्यां कर पंचके ॥  
सुवर्ण रत्न दंतादि वस्त्राणां धारणं स्त्रियः ॥ १३ ॥ अथ चूरी चक्रम् ॥ यावद्वास्करभुक्ति  
भानिदिव से धिल्लानि संख्या तथा ॥ वन्ति ३ भूति ५ गुणा ३ भि ४ सप्त ७ नयनं २  
पृथ्वी १ करे २ लुः १ क्रमात् ॥ ॥ सूर्या रो कविसेन्य राहु रविजाः जीवः प्राप्ती के-  
तवः ॥ क्रूरे ५ स च शुभे प्रगुः श्व कथितं चक्रे करे भूषणे ॥ सूर्यभातचूरी चक्रम् ॥  
॥ १४ ॥ अथ कज्जला दर्शकृत्यम् ॥ चित्रा चतुष्टये प्रिव-

न्या धनिष्ठारेवती मृगे ॥ सुक्ते ऽर्के न्हि प्रानौ स्त्रीणां हर्ष

|    |    |    |    |   |   |   |    |    |
|----|----|----|----|---|---|---|----|----|
| ३  | ५  | ३  | ४  | ७ | २ | १ | २  | १  |
| सू | मं | शु | वु | र | श | ह | चं | के |

शिर्षां जनयोर्दृतिः ॥ १५ ॥ अथ नमस्तस्मिन् विष्णोः फलम् ॥ वास सो नवधा भागे चतुः कोणयुदेव-  
 ताः ॥ मध्य त्र्यंश स्थितं रक्षो नराः पार्श्वं दशं शूयोः ॥ १६ ॥ दग्धे जीर्णे नवे वस्त्रे लि-  
 ते वा कर्दमादिभिः ॥ सर्वं प्रति ध्वसत् चैव शयनाशन पादुके ॥ १७ ॥ कज्जलक-  
 र्दम गो मय लिप्ते वाससि दग्ध वति स्फुटिते च ॥ चिंत्य मिदं नवधा विहिते तन्निष्ठ मनि-  
 ष्ठ फलं च सुधीभिः ॥ १८ ॥ शंख चक्रां बुज च्छत्र ध्वज तोरणां सन्निभा ॥ श्रीवत्सल-  
 र्वतो भद्रं नृणां वर्तनं गृहोपमा ॥ १९ ॥ वर्द्धमान स्वस्ति का भस्मगङ्गूर्ध्वमया कृतिः ॥  
 छेदा कृति र्दैत्य भागेऽप्यायुर्यं प्रदानृणाम् ॥ २० ॥ स्वरोद्वोऽसूक का कादि जंबूकश्च दं-  
 को पमाः ॥ त्रिकोण सूर्या कृतयो देव भागेऽप्य शोभनाः ॥ २१ ॥ निर्दिशतं वसनं दद्या द्वि-  
 जेभ्यः स्वर्णं संयुतम् ॥ आश्रिणो वाचनं कृत्वा त्वन्य द्वस्त्रं च धारयेत् ॥ २२ ॥ शय्य मुह-  
 र्णं विनापि वस्त्रधारणम् ॥ विप्रा क्षया तथो ह्यहं राज्ञा प्रीत्या र्पितं च यत् ॥ निधेऽपि धिक्लि-  
 चा राक्षो वस्त्रं धार्यं जगुर्बुधाः ॥ २३ ॥ अथ वस्त्र विशेष विशेषः ॥ मुक्त वस्त्रोक्त भेदाभ्यं र-

ॐ श्री गुरुभ्यो नमः ॥ विशुद्धे कर्तुं पीतं सभौसे रक्तं वरम् ॥ २५ ॥ अथ कलनीलम् ॥  
 पुनर्वसु धनिष्ठाख्येऽपि वभे हस्ताच्चतुष्टये ॥ पूर्वोत्तरे शनौ सूर्य कलनीलां वरं शुभम्  
 ॥ २६ ॥ अथ दुकूलम् ॥ जीवेऽर्केऽङ्गे बुधे शुक्रे वरुणोक्तं क्षेप्रवान्विते ॥ स्थिरेऽङ्गे सङ्ग्रहेऽप्यु-  
 क्ते यदुकूलस्य धारणम् ॥ २७ ॥ अथ कोशेयम् ॥ शशिवनी रेवती हस्ते रोहिण्या अवरात्रये  
 ॥ पूर्वोत्तरे पुनर्वसुः स्वाती पुष्ये मघाभिधे ॥ २८ ॥ रेवौ चन्द्रे गुरो भाष्यं कोशेय वसनं जनेः  
 ॥ अथ ऐमजं वल्गम् ॥ नील वल्गो दिते धिसे रेवती युध्य यो रपि ॥ शुक्रे शनौ श्वरेऽर्के च धार-  
 ये द्वेभ्योऽङ्गो वरम् ॥ २९ ॥ अथ सतलकं चक्र धारणम् ॥ पुष्योत्तराश्रुणो धात्ये धनिष्ठा श्चि करत्रये ॥  
 रोहिण्या गुरु शुक्राब्जे देहे दुर्ग धृतिः शुभा ॥ ३० ॥ अथ स्वर्ण रत्नं तनु मय वल्ग परिधानम् ॥  
 सुवर्णं तनुं संमिश्रं धारणं च रेवौ कुजे ॥ रज तंतं द्वि सङ्केऽङ्गे वल्ग धारणा मे शुभम् ॥ ३१  
 ॥ अथ वल्ग निर्मीरणम् ॥ रोहिणी रेवती चित्रा नुराधा नृग भोत्तरे ॥ शनिं हित्वा विदध्यातु तंतु-  
 मिः पटसाधनम् ॥ ३२ ॥ अथ कुशुमाक्षौ वल्ग रत्नम् ॥ पुनर्वसु ह्ये हस्ता तं च के अवरात्र-

५८ ॥ अश्विर्वसे ऽर्कं कवीज्या रेवास संरंजनं सुभम् ॥ ३३ ॥ अथ सत्वी कर्मा ॥ मृगश्चित्रानु  
 राधाश्विष्युध्यांतं रेवती करः ॥ ज्येष्ठा सद्वा सरा स्तार्काः श्रूची कर्म्मणि सस्पृताः ॥ ३४ ॥  
 अथ वसुधा लनम् ॥ पुनर्वसु ह्ये ऽश्विन्या धनिष्ठा हस्त पंचके ॥ हित्वा कर्किं बुधान् रि-  
 त्तो षष्ठी प्राद् दिने तथा ॥ ३५ ॥ व्रतं पर्वच वरुणाणि क्षालयेद्भज कादिना ॥ ३५ ॥ अथो  
 पानत्परे धानं चर्म छत्यं च ॥ चित्रा पूर्वानुराधा ज्येष्ठा प्रलेया मघा मृगो ॥ विशाखा कृत्ति  
 का मूले रेवत्या ज्ञार्किं सूर्ययोः ॥ ३६ ॥ उपानत्परिधानं च चर्म कर्म्मणि सस्यते ॥ अथ  
 वितान तूलिकोपधानादि निर्म्माणम् ॥ कुर्याद्दस्त्रो विते धिल्ले तूलिका मुप धान कम् ॥ विताना  
 धं च वभीयान् ऊर्ध्व मूर्ध्मुखोद्भु ॥ अथ वस्त्र मय गेह निर्म्माणम् ॥ श्रुति त्रये ऽश्विनी पुष्ये  
 ऽनुराधा रोहिणी मृगो ॥ हस्त त्रये पुन र्भे ऽन्त्ये त्र्यम्बरे णट वेधम् सत् ॥ ३७ ॥ अथ सुगंध ओ-  
 गः ॥ श्रुति त्रये ऽश्विनी पुष्ये पूर्वायाद्या नुराधयोः ॥ हस्त त्रये पुन र्भे ऽन्त्ये मृग र्भेन पु-  
 भे हनि ॥ ३८ ॥ चंद नागरु कस्तूरी पुष्पाणि धारणं शुभम् ॥ अथ शय्या रंभः ॥



ॐ रोहिणी चोन्नरा द्वेया हस्तपुष्यपुनर्वसु ॥ अनुराधाश्रितनी शस्ता खट्वा निर्मनीया कर्मीणि  
 ॥ ४२ ॥ शुभे योगे शुभे वारे विषया त्वहं को नः ॥ मन्दस्वके रात्रौ ह्येया श्रुतामाविष्टि  
 वैधत्तो ॥ ४३ ॥ पितृ पक्षे विशेषेणा यत्ना नो परि वर्जयेत् ॥ आवरो चैव योगेन्य आद्रे मा  
 स्य शुभे हनि ॥ ४४ ॥ वर्त्तयेद्भौम मंदेन खट्वा निर्मनीया कर्मीणि ॥ सूर्य्य श्रितु चतुष्पञ्च  
 देयं धिस्तु मस्तके ॥ ४५ ॥ कोणयो रष्ट नक्षत्रं शखाया नष्ट संख्य कम् ॥ खट्वा मध्ये त्रि-  
 के चैव वेद संख्यां च पात्रयोः ॥ ४६ ॥ दूत्यं खट्वा फलं चक्रे चारु ह्ये च भाषितम् ॥ मस्तके  
 च शुभं ज्येष्ठ कोणयो रष्ट मस्तुदम् ॥ ४७ ॥ शारखाष्टकं शुभं प्रोक्तं त्रिकं मध्ये सुखप्रद  
 म् ॥ पादेषु वेद नक्षत्रं हानि मस्तु भय प्रदम् ॥ ४८ ॥ सूर्य्य भादिन भं गरंयं खट्वा चक्रे  
 विशेषतः ॥ अथ पलुकाश नादि आरंभः ॥ भैत्रेस्तु पुष्य यम भादिति वस्त्रि चित्रा हस्तोत्तरा चय  
 हरीज्य विधात आनि ॥ एते च्यती वश्य नाशन पादुकानां संभोग कार्थ्य मुदितं मुनिभि-  
 र्गुरुभादे ॥ ४९ ॥ अथ भूषणघटनम् ॥ त्रिपुष्कराभिधेयोगे त्रुत्तरेत्यती ह्ये ॥ शुतित्रये मनेषु

ये पुनर्वस्वऽनुराधयोः ॥ हस्तत्रयेऽथ रोहिण्यां श्रुभा कार्यां श्रुभे हनि ॥ ५० ॥ अथ रत्न  
 शुक्र भूषाघट्टनम् ॥ कृत्तिकादित्रये हस्तपंचके रेवती द्वये ॥ श्रुतित्रये पुनर्वस्वोः पुष्यभेचो-  
 त्तरात्रये ॥ ५१ ॥ कुजेऽर्के रत्नशुक्र भूषा घट्टनं श्रुभ वासरे ॥ अथ रोष्य अथ वज्र शुक्र भूषण  
 निम्नारम् ॥ रत्न शुक्र भूषणोक्तर्ध्व विष्णवां कृत्तिकां विना ॥ ५२ ॥ शुक्रेऽङ्गे भूषणरोष्य  
 चक्रं सुक्ता मयं हि सत् ॥ अथ पात्र भोजनम् ॥ अथातः संप्रवक्ष्यामि यदुक्तं प्रगति यामले ॥ सू-  
 र्यभाचंद्र पर्यन्तं गणनीयं सदा बुधैः ॥ ५३ ॥ दिक्षु दिक्षु हयं न्यस्य मध्ये का वश्यो ज-  
 पेत् ॥ वर्तुला कारचक्रस्य भोक्तु पात्रस्य निर्णयः ॥ ५४ ॥ बंधनं सौख्यं हानिस्तथा ह्ना-  
 भं सौख्यं च मृत्युदम् ॥ पुत्रा युश्लोक वृद्धी च पूर्वादि क्रमतो भवेत् ॥ ५५ ॥ अस्तानष्टे-  
 नु पृथ्वी च विलोत्सुनं विवर्जयेत् ॥ रोहिणी युगले हस्त त्रितये रेवती द्वये ॥ ५६ ॥ अथ-  
 ए त्रितयेषु पुनर्वस्व नुराधयोः ॥ श्रुतरेषु शुक्रेऽङ्गे वारे चामृतयोगके ॥ ५७ ॥  
 सौवर्णरोष्य पात्रेषु भोजनादि श्रुभ प्रदम् ॥ अथ ग्रमशुक्रम् ॥ अचरा त्रितये हस्त त्रितये रे-

भि-वती ह्ये ॥ ज्येष्ठायां शुभ शीर्षे च पुनर्वसु द्वये तथा ॥ ५८ ॥ क्षुरकर्म बुधैः प्रोक्तं त्यक्त्वा भो-  
 म शनिं रविम् ॥ अनुराधा शुक्रां चैव क्वाचिकां रोहिणीं मघां ॥ ५९ ॥ अथ क्षुरकृत्ये वारफल-  
 म् ॥ भानु र्मर्मासे शनिः सप्त भौमो ऽष्टौ नाश्रये त्सुखम् ॥ वज्रये द्वोधनः पंच मासान्सप्तनि-  
 शा पतिः ॥ ६० ॥ पुनरुक्त्वे कादश क्षेम क्षौरैश्चानां पतिर्वश ॥ अथ क्षौरैरित्याज्य तिथिः ॥ ज्य-  
 श्मी प्रति पत्पथी ऋक्ता पर्वाणि संत्यजेत् ॥ चतुर्दशी त्वमावास्या क्षौरैरित्याज्या तु सर्वदा ॥  
 ६१ ॥ निधनक्षत्राणां दुष्ट फलम् ॥ पंच कृत्वो मघायां यः पदं कृत्वः कृत्तिका स्वपि ॥ त्रिवारं  
 त्रानुराधायां रोहिण्या मष्ट वारकम् ॥ ६२ ॥ उत्तरा फाल्गुनी संज्ञे चतुर्थे क्षौरमाचरे-  
 त् ॥ सर्वेध साप्त मानो ऽपि यावद्वन्द्वं न जीवति ॥ ६३ ॥ अथ क्षौर निषेधे ऽपि तदपवादः ॥ ज्यो-  
 क्ष याविश्र राक्षो र्वाप्याधाने वंध मोक्षणे ॥ सुताशौ चैव दीप्तायां शुद्धनं शस्त्रमेव्यपि ॥  
 ६४ ॥ शुद्धनं चोपवासश्च सर्व तीर्थव्ययं विधिः ॥ वर्जयित्वा कुरु क्षेत्रं नैमिषं पुष्करं गयाम् ॥  
 ६५ ॥ अथ राज्ञां प्रशश्रुकर्म ॥ क्षौरमस्यो रये राज्ञः पंचमे पंचमे हनि ॥ प्रशश्रुकर्म त्व

नाख्यातं निविद्ध तारकानचेत् ॥ ६६ ॥ अथ नख दंत कृत्यं ॥ अक्षे सु क्षौर सन्धीहं येसु  
 येषु मनीषिभिः ॥ तेषु तेषु च कर्तव्या नख दंतदि काक्रिया ॥ ६७ ॥ अथ क्षौर विधौ नियेधः  
 ॥ भुक्ताभ्यक्तो ब्रती यात्रा रणे द्योगी कृताह्निकः ॥ उत्कटा चरणौ रात्रौ संध्ययो रसंथो रपि  
 ॥ ६८ ॥ शुभ्रे सु नवमे चान्हि क्षुर लर्म न कारयेत् ॥ प्राक् ब्रत स्नान को राजा योगी न्द्रो  
 ग भिरापी पतिः ॥ ६९ ॥ सजीव त्वित कक्षेते मुंड्याः प्राक् कथिता अपि ॥ ७० ॥ क्षौर सुभवा-  
 त्पम् ॥ केशवं चाननीपुरं पाटल पुत्रं पुरी महि क्ष्वम् ॥ दिति मदिति च स्मरतां क्षौर विधौ  
 भवति कल्याणम् ॥ ७१ ॥ अथ क्षौर किंचिद्विधेयः ॥ गंगायां भास्कर क्षेत्रे माना पित्रो मृते ह-  
 नि ॥ आधाने सोम याने च षट्सु क्षौरं विधीयते ॥ ७२ ॥ राज कार्यं नियुक्तानां नतानी रू-  
 प जीविनाम् ॥ रमश्रु रोम नख क्षे दे नास्ति काल विशेष नम् ॥ ७३ ॥ अथ विद्यारंभः ॥ मृ-  
 गादि पंचके मूले हस्तादि त्रितये ऽध्वमे ॥ अवरात्रय पूर्वा सुविद्यारंभः प्रशस्यते ॥ ७४  
 ॥ रवौ शुक्ले बुधे जीवे वारे लगन वले शुभे ॥ दशम्यादि त्रिके षष्ठी तृतीया पंचमी शुच ॥ ७५ ॥

॥ विद्या रमा गुरा शुक्र पुषे सर्वार्थ सिद्धिदः ॥ मध्योऽर्को जाड्य कृच्छ्रो भौसा की मृत्यु दो स्तु-  
 ती ॥ ७६ ॥ अथ गणितारम्भः ॥ शत द्वयेऽनु राधा द्वे रोहिणी रेवती करे ॥ पुष्ये जीवे बुधे कुख्या-  
 त्पारंभं गरिमा दियु ॥ ७७ ॥ अथ व्याकरणारम्भः ॥ रोहिण्यां पंच के हस्ता तुनर्भे जग भेऽ-  
 श्विभे ॥ पुष्ये शुक्रेऽप्य विद्यरे शब्द शास्त्रं पठेत्सुधीः ॥ ७८ ॥ अथ न्याय शास्त्राद्या रम्भः ॥ श्रुत-  
 रे रोहिणी पुष्ये पुनर्भे अचरौ करे ॥ अश्विन्यां शत भे स्वाती न्याय शास्त्रादिकं पठेत् ॥ ७९ ॥  
 ॥ अथ धर्म शास्त्र पुराणारम्भः ॥ हस्तादि पंच के पुष्ये रेवती द्वितये मृगे ॥ अचित्रये शुभा रंभो ध-  
 र्म शास्त्र पुराणयोः ॥ ८० ॥ अथ वैद्य विद्या गारुही विद्यारम्भः ॥ हस्त त्रयेऽनु राधायां पुनर्भे अच-  
 रा त्रये ॥ मूले चैवाश्विनी पुष्ये ज्येष्ठा म्लेखा र्भे मृगे ॥ ८१ ॥ अथ जैन विद्यारम्भः ॥ श्रुति-  
 त्रये मघा पूर्वा नुराधा रेवती त्रये ॥ पुनर्भे स्वातिभे सूर्ये शुक्रे जैना गमं पठेत् ॥ ८२ ॥ अथ  
 लिंगांबु केदन मुहूर्तम् ॥ मघा पूर्व एष भा रीनां लिंगांबु केदनं स्मृतम् ॥ अर्का रेज्यान्मपुष्या की  
 स्वतीस्तु श्रुति वासवैः ॥ ८३ ॥ लिंगांबु केदो नरस्यासौ वर्गो ऋक्ता स्य मार्का यमहीन घस्ते ॥

शरित्या कीं पीलपुष्याकं दक्षं श्रोत्रेनु न्रविष्टा प्रदिष्टा ॥ ८४ ॥ अथ नष्टतारीयः ॥ दृढतया तपे  
 वारुणी विश्व संख्या तथा ह्युद्गोऽथ त्रयो विंशतिश्च ॥ तथैवाष्टविंशतरो वा निषिद्धा स-  
 दायान्नै रङ्गाल विद्धिः प्रदिष्टा ॥ ८५ ॥ अथ पारसी विद्यारंभः ॥ ज्येष्ठा ज्ञेया मघा पूर्वा रेव-  
 ती भरणी ह्ये ॥ विशारवाद्भेत्तरा बाह्य शतभे पाप वासीरे ॥ ८६ ॥ लग्ने स्थिरे च चन्द्रे-  
 च पारसी नारंदी पठेत् ॥ अथ लिप्यारंभः ॥ शुभे तिथौ शुभे वारे रेवती युगले तथा ॥ ८७ ॥  
 अवरौ चानुराधायां तथै वाद्भेदि सुत्रिषु ॥ हस्तादि त्रितये कुर्व्या स्त्रिखनारंभनं सुधीः ॥  
 ८८ ॥ अथ रत्न परीक्षा ॥ पुनर्भे शतहस्तर्क्षे श्रवेज्येष्ठे परीक्षणम् ॥ रत्नानामष्टमी भूतं हित्वा  
 भौमं प्रज्ञै प्रचरम् ॥ ८९ ॥ अथ शिल्प कर्म्मारंभः ॥ हस्त त्रये श्रवात् ज्येष्ठां श्रुतरे रोहिणी मृ-  
 ने ॥ रेवत्या मश्विनी पुष्ये पुनर्वसु नुराधयोः ॥ ९० ॥ शक्ते विधौ शुभे वारे शिल्प विद्यां स-  
 माचरेत् ॥ अथ रत्न दर्शनम् ॥ श्रुतरे श्रवणं ह्ये मृगे पुष्या नुराधयोः ॥ ९१ ॥ रोहिण्यां रेव-  
 ती युगे चित्रा हस्ते शुभे हनि ॥ बलिन्यर्क्षेऽर्क्षे वारेऽपि रत्न दर्शनं मी रिप्तम् ॥ ९२ ॥ अथ-

राजसेवा ॥ हस्तद्वयेऽनुराधायोरैवतीशुगलेखगे ॥ पुष्ये बुधे गुरौ षुक्रे सानिधौ रविवासरे ॥  
 ८३ ॥ योनि राशिपयोर्मैत्र्या स्वामी सेव्योऽनुजीविभिः ॥ अथ दास दासी संग्रहः ॥ उत्तरा सु-  
 चरोहिण्यां दास दास्यादि संग्रहः ॥ ८४ ॥ अथ क्षत्रचामरसिंहा सनादि कृत्यम् ॥ चामर क्षत्र  
 दोलादि दीर्घ सिंहा सनादिकम् ॥ पट्टाभिषेकके सर्वे विदध्याच्छे भने हनि ॥ ८५ ॥  
 अथ मुद्राकृत्यम् ॥ नृपु भव छिप्रचरेषु भेषु योगे प्रशस्ते शनि चंद्र वर्ज्ये ॥ वारि तिथौ पू-  
 र्णजयाक्षये च मुद्रा प्रतिष्ठा शुभदानरणम् ॥ ८६ ॥ शुर्वस्ते वा शितास्ते वा मुद्राणां  
 ग्रहणं क्वचित् ॥ क्रूरग्रह क्षींशालग्ने न कार्थ्यं भूति मिक्षता ॥ ८७ ॥ अथाश्वारोहणम् गजा-  
 नां च ॥ पुष्य अविद्याशिवनि सोम्य भेषु पीक्षानला वित्य कराक्षयेषु ॥ सवारुणा क्षींशु बुधे-  
 स्स्मृतानि सवारिणी कार्याणि तुरंगमानाम् ॥ ८८ ॥ अथाश्वारोहणे चक्रम् ॥ अथवा कारं लि-  
 खे चक्रं साभिजिज्ञानि विन्यसेत् ॥ स्कंधे तु सूर्य्य भात्यं च घृष्टे च दश भानि च ॥ ८९ ॥ पु-  
 ष्ये हे स्था पयेन्नाक्षत्रतुः पादे चतुष्टयम् ॥ उदरे विन्यसेत्पंच मुले हेतुरागस्य च ॥ ९० ॥

संश्रितः ॥ अथ लाभो मुखे संस्यक् वाजी नश्यति चोदरे ॥ चरणे स्थिरौ भंगः पुच्छे पत्नी विनश्य-  
 ति ॥ २ ॥ अथ सिद्धिर्भवेत्यष्टे स्क्वे स्क्वे पतिर्भवेत् ॥ अथ गज कृत्यम् ॥ हस्तत्रये सौम्य हे-  
 रि त्रये च यौल द्वये पुष्य पुनर्वसौ च ॥ मैत्रे च सर्वाण्यपि कुंजरणा कर्म्मणि प्रसन्नान्य रि-  
 लानि यानि ॥ २ ॥ अथ प्रविकारे हण कृत्यं च ॥ उत्तरे रेवती युगे त्रिभे हस्ता द्विभे प्रवात् ॥ पु-  
 नर्वसौ स्थापुष्येऽनुराधा त्रितये मृगे ॥ ३ ॥ रोहिण्यां शिवि कायास्तु सख्यने घट्टने शुभम्  
 ॥ शुभं त्रारि शुभे लग्ने शुभांशे शोभने दिने ॥ ४ ॥ अंकुशा करणं योग्यं ग्राने लग्ने ग्राने  
 दिने ॥ अथ पल्याण निष्कर्णम् ॥ अवरो शतमे हस्ते पुष्ये मूले मृगेऽश्विमे ॥ पुनर्वसौ गजा  
 श्वौ मृ पल्याण करणं शुभम् ॥ ५ ॥ वर्जयित्वा कुजं नृत्तामश्व काव्यं शुभावहम् ॥  
 अथाश्वस्य विशेष कृत्यम् ॥ चोलीके खुर कृत्यादि शिक्षा विद्योक्त भादि युगासं घत्सादिकं त्वन्ना  
 शनोक्तं क्षीं गज वाजिनम् ॥ ६ ॥ अथ स्य कृत्यम् ॥ पुष्यो पुनर्वसु ज्येष्ठा नुराधारेवती द्वये ॥  
 अवरादि त्रिभे हस्त त्रितये रोहिणी मृगे ॥ ७ ॥ सार्क सौम्य दिने सौम्य विलगने रथ कर्मसत्



॥ अथ संधिः प्राच्यः ॥ लघु राधा मया पुष्ये तिथ्यङ्गैर्तैतिलान्निधे ॥ लग्ने शर्द्धटिगेऽष्टम्यां  
 द्वादश्यां संधि रित्यते ॥ ८ ॥ अथ मणारंभः ॥ मूलाद्वाशत भोज्ये सा पूर्वाश्लेया मघासुच  
 ॥ भरण्यां कूर्वा च मघ कर्मे रितं बुधैः ॥ ९ ॥ अथ मादक वस्तु भक्षणम् ॥ आर्द्राश्लेयाम  
 घा पूर्वाज्येष्ठा मूल शताभिधे ॥ भरण्यां सुदिने मंदे त्व प्रतीचान्मादकं मधु ॥ १० ॥ अथ न-  
 वांगनाभोगः ॥ प्रथमाभिगम एणस्तानव वध्या शुभे हनि ॥ गर्माधानोक्त नक्षत्रे शस्त्रे  
 ज्योत्स्नां करे निशि ॥ ११ ॥ अथ गीत नृत्यारंभः ॥ रेवत्या मनु राधायां धनिष्ठा द्वितये करे ॥  
 रोहिणी युगले पुष्ये त्र्युत्तरे गीत नर्तनम् ॥ १२ ॥ अथ नटक्रिया ॥ मृगाङ्गीरोहिणी पुष्ये पुन  
 र्भे अवरात्रये ॥ चित्रा त्रयोत्तर मूले कृत्य सन्दृत्य जीविनाम् ॥ १३ ॥ अथ वृक्षलतादि रोप-  
 णम् ॥ हस्त चित्रोत्तर मूलेऽनु राधारेवती ह्ये ॥ विशाखा रोहिणी पुष्ये खारं सोमि मृगे-  
 शत ॥ १४ ॥ सूर्य भादिन पर्यन्तं राम रामाक्षि युगमभं ॥ एम भूवाण षट् युगम चक्रे पाद  
 परोपरो ॥ १५ ॥ अस्त च्छुभ मसद्गानि शुभं दुःखं रिबोभयं ॥ शुभं सौख्यं क्रमात् क्षेप्य

फल मुक्तं विचक्षणैः ॥ १६ ॥ विधिवार समा युक्तं सूर्य्य भादिन मं युतम् ॥ नवभिश्च हरे  
 द्भागं श्रेयां केन फलं दिशेत् ॥ १७ ॥ एकै श्रेरे चतुः केच त्रै केच फल मादिशेत् ॥ व-  
 क्षो यस्य ह्ये लाभं सप्त मे नव मे मृतिः ॥ १८ ॥ अथ नौका घट्टनम् ॥ अश्विकरेज्य सुधानिधि प्र-  
 वीक्षित्वा धना न्युतमे शुभ लग्ने ॥ ताक योग तिथीन्तु विशुद्धो नो गमनं शुभदं शुभवारै ॥  
 १९ ॥ अथ सामान्यतः पण्डित्यं रक्षाच ॥ त्यक्ता वल्ली समा रिक्ता रोहिणी सुत्तरा त्रयम् ॥ चित्रा-  
 रव्यं अश्वरां भौमं पशूनां सर्व कर्मन्च ॥ २० ॥ प्रवेशा निर्गमौ चापि न त्याज्यं निजयो निभम्  
 ॥ पूर्वा त्रये धनिदेन्द्र पीले सौम्य विप्रावयोः ॥ अश्लेषा या मया शिवन्या यात्रा सिद्धिश्च-  
 तुः पदम् ॥ २१ ॥ अथ चरणी चक्रम् ॥ व्यानं विल्लीयं संगुण्यं प्रभुना माक्षैर्युतम् ॥ अष्ट  
 भिसु हरेद्भागं श्रेयां के फल मादिशेत् ॥ २२ ॥ पशोर्होनिः पशोर्नाशः पशु लाभः पशु  
 क्षयः ॥ पशु रोगः पशोर्दीद्विः पशु भेदः पशोर्वहु ॥ २३ ॥ अथोष्टमहिषादि कृतम् ॥ धनिष्ठादि  
 तये पूर्वायादातिर्यङ्मुखोद्बुधु ॥ अजाविमहिषौष्टराणां कृत्यं चाश्वतरी शुभा ॥ २४ ॥

॥ अथ दगचारिकृत्यम् ॥ ज्येष्ठा स्वात्य शिवनी पुष्ये पुनर्भे रोहिणी करे ॥ उत्तरा सुशुभं कृत्यं श्रे-  
 णिणां चन चारिएणम् ॥ ३५ ॥ अथ पक्षीकृत्यम् ॥ शुभा हे सुरवो तिष्यं ह्यनुखे चोर्द्धं मुखे च भे-  
 ॥ सारिका शुक्र मुख्यानां पक्षिणां कृत्य सुत्तमम् ॥ ३६ ॥ अथ सर्ववस्तुविक्रयः ॥ विधाखा क-  
 निका उलेया भरणी पूर्विका त्रयम् ॥ विक्रयः सतिष्या वै शु कर्तव्यो न क्रय प्रशुभः ॥ ३७ ॥  
 अथ गृह क्षेत्र भूम्यादीनां क्रय विक्रयो ॥ जीवे शुक्ले च नंदरा सु पूर्णायां मूलभे मृगे ॥ पूर्वोऽलेया मयां  
 त्ये च विशाखादितये तथा ॥ ३८ ॥ पुनर्भे शुनिभिः प्रोक्तं क्रयं धि क्रयणं शुवः ॥ अथ वाणिज्य  
 म् ॥ अश्लेषा धीतर पुष्ये रेवती रोहिणी मृगे ॥ हस्त चित्राश्वभे कुर्ब्यां क्षारिज्यं द्विवसे शुभे-  
 ॥ ३९ ॥ अथ निधिदद्यादिच्छिदसंग्रहे ॥ पुष्ये मृगे ॥ नुराधायां श्रवणा त्रितये शिवभे ॥ पुनर्भे ॥ न्ये-  
 विशाखायां निधे र्द्विष्व संग्रहः ॥ ३० ॥ अथ द्रव्यादीनां गुप्त स्थाने स्थापनम् ॥ धनि धोका वि-  
 शाखाख्ये पूर्वाषाढाभिधं त्यभे ॥ रोहिण्यां च निधे भूसौ स्थापनं शुभ मीरितम् ॥ ३१ ॥  
 अथ द्रव्यप्रयोगः ॥ श्रवणादि त्रिभे चित्रा चतुर्के रेवती ह्ये ॥ पुनर्वसौ मृगे पुष्ये शुभो द्रव्यप्र-

योगकः ॥ ३२ ॥ संक्रांतौ वृद्धियोगे तु हस्तक्षेत्रे रविभौमयोः ॥ न च ग्राह्यं ऋणं यस्मात्तद्वृ-  
 सुस्थिरं भवेत् ॥ ३३ ॥ ऋणं भौसे न गृह्णीयान्न देयं बुधवासरे ॥ ऋणं च्छेदं कुजे कुर्व्यत्सिं-  
 चयं सोमनर्त्तने ॥ ३४ ॥ अथ धान्यविक्रयः ॥ रोहिण्या सत्क्रयोंऽन्नस्य धनिषा सत भोत्तरे ॥ ज-  
 यत्स संग्रहः ॥ रत्नसंग्रहं श्रेष्ठं तोया रंभो वित्तोद्भु ॥ ३५ ॥ अथ वृद्धार्थं धान्यप्रयोगः ॥ विप्राख-  
 रोहिणी ज्येष्ठा पुनर्भोश्च शतत्रये ॥ न्युत्तरे स्वानि पुन्ये तु धान्यं वृद्धिं प्रशु भेरिता ॥ ३६ ॥  
 अथ गृहहस्तादनम् ॥ हस्तत्रये धातुयुगे सराधा घत्नादियोगे गृह गोपनं च ॥ नंदं परित्यज्य कु-  
 ह्मं च ऋक्तांभौ मार्कजादित्यदिनाश्च निष्ठाः ॥ ३७ ॥ अथ हलप्रवाहः ॥ रवौ रोद्रादि पादस्ये सूक्तौ संजा-  
 यते रजः ॥ तस्माद्द्विनं त्रयं तत्र वीजवापनं कारयेत् ॥ ३८ ॥ ऋक्ताष्टमी विष्टि युनष्ट चंद्रे क्षीणे नु-  
 रा रर्कज वासरे शु ॥ दिन क्षये वानिग्नि संध्ययोर्वा कृता कधी पूर्व धनानि हंतंति ॥ ३९ ॥ पुन-  
 र्वसू ह्वये मूले न्युत्तरे रोहिणी द्वये ॥ हस्तत्रये ॥ नुराधायां रेवत्यां श्रवणा त्रये ॥ ४० ॥ तिथौ  
 वारे शुभेऽश्विन्यां हलप्रवहणं शुभम् ॥ अथ हलचक्रम् ॥ त्रिभिस्त्रिभिस्त्रिभिः पंच त्रि-

भिः पंच त्रिभिर्द्वयम् ॥ सूर्यभादिनभया वद्धनि दृष्टी हले क्रमात् ॥ ४१ ॥ अथ वीजोद्भिः ॥  
 हस्ताभिः पुण्योत्तर रोहिणीसु चित्रानुराधा मृगशिरसीषु ॥ स्वाती धनिष्ठा च मघा च मूलं वी-  
 जोत्ति रुक्मिणी फला प्रदिष्टा ॥ ४२ ॥ शुभेवारे तिथौ श्रेष्ठा वीजोत्ति स्वथ राहुभात <sup>वक्रमुचेलम्</sup> ॥ अथा-  
 र्गनीनुत्रयंचैकत्रयेणुत्रिचतुख्यम् ॥ ४३ ॥ असुभंच शुभं ज्ञेयं दिन क्षं फलि चक्रमे ॥  
 अथ रास्वारेपणम् ॥ हस्तत्रयोत्तर मूले धनिष्ठा रोहिणी मृगो ॥ पुण्ये मृगोऽनुराधोत्यं म-  
 घायां शुभ वासरे ॥ ४४ ॥ त्यक्ता क्रतुं प्राणिं भौमं रास्य स्यां कुर रोपणम् ॥ अथ रास्वारे-  
 अथ धान्यच्छिदा ॥ पूर्वोत्तर मघा ग्लेष्वा ज्येष्ठा दूर्वा अचरा द्वये ॥ भरणी द्वितये मूले मृगो पुण्ये  
 करत्रये ॥ ४५ ॥ धान्य सिद्धा सुभा क्रतुं हित्वा भौम रात्रिं प्रचरो ॥ अथ कणमर्दनम् ॥ ज्ञानु-  
 राधा अवे मूले रेवत्यां च मृगो त्रिभे ॥ ज्येष्ठायां चैव रोहिण्यां सुभं स्यात्करा मर्दनम् ॥  
 ४६ ॥ अथ धान्यानयनं फलपुण्योत्तराणां च ॥ रोपणोदित नक्षत्रे वासरे जादरे द्वयेः ॥ अन्नस्या-  
 नयनं पुण्य फला द्युत्तराणां च सत् ॥ ४७ ॥ अथान्नादिपाकक्रिया ॥ मूलं चित्रा नुराधा सुविश

सि स्ता कृत्तिका मृगे ॥ उत्तरा रोहिणी ज्येष्ठा रेवती युपचि क्रिया ॥ ४८ ॥ सत्यत्तां बुधं रं लग्नं  
 पक्षं रं तिथिं शुभम् ॥ अथ नवान्न ग्रहणम् ॥ हस्त चित्रा नुराधां त्रे रोहिणी अक्षरा ह्ये  
 ॥ नृगाश्च न्युत्तरा सर्वे शुभे वारे तिघा वपि ॥ ४९ ॥ नवान्नस्य विधानं च प्राशनं फ-  
 लमूनयोः ॥ अथ नवान्न चक्रम् ॥ बुधश्चोत्तरा ५ पुत्र ५ पुत्र ५ वेद ५ युगे २ लु १ क  
 म् ॥ सच्छुभं शुभमर्घजं शुभं व्यर्थं शुभं क्रमात् ॥ ५० ॥ विना नंदं विष घटी न्मधुपौ-  
 वार्त्ति भूगि जान् ॥ अथ कोष्ठादेधान्य स्थितिः ॥ पुनर्भैरव गृहीर्धेऽत्येऽनुराधा अक्षरा त्रये ॥  
 हस्त त्रयेऽश्विनी पुष्ये रोहिण्या सुत्तरा त्रये ॥ ५१ ॥ गुरौऽशुक्रं रंवी दो स्सत्कोष्ठा दो धान्य र-  
 क्षणम् ॥ सूर्ये भाद नि वेदेषु वसु वेदाग्नि बुक्रमात् ॥ शुभा शुभं क्रमाद्भूयं कोष्ठा दो  
 धान्य रक्षते ॥ ५२ ॥ गयदीज संगतः ॥ हस्त त्रये पुनर्वत्तोः रोहिण्या अक्षरा ह्ये ॥ स्थिरे लग्ने  
 शुभे वारे विषं द्रवीज संगतः ॥ ५३ ॥ गय नृग रज्जु गिर्धन्य वंधनम् ॥ स्वाती मूले च हस्तं त्यभा-  
 दा पाद नृये घने ॥ रोहिण्यां कुक्ष्य नीलां तर्जुन्यं सं रक्षणं शुभम् ॥ ५४ ॥ अथोत्तल सप्तल चक्रम्

॥ भूदिगधिदिग क्षीणि शने भौदिनभंक्रमात् ॥ अशुभं च शुभं क्षेयं क्रमादूयल सूपले ॥  
 ५५ ॥ अथ चूर्णार्द्धन चक्रम् ॥ शने भौतो युगा ४ उय ४ ए ८ राम ३ वेद ४ त्रिभं क्रमात् ॥ अस्  
 न्द्युभं क्रमाच्चक्रे चक्रि कारखे मनो हरे ॥ ५६ ॥ अथ सूर्यचक्रम् ॥ सूर्यभातं च ५ त्र्य ३ ए ८  
 धि ४ सुनि ७ भेबु शुभा शुभम् ॥ क्रमात्सूर्याभिधे चक्रे विज्ञेयं को विदेः सदा ॥ ५७ ॥ अथ  
 बुद्धीचक्रम् ॥ सूर्यभावं ४ वेदा ४ ए ८ राम ३ शत्रु ६ शुभा शुभम् ॥ बुद्धी चक्रे क्रमात्  
 क्षेयं शुभा शुभ विचक्षणेः ॥ ५८ ॥ अथ मार्जनीचक्रम् ॥ सूर्यभाजं ३ राम ३ र ६ राम ३  
 तर्का ६ र ६ नैषुच ॥ असत् शुभं क्रमात् क्षेयं मार्जनी संज्ञके शुभे ॥ ५९ ॥ हरिस्वर्यचि  
 त्नादि नि नैत्र पुष्ये स्मृते रोहि वल्ले धिरिक्षे च भीमे ॥ त्यजे त्वं भीमे ५ प्य लो लग्नगेहे  
 पवित्रं बुद्धल्ले रवे र्य्या मलानि ॥ ६० ॥ अथ गोमयपिं चक्रम् ॥ सूर्यक्षीद्रसमैरथ स्थलग  
 नैः पाको रसैः संयुतः शीर्षे शुद्ध मित्रैः शबस्य वहनं मध्ये युगे स्सार्पभीः ॥ प्रागाणा दि  
 बु वेदभैः त्व बु हृदं स्यात्संग सोरोगभीः क्वाथा देः करणं शुभं च गदितं काष्ठानि संस्था

पने ॥ ६१ ॥ सूर्य भाद्र सतर्का द्दिवि ४ नाग ८ वेदा ४ भिजित्तह ॥ शुभा शुभं क्रमात्  
 क्षीयं करीपादिषु संग्रहे ॥ ६२ ॥ अथ दीप चक्रम् ॥ सूर्य भाद्युगम २ वत्स ८ द्दिवि ४ दिक् १० त्रि-  
 कं ३ चा शुभं शुभम् ॥ दीप चक्रे क्रमात् क्षीयं फलं योग विच क्षयोः ॥ ६३ ॥ त्यक्ता  
 ऋक्तां रविं भौमं लग्नं च घट मी नकम् ॥ अथ कलश चक्रम् ॥ सूर्य भात्यं च ५ रमा ३ द्वि-  
 ७ वसु ८ पंच ५ शुभा शुभम् ॥ फलं क्रमाद्दुधैर्क्षीयं चक्रे कलशं संज्ञके ॥ ६४ ॥ अथ कांक्ष्य पा-  
 त्रं धाल्यादि चक्रम् ॥ चरमदुलघु भै सत्सग्न के चैत्र पौषे स्थिति जरविजनंदाऽपेय नाडी वि-  
 हाय ॥ प्रति समन वजातोऽन्नस्य श्रत्याशन सत् भ्रव गण सहितै स्तेः कांक्ष्य पानादि  
 भोज्यम् ॥ ६५ ॥ सुखे श्रीणि ३ शोकं रसा ६ कंठ पुष्टिः त्रयो ३ रोग कुक्षे धनं रम-  
 वासे ॥ त्रये ३ एष व्याधिः सुखं रम ३ मध्ये रसे ६ हानि भार्काद्यदा शुंजि पात्रम् ॥ ६६  
 ॥ अथ रंहं कादि सुहृत्तम् ॥ अदिति सि प्रमृदु भ्रव संज्ञके भृगु जवा कयति पूर्णजया तिव्यौ ॥  
 शकट नाव सुखासन शिल्पकं भ्रमर कार्य रंहं कसिद्धिदम् ॥ ६७ ॥ अथ कोल्ह चक्रम्



॥ जंत्र काष्ठ समुद्भवं सुललितं भान्वृक्षतः पंच संमूले मूल विदारणं च सरभं मध्ये स्थि-  
तं न्द्रव्यदम् ॥ लिंगे पंच निहन्ति तैल गुड को दंते ह्वयं त्वामि हृत् पंचे पंच भयं रियो प्रचर स-  
भं सौख्य प्रदं कर्चरी ॥ ६८ ॥ सूर्य भातपंच पंचेयु राम युग्म शर त्रिकम् ॥ नष्ट च्छुभमस्र  
अथ कोल्ह चक्रम् ॥ साभिन् दुःखं लेशं शुभमतोऽशुभम् ॥ ६९ ॥ कोल्ह चक्रे साभिजिते

|   |    |   |   |   |    |   |
|---|----|---|---|---|----|---|
| ५ | ५  | ५ | ३ | २ | ५  | ३ |
| ग | सु | ग | ग | ग | सु | ग |

क्षेत्रेय मेवं विचक्षणैः ॥ अथ धर्मक्रिया ॥ रेवती हितये हस्त त्रित-  
ये रोहिणी ह्वये ॥ अवत्रयोत्तरा पुष्ये पुनर्वसु ज्येष्ठयोः ॥ ७० ॥  
क्षेत्रेय शुक्ले सुसूर्ये युद्धे गं शालिनि ॥ लग्ने जीव युते जीवे वलिष्ठे धर्म माचरेत्  
॥ ७१ ॥ अथ प्रतिकं केष्टिकं कर्म ॥ पुनर्वसु ह्वये स्वाती व्युत्तरे प्रवरा त्रये ॥ रेवती हितये ह-  
स्तेऽनु राधा रोहिणी मघे ॥ ७२ ॥ प्रतिकं पौष्टिकं कर्म पुराया हे कीर्ति तं बुधैः ॥ अथ होमादे  
खेदाहुति फलम् ॥ रवौ बुधे शुभौ मंदे चंद्रे भीमे गुराव गो ॥ केतौ च सूर्य भात द्वायं प्रत्येकं  
भद्रं क्रमात् ॥ ७३ ॥ होमाहुतिः खले नेष्टा शुभदा शुभरवे चरे ॥ अथ होमादे वन्तिवा

सफलम् ॥ तिथि वार युति स्तौ का वेद भक्ताव प्रोषका ॥ निवासोऽग्ने ज्योतिरूपे १ किञ्च प्राप्तवि-  
 नाशदः ॥ ७४ ॥ पाताले द्विकर्मो वेराधन संचय नाशकः ॥ गुरा वेदावशो देवा भुञ्जो वि-  
 पुल सोरव्यदः ॥ ७५ ॥ संस्कारेयु विद्यारोऽस्य न काय्यो नापि वेत्सवे ॥ नित्य भू निलिके का-  
 र्येन चाब्दे मुनिभिः स्मृतः ॥ ७६ ॥ अर्क प्रचद्वा दष्ट मेज्ञाच्च वुर्धे मन्द प्रपुत्रा दष्ट मेऽ  
 गारकश्च ॥ राहुर्धर्म जीवतः रेवट सुहो हेमो नाशः पुत्रदा राधना नाम् ॥ अथ मंत्र दीक्षा ॥  
 रोहिण्यां ज्युत्तरे मौ जीवं धनो दित भांदिपु ॥ मंत्र दीक्षा शुभे चान्द् ग्रहणेऽप्या गनी दिता  
 ॥ ७८ ॥ अथ मंत्र यन्त्री पाशनादि ॥ ऊष्ठा हस्ता श्विनी कर्ण विप्रारवा मृग भे हनि ॥ शुभे सू-  
 र्य्य युते शूलं मंत्र यंत्र व्रता दिकम् ॥ ७९ ॥ अथ वीर साधनम् ॥ सघाद्भी भरणी मूले मृगे गे  
 से बुधे घटे ॥ सुखे सुक्तेऽष्टने शुद्धे सिद्धिर्वीर अभिचार्योः ॥ ८० ॥ अथौषध करणं तत्सेवनं-  
 च ॥ हस्त त्रयेऽनुराधायां मूले पुष्ये प्रव त्रये ॥ मृग भे रेवती युग्मे पुनर्व सोर्वि जन्म भे  
 ॥ ८१ ॥ क्षीणु सुक्तेज्य सूर्य्यां रां वासरे सति घावपि ॥ द्विप्रव भावे शुभे लम्ने शुद्धे घृनि

नृति व्यपे ॥ ८२ ॥ भैषज्यं शुभदं प्रोक्तं योगे च पुण्यं दायिनि ॥ अथ रसोत्पादनम् ॥ विष्णुवा-  
 क्तिका मूले धनिष्ठा अचि कोरं सुरे ॥ ज्येष्ठायां भाद्र भे सौम्ये वासरे यु रस क्रिया ॥ ८३ ॥  
 अथ रस सेवनम् ॥ हस्त त्रयेऽश्विनी पुष्येऽनुराधां त्ये श्रुति त्रये ॥ पुनर्भे मृग शीर्षेऽर्क भौमे  
 ज्ये रस भक्षणम् ॥ ८४ ॥ अथ क्त रेगा दे तैलोप सेवनम् ॥ हित्वा श्लेया मघा मूले विष्णु-  
 भरणी हयम् ॥ मंदे जे ह्ये स्थिति स्तेले तृतीयादि त्रिके तिथौ ॥ ८५ ॥ अथ रक्त विमोक्षणा विरे-  
 क वसनौ ॥ हस्त त्रयेऽश्विनी पुष्ये शत भे रोहिणी ह्ये ॥ अवलो चानुराधायां ज्येष्ठायां र-  
 क्त मोक्षणम् ॥ ८६ ॥ गुरु भौमा र्क वारिषु कांर्य्य शुभ तिथौ तथा ॥ विरेको वसनं शुक्रे च  
 दे चैवोक्त भादिषु ॥ ८७ ॥ अथ तप्त लोह दाहः ॥ शत चित्रा अश्विनी मूले विष्णवा कृत्ति-  
 कार्दभे ॥ ज्येष्ठा श्लेया कुजेऽर्केऽगक्रूर लोहाग्नि भैषजम् ॥ ८८ ॥ अथ रेगे त्यौ नक्ष-  
 त्र वशा त्कथं दिन संख्या ॥ अश्विनी कृत्तिका मूले ज्व रार्तौ नव वासरः ॥ रोहिण्या मुत्तराभा-  
 दे पुनर्वसौ अश्व पुष्य भे ॥ ८९ ॥ ऊफायां वासरः सप्त मघायां विंशति स्तथा ॥ शत भं

भगवती चित्रा ग्रदे चैकादश स्मृताः ॥ ८० ॥ धुनिद्यायां विष्णोस्त्वाद्यो हस्त मपक्ष ५५५  
 ॥ मासं मृगशिरायादि कृत्वा दंत्यानुराधयोः ॥ ८१ ॥ श्रीगु न्मुक्तादि ते रुक्ते स्तुखी स्वा  
 चरु नंतरम् ॥ अथ ऐगोस्तो नैष्ठ फलम् ॥ पूर्वात्रयं तथा ज्ञेयं ज्येष्ठा दर्श स्थिति भेद्वपि ॥  
 रोगोत्पत्ति भवेद्यस्य मरणा तस्य निश्चितम् ॥ ८२ ॥ अत्र श्रुतिः ॥ अहोरात्रं कनकेन  
 यत्वा तस्मिन् मंत्रे प्रच सुगंध पुष्ट्यैः ॥ वत्सा धत्ते गुगुलु पूरय नैद्यतां वूल फले प्रच स-  
 म्यक् ॥ ८३ ॥ पूजां च कृत्वा मपनाशनं हिजाय दद्यादनुगं श्रीवाय ॥ अथ रोगोत्पत्ति  
 नैष्ठयोगः ॥ अहोरात्रं मरणी नृले स्वाती पूर्वादिभे तया ॥ प्रत भे पाप वारं च प्राति पद्म दश  
 दिने ॥ ८४ ॥ चतुर्दश्या तथा कथ्यां पूर्णिमायां चरीतुयः ॥ तनो मृत्यु माप्नोति स्वर्ग  
 येनापि रक्षितः ॥ ८५ ॥ अत्र रोगा सुपद वैद्येय ज्ञानं प्रश्न लग्नात् ॥ मेघे तु भित् दीयं स्यात्सु  
 न्नायोऽन्न विवर्णिता ॥ वये स्वदेवतोद्भूत दुःस्वप्नो नेत्र रुक् ज्वरः ॥ ८६ ॥ महा माया भवे  
 न्नायं दूहे चैवानिला ज्वरः ॥ कर्कटे षण्किनी दोषो मोनं हास्य च रोदनम् ॥ ८७ ॥ सिंहे ज

ले प्रेत दोषो वै मनस्य हिमज्वरः ॥ कन्यायां खेटो दोषो व्यथा क्रोधोऽरुचिर्भवेत् ॥  
 २६ ॥ तुलायां क्षेत्रपालस्य चोषस्संतति पीडनम् ॥ नागदोषोऽलिर्भेदा हो दंष्ट्रऽस्मि  
 न्बुद्धिनाशनम् ॥ दोषो धनूषि देहो त्यः श्रेयो को दध्यै रुजा ज्वरः ॥ मर्कटो चण्डिका दोषो  
 देवरांगो ज्वरोऽग्निनः ॥ २०० ॥ मलिनः प्रेतदोषश्च देहपीडा घटो भवेत् ॥ वावो मीने-  
 तु योपिन्याः ज्वरिथानस विभ्रमः ॥ १ ॥ तल्लगते तत्र चन्द्रे वा दोषं फलमुदाहृतम् ॥ ल-  
 नेऽष्टमे व्यये सूर्ये क्षेत्रपालस्य दूषणम् ॥ २ ॥ आकाशे देव्या चन्द्रे तु लगने षष्ठेऽष्ट-  
 मे व्यये ॥ द्वादशे दशमे औक्ते शकित्या दूषणं मन्त्रम् ॥ ३ ॥ वनदेवी अवा दोषस्तप्तमं हा-  
 दशे बुधे ॥ पामित्रे द्वादशे जीवे देवदोषो निगद्यते ॥ ४ ॥ जल्ये वासंसे मे शुक्ले दोषो वा-  
 र्देवतो द्वयः ॥ ग्राने चन्द्रे व्यये चास्ते दोषस्त्यादात्य वातजः ॥ ५ ॥ वासिने द्वादशे रा-  
 हो कुगतिर्ज्ञाति दूषणम् ॥ व्यये धर्मे तृतीये च षष्ठे पापग्रहो यदा ॥ ६ ॥ हनोगरे ज-  
 ले ग्रहो तस्य दोषः कुलोद्भवः ॥ ग्रानौ जले कुजे ग्रहो गिरि सूर्ये स्ववंशजः ॥ ७ ॥ राहो

च विकृतौ न योऽप्राति पूजा द्विजाच्चर्चनैः ॥ दशमस्ये बुधे मार्गदोषः प्रेत भवो गुरौ ॥ ८ ॥  
 शुक्रे दोषस्तु देवोत्थः पापेन्दुः श्राकिनी भवः ॥ स्वर्गोत्रगोत्रजो दोषः परस्त्रे परोद्भवः  
 ॥ ९ ॥ शत्रुक्षेत्रे शत्रुदोषो मित्रे स्वजन संभवः ॥ अथख्यादि वारे दोषः ॥ कुदृष्टि संभव  
 स्त्वर्थे पितृ दोषो निशा करे ॥ मंगले श्राकिनी दोषो व्योम देवो भवो बुधे ॥ १० ॥ गोत्र  
 देवो भवो जीवे जल देव्यास्तु भार्गवे ॥ प्रेत पीडा शनौ सर्व श्रान्त्या श्रान्ति शुभेति तत् ॥  
 ११ ॥ साध्या दोषस्तस्मादपहर्षे स्वोच्च वलान्विते ॥ असाध्या विवले नीचे स्थितं शत्रु  
 गृहं गति ॥ १२ ॥ साध्या सीम्यगृहेर्दोषा वलिभिः केंद्र संस्थितैः ॥ असाध्याः खेचरैः पार्थैः  
 केन्द्रैर्गर्वल शालिभिः ॥ १३ ॥ यदोषः पूजनं तस्य कुर्वात्तदोष श्रान्तये ॥ जल देव्या जले  
 व्योम देव्या व्योम्नि जलं त्यजेत् ॥ १४ ॥ श्राकिनी हुंकिनी भूत दोष तच्चरणौ तथा ॥  
 तदुद्देशेन हृदोष चत्वर धारये ह्वलिम् ॥ १५ ॥ गोत्र देव्युद्भवे दोषे कुल देवी प्रपूजयेत्  
 ॥ पितृ दोषे तु कर्त्तव्यो नारायण वले विधिः ॥ १६ ॥ प्रेत ब्राह्मन्नि पिंडारख्यं विस्त्री स्तर्प-

रा मेव च ॥ अथ दीपद्धानायापरः क्रमः ॥ आत्मना मासुरं चैव दूत स्यैव तु रोगिणः ॥ एकी कृत्वा  
 त्रिगुणितं नवभिर्भागा माहरेत् ॥ १७ ॥ शेषे षड्द्वे द्द द ४ मू १ भूतः द्विके सप्त तथै प्रवरः  
 ॥ त्र्यष्टमे पितरश्चैव वारणां के ग्रहज्ञा भवेत् ॥ १८ ॥ अथ सर्पदंशे नेष्टम् ॥ विशगत्वा कृ-  
 त्तिका मूले रैवत्या द्रो मया सुच ॥ ऋक्षी प्लेथा मिथाने च सर्व दंष्ट्रो न जीवति ॥ १९ ॥ अ-  
 थ रोग विमुक्त स्नानम् ॥ मघा पुनर्वसु स्वाती रोहिणी सूक्तत्रये ॥ अश्लेषायां च रेवत्यां भार्ग-  
 वे चंद्र वासरे ॥ २० ॥ नक्षत्राया द्रोग निर्मुक्तः शुभे चंद्रे तथैव च ॥ ऋक्षायां रवि भौमा-  
 र्कि वासरे चरलग्नयो ॥ २१ ॥ दुष्ट चंद्रे तथा विष्टां पाताद्यै र्दूषिते हनि ॥ रोग मुक्तो न  
 रः स्नाया दानं कुर्यादनेतरं ॥ २२ ॥ अथ रक्त मोक्षगं स्नानं च ॥ पुष्ट्ये हस्ते तथा श्विन्यां  
 अवरो रोहिणी द्वये ॥ चित्रा द्वयेऽनुराधा ख्ये ज्येष्ठायां गुरु वासरे ॥ २३ ॥ भौमेऽर्क रक्त  
 मोक्षं स्यात् रोगयुक्ते स्नानमाचरेत् ॥ अथ रोग मुक्तस्य वह्निर्गमनम् ॥ सहारे गमनोक्त ध्वं सति-  
 धौ शोभने दिने ॥ सहस्रग्रे रोग मुक्तस्य वह्निर्निगमनं शुभम् ॥ २४ ॥ अथ ह्येलिके त्सव स्ना-

ननु ॥ राजा पुरोषि स चंद्रे प्रोभन क्षे सुभे तिथौ ॥ होलिका नंतरं खाया द्वि मंहर दिने प्रजा  
 २६ ॥ अथ मूल क्रिया ॥ ज्येष्ठा पूर्वा भरणी पूर्वा मूला श्लेषा मघा मिथे ॥ जया पूर्ण सुसहार सांकि श्री  
 षेदिये ग के ॥ २६ ॥ सत्वेतैः केन्द्र मे स्मार्कैः मल क्रीडा शुभा वह्ना ॥ अथ सर्प ग्रहणम् ॥ भ्राण्या  
 र्द्र मघा श्लेषा पूर्वा ज्येष्ठा मूल के ॥ क्रूरे इन्हि केन्द्र मेः पापैः हित्वा काल महि ग्रहः ॥ २७ ॥  
 अथ नरायण मधुना हसनम् ॥ हलिका रोहिणी पुष्य स्वाती हस्ते श्रव द्वये ॥ मृगे ईर्के रति युक्त त प्रस्त  
 गोन वाजिनाम् ॥ २८ ॥ अथ मेतुबंधः ॥ शुक्र रा रोहिणी स्वाती मृगे ईर्के मगले गुरे ॥ सेतूना वधन  
 प्राप्त सुभे लग्ने सुभे क्षिति ॥ २९ ॥ अथ नवरा कृत्यम् ॥ लवणा रभ कृत्य तु भरणी रोहिणी श्रवे ॥ शने  
 वीरे दिवा अष्टौ जन्म राशे धन वर्त्तते ॥ ३० ॥ अथ जिन चार्क वा खंड क्रिया ॥ ऊषा श्रुनी मृगे स्वाती पुनर्भ  
 प्रवरात्रये ॥ जया पूर्ण सुपुके ईजे पुर्भे हनि चरो द्वये ॥ ३१ ॥ चाविकि जिन पाखरट्ट मण्डली करण शु-  
 भम् ॥ अथ शूल धनत कृत्यम् ॥ चित्रा पूर्वा रोहिणी पुष्य शुक्र श्रवरात्रये ॥ शुभा ह ईर्के च शैल धनद ह  
 त्य समीरितम् ॥ ३२ ॥ अथ तैलिक यंत्र कृत्यम् ॥ धनिष्ठा श्रिकरं चित्रा शुक्रा पुष्य भेतया ॥ ज्येष्ठा याच



पुनर्वसो रेवत्या शुभवासरे ॥ ३३ ॥ तैल यंत्रक्रिया शस्ता हित्वा ऋक्ता कुजावाप ॥ ३४ ॥  
 भकारकृत्यम् ॥ पुनर्वसुद्वये हस्तत्रयेत्येगोहिणी मृगे ॥ ३५ ॥ अनुराधा अश्विज्येष्ठा संसृज्य  
 मोम्य वासरे ॥ तद्याच रोदने प्रोक्ता कुंभ कार क्रिया बुधैः ॥ ३६ ॥ अथ काष्ठाश्लेष कृत्यम् ॥  
 हस्त षड्भेऽश्विनी पुष्ये रेवत्या अनुरात्रये ॥ पुनर्भेसहिणी युग्मे सूत्र धारि क्रियोचमा ॥ ३७ ॥  
 हस्त षड्भेऽश्विनी पुष्ये रेवत्या पुष्ये मूले हस्त चतुर्थये ॥ कर्त्तिकेवां पुनर्वसोः शु  
 ॥ अथ खर्गकारकृत्यम् ॥ अथत्रयेऽश्विनी पुष्ये मूले हस्त चतुर्थये ॥ अथ चर्मकारकृत्यम्  
 भेलनेति या वषि ॥ ३८ ॥ हेमकार क्रिया शस्ता हित्वा बुध शने श्रुते ॥ अथ चर्मकारकृत्यम्  
 ॥ शुक्रार्द्र शनि वीरेषु चर्म कार क्रिया शुभा ॥ वसु पूर्वोद्दि वाग्नि योष्ठा केन्द्व वासरे  
 ॥ ३९ ॥ अथ लोहाश्ममणानां कृत्यानि ॥ सानो ज्येष्ठा द्वये मूले चित्रार्द्र भरणीत्रये ॥ मणि लो  
 हा प्रसनां कृत्यं पापं चान्नि स्थि रोदये ॥ ४० ॥ अथ नापितक्रियां ॥ ज्येष्ठा हस्त त्रये कर्णत्रि  
 तयेऽश्वि मृगेऽन्यभे ॥ पुनर्वसु द्वये हित्वा ऋक्ता षष्ठा यमी तिथिः ॥ ४१ ॥ स शूरे ना  
 पितानां चक्षुरादि सकला क्रिया ॥ अथाभीरेजन कृत्यम् ॥ क्षिप्रखायां पुनर्भेऽन्ये ज्येष्ठा

हस्ताश्विनी मृगे ॥ पूषा कर्ण त्रये मुख्ये ज्ञेऽर्के ऽजे बलवत्क्लिप्ता ॥ ४१ ॥ अथ चौरक-  
 त्यम् ॥ विशारवा कृत्तिका पूर्वा मृलाद्भौ भरणी मघे ॥ अश्लेषा ज्येष्ठयो मंद भौमयो प्रशकु-  
 ने बले ॥ ४२ ॥ लग्ने वा दृशसे भौमे चौर्यं स द्रव्यलब्धये ॥ अथ ग्रेत राहः ॥ अत्यक्ष शव  
 संस्कारे दिनं नैव विशेषयेत् ॥ अश्लेषे च विनिवृत्तौ चेत्युनः संस्क्रियते मृतः ॥ ४३ ॥ सं-  
 शोध्यै वदिनं ग्राह्यं मूर्द्धं संवत्सराद्यदि ॥ ग्रेत काय्यागिण कुर्वीत श्रेष्ठं तत्रोत्तरायणम् ॥  
 ४४ ॥ कृत्स्नपक्षश्च तत्रापि वर्जयेत्तु दिनत्रयम् ॥ चतुर्थाष्टमगी चंद्रे द्वादशे च विवर्ज-  
 येत् ॥ ४५ ॥ ग्रेत कृत्यं व्यती याते वै धृतौ परिधे तथा ॥ करणे विधि संज्ञे च ग्रहे प्रचरदि-  
 ने तथा ॥ ४६ ॥ अयो दृश्या विशेषेण जन्म तारा त्रये तथा ॥ जन्म दृशे कोन विंशति ज-  
 न्म तारा त्रयन्त्विदम् ॥ ४७ ॥ नक्षत्रे तु न कुर्वीत यस्मिन् जातो भवेन्नरः ॥ न प्रोष्ठपद-  
 योः कार्यं तथा ग्नेये च भारत ॥ ४८ ॥ द्दारुणेषु च सर्वेषु प्रत्यारिं च विवर्जयेत् ॥  
 भरण्याद्भौ मघा श्लेषा मूलं त्रिचरणानीच ॥ ४९ ॥ ग्रेत कृत्येषु दुष्टानि धनिषाद्यं च पंचकं

म् ॥ फाल्गुणी हितवे रोहिण्य नृगथा पुनर्वसु ॥ ३० ॥ आषाढे द्वे विशाखात्र आनि  
 हि चरणानि च ॥ एतानि किंचिदुद्यानि संभवे सति वर्ज्येत ॥ ३१ ॥ चतुर्दशी तिथि-  
 नंश भद्रा सुक्कार वासरो ॥ सिते ज्ययोस्त मित द्यप्रिम विषमा द्वि भस्म ॥ ३२ ॥ पु-  
 नः पक्षच मत्तज्य पुनर्दहनं सुचमम् ॥ वसुन्तरादुक्तः पच नक्षत्रेषु द्वि जन्मसु ॥ ३३  
 ॥ पौलवस्स क्षयो ध्वेव बहना कुल नाशनम् ॥ गुरु मार्गवि योर्मध्ये पोष मास मलि-  
 न्मुचि ॥ ३४ ॥ नातीतः पितु मे धत्स्याद्वा गोदावरो विना ॥ अथ लम्नादि तिथ्य तानाव-  
 लावले चानार्थ गुणः ॥ सहस्र गुण सुखग्नं च द्र श्यते गुणो वली ॥ नारायणि गुणो योगो द्वा-  
 त्रि शतुल भागभवेत् ॥ ३५ ॥ तदहं करण विद्या हार त्वष्ट गुणः स्मृतः ॥ द्विवर्ति कुल  
 संभूत सरस् कुन संगृहे ॥ शिरो मणौ समानैवैकादशीय प्रभा शुभा ॥ ३६ ॥ द्विनि श्री  
 संग्रह शिरो मणौ सुहृत्त कथनं नामैकादशी प्रभा ॥ ३७ ॥ अथ सकृति प्रकरणम् ॥ ए-  
 काग्रनिर्नच बाहुल बोधो दीर्घ नाशिका ॥ षष्ठियोजन विस्तीर्ण संक्राति स्तु स्त्रिया कृतिः

॥ १ ॥ संक्रान्ति भौम वारे स्याद्वा राग्या भरणी मघे ॥ पूर्वार्त्रये च नक्षत्रे श्रद्धाणां सुखदा  
 सृष्टता ॥ २ ॥ सोम वारे ऽभिजि तुष्ये ऽश्विनी हस्तेषु भास्वतः ॥ संक्रान्तिः कथिता ध्या  
 क्षी विष्णोः सौख्य प्रदायिनी ॥ ३ ॥ अथ एतद्दिनि भे स्वातो पुनर्वसोः कुजे हनि ॥ या भवेत्स -  
 तु चौराणां सौख्य दात्री महोदरी ॥ ४ ॥ बुधा देया च रेवत्यां मृगे चित्रा सुराधयोः ॥ सा  
 रात्रये ॥ तदा मेषाभिधा देया विष्णोः वरुणिनी ॥ ५ ॥ बृहस्पती यदा जाता रोहितायां चोत्त -  
 रिकायां च या भवेत् ॥ सतु मित्रोति विख्याता परमा प्रीति दायिनी ॥ ६ ॥ भृगो वारे विष्णोः वायो कुं  
 तथा र्दायाम् प्रलेखा ज्येष्ठयो रपि ॥ या भवेद्वासा सी सा स्यात् अंत्य जानां सुखा वहा  
 ॥ ८ ॥ आष ऽन्दित्र्यं शुक्रं राक्षो द्वितीये हति वै हि जान ॥ तृतीयैवाश्वयुज्यं कान्त्य संक्रा  
 तिः शूद्र वर्ण कान् ॥ ९ ॥ प्रति याम क्रमादंगे विष्णोः राक्षसान्नदान् ॥ पशु पा  
 ल गणं हति प्रभाते सर्व लिङ्गिनः ॥ १० ॥ अथ सप्तमस्तमः ॥ वृश्चिके च व भे सिंहे कुम्भे

विष्णुपदं स्मृता ॥ षड् श्रूतिं मुखे मीने कन्या मिथुन धनिषु ॥ ११ ॥ प्रीतिं याम्या यना क  
 के मकरे चैतनरा यणा ॥ विषुवाख्या नुला मेवे संक्रांति स्समुदाहृता ॥ १२ ॥ अथ क्रूर सी-  
 म्य परत्वेन फलमाह ॥ रवि रविज भोम वारे संक्रांतौ दिन कस्य तन्मासि ॥ पित्त कफानिल  
 जामयनर पत्ति कलह स्त्व वृष्टि श्च ॥ १३ ॥ बुध गुरु सित चंद्रा हे सति संक्राता व-  
 नांमय न्दराणां ॥ क्षिति पति निकर क्षेमं सस्य विवृद्धि विधर्मिणां पीडा ॥ १४ ॥ यस्य  
 जन्म क्षमासाद्य रवि संक्रमणं भवेत् ॥ तन्मासाभ्यंतरे तस्य रोग क्षेपे श धन क्षयाः ॥  
 १५ ॥ अज कन्या भयं कर्किणि संक्रांतौ यदि न चै हर्षम् ॥ आसय मरणं भू भृद्युद्धमन  
 र्ध्यं त्व वृष्टिश्च ॥ १६ ॥ वृष वृश्चिक नुला मकरे वृष्टिस्स्या त्संक्रम विषये ॥ विस्फोटा-  
 मय तत्कार पीडा वृष्टिः कुशानु भयम् ॥ १७ ॥ अथापि स संक्रमे श्रंतिः ॥ तगर झरो रुहः  
 पत्रै रजनी सिद्धार्थ लोघ संयुक्तैः ॥ त्मानं जन्म नृप्ते रवि संक्रांतौ नृणां शुभदम् ॥ १८  
 ॥ अथ पुण्य समयः ॥ प्रागृद्ध दशं पूर्वतो षड् वनिं सहस्रयः पूर्वत स्त्रिंश त्योड् दश पूर्वतो ऽथ

पततेः पूर्वाः परास्त्यदर्शः ॥ पूर्वाः षोडश चोत्तरा ऋतुभुवः पञ्चत्वा त्ववेत्ताः पुनः पूर्वाः षोड-  
 श चोत्तराः पुनरथोपुरायास्तु मेयादितः ॥ १८ ॥ अस्थार्थः ॥ नेषे प्रागृद्धचदश घटिकाः  
 पुराय कालः १ द्वये पूर्वाः षोडश ३ मिथुने पराः षोडश ३ कर्के पूर्वार्द्धिन्नात् ४ सिं-  
 हे पूर्वाः षोडश ५ कन्यायां पराः षोडश ६ तुलायां प्रागृद्धादश ७ वृश्चिके पूर्वाः षोड-  
 श ८ धनुषि पराः षोडश ८ मकरे चत्वारिंशत्परः १० कुम्भे पूर्वाः षोडश ११ मीने पराः  
 षोडश १२ पुरायाः षोडश नाड्यस्तु पराः पूर्वास्तु संक्रमात् ॥ त्रिंशत्कर्कटके पूर्वाश्चत्वारिं-  
 शत्परमग्रे ॥ ३० ॥ मध्याह्नादुत्तरपुराय त्राहिनः प्रीयास्तु संक्रमे ॥ निशीथ्यादृद्धका-  
 लेन गध्याह्नात्प्राक्परीहानि ॥ ३१ ॥ चेत्ति प्रीथेद्वाहपुराय परं पूर्वं विभागयोः ॥ अथा-  
 यनयोर्विशेषः ॥ सूर्यास्तमनः सध्याया यदि सौम्यायनं भवेत् ॥ ततोदयादहः पुराय पूर्वार्द्धि-  
 पूर्वतो यदि ॥ ३२ ॥ अथ संध्या लक्षणम् ॥ अहर्निःस्तमना तस्या घटिका त्रय संमिता ॥  
 तथैवाहोदयान्नात घटिका त्रय संमिता ॥ ३३ ॥ अस्तादृद्धच मकरे रात्रौ च संक्रमरवेः ॥

संस्कृत  
१७५

ततोत्तरदिने पुण्यं मयान्हात्प्राक् प्रकीर्तितम् ॥ २४ ॥ यदा सूर्यो दयात्सर्वः कर्क संक्रम  
रो रविः ॥ तदा पूर्व दिने पुण्यं तद्वर्द्धनत्वे हनि ॥ २५ ॥ सांते विसु पवे यामे मध्येतु विपुवा  
भिधे ॥ प्रवृत्तीतिमुखे सोम्यः पुने पुण्ये वदुत्तरम् ॥ २६ ॥ अथ रात्रौ स्नान दानं निधेः वि विशेषः  
॥ रात्रौ स्नानं न कुर्वीत दानं चैव विशेषतः ॥ नेमिचिकितु कुर्वीत स्नान दानं च रात्रि शु ॥ २७  
॥ सुतु जनने संक्राता वुपु रागे सूर्य चंद्र को नित्यम् ॥ रात्रा वपि कर्त्तव्य स्नान दानं विशेष  
पत्तो न्दृष्टम् ॥ २८ ॥ अथ संक्राति मुहूर्त्त लक्षणं च ॥ पुनर्वसु विशाखा च राहिणी ज्येष्ठा च  
द्वरा ॥ सुभि सं तत्र संक्रातो वारा वेद मुहूर्त्त काः ॥ २९ ॥ भरण्या दर्श शता श्लेषा स्वा  
ती ज्येष्ठा जघन्य भं ॥ संक्रातो तत्र दुर्भिक्षं मुहूर्त्त वाण भूमिताः ॥ ३० ॥ शेष भानि समा  
ख्यानि संक्राता वई साम्यता ॥ मुहूर्त्ता विप्रशति प्रोक्ता फलं चंद्री दयेऽपि तत् ॥ ३१ ॥  
अथ कर्क मेष विशेष पकाः ॥ अर्कादि चारे संक्रातो कर्क स्यान् विशेषो  
पकाः ॥ विशेषे न स्वा गजाः सूर्याः धृत्येऽथ च श सायकाः ॥ ३२ ॥

अथ कर्क मेष विशेष पकाः

|    |    |    |    |    |    |    |
|----|----|----|----|----|----|----|
| स  | च  | मं | उ  | वृ | शु | श  |
| १० | २६ | २८ | १२ | १८ | १८ | २८ |

नैट सुज्ञो रविनीगे तै निले च चतुः पदे ॥ किं सुधे कोल वे तिष्ठन् शकुनौ संक्रमित प्रशु-  
 भः ॥ ३३ ॥ गरादि पंचके मध्य प्रचोप विद्या ऽर्घ्यवधरो ॥ अथ संक्रांते चर्हिनानि ॥ सिंहो  
 व्याघ्रो वराहश्च खरे भ महियो हयः ॥ ध्याजोगीः कुक्कुटो बाहः संक्रांतेः कस्य प्रो व-  
 वात् ॥ ३४ ॥ अथ वस्त्राणि ॥ श्वेतं पीतं हरित्याहुं रत्नं प्रयासं च मेचकम् ॥ चित्रं कंवल दिङ्मे-  
 घतन्निभं क्रान्तो ऽदरम् ॥ ३५ ॥ अथ शस्त्राणि ॥ भुशुंडी च गदा खड्गो दंडः को दंडो नो-  
 मेरे ॥ कुंतः पाशो ऽकुशो ऽरुन्ध च वारा श्वैवायुधं क्रमात् ॥ ३६ ॥ अथ अस्त्राणि ॥ अन्न-  
 च पायसं भैक्षं पक्वान्नं च पयो वधि ॥ चित्रान्नं गुड मध्याज्यं शर्करां मक्षरां क्रमात्  
 ॥ ३७ ॥ अथ विलिपनानि ॥ कर्तूरी कुंकुमं चैव चंदनं सस्य रोचना ॥ यावको तु सदे वापि ह-  
 रिष्मं जनको ऽ गुरुः ॥ कर्पूरं प्रचेति विज्ञेयं संक्रांते श्व विलेपनम् ॥ ३८ ॥ अथ जातयः  
 ॥ देवो भूतो रगः पक्षी पशुरेणो दिजः क्रमात् ॥ क्षत्रियो वैश्य सूस्रो च संकरे जातय-  
 स्त्विमाः ॥ ३९ ॥ अथ पुण्याणि ॥ पुन्माग जाति वकुलं केतकी विल्व मर्कजम् ॥ इर्वा जाम- ११०



स्त्रिका पुष्टा पाट लाच जया क्रमात् ॥ ४० ॥ अथाभरणानि ॥ नूपुरं किंकिरी मुक्ता विद्रुमं के-  
 कणं मणिम् ॥ गुञ्जा चण्डिका नीलं वज्र भूषा गरुत्मकम् ॥ ४१ ॥ अथमाला ॥ प्रवाल  
 मुक्ता रजतं मणिस्तथा गो मेद नीलं च सुवर्णं शीसम् ॥ काष्ठं तथा ताम्रकं लोहकं-  
 च विभर्ति सच्चै गलं के सुशोभितम् ॥ ४२ ॥ अथवर्णसि ॥ वाला कुमारिकारंढा मध्या  
 प्रौढा प्रगल्भिका ॥ वृद्धा वंध्याति वंध्या स्यादसूता योगिनी वयः ॥ ४३ ॥ योगिनी स्थि-  
 त कायाग ससंक्रांति रागमो मतः ॥ चंद्र स्थदिष्टि दृष्टिस्त्यात् गमनं वार दिक् स्मृतम्  
 ॥ ४४ ॥ अथदृष्टिः ॥ चंद्रे गुरो दृष्टि विदिक कृशणो सूर्ये शिते नैर् कृति काणंगो दृक् ॥ धा-  
 त्री सुते दक्ष्य वने निरुक्ता बुधे शनी रुद्र दिष्टी सणं भवेत् ॥ ४५ ॥ अथगमनम् ॥ मंदं चं-  
 द्रे गगस्ती म्ये बुधे भीमे च वारुणे ॥ रवौ शुक्रे गमो यास्ये गुरो प्रागगमनं स्मृतम् ॥ ४६  
 ॥ मुखसंक्रांतेः ॥ रवौ संक्रमणे पूर्वं मुखं जीवेतु चोत्तरे ॥ प्रत्यङ् मुखं शनौ सोमे शोवेद  
 क्षिणतो मुखम् ॥ ४७ ॥ तवे पूर्व मुखं प्रोक्तं वालवेयम दिद्रुमुखम् । कोलवे पश्चिममु-

नाड्यो राम शुभा रावे ३३ एष विधोः षट् दोः पलैर्युक् द्वयम् ३२६ भौमस्याधिपले  
 ११३ र्युतानव ३४ विदोयुक्ता पलेस्स्वाग्निभिः षट् नाड्यो ६२० ५ ए ग जा ८८ शुभे रथम्  
 गोर्नन्दाः पलैरस्थभिः ४८ पुरयाः स्युः खन्धाः १६० शनैरुभयतो रां स्पृश्योः सं-  
 क्रमे ॥ ५६ ॥ अथाधिमातृस्य मातौ ॥ अ संक्रांति रमां तोयो मासश्चेत्सोऽधि मासकः ॥  
 परमासा द्वयोर्द्वेयः प्रायश्चित्तेनादि सप्त सु ॥ ५७ ॥ द्विसंक्रांतौ क्षयाख्यस्यात्कदा  
 चित्कार्ति कत्रये ॥ युग्माख्यस्वतु तच्चा के क्षधि मास द्वयं भवेत् ॥ ५८ ॥ मलमास इ-  
 ति द्वे योग हितस्सर्व कर्म सु ॥ अथ ताणदि वलादन्येषां वलम् ॥ तां रायां क्लतश्चंद्रः वलं  
 सूर्यस्य चंद्रतः ॥ सूर्यतस्सर्व खेदानां वलं द्वयं शुभा शुभम् ॥ ५९ ॥ द्विवेदि कुल स-  
 मूत सरयू छत संगृहे ॥ धिरो मणौ समक्षे षा द्वादशीयं प्रभा शुभा ॥ ६० ॥ - इति श्री  
 संग्रह धिरो मणौ संक्रांति कथनं नाम द्वादशी प्रभा ॥ १३ ॥ अथ गोचरप्रकरणम् ॥

गयोः इत्येकं स्थानफलानि आदौ रवेः ॥ ममो हानिर्दनेरो गोदेन्यं सीत्यं शु-

॥ पापं वैरं सुखं हानीं राहुं केत्वोः फले त्विदम् ॥ २० ॥ अथ शुभ फलदा ग्रहाः  
 ॥ शुभा एका दशो सर्वे त्रिषष्ट दश गो रविः ॥ यत् त्रिंशत्स्यो धरा पुत्रो राहु केतु शनैश्चराः  
 ॥ २१ ॥ दश सप्त त्रिषष्टाद्य संस्थिताश्चंद्रमाः शुभः ॥ शुक्ल पक्षे तु नवमो द्वितीयः  
 पंचमोऽपि च ॥ २२ ॥ दिगष्टाश्च चतुस्संस्थो गोचरे शुभ दो बुधः ॥ बृहस्पति-  
 श्शुभः प्रोक्तो हि पंच नव सप्त राः ॥ २३ ॥ एक हि त्रि चतुः पंच नवाष्ट व्याय गो भृगुः ॥  
 अथ ग्रहाणां क्रम वेधः तत्रादौ रविः ॥ यष्टं द्वादश गो विध्ये दशमं तूय्यं गो गृहं ॥ तृतीय नरमे-  
 सूर्यं लाभस्थं पंचम स्तथा ॥ २४ ॥ द्वितीय स्सप्तमश्चंद्रः पंचमं पंचम स्तथा ॥ यष्टं द्वा-  
 दश गो विध्ये दष्ट गो लाभ संस्थितम् ॥ २५ ॥ अथ भोग एनि केतुनाम् ॥ तृतीयं द्वादशं व-  
 यं नवमोऽथ य लाभ गम् ॥ विध्ये तं च सगो भोगं राहु केतु शनैश्चरम् ॥ २६ ॥ अथ  
 बुधस्य ॥ द्वितीयं पंचमं तुय्यं तृतीयो नवमो रिगम् ॥ शार्चेऽष्टमं बुधं स्वस्थ मष्टमोति  
 मन्नाय गम् ॥ २७ ॥ अथ शुक्रेः ॥ द्वितीयं गुरु रंत्यस्थः पंचमं तुय्यं गोऽष्टमम् ॥ लाभ

१२६

गं सप्तमं त्रिस्थो नवमं दशमो ग्रहः ॥ १८ ॥ अष्टम्यो ॥ आर्गवं चाद्यमष्टस्यः त्रिगमा  
 योरिगोत्युगः ॥ खस्थसूर्य्यं च लाभस्थो नवमं त्रिगमायगम् ॥ १९ ॥ द्वितीयं सप्तमः  
 खेदो नवमः पंचमं तथा ॥ पंचगं चाष्टगं विद्वेत्त्रमवेध उदाहृतः ॥ २० ॥ अविद्वेषु  
 भदः खेदो नवेधस्तात पुत्रयोः ॥ निधस्थान गतो पीछो विद्वत्त्वे त्वविलोभतः ॥ २१

| चंद्रस्य    |    |    |    |   |   |   |    |    |   | बुधस्य                        |   |   |    |
|-------------|----|----|----|---|---|---|----|----|---|-------------------------------|---|---|----|
| ६           | १० | ३  | ११ | ३ | ७ | १ | ६  | ११ | ३ | ११                            | ६ | ३ | ११ |
| १२          | ४  | ८  | ५  | ६ | २ | ५ | ११ | ८  | ४ | १                             | ५ | ८ | १० |
| गनि वर्ज्यं |    |    |    |   |   |   |    |    |   | ५                             |   |   |    |
| जीवस्य      |    |    |    |   |   |   |    |    |   | अथ त्रय विभागो ज्ञान्यतो ग्रह |   |   |    |
| ५           | २  | ८  | ११ | ७ |   | १ | २  | ४  | ५ | ११                            | ३ | २ | ११ |
| ४           | १२ | १० | ८  | ३ |   | ८ | ७  | १० | ८ | १०                            | ५ | ८ | ११ |

न्म राश्रीस्तु विद्वेयो वेध्य वेधको ॥ २३ ॥ अथाष्टवर्गानि सारणा ग्रह फलम् ॥ स्वाष्टवर्गे दिव्या  
 खेतोऽधिकारे खग राशिरागः ॥ तदा गोचरदृष्टेऽपि श्रेष्ठो नाल्य करे खगः ॥ २३ ॥ अ-  
 थग्रहाणां निःफलत्वम् ॥ सत्फलो वीक्षितः पापैः सोम्ये दृष्टोऽप्य सत्फलम् ॥ ता बुभौ नि-  
 फलो द्वेयो गोचरे जात केऽपि च ॥ २४ ॥ सत् क्षेत्र गतः खेतो नीच गोप्य स्त गोऽपि-  
 वा ॥ निःफलस्तोऽपि विद्वेयः शत्रु दृष्टोऽपि ता दृष्टः ॥ २५ ॥ अथ ग्रहाणां राशिभोग  
 मानम् ॥ मासं शुक्रो बुधः सूर्यः सार्द्धं मासं महीसुतः ॥ गुरु खं तम स्तार्द्धं शनि स्तार्द्धो  
 बृक हयम् ॥ २६ ॥ अथ एने विचारः ॥ ऋसे यत्र शानि स्थितो भवति तद्वक्त्रे सच योज-  
 येत् वाहो दक्षिणे के ततो भ चतुरः षट् पादयोर्विन्वसेत् ॥ पंचो रस्य षट्पदयोः  
 भान्यथ करे वामेऽथ शीर्षे त्रयं पुंगमे लोचनयोर्द्वयं गुरु गतं जन्मार्द्धं शोक फलम् ॥ २७ ॥  
 मुखे हानिर्जयो वाहो अम श्चां श्रौ धनं हृदि ॥ कुलं वा मस्तके राज्यं नेत्रे सौख्यं म-  
 तिर्गुदे ॥ २८ ॥ मुराच्चरति गुह्ये च गुह्या स्याति लोचनम् ॥ लोचनान्मस्तकं याति म-

स्त का ह्यमह ल्लक्षम् ॥ ३८ ॥ वास हस्तः ३, हृदयं हृदया चरण हृदयम् ॥ पङ्क्त्या दक्षि-  
 ण हस्तं च श्रानि चक्रे विचारयेत् ॥ ३९ ॥ एक नासोत्तरं वर्षं दिनानां दशकं तथा ॥  
 प्रत्येक मृक्षमात्रव्य शनिर्गच्छति सर्वतः ॥ ३१ ॥ सार्द्धं वर्ष द्वयं राशि मेकं सकल  
 संमतम् ॥ त्रिंशद्वर्षाण्यभि व्याप्य राशि चक्रे भवे च्छनिः ॥ ३२ ॥ एवं सौरे गतिं ज्ञा-  
 त्वा फलं ज्ञूयाद्विचक्षणाः ॥ अभीष्ट फल लाभाय विनाशाय शुभस्य च ॥ ३३ ॥  
 शने दिं फलं भोक्तं स्वर राश्यादि संमतम् ॥ रिक्क १२ रूप १ धन २ भेषु भा स्करिः सं-  
 स्थितो भवति यस्य जन्म भात् ॥ लोचनो दरपदेयु संस्थितिः कर्णो ते रविज लोक जै-  
 र्जनैः ॥ ३४ ॥ स्थान मेषु पुन रुच्यते बुधैः सार्द्धं मूधरसमा सुभा स्करिः ॥ तत्र चक्र  
 मन वद्य मुच्यते भानुजा कृति पदं मुनीरितम् ॥ ३५ ॥ ज्ञानने दिन शतं प्रकीर्तितम्  
 १०० हानि रत्र बहुधा प्रजायतेः दक्षिणो तु भुज के चतु र्शतं वासराणि विजयोरणां  
 गने ॥ ३६ ॥ षट् शतं चरणा युग्म के पुनः अंति रत्र सततं दिशं तरे ॥ जाठरेषु शर

५०० संग्रह्य के भवेत्स्वाभएव धन धान्य यो स्सदा ॥ ३७ ॥ दक्षिणो हारं भुजे चतुःश-  
 तं दुःखं शिरसि च्छत त्रयम् ॥ राज्यं भवति नेत्रयो र्वयोः द्विः शतं च सुखं दं  
 प्रकीर्तितम् ॥ ३८ ॥ ग्रह्य गंतं दनु तच्छत द्वयं दुःखं मुनि वरैः प्रकीर्तितम् ॥ चक्र-  
 मे तद व लोका कीर्तये त्साहू भूषणं शतोद्भवं फलम् ॥ ३९ ॥ अथ चरणादि विचारः ॥ ज-  
 न्मां १ ग द्दुःखे ११ पु सुवर्ण पादं द्वि २ पंच नैर् एज तस्य पादम् ॥ त्रिं सप्त दिक् ताव यदं  
 वंदति वेदा य सां किं चि हलौह पादम् ॥ ४० ॥ लोहे विन विना शस्यात् सर्व सौख्यं च को-  
 चने ॥ ताम्बे च सम ताद्रेया सोभाग्यं राजते भवेत् ॥ ४१ ॥ अथ शनिवाहनम् ॥ यामले-  
 मन्द क्षौ च्छ शि १ वेद ४ तर्क ६ विशिखा ५ अक्षय ४ गत्य ३ य ८ पक्ष २ क्रमाच्छा गो १  
 प्वो २ भवनो गजोहि माहियोऽध्वो वयो वायसः ॥ हानिं वैर भयं भ्रमो धन च यो सा  
 नाल्पको भूयतेः सौख्यं रोग च यो नरस्य वसतो मंदस्य वाहा च्यमी ॥ ४२ ॥ सपा-  
 दद्विदिनं चंद्रः प्रायः खेट भ भोग कः ॥ अथ यन्त्राणां फल समयः ॥ राशे राशे कुजः स्त-

यो मध्ये युक्त दृह स्पती ॥ अंत्ये चंदः शनिर्गोहे फलदः सर्वदा बुधः ॥ ४४ ॥ त-  
 र्थाः पंचदिना त्वं शीतरश्मिर्बही जयात् ॥ भौमोषलाह का दर्विक्रमुक्त दोस्त  
 वा सरात् ॥ ४५ ॥ गुरुर्मास ह्यथ श्वैव शरमा साचु शनैश्चरः ॥ राहुर्मासत्रया दस्य राशे  
 स्तु फलदः स्मृतः ॥ ४६ ॥ राशिनक्षत्र संधि स्याः फलदा भव मे स्वयोः ॥ राशिनक्षत्रयो-  
 र्वेदाः पूर्वयोश्च हिलो मतः ॥ ४७ ॥ अथ जन्म राशितो गुरुण फलम् ॥ गुरुण जन्म भास्तेष्टुं  
 देशे का दश पद त्रिगः ॥ मध्यमे पंच सप्ता अथिन वम स्थानं संस्थितम् ॥ ४८ ॥ नेष्टु न-  
 त्याष्ट तु र्यस्य जन्म क्षेत्तु मृति भवेत् ॥ जपात् सुवर्ण गो दानात् प्राप्ते श्वादर्शनाच्छुभ-  
 म् ॥ ४९ ॥ अथ विषमस्ये ग्रहे विकर्षाणि ॥ आखेटः काल चर्यात्त दूर देश गन्ते नृपः ॥ दुष्ट वा-  
 जि गजा रोहे गमनं पर मन्दिरे ॥ ५० ॥ न कार्यं साहसं कर्म विषमे युग्रहे युत्त ॥ अथ  
 यशशान्दनानि ॥ ये खेटाः खेचरे दुष्टाः दशगयां त्वाष्ट वर्ग के ॥ जप दानादि नाते स्युः प्रश-  
 स्ता स्नान तो ऽपि वा ॥ ५१ ॥ साशिकं धेनु गोधूम हेमं ताम्रं गुह्यं बुजम् ॥ चंदनं चांवरं



रक्तं देयं भास्वान्मुदे चक्षुः ॥ ५२ ॥ सुक्ता रोष्यं सिंतं वस्त्रं शंखं वंशं स्थतं दुलान् ॥ कर्ष-  
 रं शो युगं दद्याद् न कुंभं विधो मुदे ॥ ५३ ॥ प्रवालं हेम गोधूमान् रक्तं वासोऽरुणं ह्ययम् ॥  
 ५५ ॥ करवीरं गुहं ताम्रं मसृण्मौम तुष्टये ॥ ५४ ॥ कांस्यं नीलां वरं हेम गज दंतं गरुत्मकं  
 ॥ मुद्गाज्यं सर्वपुष्पं च दद्यात्प्रीत्यै बुधस्य च ॥ ५५ ॥ हरिद्राघ्नः क्षितो हेम पीतं धान्यं  
 तथा वस्त्रम् ॥ लवणं पुष्पं रणं प्रच देयो वाचस्यते मुदे ॥ ५६ ॥ धेनुश्चित्रा वंचाल्यस्त्रे  
 ताप्यो हेम तंदुलाः ॥ सुगंधं रजतं वस्त्रं देयं सुधीतये भृगोः ॥ ५७ ॥ तिला स्तैलं तथा  
 आखानिन्द्रनीला सितां वस्त्रम् ॥ कृष्णं गौ महिषी लोहं स्वर्णं च दद्याच्छ ने र्मुदे ॥ ५८ ॥  
 गोमेदं तुरगं खड्गं नीलं वस्त्रं च कांचनम् ॥ स्वर्णं तैलं तिलान् च दद्यात्तैलं हि केय नुदे नृपः  
 ॥ ५९ ॥ कस्तूरी कमलं वस्त्रं च्छागो वैदूर्यं दांचने ॥ तिला स्तैलं महीपालैः प्रदेयं के-  
 नु तुष्टये ॥ ६० ॥ अथ ग्रह दुःख हरमौषधी स्नानम् ॥ एलायश्चिमधू सीरताञ्च पुष्पाञ्च कुंकु-  
 मैः ॥ स्नानं मनः प्रियं ला देव दारु मारिचि तुष्टये ॥ ६१ ॥ पंच गव्यं भवानां बु शंख स्कन्दि

क शुक्तिभिः ॥ कुमुदे स्मिंश्चितेः स्नानं चंद्र वीषा पनुत्तये ॥ ६२ ॥ हिं ग्वलू विल्व फलि  
 नी मांसी च कुल चंदनेः ॥ रक्त पुष्पै र्वला मिश्रैः स्नानं भौमार्ति नृत्तये ॥ ६३ ॥ गोमयाक्ष  
 त मुक्ताभी रोचना मधु हेमभिः ॥ फल मूलैर्युतं स्नानं वोधनार्ति विनाशनम् ॥ ६४ ॥  
 ॥ मालती कुशुम प्रवेत सर्प पक्षी च संयुतैः ॥ पल्लवै र्मंदय त्याश्च स्नायाद्गुरु मृदे नृपः ॥  
 ६५ ॥ सल्ला मन शिशला मूल फलं कुंकुम वारिभिः ॥ स्नानं शुक्र कृतां वाधां नाशये-  
 त्येव भू मुजाम् ॥ ६६ ॥ वला लाजा ज्वनैः कल तिलै र्लोध घनै रपि ॥ अत पुष्या न्विते-  
 रस्नाया न्मंद वाधा पनुत्तये ॥ ६७ ॥ अथ ग्रहाणां दोष शान्तये सामान्यौषधी स्नानम् ॥ लाजा कुष्ठ व-  
 ला मिश्र प्रिय गुचन सर्वत्रैः ॥ देव दारु हरि चभिः पुंखा लोघ्रेण संयुतैः ॥ ६८ ॥ वारि  
 भिः स्नान मुक्तं हि प्रोक्तं वान पुरस्सरम् ॥ एतस्मात्सात्यत स्सर्व ग्रह पीडो पशान्तये ॥  
 ६९ ॥ अथ यह प्रीतये रत्नादि धारणम् ॥ शुक्रे न्दो रजतं चैव विद्रुमं भानु भौमयोः ॥ क्तस्य हेम  
 शनं र्लोहिं गुरो र्मृक्ता फलं नरः ॥ ७० ॥ प्रीतये धारयेत्तं गेलाजा वर्त्तन्त तो न्ययोः ॥ अथ न-

व गृहमुद्रिका ॥ सागितंय तरणोर्मध्ये प्राच्यां वज्रं भृगो विंधोः ॥ अग्नेयां मोक्तिकं यास्यं प्र-  
 वालं संगलस्य च ॥ ७१ ॥ गो मेदं राससो राहोः पञ्चिंस नीलकं प्रनेः ॥ वायो वैदूर्यं  
 कं केतौ लदीच्या पुष्यकं गुरोः ॥ ७२ ॥ गारुत्मकं तथै शान्या सोम पुत्रस्य तुष्टये ॥  
 मुद्रिकायां नैर् द्यार्यं मथवा एथ गेवहि ॥ ७३ ॥ अथ गृह पीठोपशमनोपायः ॥ पालनाहु-  
 रु वाक्यानां देव ब्रह्मणा वंदनात् ॥ नो कुर्वीत गृहाः पीडा दुष्टस्थान स्थिता अपि ॥  
 ७४ ॥ द्विवेदि कुल संभूत सरयू कृत संग्रहे ॥ शिरो मणौ समाप्तेषा प्रभेयंच त्रयोदशी  
 ॥ ७५ ॥ इति श्री संग्रह शिरो मणौ गोचर कथनं नाम त्रयोदशी प्रश्ना ॥ १३ ॥ अथ  
 संस्कार प्रकरणम् ॥ अथ संस्कार प्रकरणे छाक्षे लो दर्शनम् ॥ वैश्वदेवे फाल्गुन्ये माघे मार्गश्रैष्ठ्ये  
 वषाश्विने ॥ पक्षे शुक्ले शुभाहेच साहि जग्रे तथा दिवा ॥ १ ॥ श्रुति त्रयेऽनुपधायां रेवती  
 द्वितये मृगे ॥ तस्मिन् त्रये च रोहिण्या पुष्य मे चोत्तरासुच ॥ २ ॥ सितवस्त्रे शुभं स्त्रीणां  
 प्रथमं ऋतु दर्शनम् ॥ मध्य ज्येष्ठे पुनर्वसो मूले चान्यत्र निवितः ॥ ३ ॥ अष्टम्यां च ॥

दृश्ये कृत्स्ने ऋक्ता दर्शे ऽथ संक्रमे ॥ भद्रा निद्रा व्यतीपाते गह्वरो रुजि वैधृती ॥४॥ पर  
 १४ लानु गृहं संध्या कुदेशे कृत्स्न वाससि ॥ प्रायजो वर्धनि नष्टं श्रुत्या तु शुभदं भवेत् ॥५॥  
 प्रागुक्ता विलयं याति रत्नो दर्शनं संभवाः ॥ सर्वे देशालु सङ्गमे स्तिज्य युत वीक्षिते  
 ॥ ६ ॥ अथ ऋगुक्ता लानम् ॥ पुनर्वसु संध्या चित्रा ज्येष्ठा पुष्या भिधे युच ॥ स्वावा दतु मती  
 नारी शुभे वारे शुभे तिथौ ॥७॥ रोहिणी हितये स्वातो हस्ते वैरेवती द्वये ॥ लानानु सुवती ग-  
 र्भं विधत्ते शीघ्र मे वहि ॥ ८ ॥ अथ गर्भा धानम् ॥ जन्मार्क्षं स्मरणी मूलं नष्टं पुं रेवती मघां ॥  
 पूर्वार्हं च व्यतीपातं वैधृतिं परिघाद्वकम् ॥ पित्रो भ्रातृ द्विनं संध्या दिवा बह्वी च पर्वच ॥  
 आर्तं वाह चतुष्कं च विष्टी ऋक्ता र्कं संक्रमान् ॥ १० ॥ तथैव क्रूर वारं भ्रगर्भा धाने विव-  
 र्जयेत् ॥ स्वातो हस्ते ऽनुएधायां रोहिण्यां अवरा त्रये ॥ ११ ॥ अतरे मृग शीर्षे च शुभा  
 हे शुभ ग्रशिषु ॥ गर्भा धानं प्रशस्तं स्यात् चंद्रे शस्ते पुमांसके ॥ १२ ॥ कारिकायाम् ॥ पुन  
 क्षत्राणि चैतानि तिष्ठो हस्त पुनर्वसू ॥ अभिजिष्योष्ट या चैव अनुराधा भिष्युक् नद्या ॥ १३ ॥

१३ ॥ केन्द्र कोण स्थिते सौम्ये पापेच त्रिविधायगे ॥ पुं लग्ने पुनर्वाशे च तथा पुं ग्रह वी-  
 क्षिते ॥ १४ ॥ चित्रा पुनर्वसू पुष्य मघ्निभं मध्य मंस्तुतम् ॥ नियेके शेष चिह्नानि संत्या-  
 ज्या न्य शुभानि च ॥ १५ ॥ अथ जन्म मंसीमंते निर्दिष्टं ॥ वशिष्ठः ॥ बालान्न भुक्तो व्रत बंधने च  
 राजा भियेके खलु जन्म धिलम् ॥ शुभं त्व निष्ट सततं विवाह सीमंत यात्रा दिष्टु मंगलेषु ॥  
 १६ ॥ मास त्रपुक्त कार्थ्येषु सूदत्वं गुरु सुक्रयोः ॥ न शेष कुम्भले मासे गुर्वीहि त्यादिकं त-  
 या ॥ १७ ॥ अथ पुंस वन सीमंतोन्नयने ॥ द्वितीये वा मासि पुंस वनं स्मृतम् ॥ मासे  
 षष्ठे ऽष्टमे वापि गर्भ सीमंतं कं विदुः ॥ १८ ॥ पुनर्वसू द्वये मूले अवगणे दृग हस्तयोः ॥  
 गुरु भौमार्कं चारिषु प्रोक्षेत् पुंस वनादिकम् ॥ १९ ॥ रेवत्या अतरे ऽप्ये के मृक्ने चंद्रे बुधे  
 जगुः ॥ मासे श्रे सवले चंद्रे लग्ने पुंसां सके शुभे ॥ २० ॥ सौम्ये ऽर्केन्दु त्रिकोण स्थे पा-  
 ने लाभे त्रिविधं कं ॥ अथ मासे ष्वरे ॥ मासे ष्वरा भृगु भौम गुरु सूर्ये नु सूर्यजाः ॥ बुधो-  
 लग्न पतिश्चन्द्रः सूर्यश्चैते यथा क्रमम् ॥ २१ ॥ अथ संस्कारे विशेषः ॥ विवाहे गर्भ संस्कार ॥ २२ ॥

३२३ ॥ अत्रि स्त्रियाऽपि ॥ भूषां वरादि कार्येषु भर्तुरेवैदवंचलम् ॥ २२ ॥ गर्भधा-  
 नादि संस्कारे तथा न्न प्राशने शिशोः ॥ न तत्र गुरु शुक्रा स्तमन् प्रासादि दूयणम् ॥  
 २३ ॥ अथ विलुप्रा ॥ सीमंतोद्धृति पक्षे रोहिण्यां अवरो तथा ॥ द्वादशे सप्तमे घले  
 ह्यर्च्यर्चा गर्भपुष्टये ॥ २४ ॥ अथ सति का ग्रह प्रवेशः ॥ अग्नि त्रयोत्तरा हस्त त्रये पुष्या नु  
 रथयोः ॥ पुनर्भे रोहिणी युग्मे रेवती द्वितये तथा ॥ २५ ॥ शुभाहे प्रश बोधुक्ता सूति  
 कां मंदिरं विशेषत् ॥ अथ जात कर्म ॥ जात कर्म क्रियां कुर्यात्पुत्रायुः श्री विदुदये ॥ च-  
 हदोप विनाशाय सूत का शुभ विच्छिदे ॥ २६ ॥ कुमार ग्रह नाशाय पुंसां सत्ववि-  
 दुदये ॥ एकादशे न्हि विप्राणा क्षत्रियाणां त्रयोदशे ॥ वैश्यानां योदशे नाम म्मासा  
 मूढ जन्मनः ॥ २७ ॥ चैत्रादि मास नागानि वैकुंठे ऽथ जनार्दनः ॥ उपेन्द्रो य-  
 ज्ञ प्ररुयो वासुदेव स्त्रि विक्रमः ॥ २८ ॥ योगीशः पुंडरी काक्षः कृत्स्नो नंतो ऽच्युत-  
 सया ॥ चक्र धारीति चैतानि क्रमादाहुर्मनीषिणः ॥ २९ ॥ मार्ग शीर्षे विप्राणा

क्षीपोये लक्ष्मीश्च देवता ॥ माघेनुरुविमर्णी प्रोक्ता फाल्गुने धात्रिर्नामिका ॥ ३० ॥  
 चैत्रे मासिरमा देवी वैष्णवे मोहिनी तथा ॥ पद्माक्षी ज्येष्ठ मासे तु ग्राधाह कमलेति  
 च ॥ ३१ ॥ कंति मती श्रावणे च भाद्रे तु अपराजिता ॥ पद्मावती आश्विने तु राधा देवी  
 तु कार्तिके ॥ ३२ ॥ मित्रा दिल्य मघोत्तराश्वतं भिषक् स्वाती धनिष्ठा च्युत प्राजे प्राश्चि  
 प्रांक पौल्ल दिन कृत्युध्ये नुराश्रेणु स्थिरे ॥ छिद्रं पंचदशी विहाय नवमी पुष्टे ५  
 द्यमे भागवि ज्ञाचार्या मृत पाद भाग दिवसे नामानि कुर्युः शिश्रश्शोः ॥ ३३ ॥ अ-  
 मा संक्राति विष्ट्यानु प्राप्त कालेऽपि नाचरेत् ॥ शर्मांतं ब्राह्मणं स्याद्वर्मांतं क्षत्रियस्य  
 शु वैश्यस्य धन संयुक्तं शूद्रस्य प्रेक्ष्य संयुतम् ॥ ३४ ॥ मासं नामं गुरोर्नाम दद्याद्बालस्य  
 वै पिता ॥ देवालय गजाश्वानां वस्त्राणां वापि कूपयोः ३५ सर्वा पराणानां पराणानां चि-  
 न्तार्थं यो धितो नृणां ॥ ३६ ॥ काव्यानाञ्च केवीनाञ्च पष्पादीनां च सर्वसिः ॥ राज-  
 प्रसाद वस्तूनां नाम कर्म विधिष्यते ॥ ३७ ॥ तदक्षरादिकं नाम यस्मिन् स्थिते दद-

क्षरम् ॥ ये श्रीकृष्ण उ. अणा चरुणा मादौ संति ते नहि ॥ नेतुर्वन्ति तदा द्वाया भजडास्ते  
 यथा क्रमम् ॥ ३८ ॥ अष्टजननसमयेदुष्टकालः ॥ तत्रादावभुक्तमूलम् ॥ जेखांत्ये घटिका युरमं  
 मूलादौ घटिका द्वयम् ॥ अयुक्तमूलमेव तस्यादित्येवं नारदो ब्रवीत् ॥ ४२ ॥ वशिष्ठोक्तं त-  
 योरित्याद्ययोरेक द्विनादिकम् ॥ अंगिरा घटिका मेका अन्ये पंचाष्ट तत्रसु ॥ ४३ ॥ जानं  
 शिशुं त्यजेन्नानो नयश्ये दष्ट द्वायनम् ॥ अथ मूलजनने पादफलम् ॥ आद्ये पिता नाश्रमुयेति  
 मूल पादे द्वितीये जननी तृतीये ॥ धनं चतुर्थेऽस्य शुभोऽथ श्रुत्या सर्वत्र सत्स्यादहि मे  
 विलोमम् ॥ ४४ ॥ दिवा जातस्तु पितरं रात्रौ तु जननीं तथा ॥ शात्मानं संध्यौ हीति नास्ति  
 गंडो निरास्यः ॥ ४५ ॥ मूलादि पादो यदि रात्रि भागे तदात्मनो नास्ति पितुर्विनाशम्  
 ॥ द्वितीय पादो दिन गो यदि स्यान्न मातुरत्योऽपि नदास्ति दोषः ॥ ४६ ॥ माघा पादा-  
 ष्विने भाद्र पदमूलं वशेद्वि ॥ कार्तिके प्रावरो चैते पौषे मासे तु भूतले ॥ ४७ ॥ वैशाख  
 रवे फाल्गुणे ज्येष्ठे मार्गे पाताल वर्जितम् ॥ भूतले वर्तमाने तत् द्वायो दोषोऽन्यथानहि



४८॥ अथ मूलवृक्षम् ॥ मूलं स्तंभं त्वचा शरत्वा पत्रं पुष्पं फलं शिखा ॥ मुनयोऽद्यो दिशो  
 रुद्रा सूर्याः पंचाध्ययोऽरनयः ॥ ४९ ॥ मूले तु मूलनाशः स्यात् स्तंभे वंश विनाशनम्  
 ॥ त्वचि मातुर्भवे क्लेशः शरत्वायां मातुलस्य च ॥ ५० ॥ पत्रे राज्यं विजानीया त्र्युख्ये मं-  
 त्रि पदं स्मृतम् ॥ फले च विपुला लक्ष्मीः शिखाया मल्यजीवितम् ॥ ५१ ॥ मूलस्य घटि  
 का न्यासो मूर्द्धि पंच नृपो भवेत् ॥ मुखे सप्त मृतिः पित्रोः स्तंभे वेदा महाबलः ॥ ५२ ॥ वा  
 क्यो रथो बली पाण्यो त्तिस्त्रो हत्यान्वितो भवेत् ॥ हृदि खेदा भूप मंत्री नाभौ ह्यौ ब्रह्म वि  
 द्भवेत् ॥ ५३ ॥ मुखे दृशति कामी स्याज्जानुनोः वरम हा मतिः ॥ पादयोः षट् मृतिस्त  
 स्य प्रोक्त वांक् कमलाशनः ॥ ५४ ॥ अथ कन्या जनने गविभागः ॥ चतस्रो नाडिकाः शीर्षे कु-  
 र्वीन्ति पशुनाशनम् ॥ मुखे षड्धन हानिः स्यात्कंठे पंच धना गमः ॥ ५५ ॥ कौटिल्यं हृद  
 ये पंच बाह्वो विंशति गमं नतः ॥ वेदाः पाण्यो र्दया धर्मं वेदा गुह्येति कामिनी ॥ ५६ ॥ ज्येष्ठ  
 रानुल नाशश्च जंघयो र्युग नाडिका ॥ ज्येष्ठ भात विनाशश्च चतस्रो जानु युग्मके

५७ ॥ पादयोर्दंष्ट्रा नाड्यश्च तत्र वैधव्यमादिशेत् ॥ दाते मूलप्रसूतायाः मुनिभिः फल  
 मीरितम् ॥ ५८ ॥ अथाश्लेषाफलम् पुत्रकन्ययोः ॥ मूर्द्धि पंचसु राज्यानि भुले सप्त पितृस्यः  
 ॥ नेत्रे द्वे जननी नाशे ग्रीवायां स्त्रीबुलंपटः ॥ ५९ ॥ स्कंधे वेदा गुरो भक्तिः हस्तेऽष्टौ च व-  
 ली भवेत् ॥ हृदये कादृश भिष्यात्मघाती संजायते नरः ॥ ६० ॥ स्त्रीवाग्नाभौ म्रमः ष-  
 ङ्गि गुरे न वतयो धनः ॥ पादे पंच धनं हंति साय्या दैतफलं क्रमात् ॥ ६१ ॥ अथाश्लेषा-  
 वृक्षः ॥ फलं पुष्यं दूलं प्रांत्वा त्वंगलता स्कंध एव च ॥ सार्धं वल्यां दृष्ट्वा क्षांक स्व रविश्चा-  
 र्क सागरः ॥ ६२ ॥ नाडिका तद्भवे वाले फलं ज्ञेयं यथा क्रमम् ॥ श्रीः श्री राजभयं हा-  
 नि र्मातृ पित्रात्म संक्षयः ॥ ६३ ॥ अथ ज्येष्ठापादफलम् ॥ आद्ये पादेऽग्रजं हंति ज्येष्ठा  
 या मनुवं द्विके ॥ तृतीये जननीं हंति स्वात्मानं च तुरीयके ॥ ६४ ॥ पुनः ज्येष्ठा द्वे  
 जननी माता द्वितीये जननी पिता ॥ तृतीये जननीं भ्राता स्वयं माना चतुर्थके ॥ ६५  
 ॥ अत्मानं पंचमे हंति षष्ठे गोत्र क्षयो भवेत् ॥ सप्तमे चोभयं कुलं ज्येष्ठ भ्रातरं अष्ट

मे ॥ ६६ ॥ नवमे स्वसुरं हन्ति सर्वं हन्ति दशं शकः ॥ निर्ऋत्यभोद्भूतं सुतं सुता वाल्मि-  
 प्रादवश्य स्वसुरं निहन्ति ॥ तदं त्यपादे जनितो निहन्ति तस्योल्भमेणाहि भवेत्कलत्रम् ॥  
 ॥ ६७ ॥ सुरेयता राजनिता धवाग्रजं द्विदैवतं राजनिता च देवरम् ॥ पुंस्त्वर्क्षे जनि-  
 तः सुतस्तथा स्वस्याग्रजं हन्ती न पुत्रिका यदि ॥ ६८ ॥ मूलजा स्वसुरं हन्ति व्याल-  
 जा च तदंगजाम् ॥ माहेन्द्रजाग्रजं हन्ति देवरं तु द्विदैवजा ॥ ६९ ॥ धवाग्रजं हन्ति  
 सुरेन्द्रजाता तथैव पत्न्या भगिनी पुमांश्च ॥ द्विदैवजा देवरमाशु हन्याद्धार्यो नृजामाशु  
 निहन्ति स्नुः ॥ ७० ॥ पत्न्यग्रजामग्रजं चाहन्ति ज्येष्ठा स्तः पुमान् ॥ तथा भार्य्या स्वसा-  
 रं वाश्यालकं वा द्विदैवजः ॥ ७१ ॥ कन्यका देवरं हन्ति विशाखां त्यसमुद्रवा ॥ आ-  
 चपादत्रये नैव आद्यमेतु पुमान् भवेत् ॥ ७२ ॥ न हन्या देवरं कन्या तुला मिश्रं द्विदै-  
 वजा ॥ तदृक्षां नोद्भवा वज्र्या दुष्टा वृश्चिक पुच्छवत् ॥ ७३ ॥ चित्राद्यर्द्धे पुष्यमध्ये  
 द्विपादे पूर्वाषाढा धिष्ण पादे तृतीये ॥ जातः पुत्रश्चोत्तरार्द्धे विधत्ते माता पित्रोऽर्थतरं

५७ ॥ पादयोर्दंष्ट्रा नाह्यश्च तत्र वैधव्यमादिशेत् ॥ इति मूलप्रसूतायाः मुनिभिः फल  
 मीरितम् ॥ ५८ ॥ अथाश्लेषाफलम् पुत्रकन्ययोः ॥ मूर्द्धि पंचसु राज्याणि मुखे सप्त पितृस्यः  
 ॥ नेत्रे द्वे जननी नाशे ग्रीवायां स्त्रीयुलंपटः ॥ ५९ ॥ स्कंधे वेदा गुरो भक्तिः हस्तेऽष्टौ चक-  
 री भवेत् ॥ हृदये कादृशमिश्रत्मा घाती संजायते नरः ॥ ६० ॥ स्त्रीवात्राभौ भ्रमः व-  
 द्भिर्गुह्येन वतयो धनः ॥ पादे पंचधनं हंति साय्या देतुफलं क्रमात् ॥ ६१ ॥ अथाश्लेषा  
 वृक्षः ॥ फलं पुष्पं दलं प्रणखं त्वलता स्कंध एव च ॥ साय्यं वल्यां दृष्ट्वा क्षांक स्वस्तिष्वा-  
 र्कसागरः ॥ ६२ ॥ नाडिका स्रग्ध्रवे वाले फलं ज्ञेयं यथा क्रमम् ॥ श्रीः श्रीराजभयं हा-  
 निस्मां तपित्रात्म संक्षयः ॥ ६३ ॥ अथ ज्येष्ठापादफलम् ॥ आद्ये पादेऽग्रजं हंति ज्येष्ठा  
 यामनुनं द्विके ॥ तृतीये जननीं हंति स्वात्मानं च तुरिके ॥ ६४ ॥ पुनः ज्येष्ठा द्वे  
 जननी माता द्वितीये जननी पिता ॥ तृतीये जननी आता स्वयं माना चतुर्थके ॥ ६५  
 ॥ अत्मानं पंचमे हंति षष्ठे गोत्र क्षयो भवेत् ॥ सप्तमे चोभयं कुलं ज्येष्ठ आतरमष्ट

मे ॥ ६६ ॥ नवमे स्वसुरं हन्ति सर्वं हन्ति दशं शकः ॥ निऋत्यभीद्रुत सुत सुता वाहि  
 प्रादवश्य स्वसुरं नि हन्ति ॥ तदं त्यपादे जनिनो निहन्ति तस्योत्क्रमेणाहि भवेत्कलत्रम्  
 ॥ ६७ ॥ सुरेयता राजनिता धवा गजं द्विदैवता राजनिता च देवरम् ॥ पुरं हर्षे जनि-  
 तः सुत सप्ता स्वस्या गजं हन्ती न पुत्रिका यदि ॥ ६८ ॥ मूल जा स्वसुरं हन्ति व्याल  
 जा च तदं गजाम् ॥ माहेन्द्र जा गजं हन्ति देवरं तु द्विदैव जा ॥ ६९ ॥ धवा गजं हन्ति  
 सुरेन्द्र जाता तथैव पत्न्या भगीनी पुमांश्च ॥ द्विदैव जा देवर माशु हंन्या द्वाय्या नृजामाशु  
 निहन्ति स्तुः ॥ ७० ॥ पत्न्य गजाम गजं वाहन्ति ज्येष्ठा स्तुः पुमान् ॥ तथा माय्या स्वसा  
 रं वा प्रयाल कं वा द्विदैव जः ॥ ७१ ॥ कन्यका देवरं हन्ति विशाखां त्य समुद्रवा ॥ आ  
 द्य पाद त्रये नैव श्लाघ्य भेतु पुमान् भवेत् ॥ ७२ ॥ नह्न्या देवरं कंन्या तुता मिश्र द्विदै  
 व जा ॥ तदृक्षां तो इवा च ज्यारुष्टा वृश्चिक पुच्छवत् ॥ ७३ ॥ चित्राद्यर्द्धे पुष्य मध्ये  
 द्विपादे पूर्वाषाढा धिल पादे तृतीये ॥ जातः पुत्र प्रसोत्तर्ह्य विधत्ते माता पित्रोर्भ्रातरं ॥ ७४ ॥

बालनाशम् ॥ ७४ ॥ द्विमासं चोत्तरा दोषः पुण्ये चैव त्रिमासिकः ॥ पूर्वा पादाद्युमे  
 मासि चित्रा पारमासिकं फलम् ॥ ७५ ॥ नवमासं तथा श्लेषा मूले चाष्टकवर्षकं  
 ॥ ज्येष्ठा पंचदशे मासि वर्जितम्युत्र दर्शनम् ॥ ७६ ॥ व्यती पातें गहानि स्यात्परि  
 धे मृत्युमादिशेत् ॥ वैधृती पितृहानि स्यान्मृच्छेन्दा वंधतां व्रजेत् ॥ ७७ ॥ मूले  
 समूलनाशस्यात्कुलनाशो धृतौ भवेत् ॥ विकृतांगे च हीने च संध्ययो रुभयो  
 रपि ॥ ७८ ॥ पर्वण्यपि प्रसूतौ च सर्वा रिष्टभयप्रदः ॥ तद्वत्सदन्तजातश्च पाद  
 जा तस्तथैव च ॥ ७९ ॥ तस्माच्छांतिं प्रकुर्वीत गृह्णाणं क्रूरचेतसाम् ॥ पूर्णानिन्द  
 रव्ययो स्तिथ्यो स्संधिर्नाडी द्वयं तथा ॥ ८० ॥ गंडांतं मृत्युदंजन्म यात्रो द्वाद्व्रजना  
 दिषु ॥ कुलीरसिंहयोः कीटचापयोर्मीनमेषयोः ॥ ८१ ॥ गंडांतमंतरालं स्याद्द्व  
 टिकार्द्धमिति प्रदम् ॥ तिथिगंडम् ॥ कृत्वा चतुर्दशी षोढा कुर्व्यादादौ शुभं स्मृतम् ॥ द्वि  
 तीये पितरं हन्ति तृतीये हानिमातरं ॥ ८२ ॥ चतुर्थे मातुलं हन्ति पंचमेवंशनाशनं ॥

षष्ठे च धन नाशः स्यादात्मनो वंश नाशनम् ॥ ८३ ॥ अथैते यासानं ॥ तिथि गंडे च नष्टा हं नक्ष  
 त्रे धेनु रुच्यते ॥ कांचनं लग्न गंडे तु गंड दोषी विनश्यति ॥ ८४ ॥ उत्तरे तिल पात्रं स्यात्सु  
 खे गोदानं सुच्यते ॥ अजा प्रदानं त्वाक्त्रे स्यान्मूर्वा पाटे तु कांचनम् ॥ ८५ ॥ उत्तरा तिथ्य  
 चित्रासु पूर्वाषाढोद्भवस्य च ॥ कुर्व्याच्छंतिं प्रयत्नेन नक्षत्राकारजां पुनः ॥ ८६ ॥ य-  
 द्ये कस्मिन् धिले जायंते दुहितरोऽथवा पुत्राः ॥ पितु रंत करह्ये ते यद्यपरे श्रीतिरनुला  
 स्यात् ॥ ८७ ॥ एकस्मिन्नेव नक्षत्रे भ्रात्रोर्वापित पुत्रयोः ॥ प्रसूतिश्च तयोर्मृत्युर्भवे-  
 देकस्य निश्चितम् ॥ ८८ ॥ ग्रहणे चंद्र सूर्यस्य प्रसूतिर्यदि जायते ॥ व्याधिः पीडा तथा  
 स्त्रीणां आदौ तु ऋतु दर्शनात् ॥ ८९ ॥ अकाल प्रसवानार्यः कालातीत प्रजास्तथा ॥  
 विरक्त प्रसवा ऋव युग्म प्रशवकास्तथा ॥ ९० ॥ समानुयायं मुंडाश्च अजातव्यं जना  
 स्तथा ॥ हीनांगा अधि कोणाश्च जायंते यदि वास्त्रियः ॥ ९१ ॥ पशवः पक्षिणाश्चैव तथै-  
 व च शरीरस्थाः ॥ विनाशस्तस्य देशस्य कुलस्य च विनिर्दिशेत् ॥ ९२ ॥ निर्वर्त्तयेनां ॥ २३३

नगरात्ततः प्रशान्तिं समाचरेत् ॥ अथ निकटोपः ॥ सुतत्रये सुता चै तस्यात्तत्रये वासुतो  
 यदि ॥ माता पित्रोः कुलस्यापि तत्पानिष्ठं महद्भवेत् ॥ ८३ ॥ एते द्रष्टव्याः ॥ गङ्गांतः प-  
 रिधः प्रल्लं व्यतीपातोऽथ वैद्यगतिः ॥ मूला श्लेयाथ्यं नाज्ये खा जंम पंतीऽर्कं संक्रम-  
 म् ॥ ८४ ॥ गंडुयोगो मृति भद्रा व्याघातो हग्ध वासराः ॥ कृष्णा चतुर्दशी पात स्त-  
 तस्सोदरजन्म भम् ॥ ८५ ॥ तथाव मद्दिनं नैष्ठं जन्म काले शिशोः श्लेयः ॥ तद्दोष-  
 परिहाराय श्रान्तिं कुर्व्याद्यथा विधिः ॥ ८६ ॥ अथ जन्म समये द्वादश भाव फलम् अथ तनुस्था-  
 नस्य ॥ लग्न रियतो दिनकरः कुरुते गपीडां पृथ्वी सुतो वितनुते रुधिर प्रकीपं ॥ छाया सु-  
 तं प्रकुरुते वङ्ग दुःख भाजं जीवेन्नु भार्गव बुधाः सुख कांति दाः स्युः ॥ ८७ ॥ अथ  
 धन स्थानस्य ॥ दुःखा वहा धन विना शकरः प्रदिष्टा विन्ने स्थितारवि प्रनेश्वर भूमि पुत्राः  
 ॥ चंद्रे बुधः सुरगुरु भृगु नंदनो वानाना विधं धन चये कुरुते धनस्थः ॥ ८८ ॥ अथ सह-  
 ज स्थानस्य ॥ भानुः करोति विरुजं रजनी करोति कीर्त्या युतं क्षिति सुतः प्रचुर प्रकीपम् ॥ ८९ ॥



॥ अष्टदिं बुधः सुविनीतचेषं रत्नीणां प्रियं गुरु कवी रविजस्वतीये ॥ २६ ॥  
 अथ सुहृत्स्थानस्याद्यादित्य भौमः शनयः सुखवर्जितां गं कुर्वन्ति जन्मनि नरं सुचिरं चतु-  
 र्धं ॥ सोमो बुधः सुरगुरु र्भृगु मन्दनो वा सौख्या न्वितं च नृप कर्मरतं प्रधानम् ॥  
 ॥ २७ ॥ अथ सुतस्थानस्य ॥ पुत्रे रविः प्रचुर कोपयुतं बुधश्च स्वल्यात्मजं प्रनिधरा तनु-  
 जावपुत्रं ॥ सुक्रैस्तु देव गुरवः सुत धाम संस्थाः कुर्वन्ति पुत्र बहुलं सुखिनं सुरूपम्  
 ॥ १ ॥ अथ पितृस्थानस्य ॥ मातङ्ग भूमि तनुजौ हत प्रान्त्र पक्षं पंगु नरं रिपु गृहेऽपति पूज-  
 नीयं ॥ काव्यैस्तु जौ मति विहीन मनल्य रोगं जीवः करोति विकलं मरणं प्रशङ्कः ॥  
 ॥ २ ॥ अथ जायास्थानस्य ॥ तिग्मां प्रु भौम रविजाः किल सप्त मस्या जायां कु कस्मीनि  
 रतां तनु संत तिच ॥ जीवेन्तु भागवि बुधा बहु पुत्र युक्ता रूपा न्विता जन मनो हर रूप  
 प्रीला ॥ ३ ॥ अथ मृत्यु स्थानस्य ॥ सर्वे गृहा दिन कार प्रसुरा नि तातं मृत्यु स्थि ता  
 नि तनु ते किल दुष्ट बुद्धिम् ॥ शस्त्राभिघात परिपीडित गात्रयष्टिं सौख्ये विहीन ज-

ति रोग गणौ रूपे तम् ॥ ४ ॥ अथ धर्म स्थानस्य ॥ धर्म स्थिता रवि शनैश्चर भूमि पुत्राः कु-  
 र्वन्ति धर्म रहितं विव्रति कुशील ॥ चन्द्रो बुधो भृगु सुतः सुर राज मंत्री धर्म क्रिया  
 सुनितं कुरुते मनुष्यम् ॥ ५ ॥ अथ कर्म स्थानस्य ॥ आदित्य भौम शनयः किल क-  
 र्म संस्थाः कुर्वन् नरं बहु कर्म रतं कुपुत्रम् ॥ चंद्रः सुकीर्ति मुशना बहु विज्ञयुक्तं रू-  
 पान्वितं बुध गुरू शुभ कर्म भाजम् ॥ ६ ॥ अथ लाभ स्थानस्य ॥ लाभ स्थितौ दिन क-  
 रो नृप लाभ युक्तं नाग पति बहु धनं क्षितिजः क्षितीशम् ॥ सौम्यो विवेक सुभगं च ध-  
 नायुर्धन्यः सुक्रः करोति सगुणं रविजः सुकीर्तिम् ॥ ७ ॥ अथ व्यय स्थानस्य ॥ सूर्यः क-  
 रोति पुरुषं व्यय गो विशीलं कारणं शशी क्षिति सुतो बहु पाप भाजं ॥ चंद्रांग जोगत-  
 धनं धिषणः कृशांगं सुक्रो बहु व्यय करं रविजः सुतीव्रम् ॥ ८ ॥ राहु केतु फलं सर्वं म-  
 न्द वत्कथित म्बुधैः ॥ अथ मृत्यु योगः ॥ चंद्राष्ट मं च धरणी सुत सप्त मं च राहु नवं च शनि  
 जन्म गुरु स्ततीये ॥ अर्कस्तु पंच भृगु षष्ठ बुधश्च तुर्ये जातो न जीवति नरः प्रव दन्ति सं- १३६

तः ॥ ८ ॥ अथ स्त्रीहंतायोगः ॥ षष्ठे च भवने भौमो राहुः सप्तम संभवः ॥ अष्टमे च यदा  
 सौरि स्तस्य भार्या न जीवति ॥ १० ॥ अथ पराक्रमयोगः ॥ मूर्त्तो शुक्रं बुधो यस्य केन्द्रे  
 चैव बृहस्पतिः ॥ दशमो गार्को यस्य स ज्ञेयः कुल दीपकः ॥ ११ ॥ अथ दुर्बलयोगः ॥  
 नैव शुक्रो बुधो नैव नास्ति केन्द्रे बृहस्पतिः ॥ दशमो गार्को नैव स जातः किं करि-  
 व्यति ॥ १२ ॥ अथ जातिचंशकारकयोगः ॥ धन स्थाने यदा सौरिः सैहिके चो धरात्मजः ॥ शु-  
 क्रो गुरुः सप्तमे च त्वष्ट सौरि चन्द्रको ॥ १३ ॥ ब्रह्म पुत्र पदे वापि वेण्यासु च सदा रतिः ॥  
 प्राप्ते विंशति मे वर्षे म्लेच्छो भवति नान्यथा ॥ १४ ॥ अथ मातृपितृनाशकयोगः ॥ षष्ठे च  
 द्वादशे राशौ यदा पाप ग्रहो भवेत् ॥ तदा मातृ भयं विद्या चतुर्थे दशमे पितुः ॥ १५ ॥ अ-  
 थ मृत्युकारकयोगः ॥ अर्को राहुः कुजः सौरि लभे तिष्ठति पंचमे ॥ पितरं मातरं हंति आतरं  
 स्वं शिशुक्रमात् ॥ १६ ॥ लग्न स्थाने यदा सौरिः षष्ठे भवति चंद्रमाः ॥ कुजस्तु सप्तमे  
 स्थाने पिता तस्य न जीवति ॥ १७ ॥ पातालस्थो यदा राहुः श्वेतुः षष्ठाष्ट मे पिच ॥ पाप

॥ ३० ॥ गुरुः कर्कच नत्रेच मीन कन्ये रसितस्य च ॥ मंदस्तुलायां मेवेच कन्या राहु ग्रह  
स्य च ॥ ३८ ॥ राहु र्युग्मे तु चापेच तमो वंत्के तु जं फलम् ॥ प्रोक्तं गृहाणा मुच्चत्व नी  
चत्वं च क्रमाहुर्धैः ॥ ३९ ॥ अथ जन्मलग्न फलम् ॥ मेवे दैन्य मुयैति गर्वित द्येव ना नामति  
र्मन्मथे शूरः कर्कट के धृतीच वन पे कन्या च साया न्विता ॥ सत्यं चैव तुलैत्व लो मलि

अथ ग्रहाणा मुच्चत्व नीच व्यवज्ञानार्थ चक्रम्

| गह   | सूर्य | चंद्र   | भौम  | बुध   | गुरु | शुक्र | शनि  | राहु  | केतु |
|------|-------|---------|------|-------|------|-------|------|-------|------|
| उच्च | मेघ   | उप      | मकर  | कन्या | कर्क | मीन   | तुला | मिथुन | तुला |
| नीच  | तुला  | वृश्चिक | कर्क | मीन   | मकर  | कन्या | मेघ  | भन    | मेघ  |

न ता पापा न्वितं वै धनुर्मुखं त्वं मकरे घटे  
च तुरता मीने त्व धीरा मतिः ॥ ३० ॥

अथ स्त्री जातकम् ॥ अथ तनु स्थानस्य ॥ मूला  
करोति विधवां दिन कल्कुजश्च राहु विन

ए तनयां रवि जो हरिद्रां ॥ शुक्रः शशांक तनयश्च गुरुश्च साध्वी मायुः स्यं च कुरुते  
त्रच सर्वरीशः ॥ ३१ ॥ अथ धन स्थानस्य ॥ कुर्वति भास्कर शनैश्च राहु भौमा दारि-  
द्रा दुःख मतुलं नियतं द्वितीये ॥ वित्ते श्वरी मविधवा गुरु शुक्र सौम्या नारी प्रसूत तनया

कुरुते शशाङ्कः ॥ ३३ ॥ अथ सहज स्थानस्य ॥ सूर्येन्दु भौम गुरु शुक्र बुधा रव्यतीये कुर्बुः  
 रित्रयं बहु सुतां धन भागिनीं च ॥ सत्यं दिवाकर् सुतः कुरुते धनाढ्या लक्ष्मी ददाति  
 नियतं किल सैहि कैयः ॥ ३४ ॥ अथ सुहृत्स्थानस्य ॥ स्वल्पं पयो भवति सूर्य सुते चतुर्थे दोर्भा  
 र्य मुषा किरणः कुरुते शशी च ॥ राहुर्विन्दु तनया क्षिति जो ल्यजीवां सौरव्या न्वितो  
 भृगु सूर्य्य बुधाश्च कुर्बुः ॥ ३५ ॥ अथ सुतस्थानस्य ॥ नद्यात्मजां रविकुजौ खलु पंचमस्था  
 चंद्रात्मजौ बहु सुतां गुरु भार्गवौ च ॥ राहुर्ददाति मरणं रविजस्तु रोगं कन्या प्रसूति नि  
 रतां कुरुते शशाङ्कः ॥ ३६ ॥ अथ रिपुस्थानस्य ॥ षष्ठ स्थिताः शनि दिवाकर् राहु भौम जी-  
 वास्तथा बहु सुतां धन भागिनीं च ॥ चंद्रः करोति विधवा मुग्धना हरिद्रं वेण्यां शशाङ्क  
 तनयः कलह प्रियां च ॥ ३७ ॥ अथ जायास्थानस्य ॥ सौराजीव बुध राहु रवीन्दु शुक्रा द्युः  
 प्रसह्य मरणं खलु सप्त मस्थाः ॥ वैधव्य वंधन मयं क्षय वित्तभाश व्याधि प्रवास मरण  
 नियतं क्रमेण ॥ ३८ ॥ अथ मृत्युस्थानस्य ॥ स्थानेष्टमे गुरु बुधौ नयते वियोगं मृत्युं

भृगु सुतश्च तथैव राहुः ॥ सूर्यः करोति विधवां धनिनी कुजश्च सूर्यात्मजो बहु सुताप  
 ति वल्लभां च ॥ ३९ ॥ अथ धर्मस्थानस्य ॥ धर्मस्थिता भृगु दिवा कर् भूमि पुत्र जीवाः सु-  
 धर्म निरतां शशिश्रजः सुभोगां ॥ राहुश्च सूर्य तनयश्च करोति वंध्यां नारी प्रसूत तनया-  
 कुरुते शशशंकः ॥ ४० ॥ अथ कर्मस्थानस्य ॥ राहुर्नेमस्य लगतो विधवां करोति पापे परं  
 दिनकरश्च शरनैश्चरश्च ॥ मृत्युं कुजो र्थ रहितां कुटिलां च चंद्रः शेषाग्रहा धनवती बहु  
 वल्लभां च ॥ ४१ ॥ अथ आयुस्थानस्य ॥ ज्ञाये रवि बहु सुतां धनिनी शशशंकः पुत्रान्वितां हि  
 तिसुतो रविजो धनाढ्यां ॥ आयुर्मती सुरगुरु भृगुजः सुपुत्री राहुः करोति सुभगां सुखि-  
 नी बुधश्च ॥ ४२ ॥ अथ व्ययस्थानस्य ॥ अंत्ये धन व्ययवती दिन रुद्र रिद्रं वंध्यां कुजः प  
 ररतां कुटिलां च राहुः ॥ साध्वी सितेज्य शशिश्रजा बहु पुत्र पौत्र युक्ता विधुः प्रकुरुते व्यय  
 गोदिनां धां ॥ ४३ ॥ अथ अष्टोत्तरी दशाक्रमम् ॥ आर्द्रा पुनर्वसुः पुष्य ज्येष्ठेष्वा नुरवेदशा ॥  
 मघा पूर्वोत्तरा चैव चंद्रस्य च दशा तथा ॥ ४४ ॥ हस्तो विशाखा चित्रा च स्वाती भौम दशास्तु ॥ ४५ ॥

ता ॥ ज्येष्ठा नुराधा मूले च सौम्यस्य च दशा बुधैः ॥ ४५ ॥ अभिजिच्छ्वराः पूषा ऊषा  
 चैव शनेर्दशा ॥ धनिष्ठा शत तारां च पूर्वा भाद्र पदा गुरोः ॥ ४६ ॥ उभा पूषा ध्विनी का  
 ल राहो ष्वैव दशा स्मृता ॥ कृत्तिका रोहिणी चोक्ता मृगः शुक्र दशा बुधैः ४७ एषा भानांक्ष  
 मैरीचि ज्ञेयाः सूर्यादि का दशाः ॥ क्रूरजा अश्लभा भोक्ता पुभास्या त्सौम्य खेतजा ॥ ४८  
 ॥ अथ महा दशा वर्ष संख्या ॥ सूर्यस्य षड्वर्षाणि इंद्रोः पंच दशैव च ॥ भौमस्य वसुवर्षाणि  
 अग्नि चंद्र बुधस्य च ॥ ४९ ॥ मंदस्य दश वर्षाणि गुरो ष्वै को न विंशतिः ॥ राहोर्द्वादशव  
 र्षाणि शुक्र स्यैको न विंशतिः ॥ ५० ॥ अथातर्दशा क्रमः ॥ महा दशा स्व स्व दशा वृ निष्ठा-  
 भक्ताः स्ववाहू शशिभिः समाद्याः ॥ अंतर्दशा स्युर्गगने च रागांतर्देक भावो हि महा  
 दशा स्यान् ॥ ५१ ॥ अथ विंशोत्तरी दशा क्रमम् ॥ नयनो न जनो भैमिक हृत् क्रमशो के लुङ्कु  
 जा गुरू रयः ॥ शनि चंद्रज केतु भार्गवाः परिशेषास्तु दशाधिपा स्ततः ॥ ५२ ॥ अस्तु  
 दिग्गिरयो धृति र्नुपाति धृतिर्मेघ ह्या नखाः समाः ॥ क्रमतो हिमता अथादिमा जग्नि

| चिन्तादिः पु. पु. स्त्रेयाः |      |     |     |     | चंद्रस्य मघा-पूर्वाफा उत्तराफा |       |      |     |     | भीमस्य हस्त चित्रा स्वाती विषाखा |      |       |      |     | मृगस्य अनुराधा ज्येष्ठा मूल |     |      |  |  |
|-----------------------------|------|-----|-----|-----|--------------------------------|-------|------|-----|-----|----------------------------------|------|-------|------|-----|-----------------------------|-----|------|--|--|
| गताः                        | वर्ष | मास | दिन | घटी | फल                             | ग्रह  | वर्ष | मास | दिन | घटी                              | फल   | ग्रह  | वर्ष | मास | दिन                         | घटी | फल   |  |  |
| मृग                         | ०    | ४   | १०  | ०   | अशुभ                           | चंद्र | २    | १   | ०   | ०                                | शुभ  | भौम   | ०    | ७   | ३                           | २०  | अशुभ |  |  |
| चंद्र                       | ०    | १०  | ०   | ०   | शुभ                            | भौम   | २    | १   | १०  | ०                                | अशुभ | बुध   | २    | ३   | ३                           | २०  | शुभ  |  |  |
| भौम                         | ०    | ५   | १०  | ०   | अशुभ                           | बुध   | २    | ४   | १०  | ०                                | शुभ  | शनि   | ०    | ८   | २६                          | ४०  | अशुभ |  |  |
| शनि                         | ०    | १२  | १०  | ०   | शुभ                            | शनि   | २    | ४   | २०  | ०                                | अशुभ | शुक्र | २    | ४   | २६                          | ४०  | शुभ  |  |  |
| गुरु                        | १    | ०   | २०  | ०   | अशुभ                           | गुरु  | २    | ७   | २०  | ०                                | शुभ  | गुरु  | ०    | १०  | २०                          | ०   | अशुभ |  |  |
| शुक्र                       | १    | ०   | २०  | ०   | शुभ                            | शुक्र | २    | ८   | ०   | ०                                | अशुभ | शुक्र | २    | ६   | २०                          | ०   | शुभ  |  |  |
| रवि                         | ०    | ०   | ०   | ०   | अशुभ                           | शुक्र | २    | ११  | ०   | ०                                | शुभ  | रवि   | ०    | ५   | १०                          | ०   | अशुभ |  |  |
| शुक्र                       | २    | २   | ०   | ०   | शुभ                            | रवि   | ०    | १०  | ०   | ०                                | अशुभ | चंद्र | २    | १   | १०                          | ०   | शुभ  |  |  |
| मंगल                        | ६    | ०   | ०   | ०   | ०                              | मंगल  | २५   | ०   | ०   | ०                                | ०    | मंगल  | ८    | ०   | ०                           | ०   | ०    |  |  |





मस्या घटिका समानताः ॥ ५२ ॥ भोगेन भक्ताः फलं भक्त्या कस्तूना दृष्टा सा भवे  
 द्वोग्य संज्ञा ॥ एष विंशोत्तरीक्रमकोष्ठकः ॥ छत्तिकादि क्रमेणैव क्षेत्रा विंशोत्तरी दृष्टा ॥ अंत  
 १४५

| सूर्यस्य मंदवर्षे दृष्टि क |      |     |      | चंद्रस्य मंदवर्षे रोहि |      |     |     | भोगस्य मंदवर्षे ७ मृगशिरा |      |     |     | शुक्र मंदवर्षे २०      |      |     |     | गुरोः मंदवर्षे मू   |      |     |     |
|----------------------------|------|-----|------|------------------------|------|-----|-----|---------------------------|------|-----|-----|------------------------|------|-----|-----|---------------------|------|-----|-----|
| मंदवर्षाः ४ या             |      |     |      | हस्त श्रवणा १०         |      |     |     | चित्रा धनिष्ठा            |      |     |     | आर्द्रा स्वाति प्रतभिष |      |     |     | पुनर्विशा पूर्वा भा |      |     |     |
| नाम                        | वर्ष | मास | दिवस | नाम                    | वर्ष | मास | दिन | नाम                       | वर्ष | मास | दिन | नाम                    | वर्ष | मास | दिन | नाम                 | वर्ष | मास | दिन |
| रवि                        | ०    | ३   | १८   | चंद्र                  | ०    | १०  | ०   | भोग                       | ०    | ४   | २७  | राहु                   | २    | ४   | १२  | गुरु                | २    | १   | १८  |
| चंद्र                      | ०    | ६   | ६    | भोग                    | ०    | ७   | ०   | राहु                      | १    | ०   | १८  | गुरु                   | २    | ४   | १४  | शनि                 | २    | ६   | १२  |
| भोग                        | ०    | ४   | ६    | राहु                   | १    | ६   | ०   | गुरु                      | ०    | ११  | ६   | शनि                    | २    | १०  | ६   | बुध                 | २    | ३   | ६   |
| राहु                       | ०    | १०  | १४   | गुरु                   | १    | ४   | ०   | शनि                       | १    | १   | ६   | बुध                    | २    | ६   | १८  | केतु                | ०    | ११  | ६   |
| गुरु                       | ०    | ६   | १८   | शनि                    | १    | ४   | ०   | बुध                       | ०    | ११  | २७  | केतु                   | १    | ०   | १८  | शुक्र               | २    | ८   | ०   |
| शनि                        | ०    | ११  | १२   | बुध                    | ०    | ५   | ०   | केतु                      | ०    | ४   | २७  | शुक्र                  | ३    | ०   | ०   | रवि                 | ०    | ८   | १८  |
| बुध                        | ०    | १०  | ६    | केतु                   | १    | ७   | ०   | शुक्र                     | १    | ६   | ०   | रवि                    | ०    | १०  | २४  | चंद्र               | १    | ४   | ०   |
| केतु                       | १    | ४   | ६    | शुक्र                  | १    | ८   | ०   | रवि                       | ०    | ४   | ६   | चंद्र                  | १    | ६   | ०   | भोग                 | ०    | ११  | ६   |
| शुक्र                      | १    | ०   | ०    | रवि                    | ०    | ६   | ०   | चंद्र                     | ०    | ७   | ०   | भोग                    | १    | १   | १८  | राहु                | २    | ४   | १४  |

॥ ५३ ॥ अथ रवि दशा फलम् ॥ दैवंगतं च निज वंश

॥ ५४ ॥ विद्योग दुःखं उद्देग रोग भय चौर भवा च पीडा ॥ पूर्वस्थितस्य निरिवल स्वपुनस्य नाशो-

भानो

दैशा

जनन

काल

दशा

भवंति

॥ ५४ ॥

॥ अथ

चद्रस्य

१४६

| प्रलेः गंदर्वर्धन १०० |      |    |     | बुधस्य गंदर्वर्धन १०० |      |    |     | किरीः गंदर्वर्धन १०० |      |    |     | सुकस्य गंदर्वर्धन १०० |      |    |     |
|-----------------------|------|----|-----|-----------------------|------|----|-----|----------------------|------|----|-----|-----------------------|------|----|-----|
| उतः भाष्यः भानुपथः    |      |    |     | ज्येष्ठा              |      |    |     | मूलः आश्विनी         |      |    |     | पूर्वाषाढा - भरणी     |      |    |     |
| नाम                   | वर्ष | गम | दिन | नाम                   | वर्ष | गम | दिन | नाम                  | वर्ष | गम | दिन | नाम                   | वर्ष | गम | दिन |
| शनि                   | ३    | ०  | ३   | बुध                   | २    | ४  | २०  | केव                  | ०    | ४  | २०  | शुक्र                 | ३    | ४  | ०   |
| बुध                   | २    | ०  | २   | केव                   | ०    | ११ | २०  | शुक्र                | २    | २  | ०   | बुध                   | २    | ०  | ०   |
| केव                   | २    | २  | २   | शुक्र                 | २    | २० | ०   | एष                   | ०    | ४  | २   | चंद्र                 | २    | ०  | ०   |
| शुक्र                 | ३    | २  | ०   | गुरु                  | ०    | १० | २   | चंद्र                | ०    | १० | ०   | भौम                   | २    | २  | ०   |
| गुरु                  | ०    | १० | १२  | चंद्र                 | २    | ४  | ०   | भौम                  | ०    | ४  | २०  | राहु                  | ३    | ०  | ०   |
| भौम                   | २    | ०  | ०   | भौम                   | ०    | ११ | २०  | राहु                 | २    | ०  | १०  | गुरु                  | २    | ०  | ०   |
| राहु                  | २    | ०  | ०   | राहु                  | २    | ४  | २   | गुरु                 | ०    | ११ | २   | शनि                   | ३    | २  | ०   |
| शनि                   | २    | ०  | ०   | गुरु                  | २    | ४  | २   | शनि                  | २    | १  | २   | बुध                   | २    | २  | ०   |
| चंद्र                 | २    | ०  | ०   | शनि                   | २    | ४  | २   | बुध                  | ०    | ११ | २   | केव                   | २    | २  | ०   |

भूतर्दशा फलम् ॥ हेमादि भूति वरवाहन यान लाभः शत्रु प्रताप वल हृदि परं परात् ॥ वृष्टा  
 न्मदान शयना सन भोजनानि नूनं सदा शशिश दशा गमने भवन्ति ॥ ४५ ॥ अथ भोगस्य  
 अंतर्दशा फलम् ॥ भूपाल चौरभय बन्धि कृता च पीडा सर्वाङ्गि रोग भय दुःख सुदुःखि  
 ता च ॥ चिंता ज्वरश्च बहु कष्ट दरिद्र युक्तस्तथा त्सर्वदा कुज दशा जनने भवन्ति ॥ ४६ ॥  
 अथ राहोः अंतर्दशा फलम् ॥ दीनो नरो भवति बुद्धि विहीन चिंता सर्वाङ्गि रोग भय दुःख सुदुःखि  
 ता च ॥ पापानि बंधु बहु कष्ट दरिद्र युक्तं राहो दशा जनन काल दशा भवन्ति ॥ ४७ ॥  
 अथ गुरोः अंतर्दशा फलम् ॥ राज्याधिकार परी वर्धति चित्त दक्षिं धर्माधिकार परी पालन  
 सिद्ध वृद्धिं ॥ सहि गृहेऽपि धन धान्या समृद्धि ता च स्याद्विवाता गुरु दशा गमने भवन्ति ॥  
 ४८ ॥ अथ ग्रनेः अंतर्दशा फलम् ॥ मिथ्या पवाद बंधवंधन मर्ष हानि क्षिन्ने च बंधु वचने बुच्च  
 मुद्र बुद्धिः ॥ सिद्धं च कार्यं नपि यत्र सदा विनष्टं स्यात्सर्वदा शनि दशा गमने भवन्ति ॥  
 ४९ ॥ तुषस्य अंतर्दशा फलम् ॥ दिव्यांग नाम दन संगम केलि सौख्यं नाना विलास मभिराग

१ संक्षिप्तनोसिरामैः ॥ हेमादिरत्नविभवागमकोशध्यानं स्यात्सर्वदा बुधदृशा गमने भवे  
 ति ॥ ६० ॥ अथकेतोः शतदृशफलम् ॥ भाव्या वियोगजनितं च शरीर दुःखं दुःखस्य हा  
 निरति कष्ट परं परात् ॥ रोगाश्च वंधु कलहश्च विदेशता च केनोदृशजनन काल  
 दृशा भवति ॥ ६१ ॥ अथ शुक्रस्य शतदृशफलम् ॥ आरामं हृदि परि सर्वशरीरं हृदि प्रवेतात  
 पत्र धन धान्य समी कुलं च ॥ आयुः शरीर सुत पौत्र सुखं नरणां दुःखं च भार्गव दृशा गमने  
 भवति ॥ ६२ ॥ अथ योगिनीदृशफलम् ॥ तर्क्षपिना किं नयनेः संयोज्यं वसुभिर्भजेत्  
 ॥ योगिन्यद्वैतो समाख्याता शून्य पातेन संकटा ॥ ६३ ॥ अथ योगिनीनां नामानि ॥ संगलापि-  
 गला धान्या भ्रामरी भक्षिका पितृ ॥ उल्का सिद्ध संकटा च योगिन्यद्वैतो दृशाः स्मृताः ॥ ६४  
 ॥ अथ वर्य संख्या ॥ एक द्वित्रीणि चेदाश्च पंच षट् सप्त मानि च ॥ दृष्ट वर्षाणि हि भवे मंगला  
 यस्तनु क्रमात् ॥ ६५ ॥ अथ दृशयाः फलम् ॥ संगला मंगला नंद यशो इविण दायिनी ॥ विंगला  
 तनुते व्याधि म्मनसो बुध संभ्रमी ॥ ६६ ॥ धान्याधनं सुहृद्वैद्यस्य सीमन्निनी करी ॥ म्या

मरी जन्म भूमि मी आमये त्सर्वतो दिशं ॥ ६७ ॥ भद्रिका सुख संपत्ति विला सवग्र दायिनी  
 उल्का एज्य धना श्रेय्य हारिणी दुःख कारिणी ॥ ६८ ॥ सिद्धा साधयते कांक्ष्यं नृणां वै सु-  
 खदा भवेत् ॥ संकटा शंकटा व्याधि मरण क्लेश कारिणी ॥ ६९ ॥ अथ दण्डवत्संख्या ॥ रविदि-  
 न नर संख्या चंद्रमा व्योमवारौः क्षिति तनय गजाश्वी चंद्रजः षट् प्रराश्व ॥ प्रानिरस  
 गुण संख्या वाचयति नागवाहौ नयन युग कैराहुः सप्ततिः शुक्र संख्या ॥ ७१ ॥ जन्मना  
 विंशतिः सूर्ये तृतीये दश चंद्रमाः ॥ भौमश्चतुर्थे चाष्टौ च पथे बुध चतुर्थके ॥ ७२ ॥ सप्त-  
 मं दश सौमिः स्या नवमे चाष्टमे गुरोः ॥ दशमे राहु विंशत्या तदूर्ध्वे तु भृगोर्दश ॥ ७३ ॥ अ-  
 थ फलम् ॥ पंधा भोगो नृतापश्च सौख्यं पीडु धनं क्रमात् ॥ नाशः शोकश्च सौख्यं च जन्म स्म-  
 र्य दश फलम् ॥ ७४ ॥ अथ ग्रहाणां दिनदश प्रकारः ॥ तिथि वारं च नक्षत्रं नासाक्षरसमन्वि-  
 तं ॥ नवमिष्व हरेद्भागं श्रेष्ठं दिनदशो ह्यते ॥ ७५ ॥ रवि चंद्रौ भौम राहु गुरु मंद बुध के सिद्धौ ॥  
 क्रमेणैका दशा व्योमाः फलं पूर्वोक्तं ने वहि ॥ ७६ ॥ आपत्वं ॥ चतुर्गणा जन्मनाशतिश्च चार-

समन्विता ॥ नवभिस्तु हरेद्भागं श्रेष्ठं दिनदशोच्यते ॥ ७६ ॥ रवीच श्लोकसंतापो श-  
 शांते क्षेमलाभको ॥ भूमिपुत्रे तु मृत्युः स्याद्बुधे भद्रा विवर्द्धनं ॥ ७७ ॥ गुरो विंशं भृगो सौख्यं  
 ग्रनौ यीडा न संप्रथयः ॥ राहोच घातयातौ च केतौ मृत्युर्दश फलम् ॥ ७८ ॥ अथ स्तनयानम् ॥  
 अन्नप्राशन नक्षत्रे दिवसोदय राशिरु ॥ जातकर्मोक्तनक्षत्रे श्रवाण त्रयपुनर्वसौ ॥ ७९  
 ॥ त्यक्ता स्वर्ती स्तन्यपानं शुभं प्रोक्तं शुभे हनि ॥ एकत्रिंशद्दिने चैव पयशं खेन पाययेत् ॥  
 ८० ॥ अथ सूतिकाक्कायः ॥ भैवज्यगदिते धिले वारे दुर्व्योगवर्जिते ॥ आरोग्यहेतवे कौश्लः  
 सूतिकायाश्च ताच्छिशोः ॥ ८१ ॥ अथ सूतिकापथ्यम् ॥ अन्नाश नोक्त नक्षत्रे शुभाहे सांशुमा  
 लिनि ॥ हिल्वा ऋक्तां च दुर्व्योगं सूतिका पथ्यमीरितम् ॥ ८२ ॥ अथ पंचमी पक्षी पूजा ॥ जन्म  
 तः पंचमे घट्टी जीवत्याः पूजनं निश्चि ॥ घट्टे गृहि पक्षि का पूजा गीतैर्जागरणादिभिः ॥ ८३  
 ॥ अथ सूतिका स्नानम् ॥ हस्ते मृगोऽनुराधायां रोहिण्या रेवती हूये ॥ उत्तरा त्रितये स्वर्तो जीवार्क  
 कुजवासरे ॥ ८४ ॥ सूती स्नानं प्रग्रास्तं स्याद्दिहाया इति त्रयं श्रवम् ॥ विप्रगत्वा भराणीभूतं

चित्राख्यं कृतिकां संधा ॥ ८५ ॥ ऋतुं वुधं शनिं षष्ठीं द्वादशीं मष्टमीं नन्धा ॥ अथार्धक-  
 स्य दंतोत्पत्तौ फलम् ॥ उपरि प्रथमं यस्य जायते च शिशोर्द्विजाः ॥ दंतैर्वा सह यस्य स्याज्ज-  
 न्य भार्गव सत्तम ॥ ८६ ॥ स्वात्मानं प्रथमे मासि द्वितीये चानुजो स्तथा ॥ तृतीये भ-  
 गिनीं तुर्थे मातरं पंचमेऽग्रजान् ॥ ८७ ॥ निहन्या द्वादशीं सप्तौ सप्तं स्त्वर्भकोऽखि-  
 लान् ॥ षष्ठा दौ लभते भोगानूर्द्ध्वं पंक्ताव सत्सदा ॥ ८८ ॥ दंतानां मष्टमे मासि षष्ठे-  
 मासि ततः पुनः ॥ दन्ता यस्य च जायते माता वाग्मियते पिता ॥ ८९ ॥ बालको मृत्यु-  
 ते तत्र स्वयमेव न संशयः ॥ अथ दंतनिर्मुक्तिः ॥ प्रथमं दंत निर्मुक्तिं रुद्धं बालस्य चेद्भ-  
 वेत् ॥ क्लेशाय मातुलस्यै ह तथा प्रीक्षा महर्षिभिः ॥ ९० ॥ अथ जलपूजा ॥ पुनर्वसू हूये  
 हस्ते मृगे मूलानुराधयोः ॥ अवे गुरो वुधे चंद्रे सत्तिथौ जलं पूजनम् ॥ ९१ ॥ गुरोः शु-  
 क्रेऽस्तमे चैत्रे पौषे च मलमासके ॥ मास पूतौ विशुद्धा हेन कुर्याच्च जलार्चनम् ॥  
 ९२ ॥ अथ रोला रोहणम् ॥ खट्वारो हस्तकर्त्तव्यो द्वादशे द्वादशे दिवसे



॥ १ ॥ ततस्तृतीये कर्तव्ये मासि सूर्यस्य दर्शनम् ॥ चतुर्थे मासि कर्तव्यं शिशोः प्र-  
 द्रस्य दर्शनम् ॥ २ ॥ मैत्रे पुष्य पुनर्वसौ प्रथमभे यौलेऽनुकूले विधौ हस्ते चैव सुरे श्व-  
 रे च मृग भेता ए सुशस्ता सुच ॥ कृत्त्या निःक्रमणं शिशोर्बुध गुरु शुक्रे खरि के तिथौ क-  
 न्या कुंभ तुला मृगा रिभवने सौम्य गहा लोकिते ॥ ३ ॥ अथ कटि स्नानं भूम्युपवेष्टनम् ॥ पुष्य  
 हस्ताश्विनी मूले श्रुतरे रोहिणी मृगे ॥ ज्येष्ठाया सन्नुराधाया शुभाहे मासि पंचमे ॥ ४ ॥  
 कुजे शुद्धे सम भ्यर्च्य वाराहं धरणी भुवि ॥ कटि सूत्र मयो बद्ध्वा वालं कं चोपवेशयेत् ॥  
 ५ ॥ पुस्तकं लेखनीं प्रास्त्रं तथा रोप्य च कांचनम् ॥ तस्मिन्काले यथा दत्ते तद्वृत्त्या जीव-  
 नं शिशोः ॥ ६ ॥ अथान्नप्राशनम् ॥ धुग्मेखु मासेषु च षष्ठ मासा त्सो वत्सरं वानियतं शिशु-  
 नान् ॥ अथुग्म मासेषु च कन्यकानां नवान्न सं प्राशनं सिद्धमेतत् ॥ ७ ॥ रेवती हित  
 ये पुष्ये पुनर्वसु नुराधयोः ॥ अवराणादि त्रये हस्त त्रितये रोहिणी मृगे ॥ ८ ॥ कर्णवैधं  
 तथा पानं क्षुरकस्मीन्न भोजनम् ॥ पटुबंधनं चैलान्न प्राशने चोपनायने ॥ ९ ॥ शुभमे ॥ २५३

१२४ ॥ जना नक्षत्र मशुभं त्वन्य कर्माणि ॥ उत्तरा शु विष्टुद्धे च दश मे शुभ वासे ॥ १० ॥ गोष्ठ  
 कुंभ तुला कन्या सिंह कर्क नृ युग्म काः ॥ शुभदा राशयश्चैते नमी नमेष दृष्टिकाः ॥  
 ११ ॥ हित्वा ऋतं तथा नंद मयमी द्वादशी तथा ॥ तिथेः क्षय ममां वारान् शनि भौमा-  
 र्क संज्ञकान् ॥ १२ ॥ जन्म राशि विलग्नाभ्यां नैधने श्रे च वर्जयेत् ॥ संपूर्णे न्दूभया  
 दृश्यो मध्ये दुः पूर्ण संज्ञकः ॥ १३ ॥ विनष्टे न्दू भयाद्यम्यो मध्ये ऽसौ क्षीरा सञ्ज्ञकः  
 ॥ ॥ अथ तां वूल भक्षणम् ॥ सार्द्ध मास द्वये दद्यात्तां वूलं प्रथमं शिशोः ॥ कर्पूरादि कसे  
 मिश्रं विला शाय हिताय च ॥ १४ ॥ मूलार्कं तिष्य कर चित्र हरीन्द्र भेषु यौल्ले तथा सुग  
 शिरो दिप्ति वासवेषु ॥ अर्केन्दु जीव भृगु वौधन वासरेषु तां वूल भक्षणा विधि म्भूनि-  
 भिः प्रादिष्टः ॥ १५ ॥ अथ कर्ण वेधः ॥ मासे षष्ठे सप्तमे वाद्यमेवा वेध्यौ कर्णौ द्वादशे षो-  
 डशे ऽन्दि ॥ मध्ये नान्हः पूर्व भागेन रात्रौ नक्षत्रे द्वे द्वे तिथी वर्जयेत् ॥ १६ ॥ रेव-  
 ती हितये पुष्ये पुनर्वसु नुराधयोः ॥ अचरा द्वितये चित्रा मृगे हस्ते शुभे तिथौ ॥ १७ ॥ १५

आरभ्य जन्म दिवसं याचस्त्रिंशदिनं भवेत् ॥ जन्म मासः सुविद्वो योषज्जितस्सर्वकर्मसु १५५

॥ हित्वा वमं चैत्र पौषौ जन्म मासं हरे प्रणयम् ॥ युगमादं जन्म दिक् चैकोन विंशतारं  
 यथा क्रमात् ॥ १८ ॥ द्वेज्य शुक्रेन्दुवारेषु शस्तं विषम वर्षके ॥ सुतौ शुद्धे त्रिकारोऽ  
 य केन्द्रे शुभ गृहा न्विते ॥ १९ ॥ स्वयद्देगुरुसुक्रे वा त्रिषष्ठे कादशेऽशुभे ॥ गुरौ लब्धे  
 ऽष्टवा कुर्व्यात्कर्णं वेधं शुभा वहम् ॥ २० ॥ कर्णं वेधोक्तं भे शस्तं कन्याया घ्राणवे-  
 धनम् ॥ अथाब्दमुहूर्तम् ॥ प्रतिवर्षं तु जन्माहेत्याया दुत्सव पूर्वकम् ॥ गणेशं वा स-  
 मभ्यर्च्य देवताश्चिरजीवितः ॥ २१ ॥ कृत्वा युष्यं च विष्णुक्तं कर्मदानान्यनेकशः  
 ॥ वध्वा मंगलं सुतं च भुक्ता मिष्टं द्विजैस्सह ॥ २२ ॥ अथ चूडाकर्म ॥ जलाशयसुरारा  
 मप्रतिष्ठा व्रतवन्धनम् ॥ अन्या धानं विवाहं च चौलं राजाभिषेचनम् ॥ २३ ॥ शु-  
 र्भागवियो रस्ते बाल्यं वार्द्धक्योरपि ॥ केतूदयेऽपि वै न स्यादिति विद्वत्स्य संमतम्  
 ॥ २४ ॥ दृष्टाद्देपश्चिमे बाल्यं पंचाहं वार्द्धकं भृगोः ॥ प्राच्यानु निदिनं बाल्यं पश्चिमाहं

कमुच्यते ॥ २५ ॥ पक्षं वाल्यं च वार्द्धक्यं गुरोः स्त्याज्यं शुभे सदा ॥ दृग्गहं वाल्यवार्द्धक्यं  
 गुरोः सप्ताहं सूचिरे ॥ २६ ॥ अहं चावश्यं के कृत्ये केचिद्भार्गवजीवयोः ॥ शुक्रो गुरुः प्रा-  
 क्यरतश्च वालो विंध्ये दृग्गवति यु सप्त रात्रम् ॥ वंगेयुर्हूलेषु च घटं च पंचशेषेषु देषु  
 त्रिदिनं निषिद्धम् ॥ २७ ॥ अथ शुक्रोद्यालमानम् ॥ प्राच्यानेत्रेषु दिग्घलान् २५२  
 दृश्यो भवति भार्गवः वसुशैल ७८ मितो स्तत्र यातोऽस्तं नैव दृश्यते ॥ २८ ॥ ख-  
 वाराणश्च मितान् घलान् २५० प्रतीच्यां दृश्यते भृगुः ॥ तत्रैवार्कं करग्रस्तो न बाहो  
 निन दृश्यते ॥ २९ ॥ अथ गुरुद्यालमानम् ॥ प्रायो वाचस्य तिम्र्मा स भवती क्षरागो-  
 चरः ॥ प्राच्या मुष्यते मासं याति पश्चात्तु वत्सरान् ॥ ३० ॥ अथेक्षोर्वाल दृढत्वम् ॥ दृ-  
 ष्त्वमिदो स्त्रिदिनं दिनार्द्धं वालत्वमस्तत्त्वमहर्द्वच ॥ हिनोक्तमेकं दिवसं प्राशु  
 त्वमित्येतदिंदोस्तदुक्तमेव ॥ ३१ ॥ अथ केतुद्वयम् ॥ त्रिष्टिं रवाश्च त्रिताराश्च रक्त  
 लोहितरश्मयः ॥ प्रायश्चात्तूतारमाश्रांसचन्ते नित्यमेव हि ॥ ३२ ॥ केतो रस्तदिना २५६

३३ ॥ ब्रह्मसु-  
 तस्य निशि खोवर्गो स्त्रिभिर्धुगांतकरः ॥ अनियत दिवसं प्रभुवो विक्षेयो ब्रह्मदंडारव्यः  
 ॥ ३४ ॥ केतो रस्सदिनां दृष्टं सप्ताहं मंगलं त्यजेत् ॥ यावन्केतुं ह्यस्ता वरं शुद्धस्समयोहि  
 सः ॥ ३५ ॥ केतूदये सप्तदिनानि चोद्धं विहाय यात्रादिषु गर्हितानि ॥ दिनानि श्रेयारि-  
 शुभानि नूनं वदन्ति रैभ्य प्रमुखा मुनीन्द्रा ॥ ३६ ॥ चैलं संवत्सरे पूर्णे त्रितया द्विषमे चरे-  
 त् ॥ सौम्याग्रने विचैत्रेषु क्षेज्य शुक्ले नु वासरे ॥ ३७ ॥ जथ स्याद्ब्रह्मण स्याकै क्षत्रिय-  
 स्य कुजे हनि ॥ मंदाहे वैश्य शूद्राणां चै लोक्ता तिथिभादिषु ॥ ३८ ॥ हस्ताश्वि विसु-  
 पौल्लानि अविद्या दित्य पृथ्व्यभम् ॥ सौर्यक्षित्रे तथा क्षौरे उत्तमान वतारकाः ॥ ३९ ॥  
 श्रीरायुचराणि वायव्य रोहिणी वारुणा तथा ॥ क्षौरे षण्मा ध्यमा प्रोक्ता श्रेष्ठा द्वादशग-  
 र्हिताः ॥ ४० ॥ क्षौरे जन्मलग्नं शुभम् ॥ कृषिं प्रयाणं क्षौरे च विवाहः प्राशनं तथा ॥ श्री-  
 शोर्वल्लं च नानं च जन्म राशौ शुभं भवेत् ॥ ४१ ॥ पातम राशुदये षष्ठे द्वादशे निधने

तथा ॥ शत्रुक्षेत्रे च नीचे च क्षौरं नैव प्रशस्यते ॥ ४२ ॥ सेवे दुःखो सुगेहे च वृद्धि  
 के व्यग्रं भवेत् ॥ राजा वीधे च धनुषि शुभयुक्तेन सुख्यति ॥ ४३ ॥ विषयशत्रुजले यो  
 रैः पीड्यते मरणान्वितः ॥ क्षौरे मृत्युर्घटे लग्ने शुभयुक्तेऽपि सस्रतः ॥ ४४ ॥ यामित्रे  
 भास्करे क्षौरे मृत्युस्स्याद्भूमिजे तथा ॥ शुक्रे सौख्यविना शस्त्रान्मंदभाग्यं घने प्रे  
 ॥ ४५ ॥ लग्ने रवेदेव लोयेते चंद्रतारां वलान्विते ॥ ज्येष्ठे ज्येष्ठस्य नो मासे मार्ग  
 शीर्षेऽपि के चन ॥ ४६ ॥ सूत्रो मार्गशिरगर्भिरया चूडा कर्मन कारयेत् ॥ पंचमा  
 व्यात्रागार्थोर्द्धगर्भिरया मपि कारयेत् ॥ ४७ ॥ यस्य नागालिकं कृत्यं तस्य माता  
 रजस्वला ॥ तदा मृत्युमवाप्नोति पंचमं दिवं विना ॥ ४८ ॥ विवाहो तस्य कार्येषु  
 माता चैव रजस्वला ॥ वैधव्यं जायते तत्र च नार्योः पारिणीहने ॥ ४९ ॥ अथाक्षरा  
 रंभः ॥ सौम्यायने शुभे मासि स्वाध्यायसिधौ प्रभे ॥ रवौ जीवि बुधे शुक्रे लग्ने रवेदव-  
 ला न्विते ॥ ५० ॥ रेवती द्वितये पुष्ये पुनर्वसु नराधयोः ॥ आर्द्राख्ये अवरो हस्ते स्वातो

चित्राभिधेतथा ॥ ५१ ॥ हेरं चांवेच वाग्देवी तथा व्यर्च्यष्ट देवताः ॥ पंचमाब्दे नरः  
 कुर्यात्स्त्रियां भंबुधः सत्वा ॥ ५२ ॥ अथोपनयनम् ॥ आयोदश द्वाह्म रास्यसावित्री  
 नाभिवर्त्तते ॥ आच्छादित्वा द्वाह्म वंधोरा चतुर्विंशति द्विजः ॥ ५३ ॥ अन ऊर्द्ध त्रयी-  
 व्येते यथा काल मसं स्मृताः ॥ सावित्री पतिता ब्राह्मी भवत्यपि च गार्हिता ॥ ५४ ॥  
 कश्यपः ॥ ऋतौ वसंतं विषाणं ग्रीष्मे राक्षसं सरद्यथ ॥ विशं मुखं च सर्वेषां हित्जानां  
 चोपनायनम् ॥ ५५ ॥ साधारणं च मासेषु माघादिषु च पंचसु ॥ विन तु ना वसंते न  
 कृत्स्न पक्षे गल ग्रहे ॥ ५६ ॥ अथ गृहे चोपनीतः पुनः संस्कार मर्हति ॥ त्रिधा विभज्य  
 दिवसं तत्रादौ कर्म वैदिकम् ॥ ५७ ॥ द्वितीये मानुषं कार्यं तृतीयेः श्रेतु ये तत्कम् ॥ चंद्रो  
 लभेऽति शस्तः स्यात् क्षययोगी श्लेते तरे ॥ ५८ ॥ शुक्ल पक्षे भवे घ ज्वा स्वभेतुं गेति  
 शेषतः ॥ वर्द्धमानोऽपि वा पूर्णः चन्द्रो यदि विलयतः ॥ ५९ ॥ निःसं करोति व्रतिनं लग्नगः क्षयरे  
 गिराम् ॥ श्राव्साधिपतिवारश्च श्राव्साधिपवले शिशोः ॥ श्राव्साधिपतिलं न च भित्तयं दुर्लभं च-

ते ६० प्राखेष्ट गुरु शुक्राणां मौल्यो वाल्ये च वार्द्धके ॥ ६१ ॥ नैवोप नयनं कार्यं विरो  
 प्रो दुर्वले स्मृते ॥ प्रवृत्तीनां चाधि शत्रुस्ये स्वांशे वास्त्वोच्च भागमे ॥ ६२ ॥ प्राखेष्टे वा  
 गुरो शुक्रं न नीचं फलं मलुते ॥ जन्मो वयं जन्म सुतारका सुमासे तथा जन्म तिथौ  
 च राशौ व्रते न विप्रोऽल्य परिश्रुतौऽपि राक्षो विशेषः प्रथितः पृथिव्याम् ॥ ६३ ॥ म  
 भीष्ट मे गर्ग पराशरद्वैः फलं यदुक्तं व्रतं वंधने तु ततोऽधिकं जन्म सुतारका सुमासेऽथ  
 वा जन्म निवाडवानाम् ॥ ६४ ॥ जन्म क्षमास लग्नादौ व्रते विद्याधि को व्रती ॥ आद्य  
 गर्भे तु विप्राणां क्षत्रादीनामनादिमे ६५ ॥ बालस्य बलहीनोऽपि प्रांत्याजीवो बलप्रदः  
 ॥ ६६ ॥ यथोक्तं वत्सरे कार्यं मनुक्ते नोपनायनम् ॥ व्रतेऽपि वर्षेन गुरुर्वली चेच्छा  
 त्या व्रतस्त व्रतं वंधं कर्त्तुम् ॥ अनुक्तं वर्षं सुबलप्रदोऽपि नैव तयो रब्धं बलं गरीयः ॥ ६७  
 ॥ व्रतं वंधे निवाहे च प्रातिद्यायां विशेषतः ॥ गोचरे लोचकतत्त्वं वेधादिकं मकारणम्  
 ६८ ॥ वेधस्तु ॥ व्यये पक्षे स्त्रिणे चैलेः खगे नंदेः सुखे शरैः ॥ रथे रुद्धेऽग्निं विद्धि गरुः ॥



सप्तमः सुहो सुभो ॥ १७ ॥ राजमार्गः ॥ अथ वर्गविशुद्धये गुरु शीतां शुभा नुसु ॥ वनोद्वा  
 हो तु कर्तव्यो गो चरेण कदा चन ॥ अथ वर्गोरा ये शुद्धां स्ते शुद्धा सर्व कर्मसु ॥ १७ ॥  
 दृष्टमाथ वर्गसं शुद्धिस्तु गोचरे ॥ जनबंधश्च विप्राणां गर्भाद्वा जन्मतो ॥ १८ ॥  
 दृष्टमे गर्मतोऽपि वा ॥ १९ ॥ विप्रस्य पीडणावर्पाद्गुविप्रः तथ भूभुजान् ॥ विप्रो  
 नो तु चतुर्विंशद्गोरा कालउदाहृतः ॥ २० ॥ निजवर्गोरा शरावेषा भास्वहागी श्व-  
 रे सुसु ॥ चीर्जं वत्सु द्विजातीनां व्रतबंधः शुभा वहः ॥ २१ ॥ अथ वर्गेशिः ॥ जीवशुक्लो  
 तु विप्रेशी भूभुजां रविभौसजो ॥ विप्रोऽद्वौ नृश्वसृगाणां जंत्यजानो पतिः शनिः ॥ २२ ॥  
 अथ वेराधीशः ॥ नृगवेदे शो गुरुः प्रोक्तो यजुषां भार्गवः पतिः ॥ रामवेदे श्वेरा भौमः पति  
 आथर्वणोऽबुधः ॥ २३ ॥ अथ गुरुदिबलात् ॥ गुरु सूर्यं च लं ज्ञेयं विवाहे यदि वश्यते ॥  
 चंद तारा वलं पूर्व मुक्तं रासं वलोः शुभम् ॥ २४ ॥ अथ मासादिः ॥ साक्षात्यं च सुमासेषु २६

शुक्ले जीवन् भागवे ॥ केचिन् कृत्वा पक्षेऽपि प्रथम त्रिलवे जगुः ॥ ७६ ॥ अथ तिथयः  
 द्वित्र्येकादशद्विकं च द्वादश प्रमिते तिथौ ॥ अश्विनी मृगं चित्रासु हस्ते त्वाल्वां च मृ-  
 क्रमे ॥ ८० ॥ पुष्ये च पूर्व फाल्गुण्यां श्रवणे पौष्णमे तथा ॥ वासवेशत तारासु व्रतबंधः  
 प्रशस्यते ॥ ८१ ॥ अथ प्रतिवेदं नक्षत्राणि ॥ मूले हस्त त्रये सार्य्य सैके पूर्वा त्रये तथा ॥  
 चरवेदध्यायिनां कार्य्यं मेख लावं धनं बुधैः ॥ ८२ ॥ पुष्ये पुनर्वसौ पौष्णे हस्ते मेने प्र-  
 शंकु मे ॥ भौवेवु च प्रशस्तं स्याद्यजुषां मों जिवंधनम् ॥ ८३ ॥ पुष्य वासव हस्ता-  
 श्विशिव करोर्नरत्रयम् ॥ प्रशस्तं मंगला वंधे वदनां साम गायिनाम् ॥ ८४ ॥ मृगने-  
 त्राश्विनी हस्ते रेवत्य दिति वासवम् ॥ अथर्व याहिनां शस्तोभ गणोऽयं व्रताप्यैरे ॥  
 ८५ ॥ नच साधारणी नक्षत्र विरेवः ॥ पुनर्वसौ व्रतं नेष्टं शतमे केच नैतिच ॥ अथ व्रते नि-  
 विदम् ॥ कृत्वा पक्षे प्रनौ रात्रौ व्रदेगे चा गल गृहे ॥ अनाध्यायेऽपरह्नि दानं कुर्वाद्र-  
 त वंधनम् ॥ ८७ ॥ अथानाध्यायः ॥ संक्राति र्युग मन्वादी द्वितीया ज्येष्ठ शुक्लगा ॥

चैत्र कृत्स्न तृतीयाच द्वादशी माघ शुक्ल जा ॥ ८८ ॥ प्रति पक्षे ऽष्टमी चैव चतुर्दश्याः  
 दिनत्रयम् ॥ अनाध्याया दर्मेव ज्या स्वाध्याय व्रत वंधयोः ॥ ८९ ॥ अथ प्रहोयः ॥ च-  
 नुधी प्रबसे यागे याम युग्मे त्रयो दशौ ॥ सप्तमी सार्द्ध यागे च अदोष सस्या न्निष्ण मुले  
 ॥ ९० ॥ अथ गलग्रहाः ॥ सप्तम्या स्थितयं चैव त्रयोदश्या श्वतुष्टयम् ॥ चतुर्थी चैकतः  
 प्रोक्ता अष्टा वैते गलग्रहाः ॥ ९१ ॥ अथ लग्नफलम् ॥ त्रि ३ षट् ६ संस्थाः खलाः रेव १०  
 र्क चंद्रो द्वि २ धन ७ ख १० त्रि ३ गः ॥ सौम्याः केन्द्र त्रिकोण स्थाः १।४।७।१०।९।  
 ५। लाभे सर्वे व्रते शुभाः ॥ ९२ ॥ जीवेन्तु भृगु लग्ने ण व्रते नेष्टा षडष्टगाः ॥ शु-  
 क्रेन्तु व्यय गौनेष्टौ खला लग्नाष्ट पंचगाः ॥ ९३ ॥ व्रते सौम्या ऋशुभाः प्रोक्ताः षड-  
 षांस्त्य विवर्जिताः ॥ शुक्ले स्वर्क्षो च गंश्चक्ष्णेलग्ने अष्टौ रविः कचित् ॥ ९४ ॥ द्वे-  
 ज्य शुक्रांश गो लग्ने चंद्रः शस्तो व्रते मतेः ॥ नान्यत्राथ निजां श्रेष्ठः पुनर्वसु अवे शु-  
 भः ॥ ९५ ॥ अथ केन्द्रस्य खेटफलम् ॥ भूपा अथी चरिगक् वृत्तिः शस्त्र मृत्यात्य को मतः ॥ ९६ ॥

॥ पंडित प्रार्थ्य वानूस्तेस्सेवी केन्द्रेऽर्कितः क्रमान् ॥ ८६ ॥ अथ त्रतयोगः ॥ ल  
 ॥ ग्ने गुरु भृगुः कोणो धुक्रांशेऽब्जे व्रते शुभः ॥ गुरु भ्रंद्रो भृगुर्नेष्टो रवि भौमार्कि  
 संयुतः ॥ ८७ ॥ अथ चैत्र प्राणस्थम् ॥ गोचराष्टक वर्गाभ्यां यस्य शुद्धिर्नलभ्यते ॥  
 तस्योपनयनं कार्यं चैत्रे मीन गते रवौ ॥ ८८ ॥ हरौ सिंहांशे जीवे नीच र्क्षे नीच  
 भा गणे ॥ भौजीविंशः शुभः प्रोक्तं चैत्रे मीन गते रवौ ॥ ८९ ॥ अथात्र मातुः रजो दोषे  
 विधेयः ॥ मातूरज स्वला दोषो नादी आद्धोत्तरं तथा ॥ आषष्ठ्य के व्रतं चैलं शंगत्या  
 शुद्ध्यात्कर ग्रहन् ॥ ९० ॥ अथ केशंत समावर्त ॥ चैलीक सनये काच्यं केशांतं दोड ॥  
 प्राव के ॥ व्रत वंधोक्त काले तु समावर्त न मीरितम् ॥ ९० ॥ अथ रक्षां क्षुरिका वंधनम् ॥  
 व्रतोक्त मास तिथ्यादौ विचित्रे सवले कुजे ॥ विभेमे क्षुरिका वंधं प्रारिचवा हात्मने  
 भुजान् ॥ ९० ॥ द्विवेदि कुल संभूत सरयू दत संग्रहे ॥ शिरो मणौ समाक्षेया प्र-  
 मेयं हि चतुर्दशे ॥ ९० ॥ इति संग्रह शिरो मणौ संस्कार कथनं नाम चतुर्दशी प्रभा

सं-श्रिः ॥ २४ ॥ अथ विवाह प्रकरणम् ॥ आया धन्मार्थे कामानां साध्वी चेत्सा धनं भवेत् ॥ प्रो  
 १६५ लं लग्नव प्रातः स्याः शुभं लग्नमथोद्भवे ॥ १ ॥ देवज्ञं सुदिनेऽय्यर्च्यतां वृत्त  
 श्री फलादिभिः ॥ विद्वाप्यगंतयोः पुच्छे द्विवाहं वरकंद्ययोः ॥ २ ॥ प्रदीपना  
 द्विगी २० प्रा ११ गिन ३ चाल ५ प्रेल ७ स्थिते विधौ ॥ सद्यः परिणयो जीव हृष्टे स्याद्दूर  
 कन्द्ययोः ॥ ३ ॥ गौ तुला कर्क लग्ने वा शुभे क्षितयुते तथा ॥ विधम क्षीप्र गौ शुक्र  
 चंद्रे चेत्यश्वतस्तनुम् ॥ ४ ॥ बलिर्नो वरदो तत्र स्त्री प्रदो सप्त भांशगौ ॥ चंद्रे षष्ठेऽ  
 द्यमे पापे लग्ने वा धूनगे कुजे ॥ ५ ॥ लग्नेऽब्जे वा धून भौमे वैधव्यं चाद्यमेऽब्दे के  
 ॥ लग्नाच्च पंचमे पापे नीचस्ये शत्रु वीक्षिते ॥ ६ ॥ सा कन्या मृतवत्ता स्यादथवा  
 कुलता भ्रवम् ॥ द्यूने सेंदु भृगो रंहा भौमे वा कुलता शनी ॥ ७ ॥ शुश्रीला शुभ-  
 गा जीवे वृधे च प्रश्न लग्नतः ॥ चन्द्रः षष्ठेऽद्यमे षष्ठे वाहुले सग राशिगः ॥ ८ ॥  
 क्षरे क्षिते विवाहस्य भंगदः पारे कीर्तिनः ॥ वाहक् संमान संयुक्ता यो पितृस्वैरसमा

ब्रजेत् ॥ ८ ॥ तां विलोक्य तथा पत्यं तस्य ग्रन्थे वदेत्सुधीः ॥ शंख भेद्यो दिना-  
 द्ध्वेत्ग्रन्थे स्यान्मंगलं सदा ॥ ९० ॥ वायसस्य शृगा लादिर वध्नेद् शुभं भवेत्  
 ॥ दंपत्यो रंतरा मैत्री विवाहेन सुभा वहा ॥ ९१ ॥ जुंजा वर्गस्तथा वर्गो वश्यता  
 राय योनिजा ॥ गृह मैत्री गणो राशि मैत्री नाडीति वैदश ॥ ९२ ॥ यथोत्तर वला  
 श्चेति विज्ञेयास्तु परस्परम् ॥ गुराधिक्ये समुद्वाहः कर्तव्यो वरकन्ययोः ॥ ९३ ॥  
 अथ जुंजा प्रीतिः ॥ पौष्ठादिकं यदुमुशंति पूर्व मार्गदिकं द्वादश मध्य भागम् ॥ पौरु-  
 राद्यं नवकं भचक्रं परं च भागं गणकाः विदधाः ॥ ९४ ॥ पूर्व भागे पतिः श्रेयो मध्य-  
 भागे च कन्यका ॥ परभागे च नक्षत्रे द्वयोः प्रीति र्महीयसी ॥ ९५ ॥ अथ वर्ग प्रीतिः ॥  
 अर्चवर्गो गरुडः प्रोक्तो मार्जारस्तु कवर्गकः ॥ चवर्गः केशरी द्वयोः द्ववर्गः कुङ्कु-  
 रः ॥ ९६ ॥ तंवर्ग स्तर्प्यं संज्ञस्त्यान् पवर्गो मूषको मतः ॥ यवर्गो हरिण इत्यथ  
 श्ववर्गो मेघ उच्यते ॥ ९७ ॥ गरुडो रगयो वैरं तथा मेघ शुनो रपि ॥ अथ श्वा रवुवि- १६६

डा लस्यात् प्रादूल मृगयो स्तथा ॥ १८ ॥ स्ववर्गा त्येचम प्रशत्रुश्चतुर्थो मित्र सं-  
 हृक् ॥ उदाग्निं स्तृतीयं स्तु वर्गं भेद स्थिधो च्यते ॥ १९ ॥ वर्गारित्वे महद्गुहं  
 वर्गेको घीति रुतमा ॥ कन्यका वर्योश्चेव स्वासि सेवक यो यपि ॥ २० ॥ अथ वर्णप्री-  
 तिः ॥ मीनालि कर्करा विप्राः क्षत्री मेघो हरि ईनुः ॥ तुला हं ह घटाः मूढाः लषक-  
 न्या मृगा विशः ॥ २१ ॥ नोत्तमा मुद्ग हेत्कन्या ब्राह्मणी च विशेषतः ॥ मृयते हीन द-  
 र्णश्च ब्रह्मण सहस्रो यदि ॥ २२ ॥ वर्षा श्रेष्ठा च यानारी तस्या भर्तानि जीवति ॥ य-  
 दि जीवति चेद्भर्ता तदा पुत्रो न लभ्यते ॥ २३ ॥ अथ वक्ष्यप्रीतिः ॥ युग्मं कुंभं स्तुला कन्या  
 प्राग्दलं धनुषो द्विपात् ॥ पराई धनुषश्चैव पूर्वदिं समकरस्य च ॥ २४ ॥ केशरी ह-  
 षभाख्यश्च मेघश्चैते चतुः पदाः ॥ मृगोत्तरं दलं मीनो जल चांगी प्रकीर्तितः ॥  
 २५ ॥ ककर्दः कीट संज्ञश्च लुश्चिकस्तु सरी स्तपः ॥ सिंहं विना वशा स्सर्वे द्वि पदा-  
 नां चतुः पदाः ॥ २६ ॥ मध्या जल चरस्तेषां भय स्थाने सरी स्तपाः ॥ २७ ॥ अथ-

योगे नारमेनी ॥ कन्या भंवर आद्रण्यं वधूभा दूर भक्षया ॥ नव हृच्छेष भेनेयं सप्त यं वज्रि  
 संख्य के ॥ २८ ॥ अथ योनि मेत्री ॥ अग्निनी प्रातः अश्या भौ महिषौ स्वाति हरत वे ॥  
 पूर्वा धनिय यो सिंहः भरणान्ना भयो गजिः ॥ २९ ॥ कृत्तिका सुखाद्यो मेषः सुखा  
 द्या पादयोः कपिः ॥ ऊषा भिजिज्ञयो वधू रोहिणी मृगद्यौरहिः ॥ ३० ॥ मृगानुरा  
 धयो रेवाः श्वा मूलाद्रा भौ स्वया ॥ पुनरग्ले षयो रंतु रावुः पूषा मया ह्वयोः ॥ ३१  
 ॥ विशाखा चित्रयो व्याघ्रौ गो रुफोत्तर भाष्योः ॥ मैत्री वैर विचारार्थं भाणां प्रोक्तास्तु-  
 योनयः ॥ ३२ ॥ गो व्याघ्रं गज सिंह मय्य महिषं श्वैरां च वधू रं वैरं वानरं मेघ  
 कंच सुमहत्त द्द द्विहा लो न्दुस् ॥ ले कानां व्यवहारतोऽन्य दयि च क्षात्वा प्रयत्ना  
 दिदं न्दम्पत्यो न्दं प भृत्य योरपि सत् वज्यं सुभ स्या र्थिभिः ॥ ३३ ॥ अथ ग्रह येनी ॥ सिं  
 न्नाणि द्युमणोः कुजेज्य शशिनः मृक्रार्क जो वैरिणौ सौम्यश्चास्य सन्नो विधो दुधिर  
 वी भिन्ने न चास्य दिषत् ॥ श्रेवाश्चास्य समाः कुजस्य सुहृदं श्वं ज्जेज्य सूर्या दुधः



प्रात्रुः शुक्र प्राणी समो च प्राण मृतसूतोः सिता हस्करौ ॥ ३४ ॥ मित्रे चास्य रिपुः  
 प्राणी गुरु प्रा निक्षमा जाः समाः गौर्धृते स्मिन्नाण्यर्कं कुजेन्दवी बुधसितौ प्रात्रूसमः  
 सूर्यजः ॥ मित्रे सौम्य प्राणी कवे प्राण शिरवी प्रात्रू कुजे ज्यौ समौ मित्रः शुक्र बुधौ प्रा  
 नेः प्राशिरवि क्षमा जाः द्विव्योऽन्यः समः ॥ ३५ ॥ वंपत्यो राशिपो मैत्री मिथ स्या-  
 च्छोभन नन्दा ॥ ग्रहिते त्वहितं विद्यात्समे वै मध्यमं स्मृतम् ॥ ३६ ॥ अथ मैत्रीफल  
 म् ॥ नवर्गवर्गे नंगणो नयोनि द्विद्वाशे नैव षडष्टकेवा ॥ तारा विरुद्धे नवपंचमेवा  
 मैत्री यदं स्याच्छुभदो विवाहः ॥ ३७ ॥ अथ गण मैत्री ॥ हस्त स्वती शुक्तिः पुष्योऽनु  
 राधारेवती हयंम् ॥ पुनर्वसु न्गश्चैवः प्रोच्यते देवता गणः ॥ ३८ ॥ तिलः पूर्वोत्त-  
 राश्च तिलोऽप्यार्द्रं च रोहिणी ॥ भरणी च मनुष्याख्यो गणोऽशः कथितो बुधैः ॥ ३९  
 ॥ कृत्तिका च मघा<sup>१</sup> ज्येष्ठा विषाखा शत तारका ॥ चित्रा ज्येष्ठा धनिष्ठा च मूलं रक्षोग  
 णः स्मृतः ॥ ४० ॥ स्वगणो परमा प्रीति र्मध्यमा देव मर्त्ययोः ॥ मर्त्यराक्षसयो र्मृत्युः

कल हो देव रक्षसाः ॥ ४१ ॥ राक्षसी तु यदानारी पुरुषो मानवो भवेत् ॥ विवा-  
 हिताय मे मासि सा च भक्षयते पतिं ॥ ४२ ॥ अथ गणदोषा पवादः ॥ मेन्द्र्यां राश्रीं प्रयोरं  
 श स्वामिनीं वीरकन्ययोः ॥ न तत्र गणादोषस्या हि वाहं शुभदीमतः ॥ ४३ ॥ रक्षो-  
 ना च गणानारी चैतदोद्वाहनं तयोः ॥ योनिमैत्र्या दिनाकार्यमिदं गर्गादि भाषितम्  
 ॥ ४४ ॥ अथ राशि कूटम् ॥ राश्योः षड्वाष्टके मृत्यु रित्र कोरो त्वन पत्यता ॥ नैष्वं द्विद्वाद  
 ये ज्ञेयं सौख्यमन्यत्र चोभयोः ॥ ४५ ॥ कुमाय्या विषमा द्राश्रोः षष्ठं तु वरभं न स  
 त् ॥ समा द्राश्रोः शुभं षष्ठं विपरीत मसत्सुतम् ॥ ४६ ॥ वरस्य पञ्चमे कन्या कन्या  
 यानवमे वरः ॥ एतन्त्रिकाणकं ग्राह्यं पुनर्यौत्र सुखा वहम् ॥ ४७ ॥ अथ कूटापवादः ॥  
 प्रोक्ते दुष्ट भ कूटे ऽपि राश्यो रेकाधिपत्यके ॥ मैत्र्योपनयः श्रेष्ठो हो क नापी न चैतयोः  
 ॥ ४८ ॥ तुला वषभयोर्मर्भिनसिंहयोः कुंभ कन्ययोः ॥ धनुः कर्कटयोर्नक्त युगमयोश्चा-  
 लिभेषयोः ॥ ४९ ॥ प्रीतिः षड्वाष्टकं चैतन्नदन्यत्वाज्यमेव हि ॥ ५० ॥ राशि दोषैर्भावे

॥ पि मैत्री चेत्स्यात्तदंशयोः ॥ नाडी वश्येत्तु ताराणां शुद्धा बुद्धहर्तुं स्मृतम् ॥ ५२ ॥ भा-  
 सिनी जन्म नक्षत्रा द्वितीयं पति जन्म भम् ॥ न प्रभुं भर्तुं नाश्राय कथितं ब्रह्मया मले  
 ॥ ५३ ॥ अथ नाडी शुद्धिः ॥ ज्येष्ठा मूलाश्वि भार्गव्या द्वयं शत भियां द्वयम् ॥ उत्तरा फाल्गु-  
 रणी युगमगद्या नाडी यमीरिता ॥ ५३ ॥ चित्रा पुष्योऽनुराधा च धनिष्ठा भरणी मृगः  
 ॥ पूर्वा पादोत्तरा भाद्र पूषा वामय नाडिका ॥ ५४ ॥ रोहिणी कृत्तिका ज्येष्ठा मघा स्वा-  
 ती द्वयन्तथा ॥ रेवती चोत्तरायाहा अवराश्चात्य नाडिका ॥ ५५ ॥ दंपत्योरेक नाडी-  
 स्थे ऋक्षे नैद्यः करग्रहः ॥ मध्य नाडी गति मृत्यु स्तस्मात्तं सर्वं ध्या त्यजेत् ॥ ५६ ॥  
 अथ नाडी दोषा पवादः ॥ राक्षसैके भिन्न भेष्ये के अन्य राशौ तेषैकमे ॥ भिन्नेऽघ्नौ न ह्ययो-  
 दोषा गण नाडी भकूट जाः ॥ ५७ ॥ अथैकमेऽपि विशेषः ॥ विष्णुयात्री श्रवः पुष्यो रो-  
 हिरयुत्तरा भाद्र पात् ॥ रेवती च मघा श्रवः नेतराश्चैकमे द्वयोः ॥ ५८ ॥ अथ नाडी वि-  
 षये विशेषः ॥ उक्तं नारदेन ॥ चतुस्त्रिंशं धिभो त्यायाः कन्यायाः कमशोऽश्वि भात ॥

सन्धि २७३  
 वन्ति भा विंदुभा न्नाडी त्रि चतुः पंच पर्वसु ॥ गणयेत्संख्यया चैक नाड्यां मृत्यु  
 ने संशयः ॥ ५६ ॥ एक नाडी विवाह प्रच गुणैः सर्वैस्समान्वितः ॥ वर्जनीयः प्रय-  
 त्नेन दंपत्यो निर्धनयुतः ॥ ६० ॥ गर्गः ॥ चतुःपात्कन्यका ऋक्षं गणयेदाश्विना  
 दिकम् ॥ त्रिभंसे व्याप सव्येन भिन्न पर्व शुभावहम् ॥ ६१ ॥ कन्यका मंत्रिपा-  
 त्चेत्स्याद्गणयेत्कान्तिका दिकम् ॥ चतुर्भिः पर्वभिस्तद्द्वदभिजित्ताका न्वितम्  
 ॥ ६२ ॥ कन्यकां क्षी हि पातृ चेत्स्याद्गणयेत्सीम्य भादिकम् ॥ पंच भिस्त्ववरो हेतु पं-  
 चमां गुणिवर्जितम् ॥ ६३ ॥ चतुर्न्नाडी त्वहल्यायां पांचाले पंच नाडिका ॥ त्रि  
 नाडी सर्व देशेषु वर्जनीया प्रगततः ॥ ६४ ॥ अथ नाडी विचारे चंडेश्वरः ॥ पृष्ठ म-  
 ध्ये शुभ समीन्वितः भोगः क्रोडि वनिता दित्त वियोगः ॥ मध्य रेखे भवति विवाहे उ-  
 भयो र्मणिं वदति नराहः ॥ ६५ ॥ अश्व्यादि नाडी वेधे क्षे क्रमात्यष्ट द्वितीय कम-  
 ॥ याम्यादि तु र्य तु र्य च कान्तिकादि द्विषष्ट कम ॥ ६६ ॥ अर्धे नुज क्षोणि तनूज १७

सं लि जीवाः केतुः सितो राहु प्रशंक प्रोराः ॥ जन्मादि नाडी त्रितये शुभा स्स्युः शुभे शुभं  
 १७३ स्याद शुभेऽ शुभं च ॥ ६७ ॥ नवधा अर्कः १। १०। १६ बुधः २। ११। २० भौमः ३।  
 १२। २१। गुरुः ४। १३। २२। केतुः ५। १४। २३। शुक्रः ६। १५। २४। राहुः ७। १६। २५।  
 चंद्रः ८। १७। २६। शनिः ९। १८। २७। अथ नाड्यादि दोषे दानानि ॥ हेमज्य रत्न गो  
 दानं मृत्यु क्षय अप स्तथा ॥ कुर्या दावश्य को द्वाहे नाडी दोषा पनुत्तये ॥ ६८ ॥ ता  
 मन्दि द्वाद प्रोदधा त्सुवर्षा च्च षडष्टके ॥ गोयुगान्वव पञ्चाख्ये त्वां वर्यादि दोषजे-  
 ॥ ६९ ॥ हेमान्नं वसनं धेनुं सर्व दोषा पनुत्तये ॥ ७० ॥ अथ वष्यादि गुणाः ॥ एकै क  
 द्वादितौ दोषा वर्यादीनां गुणाः क्रमात् ॥ विवाह शुभमदस्तेषां गुरो त्वष्टा दष्टा-  
 धिके ॥ ७१ ॥ अथ जन्म कालिक भौम वीषः ॥ लग्ने व्यये च पाता लेया मित्रे चाष्टमे  
 कुजे ॥ कन्या भर्तु विनाशाय भर्ता कन्या विनाशकः ॥ ७२ ॥ एवं विधे कुजे  
 संस्थे विवाहो न कदाचन ॥ कार्यो वा गुण बाहुल्ये कुजे वा तादृशे द्वयोः ॥ ७३ ॥ १७

संक्षि ॥ अथान्निविधो विषययोगः ॥ कन्यायां सूर्य भौमार्कि वारेषु तिथि भद्रा प्राता शिधम्  
१७४ ॥ अश्लेषा कृत्तिका चेत्या तत्र जाता विवांगना ॥ ७४ ॥ अथ द्वितीयः ॥ तनुर्लेने  
रिषु क्षेत्रे संस्थितः पाप रेचरः ॥ हो सौम्या वपियोगेऽस्मिन्संजाता विष कन्यका  
॥ ७५ ॥ अथ तृतीयः ॥ लग्ने शनैश्च रोयस्यास्तुतेऽर्को नवमे कुजः ॥ विषारख्यासा-  
पिनो द्वाह्या त्रिविधो विष कन्यका ॥ ७६ ॥ अथ कन्या दोषापवादः ॥ सावित्र्यादि ज्ञतं  
कृत्वा वैधव्य विनिवृत्तये ॥ अश्वत्थादिभिरुद्वाह्य द्वातां चिरजीविने ॥ ७७ ॥  
अथ जन्म कालिक द्यु नक्षत्र फलम् ॥ मूल जाम्ब सुरं हति ज्येष्ठा जा स्वध वा गुजम् ॥ क-  
न्यका तु विष्णोषो त्यानिहन्या देवरं स्वकम् ॥ ७८ ॥ अस्यापवादः ॥ अश्लेषा प्रथमः  
पादः पादो मूलांति मस्तथा ॥ विष्णवा ज्येष्ठ यो राद्य स्वयः पादा शशु भां वहाः ॥  
७९ ॥ इति वधूवरयो र्मेला पक विधिः ॥ अथ वाग्दानम् ॥ धरणि देवोऽद्य वा कन्यका  
सोदर श्रुभ दिने गीत वाद्यादिभि संस्युतः ॥ वरदातिं चरन् यज्ञो यवी तादिना क्रव

पुते वर्न्ति पूर्वा त्रये राचरेत् ॥ ८० ॥ अथ कार्यविशेषे जन्म नामस्त्वोऽप्रधानता ॥ अ-  
 ज्ञात जन्म नो नृणां नाम मे परि कल्पना ॥ तेनैव चिंतयेत्सर्वं राशि कूटं हि जन्म  
 वत् ॥ ८१ ॥ जन्म भं जन्म धिल्लेन नाम भं नामा धिल्लतः ॥ व्यत्ययेन यदा योज्यन्-  
 म्यत्योर्निधनं प्रदम् ॥ ८२ ॥ देशे याम ग्रह द्युत व्यव हारे रणो ज्वरे ॥ दाने मंत्रे च से-  
 वायां का किन्यां वगं योजने ॥ ८३ ॥ पुनर्भे मेलने द्वेया नाम राशेः प्रधानता ॥ अ-  
 तोन्यत्र विवाहादौ प्राधान्यं जन्म भस्य हि ॥ ८४ ॥ अज्ञात जन्म धिल्ले तु नाम भादेव  
 चिंतयेत् ॥ जाया पत्यो भकूटाद्यं गोचराख्यं खिलं तथा ॥ ८५ ॥ एकत्वादिव हृदम्यत्यो  
 रज्ञाते जन्म भेतथा ॥ जन्म भादुरु शुद्धादि मेलने नाम भातयोः ॥ ८६ ॥ अथ विवाह  
 संवत्सर हि शुद्धिः ॥ गर्भजन्म दिना ह्यपि हाय नात्सवं मात्सरम् ॥ आदशाब्दे तु कन्याया  
 विवाहः समवत्सरे ॥ ८७ ॥ विशेषः ॥ षडब्द मध्ये नो हाशा कन्या वर्ष द्वयं यतः ॥ सो  
 मो भुंक्ते ऽथ गंधर्व स्तुतः पश्चाद्भुता प्रानः ॥ ८८ ॥ अथ वर्षा भवेद्गोरी नव वर्षा-

च रोहिणी ॥ दश वर्षा भवेत्कन्या अत ऊर्ध्वं रजसला ॥ ८८ ॥ गौरी नृदह्नल-  
 लोकं सावित्रं रोहिणीं ददत् ॥ कन्या ददद्ब्रह्मलोकं मतः परमसद्गतिम् ॥ ८९ ॥ मासत्रया-  
 दूर्ध्वं मयुगसु वर्षे युग्मे तु मासत्रयमेव यावत् ॥ विवाहं शुद्धिं प्रवदन्ति सन्तो वात्स्याद-  
 योगा गव राह मुख्याः ॥ ९० ॥ विशेषः ॥ क्षीया गुरुवला गौरी रोहिणी आनुमहला ॥  
 कन्या चन्द्रवलो द्वाह्या ततो लग्नं चलेतरा ॥ ९१ ॥ अथ विवाहे गुरु रवि चन्द्र वलम् ॥  
 गुरो वलनु कन्याया वरस्याथ चलं रविः ॥ ग्राह्यं परिणये प्राज्ञैः चलं चन्द्रात्तथो-  
 भयोः ॥ ९२ ॥ अथ कन्या वरयो गुरु वलम् ॥ कन्याया गृहं शुद्धिंश्च दश वर्षा वधि स्तु-  
 ता ॥ दश वर्षं व्यतिक्ता कन्या शुद्धिं विवर्जिता ॥ ९३ ॥ तस्या स्तारस्तु लग्नानां  
 शुद्धौ पाणि गृहो मतः ॥ जन्म एषे गुरुः श्रेष्ठः पंचमो नवमो द्विगः ॥ ९४ ॥ एकाद-  
 शः सप्तमस्थः कन्यायाश्च वलो व्रतम् ॥ त्रिषद् दशाय गोमध्यो नष्टस्तु व्योऽष्टमो  
 ऽत्यगः ॥ ९५ ॥ एकया पूजया मध्यस्तु व्योऽन्यो द्विगुणार्चया ॥ कालानि क्रमरो-



धनात् ॥ ९७ ॥ गुरुस्त्वोच्चैस्वर्गमेनेवास्वभेवर्गोत्तमेऽपि वा  
 धर्मोऽत्योऽपि न चारिष्यद्भुभोप्यसत् ॥ ९८ ॥ वक्राति चार्गोवा  
 यस्मिन् राशौ समागतः ॥ तद्वाग्निजं फलं धत्ते जीवो नो परराशिजम् ॥ ९९ ॥  
 कन्यायाः विशेषः ॥ नष्टात्मजा १ धनवती २ विधवा ३ कुशीला ४ पुत्रान्विता ५ परता  
 ६ सुभगा ७ विपुत्रा ८ स्वामिप्रिया ९ विगतकोशधना १० धनाढ्या ११ वंध्या १२  
 भवेत्सुरगुरौ क्रमशो विवाहे ॥ १०० ॥ कस्यचिन्मते विशेषः ॥ अष्टमे द्वादशे वापि च  
 तुर्थे वा दृश्यते ॥ पूजा तत्र न कर्तव्या विवाहः प्राणनाशकः ॥ १०१ ॥ षष्ठे जन्म  
 नि देवे ज्ये तृतीये दशमेऽपि वा ॥ भूरिपूजा पूजितश्च कन्याया भ्युभकारकः ॥ १०२  
 ॥ एकादशे द्वितीये वा पंचमे सप्तमेऽपि वा ॥ नवमे च सुराचार्ये कन्यायाः कथित-  
 भ्युभः ॥ १०३ ॥ अथ वरस्य रविवलम् ॥ तृतीयः षष्ठगश्चैव दशमे कादश स्थितः  
 रविः शुद्धो निगदितो वरस्यैव करग्रहे ॥ १०४ ॥ जन्मस्थे च द्वितीयस्थे पंचमे सप्तमेऽ

पिवा ॥ नवमे भास्करे पूजां कुर्व्यो त्यागि गृहोत्सवे ॥ १०५ ॥ चतुर्थे वायुमे चैव द्वा-  
 दशे भास्करे स्थिते ॥ वरः पञ्चत्वमाप्नोति कृते यागि गृहोत्सवे ॥ १०६ ॥ कालाति-  
 क्रान्ते विशेषः ॥ यदि स्त्रियवत् वृषणयस्थो वरस्यो द्वादशे शुभः ॥ मध्यः पंचविंशतैक  
 नवगः पूजयेत्तमः ॥ १०७ ॥ हिरव्यो द्वादशस्तुर्योऽथायमस्त्रिगुणार्चनात् ॥  
 अथोभयोश्चंद्रवलम् ॥ गार्ह्यप्रागुक्तमुद्वाहे द्वयोश्चाद्रमसंवलम् ॥ १०८ ॥ अथजन्म-  
 मासादि दोषा पवादः ॥ स्वजन्ममास क्षीतिथि क्षणेषु चैनाशिका दृष्ट गणेषु चैवम्  
 ॥ नो द्वाहमात्मा भ्युदया भिकांक्षी नैवाद्य गर्भद्वितयं कदाचित् ॥ १०९ ॥ जन्ममा-  
 सादि के ज्येष्ठे विवाहो वरकन्ययोः ॥ आद्यगर्भभवो नैवो नो नाद्यजनयोस्तयोः ॥  
 ॥ ११० ॥ त्रिज्येष्ठं नेष्टमुद्वाहे द्विज्येष्ठं मध्यमं स्मृतम् ॥ कृत्तिकास्थे रवौ केचित्त्रिज्येष्ठं  
 तु शुभं जगुः ॥ १११ ॥ अथ केया विन्मते विशेषः ॥ नेष्टं त्युद्वाहनं केचित्त्रिज्येष्ठयोस्तु परस्पर-  
 म् ॥ पुत्रो द्वाहानुषरमासान् नो कन्याकर्पीडनम् ॥ ११२ ॥ मुंडनामुंडनवापि - १

इति कुले सप्तमतीऽन्यथा ॥ सीमन्तो द्वाहनं चीलं केशान्तं व्रतबंधनम् ॥ ११३ ॥ गुरु  
 मंगलमेतत्स्यात्तदन्यत्त्रयु मंगलम् ॥ गुरु मंगलतो नेष्टं परमासा त्रयु मंगलम् ॥  
 ॥ ११४ ॥ शुभत्रयं तथा पित्र्यं कृत्यं स्वीय कुलेन सत् ॥ सहोदर प्रसूतानां भ्रातृणां  
 गालं कुल्यादद भेदेऽथ वा पुनः ॥ ११५ ॥ चतुर्हिना न्तरे वापि संकटे तु दिना न्तरे ॥ प्रागुक्तं सं-  
 द्यो दितं ॥ यमयोस्तु विशेषोऽयं कार्या त्सर्वा स्सह क्रियाः ॥ ११६ ॥ एको हरसं-  
 द्यन्न मेक स्मे कन्य का हयम् ॥ न देयं न च देये च सोदराभ्यां सहोदरे ॥ ११७ ॥ वि-  
 वाह निम्नया वृद्धं कुले वध्वा वरस्य च ॥ पित्रा देर्मरणे याते विवाहो नतयो ष्यु-  
 भः ॥ ११८ ॥ अथ वा वत्सरा वृद्धं मास षड्वादथोऽपि वा ॥ ना सोर्द्धं सूनूकान्तो वा-  
 रा न्या घ्रास्तः कार गृहः ॥ ११९ ॥ अथ विवाहे शुभमासाः ॥ मेष दृष्टिष्वक कुम्भेषु मका

रे मिथुने वृषे ॥ रवौ पाणि ग्रहः श्रेष्ठः युग्मे विष्णुश्रया वधि ॥ १२२ ॥ वैशाखः फाल्गु-  
 ल्गुणौ माघौ ज्येष्ठ श्रैवे शुभ प्रदाः ॥ मासा उद्धहने मार्गो नध्यो ऽन्ये त्व शुभामताः  
 ॥ १२३ ॥ वृश्चिके मकरे मेघे विधमाने दिवा करे ॥ कार्तिकः पौष चैत्रौ वा विवाहे  
 त्वेव शोभनाः ॥ १२४ ॥ मार्गशीर्षे धनुष्यर्के मीनार्कः फाल्गुणे शुभः ॥ सौर-  
 ज्ञत विवाहा दौ मासः सर्वत्र शस्यते ॥ १२५ ॥ चान्द्रो मासस्तु विंध्यादे भर्गो दक्षि-  
 णा कै मतः ॥ योगस्तयो विवाहा दौ शोभन स्सौर चान्द्रयोः ॥ १२६ ॥ अथ विवाहे  
 तिथिवार नक्षत्राणि ॥ वस्ती दशो ऽष्टमी ऋक्ता कल पक्षान्य पञ्चकम् ॥ शुक्ला चैत्र्य  
 ति पक्षेष्टा तिथयो ऽन्येतु शोभनाः ॥ १२७ ॥ सौम्या वारा शुभामध्या स्तूर्य  
 मन्द कुजा धमाः ॥ रोहिण्यां व्युत्तरे मूले ऽनु राधारेवती मृगे ॥ १२८ ॥ हस्ते स्वाती  
 मृगा क्षीरां शोभनं कर पीडनम् ॥ सतूदा पूर्व फाल्गुण्यां नो लभेच्छं ततो न स-  
 त् ॥ १२९ ॥ पुष्योपि काम् योषि त्वा च्छा यमा प प्रजा पतेः ॥ अथ विवाहे दश महा

१८१  
 शि- दोषाः ॥ लता पातो युतिर्वेधो यामित्रं बुधपंचकम् ॥ एकार्गलो पग्रहो चक्रांति  
 साम्यंततः परम् ॥ १३० ॥ दग्धा तिथिं च विज्ञेयं दश देवा महा वलाः ॥ एतान्दे-  
 या न्यरित्यज्य लग्नं संशोधयेद्बुधः ॥ १३१ ॥ अयलता ॥ नक्षत्रं द्वादशं भानुस्त-  
 तीयं लत्तया कुजः ॥ षष्ठ्यक्षीवोऽष्टमस्मन्दो हन्ति दक्षिणतस्सदा ॥ १३२ ॥ वामे-  
 न सप्तमं चान्द्री नवमे सिंहिका सुतः ॥ हन्ति भं पंचमं शुक्रो द्वादशं पूर्णचन्द्रमाः  
 ॥ १३३ ॥ रवेर्लजा हरेर्द्वितं कुजस्य कुरुते मृतिम् ॥ बृहस्पतेर्वन्धुनाशं शनैः कुं-  
 ध्यां त्कुल क्षयम् ॥ १३४ ॥ बुधस्य कुरुते त्राशं लत्ता राहोर्विनाशनम् ॥ शुक्र-  
 स्य दुःखदा नित्यं त्राशदाच कला निधेः ॥ १३५ ॥ अथ यातः ॥ सूर्य युक्ताच्च नक्ष-  
 आ वेंयु पातो विधीयते ॥ मघा श्लेषाच्च चित्राच्च सानुराधाच रेवती ॥ १३६ ॥ श्र-  
 चणोपि च षड्भूय पातदुष्टं निगद्यते ॥ अश्विनी मघा चिन्ता गणयेत्लग्न आ वधिं  
 ॥ १३७ ॥ पावकः पवमानश्च विकारी कलहोपरः ॥ मृत्युः क्षयश्च विज्ञेयः

पात बद्धस्य लक्षणां ॥ १३८ ॥ पातेन पतितो हरिः ॥ आते-  
 न पतित इष्टांस्तस्मात्पातं विवर्जयेत् ॥ १३९ ॥ अथ युतिदोषः ॥ यन्नेराशौ  
 भवेच्चन्द्रे गृहस्तत्र बदा भवेत् ॥ युतिदोषस्तदा द्यौयो विना शुक्रप्रभुभा शुभः ॥  
 १४० ॥ रविणा संयुतो हानि भौमे न निधनं प्राप्तिः ॥ कुर्वन्ति मूलनाशं च राहुके  
 तु शनैश्चराः ॥ १४१ ॥ अथ वेधः ॥ बधू प्रवेष्टाने दाने वरणे पाणि पीडने ॥ वेधः  
 पंच शलाकारव्योऽन्यत्र सप्तशलाककः ॥ १४२ ॥ रेखाः पंचोर्द्धगास्तिर्यग्देहे  
 रेखे च कोणादयोः ॥ चक्रं यच्च शलाकारं विवाहे वेधसाधनम् ॥ १४३ ॥ ईशा  
 द्वितयरेखा तस्मा भिजि त्कतिका दिकम् ॥ लिखेत्सव्य क्रमात्तत्र गृहा देया यथाय  
 यम् ॥ १४४ ॥ एकरेखा स्थितो विद्वादिन नाथा देयो गृहाः ॥ विवाहे तत्र मांसं तु न  
 जीवति कदाचन ॥ १४५ ॥ अश्विनी पूर्व फाल्गुण्या भरणी चानुराधया ॥ अभि-  
 जिच्चापि रोहिण्या कतिका च विप्रायया ॥ १४६ ॥ मृगश्वोत्तरादेन पूर्वाषाढात-

संश्लिष्टाद्र्या ॥ पुनर्वसुश्च मूलेन तथा पुष्यश्च ज्येष्ठया ॥ १४७ ॥ धनिष्ठाया तथा ज्येष्ठ्या  
 मघायाऽपि अत्रवर्णो न च ॥ रेवत्युत्तर रोहिण्या हस्ते नोत्तर भाद्र पात ॥ १४८ ॥ स्वा-  
 त्या शत भिषा विद्वा चित्रया पूर्व भाद्र पान् ॥ विज्ञान्येतानि वज्र्यानि विवाहे भानि-  
 को विदेः ॥ १४९ ॥ रविर्वेधे च वैधव्यं कुजवेधे कुल क्षयः ॥ बुधवेधे भवेद्वध्या प्रव-  
 ज्यर्था गुरु वेधतः ॥ १५० ॥ अशुक्रा शुक्र वेधे च सौरे चन्द्रे च दुःखिता ॥ परपुरुषरता  
 राहो केतो स्वच्छन्द चारिणी ॥ १५१ ॥ अथ यमिन्त्र देवः ॥ चतुर्दश च नक्षत्रं यामित्रं  
 लग्नभा त्सूतम् ॥ शुभयुक्तं तदिच्छंति पापयुक्तं च वर्जयेत् ॥ १५२ ॥ चन्द्रश्चाग्नी  
 शुक्रजीवौ यामित्रे शुभकारकम् ॥ त्वर्भानु भानु मंदाशयामित्रे चाशुभप्रदाः ॥  
 १५३ ॥ चंद्रा ह्यलग्नतो वापि ग्रहा वज्र्याश्च सप्तमे ॥ तत्र स्थिता ग्रहा नूनं व्याधिवै-  
 धव्यकारकाः ॥ १५४ ॥ अथ बुधपञ्चकम् ॥ धार्त्र्या तिथि १५ मीस १३ दशा २० सु ८  
 वेदा ४ संक्रान्ति तो जात दिने प्रच योज्याः ॥ ग्रहे विभक्ता यदि पञ्चकं स्याद्भोगस्त- १५५

१८४ सं. श्रि. याग्निर्नृपचौरमृत्युः ॥ १५५ ॥ अन्यच्च ॥ तिथिचारमलग्नां कोरसाग्न्यजा-  
 सवेत्युक् ॥ नन्दाप्तपंचशेषेरुक् वह्निराट्चौरमृत्युदत् ॥ १५६ ॥ शेषैके-  
 नवभिर्भक्ते पंचशेषे सश्रल्यकं ॥ अथ दक्षिणात्यप्रसिद्धपंचकं ॥ शुक्लाद्यास्तिययो  
 याता लग्नाख्या भाजिता ग्रहेः ॥ शेषेष्टद्विचतुस्तर्कभूमिते वाराणपचकं ॥ १५७  
 रोगोग्निर्नृपतिश्चौरौ मृत्युश्चेति यथा क्रमात् ॥ प्रसिद्धं दक्षिणा त्यानां शुभे का-  
 र्ये विवर्जयेत् ॥ १५८ ॥ रोगचौरं त्यजेद्वात्री दिवा राजन्यं पंचकम् ॥ संध्य  
 योर्मृत्युर्दंत्याज्यं सर्वदा वह्निपंचकम् ॥ १५९ ॥ रवौ रोगकुजे वह्निः शनौ  
 च नृपपंचकम् ॥ वर्ज्यं पुनः कुजे चौरं बुधवारिचमृत्युदम् ॥ १६० ॥ नृपा-  
 रं नृपसेवायां गृहगोपेऽग्निपंचकम् ॥ याने चौरं व्रते रोगं त्यजेन्मृत्युकरं  
 ग्रहे ॥ १६१ ॥ लग्ने पूर्णवलोपेते नदोषः पंचकस्यच ॥ १६२ ॥ अथैकार्गलदो-  
 षः ॥ योगां के विषमे सैके साष्टा विंशति के समे ॥ तदर्द्धं संख्यमं मूर्द्धि चक्रे १८



स्वाजूरि के न्यसेत् ॥ १६३ ॥ अथैतस्योदाहरणं ॥ व्यतीपाते अमश्लेषाव्या-  
 घाते च पुनर्वसुः ॥ अतिगंडे नुराधा च मूर्द्धिभं परिधे मघा ॥ १६३ ॥ विष्कुंभे-  
 चाश्विनी पुष्यो वज्रो चित्रा तु वैधृती ॥ तथा मूले मृगे गंडे मूलभं मूर्द्धि कीर्त्ति ॥  
 १६४ ॥ चोगे ध्ये तेवु संभूतिर्नान्येव्ये कार्गलस्य च ॥ अथैतस्य चक्रम् ॥ एका चोर्द्ध  
 गता रेखा तिर्यक् कार्व्यात्रयो दश ॥ मूर्द्धिभं मूर्द्धि विन्यस्य साभिजित्तत्तनीन्य-  
 सेत् ॥ १६५ ॥ एका गलितो मिय अथैक रेखा गश्चे द्विधूरविः ॥ विवाहादि शुभे कार्ये  
 नेष्ट त्वेका गलाभिधः ॥ १६६ ॥ अथोपपद्येयः ॥ सूर्य भात्यंत्वमे विद्युन्मक्षत्रेश  
 लमष्टमे ॥ चतुर्दशे शनैः पातः केनुरखा दशे तथा ॥ १६७ ॥ ऊनविंशे भवेदु-  
 क्ता निघन्ति च द्विविंशती ॥ अथोविंशति केकं पश्चतुर्विंशे च वज्रकः ॥ १६८ ॥  
 दिक् सप्त तिथि तत्वारव्य स्वर्ग संख्यानि आनि च २०।१७।१५।३४।२१ ॥ एता-  
 न्यपि जगु अथोपग्रह क्षणीति केचन ॥ १६९ ॥ पुननाश करी विद्युच्छूलः पुन वि- १८५

नाशकः ॥ शनेः पानो वंशघातः केतोर्देवनाशकः ॥ १७० ॥ द्रव्यनाशकरी  
 चोक्ता निघीतो वंधुनाशकः ॥ कंपः कंपयते नित्यं वज्रेस्त्री व्यभिचारिणी ॥ १७१  
 ॥ उपगृहेषु लतायां तथा चण्डा युधा न्ह्ये ॥ गृहोऽस्ति यत्प्रमारां प्रो विद्वांशस्त  
 त्रमारा कः ॥ १७२ ॥ अथक्रांति साम्यदोषः ॥ ऊर्ध्वस्तिस्त्रास्तिस्त्रिखो मध्ये मीनं लिखे  
 द्रुधः ॥ सूर्ये चन्द्रमसोर्दृष्टे क्रांति साम्यं निगद्यते ॥ १७३ ॥ मीनः कन्यकया  
 युक्ता मेघस्सिंहेन संगतः ॥ मकरे च वृषः क्रांतिः चायोऽपि मिथुने न च ॥ १७४  
 कर्क वृश्चिकयो र्बोधो वेधश्च तुलकुंभयोः ॥ क्रांति साम्ये कृतो ह्यहेन जीवति कः

|  |    |         |    |
|--|----|---------|----|
|  | ११ | १२      | १३ |
|  | १० | क्रांति | २  |
|  | ९  | सा      | ३  |
|  | ८  | ७       | ४  |
|  |    | ६       | ५  |

दाचन ॥ १७५ ॥ अथ दग्धा दोषः ॥ द्वितीया धन मीने बुचतु  
 धी द्ययकुंभयोः ॥ मेघकर्कटयोः वृषी कन्यायां मिथुनेऽष्टमी ॥  
 १७६ ॥ दशमी वृश्चिके सिंहे द्वादशी मकरे तुले ॥ एतास्तु तिथ-  
 यो दग्धा प्रशुभे कर्मणि वर्जिताः ॥ १७७ ॥ अथ दश दोषाः ॥

तिष्ठ्यग वेदैक दिगून विंशप्रस्तन्यं भवाद्या दश विंश संख्याः ॥ दृष्टो हुना सूर्ययुक्तो  
 हुना च योगा दमी च दश योग दोषाः ॥ १७८ ॥ मरुन्मेघाग्निभूपालचौरभृत्युरु-  
 ज्ञो शनिः ॥ कलिर्हीनिर्दशोद्गहे दोषा स्त्याज्या सदा बुधैः ॥ १७८९ ॥ योगां  
 के विषये सैके समे सव सुलोचने ॥ दली कृत्वा श्विनी पूर्व दश योग मुदा हृतम् ॥  
 १८० ॥ दश योगे महाचक्रे प्रमादाद्यदि विभ्र्यते ॥ क्रूरसौम्यग्रहैर्वीपि संपत्यो रे-  
 क नाश्रनं ॥ १८१ ॥ अथ दश दोषापवादः ॥ गुरौ लग्नाधिपे श्रुक्ते सर्वोर्थे लग्न केंद्रजे ॥  
 दश दोषा विनं प्रयंति यथाग्नौ तूल राशयः ॥ १८२ ॥ गुरुणा भृगुणा वापि संयुक्तो  
 दृष्ट मेव च ॥ दश योग समा युक्त मपि लग्नं शुभावहम् ॥ १८३ ॥ एकार्गलोपग्रह  
 पात लक्षाद्या मित्रकर्तृर्युदया स्तदोषाः ॥ नश्यन्ति चन्द्रार्कवल्लोपपन्ने लग्ने यथा  
 कभ्युदये तु दोषाः ॥ १८४ ॥ उपग्रहर्क्षङ्कुरुवाल्हिकेषु कलिंगा वंगेषु च पाति  
 ततम्भम् ॥ सौराष्ट्र साल्वेषु चलति तं भंत्यनेन विदं किल सर्व देशे ॥ १८५ ॥

शि-लता मालव के देशे यातः कोशल के तथा ॥ एका गलितु कस्मीरे तेषां सवर्जव-  
 र्जयेत् ॥ १८६ ॥ युति दोषो भवेद्दोषे यातित्र स्य तु यामुने ॥ वेधये वस्तु विव्या-  
 र्व्ये देशे नान्येषु केचन ॥ १८७ ॥ अथापरः यमघंटयोगः ॥ शैला ह्यश्रुनयः सूर्ये ७।  
 ५। ४। चन्द्रे षट् षट् वेद ४ यवर्ताः ॥ ७ ॥ भौमे वाणा भूग्नि ३ नेत्राणि २ सोम्ये  
 वेदा ४ क्षि २ वायवः ५ ॥ १८८ ॥ गुरु वारेग्नि ३ चंद्र १ भाः ८ शुक्र नेत्रा २ द्वि ७  
 वन्तयः ३ ग्रानौ चन्द्रे १ भ ८ तर्काः ६ स्युः कुलि को व्या मघं एतकः ॥ १८९ ॥ अ-  
 र्द्र प्रहर संज्ञां स्तान्मंगलेषु विवर्जयेत् ॥ निधनं प्रहरार्द्धे तु निस्स त्वं यमघंट के ॥  
 कुलिके सर्व नाशः स्यात् रात्रा वेतेन दोषदाः ॥ १९० ॥ अथ कर्त्तरी दोषः ॥ इविणा  
 व्याययो १२ र्लगा च्छा द्या पा यवे चरी ॥ यदि स्यातां तदा ज्ञेया कर्त्तरी दोष कार-  
 का ॥ १९१ ॥ अथ महा कर्त्तरी ॥ धने क्रूर गृह वक्त्री व्यये मार्गी भवेद्यदि ॥ सामहा-  
 कर्त्तरी ज्ञेया ग्रयत्नात्तां विवर्जयेत् ॥ १९२ ॥ अथ दोषा पवादः ॥ धने मार्गी व्यये व-

श्रीवक्तोवामार्गगावुभौ ॥ लग्नेवाद्वादशे सोम्यो यदि चेत्कर्त्तरी नसा ॥ १८३ ॥  
 शृङ्ग जीव बुधैः केन्द्र कोणगैः सानहुः खदा ॥ कर्त्तरी कािका यासौ शूत्रु नीच क्षगो  
 याद ॥ १८४ ॥ अथ वास्तमितौ तन्न न दोषः कर्त्तरी भवः ॥ अथा परे दोषः ॥ मर्मवेधः कंठ  
 कश्च शूल्यं क्षिद्रं चतुर्थं कम ॥ एत द्वौषं चतुष्कं च परित्याज्यं प्रयत्नतः ॥ १८५ ॥  
 लग्ने पापे मर्म वेधः कंठको नव पञ्चमे ॥ चतुर्थे दशमे शूल्यं क्षिद्रं भवति सप्तमे ॥  
 १८६ ॥ मणामर्म वेधे स्यात्कंठके स्यात्कुल क्षयः ॥ शूल्ये च नृपते भीतिः पुत्र  
 नाशश्च क्षिद्रके ॥ १८७ ॥ मासान्ते दिन मे कंतु तिथ्यन्ते घटिका द्वयम् ॥ नक्ष-  
 त्रान्ते घटी त्रीणि विवाहादौ विवर्जयेत् ॥ १८८ ॥ अथ नक्षत्र विषघटिकाः ॥ खवा-  
 णाश्च जीना रिंश त्ववेदा मनवः कमात् ॥ स्वर्गलिंश न्स्वा न्न्ताः खरा माविंश

| अ  | भ  | रु | रे | मृ | ज्या | पु | पु | पु | म  | पू | उ  | ह  | चि | स्वा | वि | भुज्ये | मू | पू | उ  | अ  | ध  | श  | पू | उ  | रे |
|----|----|----|----|----|------|----|----|----|----|----|----|----|----|------|----|--------|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| ५० | २५ | ३० | ४० | १४ | २५   | ३० | ३० | ३० | ३० | २० | २० | २० | २४ | २४   | २४ | २०     | १४ | २५ | २० | १० | १० | १० | २५ | ३० |    |

तिर्धृतिः ॥ १८६ ॥ भूनेत्राः खयमाः शक्राः मनुकाः श्वनुर्यशः ॥ बटपञ्चाश-  
 ज्जिनाश्चैव विंशतिश्च ककुपुदिशः ॥ २०० ॥ धृतिर्भूपाजिनारिंशद्विभा-  
 दघटिकाः स्तृताः ॥ आर्यश्चतुष्टयं त्याज्यं घटिकानां विद्याभिधम् ॥ २०१ ॥  
 सर्वर्षघटिकाभिश्च प्रोक्तर्षघटिकाहताः ॥ बक्ष्या भक्ताः स्फुटा नाड्यस्तथास्युर्वि-  
 षनाडिकाः ॥ २०२ ॥ अथतिथिविषघटिकाः ॥ तिथिवाणाहसत्तागुपञ्चवेदरा-  
 धराः ॥ दिग्वन्त्यर्कमनुस्माभृद्वसवो घटिकाः क्रमात् ॥ २०३ ॥ आभ्यो घटीच-  
 तुष्कञ्च विषंप्रति यदा दितः ॥ अथवारविषघटिकाः ॥ नखयुगमार्कदिक् सप्तवारा-  
 त्वमिताः क्रमात् ॥ आभ्यो नाडी चतुष्कञ्च विषन्नद् विवासरात् ॥ २०४ ॥ ति-  
 थिविषनाडिका चक्रम् ॥ सुतीधनार्थम् ॥ अथवारविषघटी चक्रम् ॥ अथ विषनाडी दोषापवादः ॥

|   |   |   |   |   |   |   |   |   |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |     |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | ३१ | ३२ | ३३ | ३४ | ३५ | ३६ | ३७ | ३८ | ३९ | ४० | ४१ | ४२ | ४३ | ४४ | ४५ | ४६ | ४७ | ४८ | ४९ | ५० | ५१ | ५२ | ५३ | ५४ | ५५ | ५६ | ५७ | ५८ | ५९ | ६० | ६१ | ६२ | ६३ | ६४ | ६५ | ६६ | ६७ | ६८ | ६९ | ७० | ७१ | ७२ | ७३ | ७४ | ७५ | ७६ | ७७ | ७८ | ७९ | ८० | ८१ | ८२ | ८३ | ८४ | ८५ | ८६ | ८७ | ८८ | ८९ | ९० | ९१ | ९२ | ९३ | ९४ | ९५ | ९६ | ९७ | ९८ | ९९ | १०० |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|

कोणा ६। ५ स्ता ७ धि ४ नभः १० संस्थः सुहृत्सीम्ये क्षितो ऽपिवा ॥ सद्ग्राशरावा  
विधुः स्वांशे लम्बे वा केन्द्र १०। १। ४। ७ । कोणा गः ३। ५। ॥ २०५ ॥ निहन्याद-  
खिलं दोषं विष नाही समुद्रवम् ॥ अथ ग्रह दृष्टिः ॥ तृतीय दशमे पादे त्रिको-  
णो ऽग्नि द्वयं ग्रहः ॥ पश्येत्तुर्यो ऽष्टमे पादत्रयं पूर्णान्नु सप्तमे ॥ २०६ ॥ पूर्णान्नु त्रिवर्षा  
मंदः पंचमं नवं गुरुः ॥ भौमीकं चतुर्थं सप्तमं सकला ग्रहाः ॥ २०७ ॥ अथ लग्न  
शुद्धिः ॥ लग्ने लग्नं लवे वापि लग्नांशे शयुते क्षिते ॥ लवेश शुभ मित्रेण दृष्टे वा स्वामिना  
शुभः ॥ २०८ ॥ घूनांशे पूनलग्ने वा घूनांशे शयुते क्षिते ॥ घूनांश पति सन्मित्र हृष्टे व  
ध्वा शुभं स्मृतम् ॥ २०९ ॥ लग्ने श्लेष्मन्मंशेशः स्वांशं पश्यति वामिथः ॥ तद्वरस्य  
शुभं ह्येय मन्यथानैव शोभनम् ॥ २१० ॥ घूर्ने शेषः नद्या स्नांश पति घूनांश मीक्षते  
॥ तन्मिथो वा तथा वधाः शुभन्त्वितरणानि ॥ २११ ॥ नीच राशि गते शुक्रे प्राप्नुक्षे  
त्र गते पिवा ॥ भगु बह स्थितो दीपो नास्ति तत्र न संशयः ॥ २१२ ॥ अस्तंगे नीचगे भौ-

222

मे शत्रु क्षेत्र गतेऽपि वा ॥ कुजाष्टमो द्वयो दोषो न किंचिदपि विद्यते ॥ २१३ ॥ गुरुरेको  
 ऽपि केन्द्रस्थः शुक्लो वा यदि वा बुधः ॥ हरेस्सृतिर्यथा हति तद्दोषास्त्रिकोणगाः ॥ २१४  
 लनोपग्रहचरदीशचन्द्रया मित्रसम्बन्धः ॥ तत्केन्द्रो गुरुर्हन्ति सुपक्षः पन्त्रगानिव ॥  
 २१५ ॥ सङ्करराशेरशुभो नवांशः प्रोक्तस्स पापोऽपि विलम्बसंस्थः ॥ त्रिकोणकेन्द्रेषु  
 गुरुः सितो वायदा तदा सावशुभोऽपि शस्तः ॥ २१६ ॥ यत्रैकादशगः सूर्यो दोषानाश्र  
 ययुस्तदा ॥ स्मरणादेव रुद्रस्य पापजन्म प्रातोद्भवम् ॥ २१७ ॥ वर्गोत्तमगते लग्ने स-  
 र्वदोषा लयं ययुः ॥ चन्द्रे वाप्यथ वायेऽपि ग्रीष्मे कुप्रागितो यथा ॥ २१८ ॥ सुहृत्तल-  
 नवद्वर्गकुनवांशग्रहोद्भवाः ॥ ये दोषास्तानि हृत्येव यत्रैकादशगः शश्विः ॥ २१९  
 ॥ नक्षत्रदोषं कुनवांशदोषं गंडांतदोषं च मुहूर्तदोषम् ॥ विरुद्धपंचांगविरुद्धदोषं  
 निशान्करो स्नाभं गतो निहन्ति ॥ २२० ॥ त्रिकोणो केन्द्रे वा मदन रहिते दोषशतकं हरे  
 त्सौम्यप्रशुक्तो द्विगुणमपि लक्षं सुरगुरुः ॥ भवेदाये केन्द्रे गयउग्रलवे प्रोयादितदा



समूहं दोषाणां दहनं द्वे तूलं प्रमथति ॥ २२१ ॥ अथ पञ्चधा दित्याज्यलग्नानि ॥ दिने सदा  
न्या चषमेव सिंहाः रात्रौ च दन्यामिथुनं कुलीरः ॥ मृगस्तु लालिर्वधिरो पराक्षि संया  
सु कुक्का घटधन्वि मीनाः ॥ २२२ ॥ दिवान्धो वरहंता च रात्र्यं धाधननाशकाः ॥ दुः  
खदो वधिरो लग्नः कुक्को वंशविनाशकः ॥ २२३ ॥ अथ होलाष्टकम् ॥ मुक्ताष्टमीं समा  
भ्य कालरास्य दिनाष्टकम् ॥ पूर्णिमा भवधिं कृत्वा त्याज्यं होलाष्टकं प्रभुभे ॥ २२४ ॥  
ऐरावत्यां विषाशायां शतद्वी च त्रिपुष्करे ॥ होलाष्टकं विवाहादौ त्याज्यं मन्यत्र शोभन  
म् ॥ २२५ ॥ राश्रयो मास प्रून्याश्च लग्नें काराणधपंगुयत् ॥ तत्याज्यं मालवे गौडेना  
न्यत्रा शुभदं स्मृतम् ॥ २२६ ॥ हन्यादिनार्हजन्देशं तिथिस्सिद्धा वनोद्भवम् ॥ गुरुः  
केन्द्रे गतः प्रान्त्य तिथिजं लाभग प्रशुभः ॥ २२७ ॥ अन्दायनर्तुमासोत्थाः पक्षनिष्ठ्य  
क्ष संभवाः ॥ काराणधवधिरोद्भूता दग्धलग्न तिथेर्भवाः ॥ २२८ ॥ अकालजाश्च नी  
हारविद्युत्याताश्च संभवोः ॥ यो वेष प्रतीसूर्य्य शक्रचापध्वजादयः ॥ २२९ ॥ दोष

प्रदा मंगलेषु कालजाश्चेन्न दोषदाः ॥ दृष्यमीदृशिको मीनः कन्या मकरकर्कटाः ॥  
 २३० ॥ लग्नेष्वेतेषु नो दोषो जन्मतो ह्यष्टमे व्यपि ॥ अथ शुभनवांशाः ॥ कन्या युग्मतुला  
 धन्वि नवांशाः शुभदा ग्रहाः ॥ विवाहे न्येतु मीनस्य नवांशाः शुभदा जगुः ॥ २३१ ॥  
 अथ मंगदाग्रहाः ॥ लग्ने प्रेने श्वरः सूर्यो लग्नारि निर्धने प्रशी ॥ लग्नेऽष्टमे मही स्रुतुरष्ट-  
 मे बुधवाक्यती ॥ २३२ ॥ एतु सुख्ये विलग्ने वानिधनारि गतो भृगुः ॥ द्यूनेतु रवेचरास्व-  
 र्वे विवाहे मंगदाः स्मृताः ॥ २३३ ॥ कुजः रवे द्वादशे मन्वे लग्ने शो निर्धनारिगः ॥ तृ-  
 तीये भार्गवश्चन्द्रो व्यये नैनेऽपि शोभनाः ॥ २३४ ॥ अथ रेखा प्रसङ्गाः ॥ व्यायाष्टषट्  
 सुरविकेतु तमोऽर्क पुत्राः व्यायारिगः क्षिति सुतो द्विगुणाय गोक्षः ॥ सप्त व्यायाष्टरहि-  
 तौ द्वि गुरू सितोष्ट त्रि द्यून षट् व्यय ग्रहान्यरिहन्त्यशस्तः ॥ २३५ ॥ अथ दिनज्ञानम् ॥ छा-  
 या पादो रस्तो पेतो एक विंश शतं भजेत् ॥ लब्धो कै घटिका ज्ञेया शेषा के च पलाः  
 स्मृताः ॥ २३६ ॥ अथेष्टकालाह्नग्रायनम् ॥ सायनार्कस्य भवानि निजोदय विनाडिकः

खत्रि भक्ता भवेद्भोग्य कालो लब्ध पलात्मकः ॥ २३७ ॥ सोध्योऽभीष्ट घटी श्यञ्च  
 तदग्रम् निजोदयः ॥ शोभ्याः शेष खरा मधान शुद्ध तिष्ठि भाजितम् ॥ २३८ ॥ ल-  
 ब्धमंशादिकं योज्य मेवादौ शुद्ध राशिभिः ॥ अयनांश विहीनाय विलग्नं तत्स्फुटं  
 भवेत् ॥ २३९ ॥ भोग्य कालेन शुद्धिं श्रेदिष्ट कालः पलात्मकः ॥ खरा मधो हृतस्त्री  
 योदये नापिल वादिकम् ॥ २४० ॥ योज्यं सूर्ये स्फुटं लग्न मयनांश विवर्जितः ॥  
 रात्रीष्ट कालतो वापि सयङ्काकाच्च पूर्ववत् ॥ २४१ ॥ अथास्यष्ट लग्नादिष्ट काल ज्ञानम् ॥  
 भानी भोग्य स्तुयः कालो भुक्त काल स्तयातनीः ॥ तदैक मेतयो र्मध्यो हया ह्वं सम-  
 य स्फुटः ॥ २४२ ॥ यद्ये कर्क्षे नु लग्ना क्तैतियो र्भागान्नै र्हतः ॥ स्वीयो दयः ख-  
 रा माप्तीऽभीष्ट काल स्फुट तदा ॥ २४३ ॥ अथ प्रप्रस्तयोगः ॥ प्रुभै स्तनुगतैः खेटै र  
 प्रुभैर्निधनी पगैः ॥ ध्वजो यं परिणी तात्र युवती प्रिय वल्लभा ॥ २४४ ॥ कुजेऽ  
 के लाम गी षष्ठे शनौ चन्द्रे द्वितीयगे ॥ धर्मस्थे खेचरै रन्यैः श्रीवत्सोयोग उत्तमः ॥

२४५ ॥ यदि स्यात्कन्यका लग्ना तृतीये चन्द्रवाक्यती ॥ पञ्चमेश्वरगुणनन्दो योग-  
 श्रानन्दकृत्सहि ॥ २४६ ॥ लाभोऽर्केऽरिगृहे भौमे दुश्चिकेऽथ दाने श्रे ॥ यो-  
 गो यमई चन्द्राख्यस्तनो हा शुभगासती ॥ २४७ ॥ गुरो धर्मवुधे भूतो लाभे भू-  
 गजाभिधः ॥ परिलीताहि वा मासी साध्वी धर्मार्थिदायिनी ॥ २४८ ॥ खतूर्या नव  
 ने सौम्यैः शंखोयं शुभ कृत्सदा ॥ अथनेष्टयोगः ॥ पापा चक्रस्य पूर्वार्द्धे पञ्चदशिसो-  
 म्यरवेचराः ॥ विवाहे चक्रयोगो यं तदूहा स्त्रैरिणी भवेत् ॥ २४९ ॥ सर्वैः केन्द्र गतैः  
 पापैः वापी योगोऽति निन्दितः ॥ सौम्ये लग्ने व्यये विज्ञे पापैः कोटलड कोऽप्यसत् ॥  
 २५० ॥ भौमे द्वादश गोषष्ठे शुक्रे तुर्ये दाने श्रे ॥ कुठारेऽयं समारख्यातः शुभचल्ली  
 विदारणः ॥ २५१ ॥ व्यये केन्द्र विगो शुक्रे रिपो मन्देऽद्यमे विधौ ॥ योग स्यात्कर्मना  
 मायमत्रोदाभिंक्षुकी भवेत् ॥ २५२ ॥ रवौ लग्ने व्यये मन्देऽद्यमेऽत्रो मुशला युधः  
 ॥ तत्रोदायां कुमारी सा कुल मारी भवेद्भुवम् ॥ २५३ ॥ अथ गोधूलिकलमं ॥ विद्ययादिकुलि

कं क्वात विद्धमपाय युक् तथा ॥ लभाद्यारिगतं चन्द्रलम्बे गोधूलिकं त्यजेत् ॥ २५४ ॥  
 ॥ नान्यो गोधूलिके चित्तो दोषाश्चण्डा युधाह्यः ॥ प्रयद्यन्ते यत सर्वे गोरजो भिस्स  
 संततः ॥ २५५ ॥ यत्र चैकादशुश्चन्द्रे द्वितीयो वा तृतीयगः ॥ गोधूलिकस्स विद्वे-  
 यश्चोषा धूलिसुखाः स्मृताः ॥ २५६ ॥ कुलिकं क्वाति साम्यं च मूर्तौ षष्ठाष्टग प्रशसी ॥  
 पंच गोधूलिके त्याज्या अन्ये दोषा प्रशुभा चहाः ॥ २५७ ॥ पाव हिंताते निशि पञ्चिमा  
 यां पश्ये तृतीयं रवि विंव भागम् ॥ तस्मात्परं नाडिक युग्म मेके गोधूलिकालं मुनयो व-  
 दन्ति ॥ २५८ ॥ अर्द्धास्तात्पूर्वं मयूढं घटि कार्दं तु गोरजः ॥ शनौ सार्कं गुरो चास्ते उ-  
 भयत्रान्य वासरे ॥ २५९ ॥ स कालो मंगले श्रेया न्विवाहादौ शुभ प्रदः ॥ अर्द्ध विंवा-  
 त्परं केचिद्वृटी ह्यमिदज्जगुः ॥ २६० ॥ निदाघे सार्द्ध विवेर्कं पिहो भूते हि सांग के ॥ मेघकाले  
 तु पूर्णस्ति प्रीतिं गोधूलिकं शुभम् ॥ २६१ ॥ प्राच्यानां च कालिगानां मुख्यं गोधूलिकं स्मृ-  
 तम् ॥ गंधर्वादि विवाहेषु वैश्यो द्वाहे तु योजयेत् ॥ २६२ ॥ विप्रेषु घटिका लाभे दातव्यं -

गो रजोनुधैः ॥ सकीर्णो गोरजस्सत्तं परेषु दितयं शुभम् ॥ २६३ ॥ महादीयान्यरित्य-  
 ज्य प्रोक्तान् धिमादि के सुच ॥ कारवेहो रजोयावतावल्लग्नं शुभा वहम् ॥ २६४ ॥ अ-  
 थ गृहवशात् ज्ञानम् ॥ सूर्या सति स्त्री च विधौ स्तथा राहितं सुतो ज्ञान्च सुखं गुरो न्च ॥  
 धर्मस्सिता वर्क सुता च वेष्टम जूयात्स मुद्गाह विधौ च युक्त्या ॥ २६५ ॥ लग्नो देहः  
 ॥ २६६ ॥ सुखं स्वशुरेऽकीर्णं प्रशम्य ॥ भर्ता कांता कलत्रे प्रसन्नं स्तनं स्तम्भा त्पुनर्वदेत्  
 ॥ चंद्र पञ्चांगं प्रुद्धो सौम्याय न विवाह से ॥ राज्ञो गो धूली दे लग्ने खड्गो हाहः प्र-  
 शस्यते ॥ २६७ ॥ अथ हीन जातीनां विवाहे विशेषः ॥ अनुकृतिविधौ आसर्षे संकीर्णानां शु-  
 भप्रदः ॥ विवाहो धन पुत्रायुः प्रीति सौख्य करो भवेत् ॥ २६८ ॥ अथ मृदादीनां स्नि-  
 धा पुनर्विवाहः ॥ मृदादीनां विवाहर्षे पुनरुद्गहनं स्त्रियः ॥ राज्ञो बुध्यां न तत्रास्ति ति-  
 थि मासादि दूषणम् ॥ २६९ ॥ सूर्य भादे च ४ नेत्रा रश्मि शुभ १ चन्द्र १ स्थिरसा ६

नयः ३ ॥ भू १ राम ३ संमितास्तार गंधर्वीदि विवाहके ॥ २७० ॥ नेष्टाः श्रेष्ठाः  
 क्रमा देतास्त्रिपद्यां गदिता बुधैः ॥ २७१ ॥ अथ विवाहांगकार्यं ॥ कार्यं विवाहका-  
 र्यं विवाहोदित भोजनैः ॥ विवलेऽपि विधौ हित्वा त्रिषष्ट नवमं दिनम् ॥ २७२  
 ॥ चित्रा विशाखा शत तारकाश्विनी ज्येष्ठा भरणी शिवभास्वतुष्टयम् ॥ हित्वा  
 प्रशस्तं फलतैलवेदिका प्रदानं कंठन मंडनादिकम् ॥ २७३ ॥ मूलेस्तु रुद्र  
 अवराणार्कं पौषा विष्वेष्ट चित्रा नलं खतीषु ॥ संस्थापनं कंजिक कुंडिका यावारे  
 रवे भूमि सुतस्य प्रस्तम् ॥ २७४ ॥ अथ तैललेपने दिन संख्या ॥ सेवादिराशि जातानां  
 कुर्यात्तैलादि लेपनम् ॥ श्रेल दिग्वाण दिग्वाणान्सप्तंगेषु प्रेरिष्विषु ॥ २७५ ॥  
 वाण शैलेषु घरेषु क्रमात्कैश्चिद्विती रितम् ॥ अथ वेदिका निर्माणम् ॥ हस्तोद्धिताचतु-  
 र्हस्तैश्चतुरां समंततः ॥ स्तंभैश्चतुर्भिस्सुश्लक्ष्णैर्वाम भागो स्वसम्पन्नः ॥ २७६ ॥  
 ईशान्यां स्थापयेत्स्तंभं सिंहादि त्रितये रक्षौ च्छिन्नादि त्रिभेवाथो नैऋत्यां कुंभतरित्रिभे

नमः ॥ दृष्यान्नयं तथा मे यो स्तंभ खात स्तथैव हि ॥ २७७ ॥ अथ विवाहानंतरं मंडपो ह्यसन्म  
 २० ॥ मण्डपो ह्यश्रानं कार्थ्यं समे च शुभ भेतिथौ ॥ षष्ठं तु विषमं नेष्टं मुक्ता सप्तमं पंचमौ  
 ॥ २७८ ॥ उत्पानात्सह पात दग्ध तिथिभिर्दुष्टांश्च योगोऽस्तथा चन्द्रे ज्योश्रान  
 सामथा स्तमयनं तिथ्याः क्षयर्द्धी तथा ॥ गंडानं सच विष्टि संक्रमं दिनं तन्वं श्रयास्तं  
 तथा तन्वं श्रेष्ठ विधुन यादृग्गुणान्या पस्य वर्गोऽस्तथा ॥ २७९ ॥ सेतुः क्रूरवर्गो  
 द्योऽग्रा सुदया स्ना सुद्धि चंडा युधान् खार्जूरं दश योग योग सहितं यामि च तत्ता-  
 मिधम् ॥ वाणो पग्रह पाप कर्त्तार तथा तिथ्या क्षयो गोत्थितं दुष्टं योग मथार्द्र यामकु-  
 लिकाद्यान्वार दोषानपि ॥ २८० ॥ क्रूरं क्रांत विमुक्तं भंग ग्रहा भयं क्रूर गन्तव्य भंगे  
 गोत्पान हतं च केनु हतं भं संध्यो दितं भंतथा ॥ तद्वच्च ग्रह भिन्न युद्ध गतं भं सर्वा निमा-  
 सं न्यजे दुद्धौ शुभं कर्म सुग्रह कृतान् लग्नस्य दोषानपि ॥ २८१ ॥ द्विर्बहि कुल  
 सम्भूत सरयू कृत संग्रहे ॥ शिरो मणौ समाप्तौ वा प्रभा पंच दशौ शुभा ॥ २८२ ॥ इति २०



श्रीसंग्रहशिरोमणौ विवाहकथनं नाम पंचदशीप्रभा १५ ॥ अथ वधूप्रवेशप्रकरणम् ॥ १ ॥  
 स्यो द्वादहदिवसात्स्थे वाप्यष्टमे दिने ॥ वधूप्रवेशस्तस्यैतदेष्टमेऽथ सप्तमे दिने ॥ १ ॥ ब-  
 धूप्रवेशनं कार्यम्यञ्चमे सप्तमे दिने ॥ नवमे च शुभे वारसु लग्ने प्रणि नो वले ॥ २ ॥  
 विवाहमारम्य वधूप्रवेशे योग्ये दिने षोडशवासरा न्नः ॥ ऊर्ध्वन्ततोऽब्देऽयुजि पंच  
 मांतपुनः पुरस्तान्नियमो नवास्ति ॥ ३ ॥ अत्राणद्वितये मूलेऽनुराधारोहिणी मृगे  
 ॥ हस्तत्रये मघा पुष्ये त्र्युत्तरे रेवती द्वये ॥ ४ ॥ प्रवेशे शुभदो वध्याः सोमे शुक्ले गुरो  
 शनौ ॥ नध्यो बुधे कुजा कौर्त्तुनेत्ये रिक्ता तिथिस्तथा ॥ ५ ॥ विवाहात्प्रथमे पौषे  
 प्राषाढे चाधि मासके ॥ नसा भर्तृ गृहे तिष्ठे चैत्रे तात गृहेऽपि च ॥ ६ ॥ ज्येष्ठे पति  
 ज्येष्ठमथाधिके पतिं हन्त्यादिमे भर्तृ गृहे वधूः शुचौ ॥ अथ शुभसहस्ये प्रसुरक्षये-  
 तनु तातं मधौ तात गृहे विवाहतः ॥ ७ ॥ द्वितिवधूप्रवेशम् ॥ अथ द्विरागमनम् ॥ विवाहा  
 द्विषमे वर्षे कुंभे मेवाल्लिगे रवौ ॥ वलिन्यर्के विधौ जीवे शुभा हे चाश्विनी मृगे ॥ ८

रेवती रोहिणी पुष्ये च्युतरे अवरात्रये ॥ हस्तत्रये पुनर्वसोस्तथा मूला नृगधयोः ॥ ८  
 ॥ कन्या मीन तुले युग्मद्वये प्रोक्तं वलान्विते ॥ लग्ने यस्य दला क्षीणां द्विरागमन मि-  
 न्ते ॥ १० ॥ सन्मुखं दक्षिणे शुक्रे नो गच्छेत्तु कदाचन ॥ गर्भिणी तु विगर्भा स्यान्नवो-  
 यता मियात् ॥ ११ ॥ बालकश्च विपद्येत विमोहादपि चेद्वजेत् ॥ भौमार्किव  
 वारा वृत्ता षष्ठी च निर्दिष्टे ॥ १२ ॥ द्वादश्यमासदा वज्या द्विरागमन कर्म  
 णि ॥ दीपोत्सवे देया प्रवादः ॥ अस्मिं गते गुरो शुक्रे सिंहस्थे वा दृह्यते ॥ दीपोत्सव दिने च  
 ब्रह्मभर्तृ गृहं विप्रोत् ॥ १३ ॥ स्वभवन पुरप्रवेशे देष्टव्या विभ्रमे तथोद्वाहे ॥ नूत-  
 नं प्रति शुक्रं विचारो नास्ति ॥ १४ ॥ एक ग्रामे पुरे वापि दुर्भिक्षे राज वि-  
 हेतीर्य यात्रायां प्रति शुक्रं न दुष्यति ॥ १५ ॥ पित्रा गारे कुच कुशुमयो  
 यदि स्यात् पत्न्यशुद्धिर्न भवति रवेः सम्मुखो वायु शुक्रः ॥ शुद्धे लग्ने  
 तिथौ चन्द्र तारा विशुद्धौ स्त्रीणां यात्रा भवति सफला भवितुं स्वामि सच्च ॥

॥ १६ ॥ कश्यपेषु वशिष्ठेषु भृगवः श्यामिसेषु च ॥ भारद्वाजेषु वत्सेषु प्रति शुक्रं न  
 दूयति ॥ १७ ॥ विवाहे गुरु शुद्धिश्च भृगु शुद्धिर्द्विगमे ॥ त्रिगमे राहु शुद्धिश्च च-  
 न्द्रशुद्धिश्चतुर्गमे ॥ १८ ॥ आद्यर्क्षे भ्रमते राहुः पूर्वाश्लदिक् चतुष्टये ॥ सराहुर्द-  
 क्षिणौ त्याज्य स्तृतीय गमने स्त्रियः ॥ १९ ॥ गमोक्त तिथ्यादिषु कारयेद्बुधो वध्वा  
 तृतीयं पतिवैभ्रस नो गमः ॥ तत्रालितस्त्रिभिः संस्थिते रवौ प्रागादि राहुर्न भु-  
 भोग्रदक्षे ॥ २० ॥ गेहात्पुरा चान्यग्रहे पुरे वा देशे तृतीये च वधू प्रवेशे ॥ युद्धे ऽ  
 लिगेहास्त्रिभगेन सूर्ये प्रागादि राहुर्न भुभोग्रदक्षे ॥ २१ ॥ मार्गादि केषु त्रिषु मा-  
 स्तु पूर्वाद्याभ्यां तथा फाल्गुणतः प्रयाति ॥ ज्येष्ठा त्रतीची चिन्दिश मुत्तरस्यां भाद्रादि-  
 केषु त्रिषु याति राहुः ॥ २२ ॥ सौरेन मासेन विचिंत्य मेतत् मार्गाद्यथा वृश्चिकत-  
 त्तथैव ॥ त्रिभिस्त्रिभी राशिभिरिन्द्रदिक् तौ ककुप्सु राहु प्रचति सृष्टि हेति ॥ २३ ॥  
 ॥ मेघादि राशीषु चतुर्षु गते पतं गोभ्या वत्स्य पूर्व ककुभः क्रमतः प्रयाति ॥ राहुः

ककुप्सु च तृप्तसु च वृषपि वर्जनीयो ह्यंगेयु कर्मसु ससन्मुख दक्षिणस्थः ॥ २४ ॥ अ  
 ग्रेन्न राहो वै धव्यं दक्षिणे सुखदो भवेत् ॥ पृष्ठे पुत्रवती नारी वामे दो भग्यवर्द्धि  
 नी ॥ २५ ॥ छागे नर्क्ष १ शरां ५ क ८ राशि यु गते पूर्वे भृगो छां १० गनास्थे २६  
 याम्ये वरुणा लये घट तुला युग्म र्क्ष ११ ७ ३ संस्थे ५ सुरे ॥ सौम्ये ५ नान्य च कर्क  
 शे च १ २ ४ धव गृहे वध्वा स्तृतीये गमे वामः पृष्ठ गतः शुभो मुनिवैर्भूसासिकः  
 कीर्तितः ॥ २६ ॥ आदित्य हस्ते ५ न्य मृगांश्च भैत्रे तथा अत्र विद्या स्वपि वात पित्रे  
 ॥ वध्वा स्तृतीये गमने प्रशस्तं स्याद्यो गिनी शूल तमे विशुद्धौ ॥ २७ ॥ न सन्मुख  
 स्थे न च दक्षिणस्थे यात्रा तृतीया पति साधनेद्या ॥ वध्वा स्तृतीये गमने स्व भर्तुर्गु-  
 हे सुवोरसु तिथौ प्रशस्तम् ॥ २८ ॥ वत्सो ५ यं वाम भागे गुर्दक्षिणो पुरुषस्थ च ॥  
 उभयोः पृष्ठ देशो च शोभनं यामले मतम् ॥ २९ ॥ अथ विशेषः ॥ त्रि सासं सासि  
 कं चैव त्रि पक्षं द्वि मुहूर्तं कम् ॥ चतुर्विधं गतिं राहो म्मुनीनां चाभि भाषितम् ॥

॥ ३० ॥ गृह्णां रमे त्रिमासं च वधूयात्रा र्मुमासिकम् ॥ गृह प्रवेशे त्रिर्षं युद्ध  
 काले ऽर्द्धयामिकम् ॥ ३१ ॥ द्विवेदिकुलसंभूतसस्यूकृतसंग्रहे ॥ शिरोमणौ  
 समाक्षेया प्रभेयं योडशी शुभा ॥ ३२ ॥ इति संग्रहशिरोमणौ वधू प्रवेश द्वि-  
 रागमनादि कथनं नाम योडशी प्रभा १६ ॥ अथाग्न्याधानम् ॥ सौम्यायने विशा-  
 यायां कृत्तिका रोहिणी मृग ॥ अतरे रेवती ज्येष्ठा पुष्ये ऽग्न्याधानं भिष्यते ॥ १ ॥  
 कुजे ऽर्के ऽङ्गे गुरोः सुक्रे नो नीचे ऽस्ते गते ऽग्निभे ॥ नो ऋक्तायां तिथौ कर्के लग्ने नै-  
 व मृगा त्वये ॥ २ ॥ अग्न्याधानं प्रकुर्वीत नेन्दोर्लग्न गतिऽपि च ॥ त्रिकोणोपचये  
 केन्द्रे सूर्य्य जीव कुजेन्दु यु ॥ ३ ॥ शेषे चोपचये शुद्धे रंध्रे ऽग्न्याधानं सुत्तमम् ॥ लग्ने  
 जीवे धनुर्गेवाद्युने ७ ख १० वाजगे कुजे ॥ ४ ॥ चन्द्रे चात्रियडा यस्थे सूर्य्ये वा दीप्ति  
 तो भवेत् ॥ यस्य चाधानं लग्नस्ये चंद्रे वा भृगु नंदने ॥ उपैति नस्य जातो ऽग्निर्निर्वा  
 रां स ततं कुले ॥ ५ ॥ द्विवेदिकुलसंभूतसस्यूकृतसंग्रहे ॥ शिरोमणौ समाक्षेया प्र-

तिः ॥ ताभ्यामुपचयं भवायातुस्याद्वैरिसंक्षयः ॥ ३ ॥ जयो लगनेऽथ सद्दर्गे भवे  
 च्छीर्षोदयेऽपि वा ॥ शुभैर्युक्ते क्षिते वापि शुभायात्राचरोदये ॥ ४ ॥ स्थिरोदये  
 गमो नस्याच्छुभैर्दृष्टेयुते शुभे ॥ द्विस्वभावोदये गपैर्युक्ते वाथ निरीक्षिते ॥ ५ ॥  
 प्रस्थितोऽपि निर्वर्त्तत निर्जितोऽरिजनैः पुनः ॥ रम्ये भूमि तले दृष्टे शुभे मांगल्य  
 वत्तुनि ॥ ६ ॥ अत्यादरेऽपि चेत्प्रश्ने जयो लानोऽपि जायिनाम् ॥ भृगो लगनेषु  
 धेतुर्धे सप्तोत्थेऽर्क्के सुते गुरो ॥ ७ ॥ लाभैर्गौरयैः शत्रून्नित्राभ्येतिन्यो गृहम्  
 । लगने भौमे यवा मन्दं सुते जीवेऽथवा रवौ ॥ ८ ॥ लाभैर्कस्मरीणा वा चन्द्रे शुक्रोऽ  
 ऽपि विजयो भ्रवम् ॥ लगने भौमे न्युयुक्ते वा दिने शतनुजे क्षिते ॥ ९ ॥ चंद्रवानि  
 धनेऽस्तस्थे भास्करे लग्नवर्त्तिनि ॥ पौषेर्वाषुन लग्नाष्ट दिवुको पगते गृहेः ॥  
 १० ॥ समिन्निभिश्च दुर्योगैः प्रकुर्मंगो न संप्रथः ॥ कोणे भौमा द्रुधे ज्या किं शु  
 का वेषु चतुर्ध्वपि ॥ ११ ॥ एकश्चेद्गमनं न स्यात्सूर्याद्वा कोणजे विधौ ॥ नयेद्ग

स्वदिशं सोऽन्नयः खेटो वलवौ स्तयोः ॥ १२ ॥ अन्ने गम्य दिगी प्रात्वेदः पंचमंगो  
 यः ॥ वो भूया हल युक्तं स्त्वा माशं नयतेऽसौ ॥ १३ ॥ अथ संक्राति यात्रा ॥ मेषसिं  
 ह धनुः संस्थे यात्रा शस्तां शुक्लालिनि ॥ कुंभ नक्रांगना युग्म राशि संस्थे तु मध्य-  
 मा ॥ १४ ॥ कर्कालि मीनगेऽर्के तु यात्रा दीर्घतमा मता ॥ विशेषेऽपि ॥ यात्राज  
 सिंह तुरगे पतते वरिष्ठा मध्या शनैश्चर बुधो शन सां रहेद्बु ॥ भानौ कुलीरं च षट्  
 अश्वकगेऽतिदीर्घां शस्तं देवल मतेऽध्य निष्ठु गोऽर्कः ॥ १५ ॥ अर्द्धयामावशे  
 षाया रात्रे र्याम प्रमायातः ॥ अष्टास्वपि क्रमादिषु अमरां भास्वतः स्तुतम् ॥  
 १६ ॥ अङ्कुरिणी दिग् विणा चिमुक्ताय स्यां रवि स्मिधति साग्रदीपा ॥ प्रभूमिताया स्व  
 तियां दिनेशः शेषाश्च शान्ताश्च दिशो भवंति ॥ १७ ॥ दग्धादिगेशी ज्वलिता दि  
 गेन्द्री धूमा न्विता वानल दिक्च भति ॥ इत्येव जेवं प्रद्वारासु केन भुक्ते दिशं ता-  
 मिहति गम रस्मिः ॥ १८ ॥ लग्नस्थे चरुणा शंगि हिवुक स्थे दक्षिणां रवौ यायात्

संक्षि  
२६  
भा सप्तदशी शुभा ॥ ६ ॥

२६ पदशी प्रभा २७ ॥ अथ राजाभियेक प्रकरणम् ॥ उदितेऽब्जे गुरो शुक्ले विचित्रे चोत्तरायणे

॥ जन्मे शेषास्वके गे श्रे रवौ भौमे वलान्विते ॥ १ ॥ गेहिरणी दितये पुष्ये ज्येष्ठा  
पां च्युत्तर तथा ॥ रेवती युगले हस्ते चित्रायां श्रवणोऽपि च ॥ २ ॥ तिथौ चारे शुभे  
ऽर्क्षेऽपि कुर्याद्भजाभिषेचनम् ॥ स्थिरे चोपये लग्ने जन्म भान्मस्तकोदये ॥  
३ ॥ शुभे युक्ते क्षिते वापि पाप दृग्योगवर्जिते ॥ धन केन्द्र त्रिकोणारव्य रहितैः  
पाप खेचरैः ॥ ४ ॥ सौम्यै रषष्टगैः सर्वैर्व्यय मृत्यु विवर्जितैः ॥ केन्द्र त्रिकोणा  
भवर्जितैः ॥ राजयोगो चिते लग्ने कुर्याद्भज्येऽभिषेचनम् ॥ ५ ॥ सुहृत्स्वर्क्षे चङ्गैः खेटैः नीचाराति  
रुक् निधने मृतिः सुते पुत्रार्ति रर्थ व्यय गैर्द रिद्रता ॥ ६ ॥ पापैस्तनै  
नाम्बुगैः सर्व शुभं केन्द्र गते प्रशुभग्रहैः ॥ ७ ॥ गुरु लग्न कोणो कुजौ रौ मित्रः



रवे स राजा सदा मोदते राजलक्ष्म्या ॥ तृतीयाय नो सोरि सूर्यो रव वंधो गुरुश्च इरि-  
 नी स्थिरा स्यान्नुपस्य ॥ अथ युव राज्याभियेकः ॥ युव राज्याभियेकस्या दभिवे को कृमा  
 दिव्य ॥ अथ युवराज्येऽन्यस्याभियेचनम् ॥ स्वज्ञाति राज्ञस्तत्स्थाने पुत्राभावे कुलोद्भवम्  
 ॥ नो चिंत्या स्तिथि वाराद्यास्तत्कालमभियेचने ॥ २६ ॥ राजचिन्हधारणम् ॥ चामरं  
 छत्रदोलादि पीठसिंहासनादिकम् ॥ यदा मिथेकके सर्वे विदध्याच्छेभनेहनि  
 ॥ १० ॥ द्विवेदि कुलसम्भूत सरयूकृतसंग्रहे ॥ शिरोमणौ समाज्ञेया प्रभा ह्यष्टा-  
 दशी शुभा ॥ ११ ॥ इति श्री संग्रह शिरोमणौ राज्याभियेक कथनं नामाष्टा-  
 दशी प्रभा १८ ॥ अथ यात्राप्रकरणम् ॥ विज्ञातजन्मनां राज्ञां ज्ञात्वा शुभफलोदयम्  
 ॥ योज्या यात्रा शुभे प्रशस्ता प्रश्नादज्ञातजन्मनाम् ॥ १ ॥ अथ प्रश्नलग्नाद्यात्राया  
 प्रशुभाशुभफलम् ॥ अनुयो लभ्य राशौ चालभेऽस्ते वातदीर्घ्वरे ॥ ताभ्यां चोपच-  
 यलनं तदा राज्ञां जयो ध्रुवम् ॥ २ ॥ जन्मतोलभ्ये राशौ स्तूत्येऽस्ते वातयोऽप-

तिः ॥ ताभ्यामुपचयं भवायातुस्स्याद्वैरिसंक्षयः ॥ ३ ॥ जयोलगनेऽथ सच्चर्गे भवे  
 च्छीघोदयेऽपि वा ॥ शुभैर्युक्ते क्षिते वापि शुभायात्राचरोदये ॥ ४ ॥ स्थिरोदये  
 गमोनस्याच्छुभैर्दृष्टेयुते शुभे ॥ द्विस्वभावोदये गपैर्युक्ते वाथ निरीक्षिते ॥ ५ ॥  
 प्रस्थितोऽपि निर्वर्त्तते निज्जितोऽरिजनैः पुनः ॥ रस्ये भूमि तले दृष्टे शुभे मांगल्य  
 वस्तुनि ॥ ६ ॥ जलयादरेऽपि चेत्प्रश्ने जयो लानोऽपि जायिनाम् ॥ भृगोलगनेषु  
 धेतुर्ये सप्तोत्थेऽर्क्षे सुतेगुरो ॥ ७ ॥ लाभगौरयैः शत्रून्जित्वाभ्येतित्युपगृहम्  
 । लगने भौमेऽथवा मन्दे सुते जीवेऽथवा रवौ ॥ ८ ॥ लाभे कर्म्मणि वाचने शुक्रेऽ  
 ऽपि विजयो भ्रवम् ॥ लगने भौमेन्दुयुक्ते वादिनेऽतनुजे क्षिते ॥ ९ ॥ चंद्रवानि  
 धनेऽस्तस्थे भास्करे लग्नवर्त्तिनि ॥ षोडशैर्बधून्लग्नाष्ट हि वुको यगते रश्मिः ॥  
 १० ॥ एभिस्त्रिभिश्च दुर्योगैः प्रबुधैर्भोगेन संश्रयः ॥ कोणे भौमाहुधे ज्या किं शु  
 वेयुचतुर्थ्यपि ॥ ११ ॥ एकश्चेद्भमनं न स्यात्सूर्याद्वा कोणगे विधौ ॥ नयेद्गु

त्वाद्वा साऽत्रयः खटो वलवौ स्तयोः ॥ १२ ॥ अश्वगम्य दद्यात् ॥ तत्पदः ॥ १३ ॥  
 यः ॥ वीभूया हल युक्तस्त्वा माशानयतेऽहो ॥ १३ ॥ अथ संक्रांति यात्रा ॥ मेयसि  
 ह धनुः संस्थे यात्रा शस्तां शुभालिनि ॥ कुंभ न च्छांगना युग्म राशि संस्थे तु मध्य-  
 मा ॥ १४ ॥ कर्कालिमीनगेऽर्के तु यात्रा दीर्घतमा मता ॥ विशेषोऽपि ॥ यात्रा ज-  
 सिंह तुरगे पगते वरिष्ठा मध्या शनैश्चर बुधो शन सां गृहे ह्यु ॥ भानौ कुलीर चंषट्-  
 श्वकगेऽतिदीर्घा शस्तश्च देवल मतेऽथ निष्ठु गोऽर्कः ॥ १५ ॥ अर्द्धयामावशे-  
 षाया रात्रे र्याम प्रमायातः ॥ अष्टास्वपि क्रमादिषु चमरां म्भास्वतः स्तुतन् ॥  
 १६ ॥ अङ्गारिणी दिग् विणा विमुक्तयस्यां रवि स्तिष्ठति साग्रदीप्ता ॥ प्रभूमिना यास्व  
 तियां दिने प्राः शेषाश्च शान्ताश्च दिशो भवंति ॥ १७ ॥ दग्धादिगौ शीज्ज्वलितादि-  
 गेन्द्री धूमा न्विता वानल दिक्च भाते ॥ इत्येव भवं प्रहाराद्यु केन भुंक्ते दिशं ना-  
 मिहति गम रस्मिः ॥ १८ ॥ लग्नस्थे बरुणा शोहि बुध स्थे दक्षिणां रेवौ यायात-

॥ सप्तमगे पूर्वाग्रामे बूरा संस्थिते सौम्याम् ॥ १८ ॥ अथ तारा तिथ्यादि शुद्धिः ॥ ता-  
रानि पंच सप्ताद्या नृत्ता मा पूरिमासुमी ॥ शुक्लाद्या द्वादशी षष्ठी हित्वा चंद्रव-  
ले गमः ॥ २० ॥ एतत् तिथिफलम् ॥ कृत्वा च प्रति पञ्चैका नो शुक्ला गमना दिव्यु ॥  
चितीया कार्यसिद्धौ स्यात्तृतीया क्षेम संपदे ॥ २१ ॥ चतुर्थी क्लेशदाज्ञेया लाभ  
दा पंचमी तथा ॥ व्याध्यति दायिनी षष्ठी सप्तमी भक्ष्य भोज्यदा ॥ २२ ॥ रोगदा  
चाष्टमी ज्ञेया नवमी मृत्युदा सदा ॥ दशमी लाभदानित्यं हेम देका दशमी स्मृता  
॥ २३ ॥ प्राणहृदा दशमी प्रोक्ता सर्वसिद्धात्रयो दशी ॥ शुक्ला चतुर्दशी नेद्या कृत्वा पक्षे  
विशेषतः ॥ २४ ॥ पूर्णिमा माध्यमा प्रोक्ता त्याज्यो दशैस्त्व सर्वदा ॥ तिथीनां फल  
मेतद्वि विचार्य न मन्ये दुर्धैः ॥ २५ ॥ अथ शुभवारः ॥ सूर्योच्चैर् नृत्ता सौम्या च यस्या  
पितृसरे ॥ अत्रा श्रेया बुधे मध्या लोके प्राप्ते तु न कंचित् ॥ २६ ॥ खौ सुख्यी दययाया  
दुष्काले शनौ नरः ॥ भौमे शुक्ला सदान्यत्र वरि कैश्चिद्विती रितम् ॥ २७ ॥ अथो- २१०

शिक्तममध्यमाधमनक्षत्राणि ॥ धनिस्तु अवरोहस्तोऽनुराधारेवैतैः द्रुवम् ॥ चतुर्गः पुनर्वसुः  
 पुष्यः श्रवणं ज्येष्ठानि च ॥ २८ ॥ मूलं पूर्वात्रयं ज्येष्ठारोहिणी श्रान्तारका ॥ उ-  
 त्तराणान्द्रियोयानि मध्यान्येतानि भानि च ॥ २९ ॥ चित्रात्रयं मघाश्लेषा कृत्तिकाद्रि-  
 भरण्यापि ॥ वज्र्यान्येतानि धिष्णानि यात्रायां जन्मभूमं तथा ॥ ३० ॥ अथावश्य केनक्षत्रो-  
 णां त्याज्य घटिकाः ॥ पूर्वासु योदशौ वाघा कृत्तिका स्वक विंशतिः ॥ मघा स्वैका दश त्याज्या-  
 भरण्या सप्त नाडिकाः ॥ ३१ ॥ स्वात्यश्लेषा विशाखा सुज्येष्ठा याश्च चतुर्दश ॥ यायास्त-  
 र्गन वले शेष नाडी व्यावश्य के सति ॥ ३२ ॥ मन्तरम् ॥ कृत्तिकायां मघा स्वात्यो रैके पू-  
 र्वं हस्तं जगुः ॥ उत्तरार्द्धं च चित्राया भरण्या श्लेषयो रपि ॥ ३३ ॥ सर्वं स्वाती मघा त्या-  
 ज्यो सन सो मत मीदृशम् ॥ ३४ ॥ अथ नक्षत्र विशेषे विजययात्रा ॥ संप्रस्थाया नुराधायां  
 स्थित्वा ज्येष्ठाभिधेततः ॥ मूले गच्छेन्मही पालो यदि स्याच्च ज्यो भवम् ॥ ३५ ॥ हस्ते  
 प्रस्थाया वा स्थित्वा तत्रैव स्वाति चित्रयोः ॥ विशाखायां व्रजन्भूपो विजयं लभते भवं

॥ ३६ ॥ प्रस्थाय मृग प्रीर्यैवास्थित्वाद्र्योततो ब्रजेत् ॥ पुनर्वसो ग्रही णालो लभते  
 च जयञ्जयम् ॥ रेतस्याम्युद्यमे वापि धनिष्ठायां ग्रही श्वरः ॥ उद्यित्वा स्वीय शिवि-  
 रे रत्नो गच्छन् जयत्यरेन् ॥ ३८ ॥ अथ दिक् प्रलम् ॥ दिग्बलं पूर्वादिग्भागे ज्येष्ठायां श-  
 नि सोमयोः ॥ पूर्वं भाद्रपदेयाम्यां तथैव गुरुवास्तरे ॥ ३९ ॥ रवौ शुक्रे च रोहिण्यां  
 पश्चिमायां त्यजेद्बुधः ॥ उदीच्या मुत्तरा फाल्गुणाय भिधे मंगले बुधे ॥ ४० ॥ अथ विदि-  
 क् प्रलम् ॥ ज्ञानेय्यां च गुरौ चन्द्रे नैऋत्यां रवि शुक्रयोः ॥ द्वाग्रान्यां चंद्रजे वायौ मंग-  
 ले गमनं त्यजेत् ॥ ४१ ॥ अथ दिक् प्रलपरिहारः ॥ सूर्यं वारे घृतं भास्य सोम वारे दधस्त-  
 था ॥ गुड मंगारके वारे बुध वारे तिलान्यपि ॥ ४२ ॥ गुरु वारे दधि भास्य शुक्लवा-  
 रे यवानपि ॥ माषान्मुक्ता शर्ने वारे गच्छन्मूलेन दोष भाक् ॥ ४३ ॥ अथापरः ॥ तो-  
 वूलं चंदनं मृच्च पुष्यं दधि घृतं तिलाः ॥ वारभूल दूराण्यर्कात्स्मरणादपि वानि शि-  
 ॥ ४४ ॥ अथ समय विशेषे त्यान्यानि भानि ॥ पूर्वोक्ते रोहिणी धिले विष्णवा कृत्तिका हरः ॥ ४५ ॥

१३ ॥ मध्यान्ह सप्तये ज्येष्ठा श्लेयाद्ग्री मूल भन्तथा ॥ ४५ ॥ अपराह्णे परित्याज्या गमने  
 चाश्विनी सदा ॥ चित्रान्त्यमनुराधा च यामिन्याः प्रथमं शके ॥ ४६ ॥ मध्येऽशके  
 त्यजेत्पूर्वा त्रितयं भरणी मघा ॥ ग्रान्ते पुनर्वसू स्वाती धनिष्ठा ग्रत तारका ॥ ४७ ॥ अथ  
 अथ सर्वकाले श्रेष्ठ नक्षत्राणि ॥ अत्रो युक्त्यो मृगो हस्त श्रेष्ठा यात्रा सुसर्वदा ॥ ४८ ॥ अथ  
 युद्धयात्रायां विशेषः ॥ राहु सुक्ता निजरक्षाणि जीव पक्ष रत्रयो दश ॥ मृत पक्षस्तु भोग्या  
 नि कर्त्तरी तदधिष्ठितम् ॥ ४९ ॥ ततः पंचदशे ग्रस्तं चित्यं युद्धे गमा दिव्य ॥ जीव-  
 पक्ष श्रुभो द्वे यो मृत पक्ष स्त्व शोभनः ॥ ५० ॥ मृत पक्षाच्छुभं ग्रस्तं ग्रस्त भारक-  
 र्त्तरी शुभा ॥ मृत पक्षे सहस्रांशौ जीव पक्षे विधौ स्थिते ॥ ५१ ॥ यात्रायां विजय  
 रत्नत्र विपरीते पराजयः ॥ उभौ चेज्जीव पक्षस्थौ यात्रातत्रापि शोभना ॥ ५२ ॥  
 चेदुभौ मृत्यु पक्षस्थौ रविन्दूतत्र कष्टदा ॥ याथिनो जय दश्चंद्रो जीव पक्षे व्याद-  
 स्थितः ॥ ५३ ॥ भानु मानू जीव पक्षस्थे स्स्थायिनो विजया वहः ॥ अथ कुल कुल कुलादि

श्रे लगणाः ॥ आदेशकुलम् ॥ धनिद्याभरणी स्वाती हस्तो ज्ञेया पुनर्वसूः ॥ रोहिणी शु-  
 त्रं चान्त्या नुराधा वियमा तिथिः ॥ ५४ ॥ सूर्येन्दु गुरु मंदारव्यवागश्चैव गणोऽ-  
 कुलः ॥ अत्र संग्रस्थितो राजा शत्रून् जयति संगरे ॥ ५५ ॥ अथ कुलगणः ॥ पूर्वोच्चि-  
 नी मघा पुष्यः कृत्तिका अवरोग मृगः ॥ चित्रा ज्येष्ठा विशाखा च कुज शुक्रौ चतुर्द-  
 शी ॥ ५६ ॥ अष्टाकांश्च मितांस्तथ्यो गणोऽयं कुलसंज्ञकः ॥ संग्रामे या यिनोभे-  
 गः स्यायिनोऽत्र जयो भवेत् ॥ ५७ ॥ अथ कुलाकुलगणः ॥ अभिजिन्मूलमाङ्गिचश-  
 तमं बुधवासरः ॥ द्वितीया दशमी षष्ठी कुलाकुलगणस्त्वयम् ॥ ५८ ॥ राज्ञस्सम्य-  
 स्थितस्यान्नसंन्यि भवति वैरिणा ॥ अथ नामादि वर्णविशने सार्गिको वर्णस्वरः ॥ कच्छाधन-  
 वानां स्यादकारो वर्सर्जः स्वरः ॥ खजद्वानसमानान्तु स्वरद्वकार उच्यते ॥ ५९ ॥ ग-  
 भतापयथा वर्णोऽकारस्वभाजिनः ॥ घटथा फरश वर्णा एकारस्वरसङ्ज्ञकाः ॥  
 ६० ॥ चट्टा वल्हा श्वेताभोकारः कथितस्वरः ॥ नाम्नियश्चादि मो वर्णस्तद्वशाच्च ॥ ६१ ॥



पुनस्तदः ॥ ६१ ॥ अथतिथिस्वरः ॥ अकारादिस्वरः पंच नंदाद्यास्तिथयः ज्ञानात् ॥  
 निजस्वरतिथेर्ज्ञेयावालप्रभृतयस्वरः ॥ ६२ ॥ आद्यो वालः कुमारोऽन्योयुवा वृद्ध  
 स्तथा मृतः ॥ ईषस्त्राभ करस्त्वाद्यः कुमारस्त्वईलाभदः ॥ ६३ ॥ सर्वासिद्धियुवाकु-  
 म्भ्यहृद्दोमध्योऽधमोऽन्तिमः ॥ अथपथिराहुचक्रम् ॥ विशगरवापुष्यमश्लेषानुराधा-  
 ण्विप्रान्ताभिधम् ॥ धनिष्ठे नानि धर्मस्युश्रक्तेऽस्तिन्यथिराहुके ॥ ६४ ॥ भरणी  
 अवणोज्येष्ठा मघा स्वाती पुनर्वसू ॥ पूर्वभाद्रपदैतानि भान्यर्थे गदिता निच ॥ ६५ ॥  
 चित्रार्द्रा कृत्तिका मूलं पूर्वा फाल्गुणि काभिर्जित् ॥ तथाभाद्रोत्तरैतानि कान्ते धित्वा  
 नि सप्ततच ॥ ६६ ॥ उत्तरा फाल्गुणी हस्तो रेवती रश्मि मृगः ॥ पूर्वाषाढा ह्यश्लेषोक्षे  
 भान्येतानि बुधा जगुः ॥ ६७ ॥ धर्मर्क्ष संस्थिते सूर्ये चन्द्रो मोक्षार्थ गण्युभः ॥  
 मर्यर्क्षे भास्करे चन्द्रः प्रशस्तो धर्म मोक्षगः ॥ ६८ ॥ सूर्ये काम क्षिप्रो मृगो  
 क्ष धम्नार्थ गण्युभ ॥ मोक्षधिस स्थिते सूर्ये चन्द्रमा धर्म गण्युभः ॥ ६९ ॥

| स | पुष्य | श्ले | वि   | श्रु | ध   | श  | धर्म  |
|---|-------|------|------|------|-----|----|-------|
| भ | पु    | म    | स्वा | ज्ये | श्र | रू | अर्थ  |
| क | मृ    | रू   | चि   | मू   | अ   | उ  | काम   |
| र | म     | उ    | ह    | रू   | उ   | रे | मोक्ष |

सु मासेषु तिथ्यो द्वादश सञ्जूकाः ॥ लेख्याश्च के त्रयो द्रष्टव्या सविहायति  
 धि त्रयम् ॥ ७१ ॥ तृतीयादित्रये तत्र त्रयो द्रष्टव्यादिके फलम् ॥ यानि प्राच्या  
 दिकाद्या सुवक्ष्ये द्वादशधा क्रमात् ॥ ७२ ॥ सौरव्यं मूल्यं धनार्तिश्च लाभोला  
 भोभयं धनम् ॥ कथं सौरव्यं कलिर्मृत्युः मूल्यं प्राच्यां फलं क्रमात् ॥ ७३ ॥  
 क्लेशो नैश्वं व्यथा सौरव्यं द्रव्यापि निर्भयवुने ॥ सौरव्यं लाभः कष्ट सिद्धिः लो-  
 भस्सौरव्यन्तु दक्षिणो ॥ ७४ ॥ भयं नैश्वं प्रियापि भयं भव्यं द्रव्यं मृतिर्द्रव्यम् ॥

|    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |          |            |              |             |
|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----------|------------|--------------|-------------|
| १  | २  | ३  | ४  | ५  | ६  | ७  | ८  | ९  | १० | ११ | १२ | सौख्यं   | लेश        | भीति         | अधीगम       |
| २  | ३  | ४  | ५  | ६  | ७  | ८  | ९  | १० | ११ | १२ | १  | शून्यं   | नीचं       | नेषं         | मिश्रता     |
| ३  | ४  | ५  | ६  | ७  | ८  | ९  | १० | ११ | १२ | १  | २  | इत्यल्ले | दुखं       | व्याप्तिः    | अर्थः       |
| ४  | ५  | ६  | ७  | ८  | ९  | १० | ११ | १२ | १  | २  | ३  | लाभः     | सौख्यं     | मंगलम्       | वित्तलाभः   |
| ५  | ६  | ७  | ८  | ९  | १० | ११ | १२ | १  | २  | ३  | ४  | लाभ      | इत्याप्ति  | धनम्         | सौख्यम्     |
| ६  | ७  | ८  | ९  | १० | ११ | १२ | १  | २  | ३  | ४  | ५  | भीति     | लाभः       | मृत्युः      | अधीगमम्     |
| ७  | ८  | ९  | १० | ११ | १२ | १  | २  | ३  | ४  | ५  | ६  | लाभ      | कष्ट       | इत्यलाभः     | सुखम्       |
| ८  | ९  | १० | ११ | १२ | १  | २  | ३  | ४  | ५  | ६  | ७  | कष्टम्   | सौख्यं     | लेशलाभः      | सुखम्       |
| ९  | १० | ११ | १२ | १  | २  | ३  | ४  | ५  | ६  | ७  | ८  | सौख्यं   | लाभः       | कार्यसिद्धिः | कष्टम्      |
| १० | ११ | १२ | १  | २  | ३  | ४  | ५  | ६  | ७  | ८  | ९  | लेश      | कायसिद्धिः | अर्थः        | धनम्        |
| ११ | १२ | १  | २  | ३  | ४  | ५  | ६  | ७  | ८  | ९  | १० | मृत्यु   | लाभ        | इत्यलाभः     | प्रवृत्तम्  |
| १२ | १  | २  | ३  | ४  | ५  | ६  | ७  | ८  | ९  | १० | ११ | शून्य    | सौख्यं     | मृत्यु       | अन्यतकष्टम् |

लेशलाभो यं सिद्धिस्त्वं लाभो मृत्युश्च पश्चिमे ॥ ७५ ॥ धनं मिश्रं धनं लाभः

शि शैरव्यं लाभस्सुखं सुखम् ॥ कसं द्रव्यत्वं शून्यत्वं कष्टमुत्तरदिक्फलम् ॥ ७६ ॥  
 ॥ अथ सर्वकियोगफलम् ॥ तिथिनक्षत्रवारैक्यं सप्ताष्टादिनविभाजितम् ॥ आदि-  
 शून्येऽतिपीडास्यान्मध्य शून्ये अयं तथा ॥ ७७ ॥ शून्येत्ये वपुषो रोगो मृत्यु-  
 श्मून्यत्रये भ्रवम् ॥ जय प्रत्वायी गमस्सौरव्यं शेषे च स्थानकात्रये ॥ ७८ ॥ चिं-  
 त्यमेतद्विद्यागादौ युक्ताद्यास्तिथयोऽन्नतु ॥ अथाडलश्रमौ त्याज्यौ ॥ यान्नायं न ह-  
 लप्रवाह समरे चौर्ये च संधौ तथा कूपागम तडागबंधन विधौ पापहिं दुर्गि-  
 हे ॥ अन्वे भोक्तृ रसाधिरोहण विधौ त्याज्यं सदैवाडलं यत्नान्नात्रशुभेषु मंगल-  
 विधौ देवी न तस्तद्विहितम् ॥ ७९ ॥ रविमात्स्याभिचान्द्रे सप्तभिर्ह्यर्द्धे ७ शेष-  
 के ॥ आडलोऽथ त्रिपल ६ शेषे अमोनेष्ट्ये गमे त्विमौ ॥ ८० ॥ अथ प्रशस्तो हरेव  
 गोगः ॥ चंद्रं सूर्यं माधुतं पक्षादि तिथि वासरैः ॥ नवाप्तं सप्तशेषे तु हरेव स्थ-  
 च्छुभोगमे ॥ ८१ ॥ अथ घवाडलव्यः शुभयोगः ॥ सूर्यं भाद्रपदे च्चांद्रं त्रिगुणं तिथि-

संयुतम् ॥ सप्तभिस्तु हरेद्भागं त्रि श्रेयं स्याद्द्वादकम् ॥ ८२ ॥ गमेऽभुमंसदा  
 द्वैर्बैधवाङ्गैरवात्सदा ॥ अथटेलकम् ॥ सूर्य्यभाङ्गराये च्चाङ्गं तिथि वारच चि-  
 त्तिलम् ॥ सप्तभिस्तु हरेद्भागं पञ्च श्रेयैरुटेलकम् ॥ ८३ ॥ अथ गौरवम् ॥ सूर्य्य  
 भाङ्गराये च्चाङ्गं तिथि वारच मिश्रितम् ॥ अर्कैः संख्ये हरेद्भागं नव श्रेयैरु गौर  
 वम् ॥ ८४ ॥ प्रवेष्टे गौरवं दद्यान्निर्गमे हरेवन्नया ॥ तस्करे टेलकं दद्याद्द्वादं  
 सर्वकर्मसु ॥ ८५ ॥ अथ मेघादीनां घातचंद्रः चंद्रघाती लाघवत्वेन ॥ मेघकन्या घटहरी  
 नक्र युग्मधनुर्दृषाः ॥ मीनसिंहधनुः कुंभा घात चन्द्राग्जजादितः ॥ ८६ ॥ युद्धे  
 चैव विवादे च कुमारी पूजने तथा ॥ राजसेवा चाह नादौ घात चंद्रं विवर्जयेत् ॥  
 ८७ ॥ तीर्थयात्रा विवाहान्न प्राशनोपनयादियु ॥ मांगल्य सर्वकार्येषु घात  
 चन्द्रं न चिंतयेत् ॥ ८८ ॥ जन्मस्थो मेघ राशे स्याद्दृषभस्य तु पंचमः ॥ नवमे  
 मिथुनस्त्रेण्डुः द्वितीयः कर्कटस्य च ॥ ८९ ॥ षष्ठस्तु सिंह राशे च्च कन्याया दश ॥ ९०

मस्मृतः ॥ तृतीयस्तुतुलाराशे र्दशिकस्य च सप्तमः ॥ ८० ॥ चतुर्थीधन्विनो  
 द्वेयो मकरस्याष्टमस्तथा ॥ कुंभस्यैकादशः प्रोक्तो मीनस्य द्वादशः स्मृतः ॥  
 ८१ ॥ घातचंद्रादग्नेवज्याद्यात्रायां राजदर्शने ॥ विवादे वाहना रोहे युद्धे भे-  
 यज्यसेवने ॥ ८२ ॥ विवाहादिभ्युभेऽन्यत्र नैते चिंत्या मनीषिभिः ॥ अथमेया  
 दीनाघातक्षारिण ॥ मेघमघाद्वेधे हस्तो मिथुने स्वाति रुच्यते ॥ कर्कटचानुराधारव्यं  
 सिंहमूलं प्रकीर्तितम् ॥ ८३ ॥ कन्यायां श्रवणो द्वेयस्तुलायां प्रततारकाः ॥ वृ-  
 श्चिके रेवती धिष्णं भरणी धनुर्वि स्मृता ॥ ८४ ॥ मकरे रोहिणी कुंभे चार्द्राश्ले-  
 षातु मीनगे ॥ एतानि घातधिष्णानि जन्मराशे र्न्मरस्यच्च ॥ ८५ ॥ अथ घातवाराः ॥  
 मेघे रविर्वुधः कर्क मिथुने चन्द्र एवच ॥ कन्या वृषभसिंहेषु शनिः स्यान्मकरे कुं-  
 जः ॥ ८६ ॥ धनु र्दशिक मीनेषु शुक्रोऽथ तुलकुंभयोः ॥ जीवश्चेज्जन्मराशे  
 च घातवारा बुधे स्मृताः ॥ ८७ ॥ अथ घाततिथयः ॥ मेघवृश्चिकयोर्नन्दा भद्रा

मिथुन कर्कयोः ॥ जया सिंह धनुः कुंभे रिक्ता च तुल कुंभयोः ॥ ८८ ॥ कन्या वृषभ-  
 मीनेयु पूर्णा घात तिथि स्मृता ॥ अथ घात तिथीनां त्याज्य घटिकाः ॥ कार्त्तिके ८ त्या वश्यके  
 नाडी बद्धं घात तिथौ बुधैः ॥ आदिमं शोपरित्यज्य नो निंशा शेष नाडिकाः ॥ ८९  
 ॥ अथ घात लग्नानि ॥ मेष गोकर्कद तोलि नक्र मीनां ग नालयः ॥ धनि कुंभौ युग्म  
 सिंहौ घात लग्नानि मेष भात ॥ ९० ॥ अथा वश्यके घात चन्द्र नक्षत्र पाद त्याज्यः ॥ मे-  
 धेनु कृत्तिका द्यौः द्विद्वेषे चित्रा द्वितीयकः ॥ युग्मे शते तृतीयोऽद्विर्म घाया अपवि  
 कर्कटे ॥ ९१ ॥ धनिश्याघात तथा सिंहे रित्रय श्वाद्रा तृतीयकः ॥ तुले मूले द्विती-  
 योऽघिरलो रोहे स्तृतीयकः ॥ ९२ ॥ पूभा तुर्थोधनुः संज्ञे मघा तुर्थो मृगे तथा ॥  
 कुंभे मूल चतुर्थोऽघि मीने प्रभा तृतीयकः ॥ ९३ ॥ त्याज्या घात विधौ चोक्त पादा  
 आवश्यके बुधैः ॥ अथ सूर्यादयो घात ग्रहाः ॥ अथ सूर्यः ॥ वेदाद्या केयु नंदे हुरसदिक्  
 शैल संमिताः ॥ रुद्र नेत्राग्नि संख्या अघात सूर्यास्तु मेघतः ॥ ९४ ॥ अथ चंद्रः ॥ २२

संस्थि द्दुवा एण क नत्राग दिगांमशै लसख्य काः ॥ वेदाद्ये शार्क संख्या का अेषा ह्वाने  
२२२ दवः क्रमात् ॥ २०५ ॥ अथ भौमः ॥ वाराण केन्दुरसाग्रादृक् शैल रुद्र भ संसिताः  
॥ सूर्याग्न्यब्धिमिनासेषाब्जमाहुतो धरात्मजः ॥ २०६ ॥ अथ बुधः ॥ नेत्रांगाग्र

अथ यात तिथिवा एनक्षत्र लग्नचंद्रमा लिख्यते ॥

अथसूर्यादयो घातग्रहाः,

|      |    |     |      |    |    |     |    |    |     |    |    |    |    |    |    |    |    |    |     |    |        |        |
|------|----|-----|------|----|----|-----|----|----|-----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|----|--------|--------|
| राशि | मे | दु  | मि   | क  | सि | के  | तु | क  | मे  | दु | मि | के | सि | के | तु | हं | ध  | म  | कुं | मी | राशयः  |        |
| ति   | ने | प्र | म    | म  | ज  | र   | र  | र  | प्र | ज  | ज  | ज  | ज  | र  | र  | १० | ७  | ११ | २   | ३  | सूर्यः |        |
| वा   | स  | रा  | चं   | वृ | श  | श   | र  | र  | प्र | स  | सु | र  | र  | र  | ३  | ७  | ७  | ०  | ११  | १२ | चंद्रः |        |
| नं   | म  | ह   | स्वा | भु | मू | प्र | र  | र  | प्र | भ  | आ  | र  | र  | र  | ३  | ११ | ८  | १२ | ४   | ४  | भौमः   |        |
| रि   | १  | २   | ४    | ७  | १० | १२  | ८  | ८  | ८   | ८  | ३  | ३  | ७  | ११ | ४  | ८  | ५  | ८  | १२  | १  | बुधः   |        |
| नं   | १  | ५   | ८    | २  | ६  | १०  | ३  | ७  | ३   | ४  | १२ | ११ | ७  | ३  | ८  | १२ | ८  | ४  | ३   | ३  | गुरुः  |        |
| र    | ५  | १०  | १२   | ५  | ११ | ३   | १० | १० | ७   | १० | ५  | ८  | १२ | ४  | ८  | १  | १० | २  | ५   | २  | शुक्रः |        |
| नं   | १  | ३   | ३    | १  | ३  | ३   | ३  | ३  | ३   | ३  | ३  | ८  | ४  | ८  | ५  | ८  | १  | ४  | १   | ६  | ५      | शनिः   |
| र    | १  | ३   | ३    | ३  | ३  | ३   | ३  | ३  | ३   | ३  | ३  | ८  | ४  | ८  | ५  | ८  | १  | ४  | १   | ६  | ५      | जीवितः |



दिग्निशैलेषा वेदाष्टैस्त्वं कं संमिताः ॥ हादशेस्तु मिताघातवोधनः क्रमतस्त्वजात् ॥  
 १०७ ॥ अथगुरुः ॥ रसनेत्रेषा शैलेषा वन्ति नागार्कसंमिताः ॥ नरेन्द्र द्वि त्रिसं-  
 रख्याता घातेज्या मेघतः क्रमात् ॥ १०८ ॥ अथशुक्रः ॥ शैल दिग्वन्ति नागार्कवेद  
 नरेन्दुभिर्निमिताः ॥ आश्राप्य वाण दक् संख्या घातशुक्रस्तु मेघतः ॥ अथशनिः  
 नैश्वरः ११० अथलीलां घातचन्द्रः ॥ भूनागाख्यं क वेदाग्नि रसा श्रव्याश्रा शिवेषु  
 भिः ॥ सूर्यैश्च प्रमिता मेघा ह्वातचन्द्रो मृगी दृशाम् ॥ १११ ॥ अथचंद्रवासः ॥ ति-  
 थिपंचगुराणीकृत्य तथैकेन च संयुतम् ॥ रुद्र नैत्रे द्वेद्वागं चन्द्र वास स्त्रिधाभवे  
 त् ॥ ११२ ॥ एक शेषेवसे त्वर्गे द्विके पातालमेव च ॥ तृतीये मृत्यु लोके च च-  
 द्र वास स्त्रिधा भवेत् ॥ ११३ ॥ स्वर्गलोके यदा चंद्रो ह्यमृतत्रिय दृशनिः ॥ मृ-  
 त्युलोके यदा चंद्रस्सर्व कर्मसु सिद्धिः ॥ ११४ ॥ पाताले च यदा चंद्रः पंचक-

शि स्मारी दिवज्जयेत् ॥ वास्तौ पुरुष नाशाय होमे हगनिः प्रजायते ॥ ११५ ॥ कू-  
 २४ पादियु जलं नस्या न्नि रन्ता मेदिनी भवेत् ॥ यात्रायां कार्यं हानि स्यान्नभि प्या  
 रुद्र भायितम् ॥ ११६ ॥ अथ चद्रांगवासफलम् ॥ शिरः प्रदेशे गुण ३ पंच ५ जन्म १  
 षट् ६ नंद ४ दृष्टे हृदि सप्त ७ रुद्रैरिष्या १२ ८ वेदे च शिरः प्रदेशे कोच दिग्  
 १० युग्म ३ विधुर्नृदेहे ॥ ११७ ॥ कालम् विधु द्व्यर्धं लग्नं शिरो भाग के स्या-  
 च्छुभं हस्तप्रदेशे च दृष्टे च प्रहन्यम् ॥ पदे युद्धकारी कोरे सर्व लाभं प्रकुर्व्या च्छे प्री  
 मानवानां फलं च ॥ ११८ ॥ अथ सन्धुलचन्द्रफलम् ॥ करला भगण दोषं वार सं-  
 आति दोषं तिथिज कुलिक दोषं योगिनी मूल दोषम् ॥ रवि स्तिन कुज दोषं या-  
 मयामार्द्ध दोषं हरति मकल दोषं चन्द्र मा सम्मुखस्थः ॥ ११९ ॥ अथ द्वादशचंद्रफ-  
 लम् ॥ पारिा गृहे स्त्री सुरते ऽभिवेके निषेक यात्रा व्रत बंधने च ॥ जतोपवाससिद्यु  
 गर्ग पूर्वैः प्रोक्त प्रशुभो द्वादश नो हि मांशुः ॥ १२० ॥ अथ चन्द्रवासफलम् ॥ मेघशि- २२५

हृदयसंस्थः पूर्वस्यां दिशि चन्द्रमाः ॥ दक्षिणस्यं वशे नित्यं कन्या वृषभन  
क्रगः ॥ १२१ ॥ तुला मिथुन कुम्भस्थः पश्चिमायां निशाकरः ॥ कर्क वृश्चिक  
मीनेषु गतस्तिष्ठेत्तयोर्तरे ॥ १२२ ॥ सन्मुखेऽङ्गेऽर्धलाभाय मुखसंपन्नं द-  
क्षिणो ॥ वृषगे निधनं यानु वमिभागे वसुक्षयः ॥ १२३ ॥ अथ तत्कालचन्द्रा-  
वद्विषु ॥ नाड्यस्सप्तदशप्राच्यां याव्यो तिथिमितास्ततः ॥ ततस्त्वर्गमिताऽत्रा-  
त्यगुत्तरस्यां नुषोडश ॥ १२४ ॥ पुनस्सप्तदशप्राच्यां दक्षिणस्यां चतुर्विंश  
पश्चिमेन खसरया ताडहीच्यां पंचभूमिताः ॥ १२५ ॥ वारह्व्यभमे चैतुःस्व  
वासस्यानतः क्रमात् ॥ एक एषि स्थितोऽपीदृते हि प्राज्ञं फलं दिशेत् ॥ १२६  
॥ अथ योगिनी वासस्तत्कालच्च ॥ नवमी प्रतिपत्तिर्घ्नोः प्राच्यां निवृत्तिर्योगिनी ॥  
अग्नि कोरोत्ततीया यामे कावश्यां तथैव हि ॥ १२७ ॥ त्रयोदश्यां च पंचम्यां  
दक्षिणस्यां च योगिनी ॥ द्वादश्यां नैर्ऋते क्षीया चतुर्थ्या मपि सर्वदा ॥ १२८ ॥

| ८  | ७  | ६  | ५  | ४  | ३  | २  | १  | ०  |
|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| २९ | १५ | २१ | २६ | १७ | १४ | २० | २५ | ३३ |

चतुर्दिशं च वक्ष्यामि यद्विष्णोर्दिशि-  
 क्वम् ॥ वायु कोरो तु तप्तस्यां पूर्णिमा  
 च तथा दृम्यामीशान्यां योगिनी द्वितीया दशमी दिने ॥ अमास्या-  
 द्वे च सप्तम्या ॥ अशुभा वाम भागस्या पृष्ठे दक्षे जय प्रदा ॥ १३० ॥ योगिनी सन्ध्यां द्यूते गर्भेऽप्यु-  
 लयोगिनी ॥ प्राच्युतराग्नि नैर्ऋत्य धाम्य पश्चिम वायुयु ॥ १३१ ॥ अथ तत्का-  
 लं च त्वदिशः कथितः क्रमात् ॥ १३२ ॥ यामार्द्धे भोग कालोऽस्या स्तिथौ  
 दिग्धमरान्तथा ॥ तत्काल योगिनी त्रैवा जयदा पृष्ठ दक्षिणो ॥ १३३ ॥ अथ  
 कालपक्षौ ॥ उत्तरस्यां रवे वीरे वायो चन्द्र दिने भवेत् ॥ भौसवारे प्रतीच्यां तु नै-  
 र्ऋत्यां बुध वासरे ॥ १३४ ॥ यमा प्रायां गुरवे व वन्हेर्दिशि मृगोर्दिने ॥ प्रा-  
 च्यां दिशि शने वीरे कालः प्रोक्तो महर्षिभिः ॥ १३५ ॥ कालस्याभिमुखः

पाशो वैपरीत्यं तयो निर्निशि ॥ तावुभौ सन्मुखौ त्याज्यौ वाम दक्षिण गौ शुभौ  
 ॥ १३६ ॥ अथयामार्दराहुः ॥ दंद्वायुयमरुद्र तोयाग्नि प्राग्नि मारुते ॥ यामार्द्रमु-  
 दितो राहु र्भूमत्येवंदिगल्के ॥ १३७ ॥ सूर्यो दयात्कमे रौवं दिने ज्ञेय मयो नि-  
 शि ॥ अथ मुहूर्तमिह क राहुः ॥ दर्शयत क मरुच्छ क्ररक्षश्चंद्रानलोभं साम् ॥ दिशि  
 अमत्यंगुर्नीडी ह्यमानं दिवा निशम ॥ १३८ ॥ ज्ञेयोऽत्र वेदि प्राग्गस्तु मुहुर्तो  
 ऽयन्दिवा निशि ॥ १३९ ॥ अथ राहोऽफलम् ॥ द्विविधः दृष्ट गौराहुः पुभदो दक्षि-  
 लोऽपि च ॥ मवेद्यो गिनिका युक्तं सदा युद्धे जयो भवम् ॥ १४० ॥ वामगस्म-  
 न्मुखस्याज्यो आत्रा युद्धे जये सुना ॥ अथ परिदंडः ॥ छत्तिका नश्च तर्दिस्तु सप्तत-  
 प्त च पूर्वतः ॥ अपरिदं लंघयेन्नैव वायव्या नल दिग्गतम् ॥ १४१ ॥ प्राचीमुख-  
 ग्गुरिभिरत्र याथात्मा गुरिकैश्चोडुभिरप्युदीचीम् ॥ तथैव आख्यास्य रा-  
 त्रिने भैरव्या म्या अये श्चाव्य ए प्रया यात् ॥ १४२ ॥ अथा वप्रयके परिदोस्तु पनम् ॥

ॐ शि कृत्ये ऽत्यावधूयके गच्छेद्विलंघ्यापि च पारिधम् ॥ कृत्वा वप्रयंभूल प्रुद्धिं दि-  
 २५२२८ गलग्नस्य सदानृपः ॥ १४३ ॥ पुथ्य हस्तानुराधाभ्ये सर्वदिग्मनं सुभम् ॥  
 १४४ ॥ पुथ्याश्विहस्तं मेत्राणि योस्तवैस्तव सोम्यभम् ॥ वासवं सर्वदिदृश्या  
 प्रुयात्राया शोभनानिहि ॥ १४५ ॥ अथ वक्रग्रहस्य वारदित्याज्यम् ॥ ग्रहः केन्द्र  
 गतो वंकी लग्नं वा वक्रि वर्गगम् ॥ वंकी खेटस्य वारे वा तन्नयातुर्विनाशनम्  
 ॥ १४६ ॥ अथायनानुकूलम् ॥ दिवा सोम्यायने सूर्य्यायादुत्तरपूर्वयोः ॥ चंद्र  
 सोम्यायने रात्रौ प्रोक्ता यात्रा नयोर्दिशोः ॥ १४७ ॥ सूर्य्यायाम्यायने गच्छेत्  
 त्यग्दक्षिणायोर्विवा ॥ दिशयोस्त्वेतयोश्चान्द्रे रात्रौ याम्यायनं गते ॥ १४८ ॥  
 उभौ सोम्यायने यायात्तथा चोत्तरपूर्वयोः ॥ तौ चेचाम्यायने प्रत्य ग्याम्ययो-  
 स्तु दिवानिशम् ॥ १४९ ॥ अन्यथा गमनेन्दृणां भवेद्वन्द्यो वधोऽपि वा ॥ अथ  
 त्रिविधः शुक्रः ॥ यन्नो देति भृगो र्यत्वा तां दिशं सम्मुखी त्यजेत् ॥ भागवाधिष्ठितो

राशिर्दिशिवायत्र लग्नतः ॥ १५० ॥ कृत्तिका दिवु दिग्द्वारभे बुयत्र स्थितो  
 ऽपिवा ॥ त्याज्या सापि दिशाय स्मात्सम्मुखस्त्रिविधो मतः ॥ १५१ ॥ अथ शु-  
 क दोषा पचादः ॥ रेवत्यां मेघगे चंद्रे भवत्यंधो भृगोः सुतः ॥ यात्रा दोनैव दोषाय  
 सम्मुखो दक्षगोऽपिवा ॥ १५२ ॥ भृगवादि गोत्र जातानां न दोषः प्रतिशुक्र  
 जः ॥ अथ गमने शुक्रस्यास्त्रादि दोषः ॥ विवरो विजिते नीचे वक्रिते वासिते ऽस्त्रो  
 ॥ शत्रु क्षेत्रगते वापि तदंशे तन्निरीक्षिते ॥ १५३ ॥ भौमांशे भौम संयुक्ते मंदां  
 शे मंद संयुक्ते ॥ यात्रा नैव प्रकर्तव्या लक्ष्म्या युर्वल हानिदा ॥ १५४ ॥ अथ बुधोऽ-  
 पिसम्मुख स्त्याज्यः ॥ अनुकुले बुधे यायादित्यं भूतेऽपि भार्गवि ॥ सन्मुखस्ये बुधे  
 सर्वे वृथा रवेता शुभा अपि ॥ १५५ ॥ असामान्य यात्रायां शुक्र दोषा भावः ॥ प्रति शु-  
 क्रदि दोषोऽयं नूतने गमने नृणां ॥ राज्ञां विजय यात्रायां नान्यथा दोष मंह-  
 ति ॥ १५६ ॥ अथावश्य के तीर्थयात्रायां न दोषः ॥ अर्द्धोदयो परागा दो पुरत्ययोगे तु-

दुर्लभे ॥ तीर्थाधीतु सुखं याया त्कालेव स्तादि केक्यपि ॥ १४७ ॥ अथमार्गगु-  
 र्गुणकृपासेनयैव ॥ जीव प्रप्राप्ताद्ने युक्तो वानार्गसंख्येऽस्तगोद्यदि ॥ तत्रैव निव-  
 सेद्राज्ञाया वदभ्युदितो भवेत् ॥ १४८ ॥ सन्मुखश्चंद्रजोयत्र मार्ग कथ्यो हितो  
 यदि ॥ यावदस्ते गतस्तस्मिंस्तावत्तत्रैव संविशेत् ॥ १४९ ॥ अथ यात्रायां लघुवि-  
 चारः ॥ तत्राहो त्याज्यलघुनि ॥ कुंभ कुंभांशं को त्वाजो सर्वमायत्नतो बुधैः ॥ तत्र प्र-  
 यातु नृपते रथं नाशः पदे पदे ॥ १५० ॥ नीने मीनांशं केयानुः यं यावच्छो धनदा-  
 तिः ॥ निगिह्य गमने कौञ्चिन्मीनं दृष्ट्वा कर्कटाः ॥ १५१ ॥ लघुनस्था वानवा-  
 प्रस्थाः प्रीक्ता राक्षांजयार्थिनाम् ॥ भूभुजां जन्मलग्ने वा जन्म राशे च लघुनगे  
 ॥ निधने निधनेंशे वा गमनं निधनायते ॥ १५२ ॥ वैरिणो जन्म राशे स्तु वैरिभे-  
 वा तदीश्वरे ॥ यात्रा काले विलग्नस्ये सापि यात्रा विषायते ॥ १५३ ॥ अथ पु-  
 न्रलघुनि ॥ जन्म राशे लघुन गते तदीशे वा विलग्नगे ॥ अभीष्ट फलं दायात्रा राशे



शश्वेच्छुम गृहः ॥ १६४ ॥ लभेवर्गोत्तमे चंद्रे यात्रोक्ता कार्यसिद्धये ॥ अंशो रा-  
 शौ तदंशे वा नो कायानं प्रप्रस्यते ॥ १६५ ॥ जनौ य प्रशुभं युगा शिर्वेक्षि संज्ञो  
 ऽथ वा भवेत् ॥ स्वाधनाभिधनस्यो वा स राशिर्लग्न ग प्रशुभः ॥ १६६ ॥ अथ  
 शीर्षो दये लग्ने यात्रा सर्वार्थदायिनी ॥ राजयोगोचिते लग्ने प्रप्रल्ला व सुधाशु-  
 जान् ॥ १६७ ॥ अथ दयाप्रयः ॥ सेषादि रा प्रयो दिष्टु चतुर्वर्षे पि च पूर्वतः ॥ त्रि-  
 क्रमा द्दशकैः प्रोक्ता एते द्विग्वार स न्नकाः ॥ १६८ ॥ दिग्द्वार मे लग्नगते प्रप्र-  
 स्ता यात्रार्थदात्री जय कारिणी च ॥ हाणिं विनाशं रिपुतो भयं च कुर्व्यात्तथा-  
 तन्मूर्ति लोम लग्ने ॥ १६९ ॥ अथ दिगीशः ॥ सूर्यः सितो भूमि सुतो ऽथ गतुः श-  
 नि प्रप्रशीलं च बृहस्पतिश्च ॥ प्राच्या दिलो दिष्टु विदिष्टु चापि दिष्टु मधी-  
 राः क्रमतः प्रादिष्टाः ॥ १७० ॥ द्वितीयास्त्वीयं दिक्षं स्थो लालाटी काथितो  
 रक्षः ॥ लग्नां दी संन्नुव स्थान्यो गने मृत्यु करीयतः ॥ १७१ ॥ अथ ललाटी स्थान्यम-

दूद्वेयं गमादिषु ॥ जयंती सिद्धिदाक्षेया राक्षसी व्याधिदायिनी ॥ १८७  
 ॥ तारिणी कार्थ्यं कृद्देया संहारी मृत्युदा सदा ॥ साधारिणी शुभा सम्य-  
 गैरावती शुभप्रदा ॥ १८८ ॥ महोवला राज्यदात्री कालारव्या भयदा स-  
 दा ॥ १८९ ॥ अथ यात्रावा जन्मफलं च ॥ जन्मभादिनभंगरायं नवभिर्विभिजे द्वित-  
 म् ॥ श्रेयतो वाहनं प्रोक्तं गर्धभादिनरस्य वै ॥ १९० ॥ गर्दभः तुरगो हस्ती मे-  
 योजंषुकं सिंहकौ ॥ काको मयूरं हंसौ च नैवेते नरवाहनाः ॥ १९१ ॥ राशभे  
 धनहानि स्याद्बललाभस्तुरंगमे ॥ लक्ष्मी प्राप्तिर्गजे सम्यङ्मेघे च मरणं भवेत् ॥  
 १९२ ॥ जंबुकं ह्यायुषो हानि रायुर्द्विस्तथा हरो ॥ काके तु कलहश्चैव मयूर-  
 सुखसंपदा ॥ १९३ ॥ हंसे मिथ्यान्मभोजी स्याद्वाहनानां फलं त्विदम् ॥ अथ या-  
 त्रादृश ॥ जन्मर्क्षाच्च चतुर्गुरायं तिथि वारसमन्वितम् ॥ नवभिस्तु हरेद्भागं ३ः  
 श्रेष्ठं यात्रादृशं भवेत् ॥ १९४ ॥ रविश्चंद्रः कुजो राहुः जीवामंदो बुधस्तथा

॥ केतुशुक्रः क्रमाद्द्वयं बुधैर्यत्रा दशाफलम् ॥ १८५ ॥ भास्करे श्लोकस-  
त्तापौ चंद्रलक्ष्मी वरगना ॥ भौमे शस्त्रभयं हानी राहो मंगो ऽथ वंधनम् ॥  
१८६ ॥ जीवे लाभं शुभा प्रज्ञा मन्दे मन्द गतिर्भवेत् ॥ शुक्रे सर्व सुखं द्वये  
जयं चागममेव च ॥ १८७ ॥ अथ यात्रायां श्रेष्ठ नैराग्रहाः ॥ हित्वा सप्तमं शुक्रं के-  
द्रे कोटौ शुभा शुभाः ॥ पापाश्चोपचये प्रस्ता याने नो दशमः प्राशिः ॥ १८८  
॥ चन्द्रस्तु गमने नैद्यो लग्ना रिख्यय रन्ध्रगः ॥ द्यून षष्ठाष्टरिः फस्यो लग्ने शो-  
ऽपि न शोभनः ॥ १८९ ॥ सुरेश स्याहितो लग्ने सत्वेदो ऽपि न शोभनः ॥ पा-  
पो ऽपि चेत्सुहृत्तस्य तनौ भव्य फल प्रदः ॥ २०० ॥ जनने जन्म लग्ने श जन्म  
राश्री प्रवरोदये ॥ सुहृच्चैत्कर्मगः रवेदो नैद्यो पीद्यो विलम्बगः ॥ २०१ ॥ अथ-  
लग्नादि भावानां संज्ञाः ॥ लग्नाज्ञावाः क्रमाद्देह १ कोश २ धानुय्य ३ वाहनम् ४  
मंत्रो ५ रिद्धिर्मीर्ग ७ आसुश्च ८ हृत् ९ व्यापार १० गम ११ व्ययाः १२ ॥ २०२ ॥

दिने प्राधिष्ठितो राशिर्गर्ह्यदा लग्नगतस्तदा ॥ आतुर्गृह्यु प्रदः प्राच्या दिशि सूर्यो  
 ललाटगः ॥ १७३ ॥ सूर्यस्य राशितस्तस्मात्तद्वा दशे लग्नगो गृहे ॥ एकादशे  
 वाग्नाग्नेयां दिशि शुक्रो ललाटगः ॥ १७३ ॥ ललाटगः कुजो यास्ये दशमे  
 लग्नगो गृहे ॥ लग्नगे नवमे राशा वष्टमे वापि नैऋते ॥ १७४ ॥ ललाटग  
 सौमि के यो यातुर्द्रोक्षि धन प्रदः ॥ लग्नगो सप्तमे राशौ शनिः प्रत्यग लला  
 टगः ॥ १७५ ॥ वष्ट राशौ लग्नगते पंचमे वापि चन्द्रमाः ॥ ललाटगो वा  
 शुदिशि यातुर्मृत्युप्रदस्तदा ॥ १७६ ॥ चतुर्थ राशौ लग्नस्ये बुधस्तौम्ये ल  
 लाटगः ॥ राशौ तृतीये लग्नस्ये द्वितीये चन्द्र पूजितः ॥ १७७ ॥ ललाट  
 गश्चन्द्रमौलेर्दिशि यातुर्विना प्रादः ॥ इत्थं ललाटगो लग्ने सम्मुखे गमनं  
 त्यजेत् ॥ १७८ ॥ दिगीशो केन्द्रगे गच्छेन्नतु लालाटिगे क्षपित ॥ अथोक्तं  
 मये लग्नाद्य लाने समय निबेधः ॥ १७९ ॥ उषः कालो विना पूर्वगो धूलिः पश्चिमा

विना ॥ विनोत्तरं निशीथ स्मनयानेयाम्यां विना भिजित् ॥ १८० ॥ पूर्वा-  
 त्ते तूत्तरं गच्छेन्मध्यान्हे पूर्वतो व्रजेत् ॥ अपराहे व्रजेद्याम्यां मर्दरन्नेतु प-  
 रिसाम् ॥ १८१ ॥ अथ सजीवनिर्जीवयान्ना ॥ सूर्यभादिनभंगाय मष्ट भि-  
 जित् ॥ निज भादिन नक्षत्रं पञ्चमं मेलयेत्समं ॥ १८२ ॥ द्वाद-  
 शमे शेषं यात्रा तु कथ्यते ॥ रूप १ यस्त २ गुण ३ द्वीपे ७ दिक् १०  
 ॥ १८३ ॥ वेद ४ रुद्रो ११ ग ईमातंग ८ नन्द  
 ॥ सजीवे गणयेत्सामं यात्रा युद्ध विवादिकम् ॥  
 अथ यात्रा नाम ॥ ति-  
 नसु भिष्व हरेद्भागं श्रेष्ठं यात्रा च  
 गाण संहारिणी तथा ॥ साधारि-  
 त्तो जनयति शृगुजो धर्म वामार्थ लाम ॥

अथ द्वादशभावफलम् ॥ राहुः क्षमाजदिवाकरेन्दुरविजास्तं प्रस्थितो लभ्यते ॥  
तस्मान्निविवादकांश्च कुरुते रोगाश्च नानाविधान् ॥ जीवस्सोम सुतस्सथैव  
भृगुजो यात्रोदयस्यो नृणां सायात्रा धनधान्यलाभ शुभदायुरप्येहिं स लभ्यते ॥ २०३ ॥  
वित्तस्थाने नृपाणां मसुरगुरुविधौ सर्वकार्यार्थं सिद्धिं वल्लोपेतश्च जीवो हृदि सुखमनुलं प्राप्नुयस्स क्षयं च ॥ मन्दो मार्गेषु दीर्घं स्थिति सु-  
तसहितः कोशहानिश्च भानुश्चंद्रः कुर्यान्नरेन्द्रः प्रियजनसहितं राहु रुद्रादं-  
कारी ॥ २०४ ॥ प्रस्थाने भूमिलाभं स्थिति सुतरविजौ भानुना सं प्रयुक्तौ ॥ शुक्र  
श्चंद्रोत्सजौ च सुरगुरुरथवाप्रीतरश्चिर्यदा च ॥ भानुः स्थानस्थितस्तथा नर-  
वरगमने सर्वकारार्थं सिद्धिं ॥ राहुप्रश्नो विनीशं सुखयति सततं प्रस्थितः  
पार्थिवोऽपि ॥ २०५ ॥ सौरव्यस्थानगते ददाति विपुलाभोगान् भूगोरात्मजः  
प्राचुराणस्य मीहते सुरगुरुः सौरव्यतथा चंद्रजः ॥ हानिं चित्तगतं करोति रवि-

संक्षिप्तः स्तिग्धः क्षयं चंद्रमा राहु भूषि सुत स्तथा कं सहितः कुर्वीति पुः खं महत् ॥

२३७

२०६ ॥ जीवः पुत्रार्थं लाभं जनयति भृगुजः सर्वं कार्यार्थं सिद्धिं प्रीतिं चैवाव-  
शेषं सुत धन सहितं पुण्य मारोग्य कर्तुम् ॥ सूर्यं श्वंद्रे महीजो दिनकर तनयः  
सैहिकेयः प्रयुक्तो सर्वेते पंच नस्था स्सनत भयकरः पार्थिवानां प्रयागो ॥ २०७  
॥ बखे भानुर्नराणां दिनकर तनयो भूमि पुत्र स्तथैव प्रीतां प्रुद्धैत्यसंजी रत्ननि-  
कर सुतः सैहिकेयो ऽथ जीवः ॥ कुर्वन्सर्वार्थं लाभं यद्यपि हृदिगतं साध्यते स-  
र्वं कार्यं तन्नै को भूमि पुत्रो ऽप्यरिवल मयनं सर्वं सिद्धिं ददाति ॥ २०८ ॥ नि-  
त्यं प्रुक्त्वा दिवा कर्कतनया श्वंद्रे स्तथा भूमिजः छिन्नं प्रश्नु प्रराशनयति च चर-  
मे स्थाने स्थिताः सप्तमे ॥ सौम्यो भिन्न सभा गमं सुर गुरुः काव्यार्थं सिद्धिं परा-  
राहुर्द्वैषितं करोति सततं यात्रा सुया भिन्न गः ॥ २०९ ॥ श्वारोग्य सोम पु-  
त्रो जनयति भृगुजो धर्म वामार्थं लाभं जीवो रक्षत्य श्रेष्ठं सुत भिन्न जननी-  
२३८

यात्रिकं नैधनस्यः ॥ चन्द्रो वंधं विधत्ते जनयति सचिना शत्रु यद्धेऽपि स-  
 र्वो राहुश्चेद्भूमिपुत्रो हि मरि पुतनये क्षिप्रमर्थस्य नाश्रम् ॥ २१० ॥ शुक्रो  
 ऽति सौरव्य नर्वमै बुधश्च जीवो विधत्ते सुखसंपदर्थम् ॥ चन्द्रश्च सौरिस्तह  
 भूमिजश्च कुर्वति पौराः पुरुषस्य दोषम् ॥ २११ ॥ कर्मस्थानं गतोऽर्कः प्र-  
 चुरधनकरः पुष्टिदः प्रीत रस्मिः जातस्संग्राम काले जयति रिपु वलं सौम्य  
 शुक्रो च सौरव्यम् ॥ नित्यं यात्रा स्थितानां भवति भयकरः सर्वकार्येषु  
 भौमो राहुर्वैरन्तथोयं जनयति सततं दीर्घ कालं तथार्किः ॥ २१२ ॥ भृगु सुत  
 बुधजो वै श्वन्द्र सूर्यार्कि भौमे व्रजति यदि नरेन्द्रः क्षिप्रमेका दशस्थैः ॥ सज  
 यति रिपु वर्गं स्वेच्छयानि विप्रं कं विचरति गजराजो यूथमध्ये व्यथेष्टम् ॥ २१३  
 ॥ क्षितिजरवि सिगार्क संहि केयो नराणां जनयति कुल नाशं श्रेष्ठ भृत्यस्य भे-  
 दम् ॥ जनयति रिपु सौरव्य भृत्य हानिं च कष्टं यदि बुध गुरु शुक्रा ह्यादशस्था-



॥ लग्न गते भृगु पुत्रे स्य प्रभालभा इव सर्वे ॥ २२२ ॥ उदये रविर्द्यदि सोरि  
 ॥ प्रभा प्री दशमे ऽपि ॥ वसुधा पतिर्यदि याति रियुवाहिनी वसमेति ॥ २२३  
 ॥ मन्दे कुजे तनो रवे ऽर्के षुक्ते च विदित्वा भगो ॥ संव्रजन्मृयाति प्रभान्द्विजि  
 त्यश्रियमस्रुते ॥ २२४ ॥ मन्दरो ज्ञिषहा दस्थो बलिर्नो ह्येज्य भार्गवाः ॥  
 प्रयारो भूयते र्यस्य वसुधा तस्य हस्तगा ॥ २२५ ॥ लग्ने जीवे विधौ ह्यने च  
 तुर्थे ह्ये तथा भृगो ॥ पाया हि ज्यो मर्माही पालः प्रस्थितो लग्नभते श्रियम्व ॥ २२६  
 ॥ जामे ऽर्के रवे बुधे षुक्ते दुश्चिक्ये भूमि ते शानो ॥ ह्यने ऽह्ये तनुगे जीवे प्र-  
 स्थितस्य भवे ज्ञायः ॥ २२७ ॥ लग्ने ऽह्ये वागुरो सूर्ये षडे व्याज गते प्रा-  
 नो ॥ सुते ह्ये हि बुके षुक्ते राजा हंति गये रिपून् ॥ २२८ ॥ बलिनीन्दु सुते  
 लग्ने केन्द्रे जीवे ऽथ निर्वले ॥ त्रिषट् त्र्यांको चन्द्रे संव्रजन् श्रियमाप्नुया  
 त् ॥ २२९ ॥ अशुभं रवो रन वाटमहस्ये हिबुक सहोदर लाभमहस्यः ॥

श्रीः कविरिह केन्द्र गगीः पति दृष्टो वसु च य लाभ करः खलु योगः ॥ २३० ॥ रि

२३१ सुलभ कर्म हिबुक्के शशिक्षे परि वीक्षिते शुभन भोग मनेः ॥ व्यय लभ मन  
य महं सु जायः परि वर्जिते क्व प्रथ नाम धरेः ॥ २३१ ॥ लगने यदि जीवः पा  
पा यदि लाभे कर्मण्य पि चेद्रा ज्या धिग मस्स्यात् ॥ दूने बुध शुक्रौ चन्द्रे  
हिबुक्के वा तह त्फलं मुक्तं सर्वेर्मु नि वर्यैः ॥ २३२ ॥ षडाद्याद्य गते शुक्र जीवा  
जैर्गमने जयः ॥ तुर्य वोषा न सिद्धे च मन्दे चन्द्रे च तत्फलम् ॥ २३३ ॥ बु  
ध भार्गव यो रत्न ध्याते कुम्भुद बांधवे ॥ तुर्य स्थे ऽङ्गे जयन्मायु गमने ऽ रीन्म  
रे श्वरः ॥ २३४ ॥ लगना १ रत्ना ७ र्य ६ म्बु ४ वह्नि स्थे षष्ठ्युक्ते ज्या र बुधा  
र्क जैः ॥ योगो ऽयं क्रमतः प्रोक्तो गमने जय द्यो बुधैः ॥ २३६ ॥ षट् ६ त्रि ३ रत्ना  
१० री ६ न्दु १ वेदे ४ षा ११ संस्थिते तर्पणा दिभिः ॥ रे च चरैः क्रमतो जीव वारेषो  
गोऽय सुतमः ॥ २३६ ॥ जीदे ऽर्के ऽ रि गते भौमे जिगो रंघ्र गते र्दुगो ॥ द्नेन्दु

सर्वेनेच शुभा जाना भू भुजां जय दाधिनी ॥ २३७ ॥ शुभा की ज्या स्त्रि नूर्य स्थि

२३४

प्राचुस्थे वन्द भूमिजे ॥ याजा भूमि भुजां प्रास्ता प्राचुहंद विहादिणी ॥ २३८

॥ एको द्वेज्य सितेधु पंच भतपः केहेयु मोग स्तथा द्वे चैते व्याधि योग एव स  
कला योगाधि योग स्सहतः ॥ योगे स्मेम मयाधि योग गमने स्मेम रिष्टां  
वधं चाथो स्मेम यष्टो ऽवनिश्च लभते योगाधि योगे व्रजन् ॥ २३९ ॥ पंच  
मेज्यो रविः षष्ठे वर्हते नवमे गुरुः ॥ भाग्ययोगाभिधि योगे निहन्ता वैरिणां  
सदा ॥ २४० ॥ गुरुः केन्द्रे त्रिकोणे वा रवि लोभेच कर्मणि ॥ कल्याणयोगो  
भूयस्य यातुः कल्याण कइवेत् ॥ २४१ ॥ दिगीष्टो दिग्बली चैस्स्या स्त्रिमे प्रा  
स्य सुहृदादि ॥ विजयो नाम योगो ऽयं यातो राजा जायी भवेत् ॥ २४२ ॥ सह  
अस्थान गो भोमो भाग्यस्य अह स्थातिः ॥ चिन्ता मणि सुमाख्यो ऽयं यातु  
स्तंकल्प पूरकः ॥ २४३ ॥ लग्ने शुक्र प्रष्टी वंधो कर्म स्थाने गुरु र्यदा ॥ २४४



गोर्वो ॥ अभयाभिधयो गोयं भयं करविनाशनः ॥ २५३ ॥ आर्ये प्रो व्यय  
 गो नीचः पुत्रस्थाने प्रोनेधरः ॥ विदारिक समाख्योऽयं यातुः पत्नी निह-  
 न्यसो ॥ २५४ ॥ मार्गे प्राः शनि संयुक्तः सप्तमेऽस्तं गतो ग्रहः ॥ विदारिक  
 मिमं मन्ये यातुः पत्नी विनाशकम् ॥ २५५ ॥ सप्तमे चन्द्रमा स्तस्मात्सप्तमे  
 नीच रवेचरः ॥ कुटुंब हारको योगो यातुः श्रिय तमा हरेत् ॥ २५६ ॥ दुर्बलो  
 यदि मार्गे प्रो निचसे त्याय मध्यगाः ॥ पाप कुंजरयो गोय यातुः पत्नी निह-  
 न्यसो ॥ २५७ ॥ मार्गे प्राः सप्तमे भानुः पञ्चमे क्रूर रवेचरः ॥ विदारिका रव्य  
 हवासो भाव्या मरिचं न धेनु ॥ २५८ ॥ सो च मूल त्रिकोण स्थः सोम्यः पा-  
 प विवर्जितः ॥ ज्ञानन्दार्णवयोगीयं धर्मेणैव जया वहः ॥ २५९ ॥ उद-  
 याग्नि भस्तलगो दिन कृद्यथ शीत करैः ॥ न भवन्त्यरयोऽमि मुरवा हरिणा इ-  
 व के प्ररिणाः ॥ २६० ॥ क्षोषितेन सहितेऽस्तगे विधौ च धुगे प्रवसता मही

भुजा ॥ संगरेरिदु गणौ विकीर्त्यते तूल राशि रिवृत्तातरि भुजा ॥ २६९ ॥ सु-  
 त्तं विविन सहजेषु संस्थिताः शुक्र चन्द्र सिततिग्म रश्मयः ॥ यस्य यान्न समये  
 रणा गणेतस्य याति शूलभाङ्गवारयः ॥ २६९ ॥ यो याति जीवे तनुगे महीशः  
 क्रूरस्थिते व्योम्न षवाय संस्थेः ॥ तस्याग्रतस्संयति वैरि सेनां प्रीति नृपाणा  
 भिवना स्थिरा स्यात् ॥ २६९ ॥ लाभार्दुश्चिक्व गतो यमारौ वलान्चिताभा  
 गोवर्जोवसोभ्याः ॥ यस्य प्रयागो विलयं प्रयान्ति तस्य द्विषस्सर्वरसं यथाप्नु  
 ॥ २६९ ॥ लाभ विक्रमसुखस्थिते कंदकस्य गुरुराग निरीक्षिते ॥ दूनरं प्रभ  
 ववर्जितैः खलैः स्यात्ततोऽभिमत सिद्धिभाक् नृपः ॥ २६९ ॥ सोम्य ग्रहेः केन्द्र  
 तपस्सुतस्थेः क्रूरैः स्त्रिजलाभारि गतैर्गताये ॥ क्षोपा नल प्रशान्ति सुपैति तेषां  
 विरोधि नारो नयनां द्रुपतैः ॥ २६९ ॥ एकोऽपि जीवार्क कुजार्क जानां स्वोच्च-  
 विलमे स्वग्रहे यदीन्दुः ॥ यातस्य यान्त्यत्र पराः प्रणाशं महाकुलानी वबुद्धं

शिवभेदः ॥ २६७ ॥ चन्द्रेऽस्तमे देवगुणे विलम्बेक्षुन्नयोः कर्मणि लाम्बोऽर्थे  
 ॥ सौरायो र्मातृगयोऽथ यातो नृपस्त्वभृत्या निचण्णस्ति प्रबुध् ॥ २६८ ॥

सोऽस्थे लम्बमे जीवे चन्द्रे चाप गते यदि ॥ गतो राजा रिप्त्सन्ति पिनाकी विप्र-  
 रं यथा ॥ २६९ ॥ शुक्ले त्रिकोणे केन्द्रस्थे लम्बे चन्द्रेऽथ वारक्षी ॥ प्रबुध् न्ति-  
 गतो राजा ब्रह्म द्वेषः कुलं यथा ॥ २७० ॥ पापास्तनीये हिबुके स्तितक्षी जीवे  
 विलम्बे मगलां वनोऽस्ति ॥ यस्योद्गतस्यापि वलं रिप्त्णां कृतं दहतमे दिव यथा  
 ति नाशम् ॥ २७१ ॥ यस्योदयास्तारिचतुस्त्रिंसांस्थाः शुक्लोऽगिरां गारक-  
 सौम्य सौराः ॥ द्विषद्वलं रक्षी वदनानि तस्य ह्कां तानि कान्गाना विरलोकयन्ति  
 ॥ २७२ ॥ पूर्वाक्षि योरो धन गो वृधप्रेच्छ प्रांक सूर्यो च दशाय संस्थो ॥ प्र-  
 स्मिन् गतस्यालि कुलोप गीता नाना वनस्था दिग्दा भवन्ति ॥ २७३ ॥ त्रिष-  
 चन्द्रेऽवलः वृधो वली उभो च त्रिषण्ण वान्धेव भवत स्तदायोगः ॥ ९ ॥

५०  
 शि तान्म वा न्त्ये व्युत्पल प्रप्राप्रां को बुधो वली यस्य गुरुश्च केन्द्रे ॥ तस्या रियो धाम  
 रलोः प्रियाणि प्रियाप्रियाणां जनयन्ति सैन्ये ॥ २७४ ॥ केन्द्रेऽप गते न वीक्षिते गु-  
 रणा रवाय तु र्यगो सिते ॥ पाथे रनवाय सप्तगो र्वसु किं तन्म यदा शुभ्य न्युपः ॥  
 २७५ ॥ यथाय गो शुक्र बुधो प्रयाणो सुरेष्ट प्रज्यो ग गने यदि स्यात् ॥ रिपुः प्रणा  
 प्रं विषयेषु सौख्यं प्राप्नोति कीर्तिं विपुलां च भोगम् ॥ २७६ ॥ दुश्चिक्कलाभारि  
 गतेऽर्कं पुत्रे चतुर्थगो दैत्य गुरो प्रयाति ॥ तदा पुमान्स हिरदैन्द्र यानं कीर्तिं यष्ट  
 स्तिद्धि सहस्र मेति ॥ २७७ ॥ केन्द्र स्थाने सुरपति गुरो कंठकस्थेऽ सुरेज्ये कि-  
 द्रे सौम्ये प्रवसति यदा त्वष्टमेन्दु र्यदि स्यात् ॥ येषां क्रूर रिपु सहजगाराहके  
 तू च मूर्त्ता वायुः कीर्तिन्द्र विण भगुलं तेल भन्ते यष्टश्च ॥ २७८ ॥ मूर्त्तौ शुके  
 सुरपति गुरो छिद्र गो वा त्रिकोणे केन्द्र स्थाने प्रनिरवि कुजा लाभगा वा यदिष्टुः  
 ये मूपा यानि प्राञ्च विपुल धन मयो सैन्य नाशं विपुलां कीर्तिं शुद्धं यष्टश्च प्रमधि-



एवं स्ते सुरवाद्यज्जन्ति ॥ २७२६ ॥ दोहसंस्थे सुरपतिगुराभावात् ॥  
 स्वये चन्द्रे च जति यदि वा कार्ययो गास्तितीष्णः ॥ प्राप्नोत्युग्रं कनकतुल्यां ॥ २७२७ ॥  
 यद्ये चन्द्रे कोप्रमायुः कीर्तिजयति च तदा मत्तमातां दूष्यम् ॥ २७२८ ॥  
 यद्यारत्नादि कोप्रमायुः शुभे क्षितेशु दूनात्यलम् राहिते च शुभमर्हेषु ॥ २७२९ ॥  
 जगन्नारिकर्म हि वुंकषु शुभे क्षितेशु दूनात्यलम् राहिते च शुभमर्हेषु ॥ २७३० ॥  
 तुभ्यन्त भवति प्रतरे त्समुद्रं यवप्रमनापि किमुना रिसमागमेषु ॥ २७३१ ॥  
 ॥ एकांते रक्षीन्मनुजा त्कुजादा सोम्ये स्थिते सूर्य सुताहुरोर्वा ॥ २७३२ ॥ निरन्तरं यदि भवने-  
 नेऽरिर्नेचिराद्गतस्य वेवाधि को भूत्यद्वे प्रवरस्य ॥ २७३३ ॥ प्राक्पालं स्थे गृहेः पश्चिम दिशि  
 वुपंचसु ग्रहाः स्थिता दिवस करेण वर्जिताः ॥ २७३४ ॥ प्राक्पालं स्थे गृहेः पश्चिम दिशि  
 स्तदापशान्वलानि दिवा सुकन्तति ॥ २७३५ ॥ प्राक्पालं स्थे गृहेः पश्चिम दिशि  
 एतज्जालं शूण्यं कपालं स्थेः ॥ २७३६ ॥ प्राक्पालं स्थे गृहेः पश्चिम दिशि  
 युक्ताद्दोमादा सो राज्जीवादा वृधः सकान्ते तृतीय स्थाने यत्र कुत्र स्थातदायोगः ॥

६  
 ण दिशि ॥ २८६ ॥ बुधभावि नध्यगते हिमगो हिवुको पगते च नृपः ॥ प्रावि-  
 द्रोऽमरुहृत दिशं यदिवा त कृतः पुरुहृतयमं प्रति ॥ २८७ ॥ सितेन्दुजो चतुर्थगो  
 निष्ठाकरश्च सप्तमे ॥ यदा तदा गतो नृपः प्रष्टास्त्यशीन्वि तारणात् ॥ २८८ ॥ शु-  
 क्त वाक्यति बुधैर्द्धन संस्थैः सप्तमे प्रष्टि निलग्न गतोऽर्कः ॥ निर्गतो नृपति रिति कृ-  
 तार्थो वर्धन्ते यदशीन्वि निहत्य ॥ २८९ ॥ सूर्येन्दु बल वर्जितौ बल युतौ लग्ने-  
 प्राजन्ते पूर्वौ पाताले दशमे पिवा प्रष्टि सुतो लग्न स्थितौ वाक्यतिः ॥ षट्स-  
 ष्ठाष्टमवार्जिते बुभुगुजः स्थाने बुधस्य स्थितो यातुस्तस्य न विद्विषोरणा मुरवे-  
 ति स्थानि योषा दव ॥ २९० ॥ सौरे भौमे लग्नगोऽर्कैरव मध्ये कर्म राधावे भार्ग-  
 वे चन्द्रजो वा ॥ याथाहूय प्रष्टातु गेहं निहन्तुं दहं प्रातृ काल वक्तुरचैष्टः ॥ २९१  
 ॥ शुरे विलग्नो यदिवा प्रष्टाके षष्ठे रवौ कर्म गतेऽर्कयुजे ॥ सित क्षयो वर्धुसु-  
 तस्य योश्च यात्रा जानित्री वहिता निधत्ते ॥ २९२ ॥ त्रिनिधन तनु सप्तमारि सं-

रेखाः कुजसित जीव बुधारेवि श्वयस्य ॥ खल जन जनिते ऽ वल्लोक यात्रा न भव  
 तितस्य चिराय प्रब्रुसेना ॥ २६१ ॥ कुज एविज युते रिभि गतानां जल महजा यग  
 ते स्मिता र्क जीवैः ॥ परवल मुष याति नाश माशु भ्रुत भधनस्य कुट्टं च चित्तयेव  
 ॥ २६२ ॥ भृगु पुत्र महेन्द्र गुरु रमिने सहितो यदि भंयुग पत्य जतः ॥ ह्य गुरु यदि  
 नवांश कमेक गतो समरे ऽ मर राडिव भाति तदा ॥ २६३ ॥ सिंहाति तनय युता न्न  
 वांश जे यदि शत मे भृगु जीष वा गुरुः ॥ शत गुण मय हन्य रेर्वलं विषं भिव काय  
 मस्य क्य षो यगम् ॥ २६४ ॥ स्त्रोच्चो पयो जीव कुजार्क वर्गे रेभि र्विच भि र्वा कथिते रे  
 कलने ॥ राक्षः प्रणाशं समुपैति प्राशुः सोरव्य हि भार्यस्य तथा धनस्य ॥ २६५ ॥  
 शतांश का हर्द्ध मवस्थिते बुधेय मारय स्तत्र गतस्य भूरुतः ॥ प्रयाति नाशं समरे  
 द्विषद्वलं य धार्धि भावो यगतस्य गोरवम् ॥ २६६ ॥ सिंह राज तोलि सिधुना भृग क  
 र्कतो च स्वे शान्विता भवति यस्य शानि श्व लने ॥ तत्सेनिकाः परवलं क्षय यन्ति या

तु पूर्वस्य विज्ञ भिव चारण च है मं ह्यः ॥ २६७ ॥ अथ सम आत्मा ॥ गुणे वीर्य कीन्द्र  
युते बुधे वा भृगु नन्दने ॥ विजयो नाम यो गोयं यातुर्विजयदः सदा ॥ २६८ ॥  
स्वराग्रिगे बुधे लब्धने सिते वा सुर वन्दिते ॥ नंदा व तर्क यो यो गो यातु रिक्षायी सि  
द्धिदः ॥ २६९ ॥ स्वाग्र संस्थे बुधे लब्धने शुभे वा देव पूजिते ॥ शंख संज्ञा क्यो यो  
गो यातुः कीर्ति प्रदः सदा ॥ २७० ॥ स्वराग्रो स्वांश गो सौम्ये लब्धने वा भृगोः सुते  
॥ जीवे वा व्रज यो गोऽयं यातुः प्रपन्न विनाश कृत् ॥ २७१ ॥ अग्नि मित्रांश गो सौ  
म्ये सिते वाथ सुर चिते ॥ लब्धने मातृ यो गोऽयं प्राज्ञा संधि कृत् सदा ॥ २७२ ॥  
यत्रैकादश ग अश्वो भानुर्वा प्रवज प्रशुभः ॥ अश्वो नाम यो गोयं अग्नि र्भीति वि  
नाश कृत् ॥ २७३ ॥ त्रिकोण गो शुभे रवे दे सव ले वा द्वितीय गो ॥ कल्याण सञ्ज्ञो

तु पूर्वस्य विज्ञ विव चारण च है मं ह्यः ॥ २६७ ॥ अथ सम आत्मा ॥ गुणे वीर्य केन्द्र  
युते बुधे वा भृगु नन्दने ॥ विजयो नाम यो गोयं यातुर्विजयदः सदा ॥ २६८ ॥  
स्वराग्रिगे बुधे लगने सिते वा सुर वन्दिते ॥ नंदा व तर्क यो यो गो यातु रिष्टायी सि  
द्धिदः ॥ २६९ ॥ स्वाग्र संस्थे बुधे लगने शुभे वा देव पूजिते ॥ घ्रां व संज्ञा क्यो यो  
गो यातुः कीर्ति प्रदः सदा ॥ २७० ॥ स्व राग्रो स्वां प्रा गो सौम्ये लग्नस्य वा भृगोः स्मृते  
॥ जीवे वा व्रज यो गोऽयं यातु प्रपञ्च विनाश कृत् ॥ २७१ ॥ अग्नि मित्रां प्रा गो सौ  
म्ये सिते वायु सुर च्छिते ॥ लग्नो मातृ यो गोऽयं प्राज्ञा संधि कृत् सदा ॥ २७२ ॥  
यत्रैका दश ग अश्विनो भानुर्वा प्रवल प्रशुभः ॥ अशम यो नाम यो यो यं अग्नि भीति वि  
नाश कृत् ॥ २७३ ॥ त्रिकोण गो शुभे रविते सवले वा द्वितीय गो ॥ कल्याण सङ्घो  
योगोऽयं यादिनां संगल प्रदः ॥ २७४ ॥ यत्र स्वोच्च गत अश्विनो लग्ना देका दशे  
स्थितः ॥ जयन्तो नाम यो गोऽयं प्राज्ञ पक्ष विनाश कृत् ॥ २७५ ॥ वर्गो जगते

लभे शुभे वापव लान्विते ॥ शुभ ग्रह युतैः केन्द्रे व्योमोऽयं सिद्धिदायकः ॥ ३०६ ॥  
 पश्ये वायु गते सूर्ये ताम गेहर सच्चकः ॥ योगो महारणे प्राप्नुपक्ष क्षय करस्सदा ॥  
 ३०७ ॥ उच्च स्थे लाभो शुभे त्रिषधे देव पूजिते ॥ सुदर्शनो महा योग प्रपन्न भवं स  
 करो रणे ॥ ३०८ ॥ लग्नान्ये केन्द्रे चन्द्रे लग्न स्थे देव पूजिते ॥ महा प्रांवाक्यो  
 योगः प्रति पक्षाच्च मानदः ॥ ३१० ॥ भूसुते स्विच्च गो लाभे मृग कुम्भ गते यमे ॥ नं  
 चावर्त्ताह्यो योगो रणे प्राप्नुव रणे नलः ॥ ३१० ॥ मेघ गो भास्करे पश्ये लाभो गो स्वि  
 च्च गो यमे ॥ नक्षत्र पाद योगोऽयं प्राप्नु मेघा निलो रणे ॥ ३११ ॥ भीमे स्वर्गादि  
 गो लग्नो सौम्ये केन्द्रे त्रिकोणा गो ॥ पुष्य योगोऽति विविध कुटारः संगरो गतो ॥ ३१२  
 ॥ एकांतरे गते लग्नो च्छुभ रवेदेऽथवा शुभे ॥ वापी योगास्त्व रिज्ञान तिजिरेषु  
 दिवा करः ॥ ३१३ ॥ आचक्षुके तथा याने सौम्येऽस्ति निधनेऽपि वा ॥ ब्रजिरे  
 कोदयेऽस्ति वा मथ्यान्हे वाप्य प्रंकितः ॥ ३१४ ॥ प्रभय ह्युति तारका स्फुट

तदी प्राची भवे न्निर्मला त्वीष इत्त विलोहिता न भवला देवे स्सदा वांछिता  
 ॥ नो वारं न तिथिं न चापि कारणं लभं न चापि क्षते हत्वा दीष सहस्रकंचय भुक्त्वा  
 नृपा करो ल्युन्नतिम् ॥ ३१५ ॥ मध्यं व्योम प्रयाते स्फुरद नलनि भेके परैराकर्क-  
 विंवे क्षया साध्वी व कांता प्रचलति पुरेष यत्र तत्पाद लभा ॥ तावत्सोरिर्न्म-  
 विदिः कुञ्जकत मयुभं नैव त्रसं न योगः सम्माना रोग्य संपत् स्थिति मय्ययु-  
 वतिं तत्र गन्ता लभेत ॥ ३१६ ॥ अथ मय्यन्ते किंचिदिशेषः ॥ भंगुल्यो विप्रगतिः सूर्येभ्य-  
 कुस्सोमे च षोडश ॥ कुजे पंचदशं गुल्यो वुधवारं चतुर्दश ॥ ३१७ ॥ त्रयोदश-  
 गुरो वारं द्वादशा क्तेज शुक्रयोः ॥ शंको मूर्त्ति यदा क्षया मय्यान्तं च प्रजायते ॥  
 ३१८ ॥ तदा चाभिजिदाख्या ता षटिका च सदा वुधैः ॥ अत्र कार्याणि सिध्यंति  
 सर्वा नीह कृतानि च ॥ ३१९ ॥ जातोऽभिजिति राजा स्या द्यापारं सिद्धिरुत्तमा ॥  
 या वत्सिंहरवर्णं गन तल गतं भानु विंदं च नास्ति या वन्नो दिक्षु प्राणंति जजाति

॥ ३३३ ॥ अहं पौनो ह्यहं माघे दिने नैके नु फाल्गुणे ॥ चै-  
 न्ने घटी द्वयं दीपो नाथं गार्भं समुद्भवे ॥ ३३४ ॥ भावस्य तु सूर्या चंद्र मरुतो विं-  
 कत्वा हेम मये तदा ॥ दत्त्वा भूमिपतिर्यायात्कार्यः ॥ तथा वश्य के स ति ॥ ३३५ ॥  
 ॥ अथे कश्चिन्दिने निर्गम प्रवेश्यो विचारः ॥ महीपते रैक दिने पुरात्पुरं यदा भवेतां गमन मवे-  
 शकी ॥ भवारं पूज्य प्रति शुक्र योगिनी विचारये नैव कदापि पाहेतः ॥ ३३६ ॥  
 यद्ये कस्मिन्दिनसे महीपते निर्गम प्रवे श्यो स्तः ॥ तर्हि विचार्य स्वुधिया प्रवे शका-  
 लो नयात्रि कस्तन ॥ ३३७ ॥ प्रवे श्य निगम मध्ये च निर्गमाच्च प्रवे श्य नश्य ॥ नवसे-  
 जातु नो कुर्या द्विष्टे वारे ति यावपि ॥ ३३८ ॥ अथ यात्रा विधिः ॥ अग्निं नहुत्वा देवतां पू-  
 जयित्वा नत्वा विप्रान् संधित्वा दिगी प्राप्त ॥ दत्त्वा दानं ब्राह्मणेभ्यो दिगी प्रो ध्यात्वा-  
 चित्ते भूमिपालो ऽधि गच्छेत् ॥ ३३९ ॥ अथ नक्षत्र होहम् ॥ कुलमावा तिलतलं दुत्वा-  
 नपि तथा माघांश्च गव्यन्दधित्वा ज्यं हुगध मयेण मां सम परं तस्यैव रक्तं तथा ॥ तदा

ॐ त्वाय समेव चाष पललं मार्गं च प्राणान्तथोषादि कथं च पृथग्व दूषमथवाचि  
त्राह जान्स त्कलम् ॥ ३४० ॥ कौर्मि सारिक गौधिकं च पललं प्राणं हविष्य  
हवा हस्ते स्यात्तु शरान्न मुद्रमपि वापिष्टं जवानां तथा ॥ मत्स्थान्म रवतु  
चित्रितान्न मद्य वा दध्य न्न मेवं क्रमाद् दृश्यामह्यमिदं विचार्य मतिमान्म ह्मे तथा  
लोकयेत् ॥ ३४१ ॥ अथ दिग्देहदम् ॥ आज्यं तिलोदनं मत्स्यं पयश्चापि यथा  
क्रमम् ॥ भक्षयेद्दीहदं दिश्य माशो द्वादिकां त्रजेत् ॥ ३४२ ॥ अथ चारुदेहद  
म् ॥ रसालोपायसकाजीमुखं हुण्धं तथा दधि ॥ पय पूतं तिला न्नं च भक्षये-

[illegible]



निधि दोहस

३३

३५८

१५८  
 ३४८ ॥ दोह दस्याप्यलभेत् ॥ ध्यात्वा नदीहृदं व्रजेत् ॥ अथ प्रसंगाद्देहजस  
 रविचारः प्रोक्तः ॥ यदुक्तं सारतत्त्वकौस्तुभस्य यागलालादिषु ॥ वक्ष्ये देहोपबुक्तं च सं-  
 क्षेपाद्भूमनादिषु ॥ ३४९ ॥ नाडी डावा मगा चान्दी पिंगला दक्षिणा रवेः ॥ सुकु-  
 म्भा श्लेष्मदी मिथ्या सा तु यौगीन्द्र गोचरा ॥ ३५० ॥ अथ तिथि परत्वे स्तोत्रम् ॥ शुक्ले प्र-

नि पद्म रम्भा दादौ चन्द्र तिथि त्रयम् ॥ ततस्तिथि त्रयं सूर्योद्देश्यमेव धुनः धुनः  
 ॥ ३५१ ॥ ततो न्यस्य तथा चैवं तिथौ हादश संक्रमे ॥ कृत्स्ने तु प्रथमे सूर्यस्तत  
 श्चन्द्रोऽन्यतुक्तवत् ॥ ३५२ ॥ निज नाड्युदयाहृत्यः पंच स्वीय स्वरोदयः ॥ अ-  
 थ वार परत्वेन निज स्वरोदयः ॥ अथ सूर्य्य स्तराद्देश्य भातु जीव धरात्मजाः ॥ शानि-  
 भार्गव चंद्र क्षाः प्रोक्ता चन्द्र स्वरादौ ॥ ३५३ ॥ स्वस्व चारे स्तरा रम्भो न्यह्यः पंचो-  
 दया देवेः ॥ निज स्वरोदिनं कार्यं स्व चारे स्वस्वरोदये ॥ ३५४ ॥ काले सूर्य्य स्वर  
 स्वन्दोः स्वरे चंद्र मसो रवेः ॥ उद्देश्यत्वाद्युभयं हानिः स्वस्वे काले रविलंघुमयम् ॥

॥ ३५५ ॥ अथ प्रातस्त्वरर्ध्वं गृह्यान्म ॥ प्रातर्नित्यं समुत्तिद्ये त्वारं अस्य स्त्वेराहि ॥  
 अयने दक्षिणे ऽङ्गस्य स्त्वेरेणोर्ध्वे ॥ ३५६ ॥ निजस्त्वेरदये कार्यं न भवेत्तो-  
 जवत्तदा ॥ प्राणा यात्रा दिपत्येन चाहर्ध्वं स्वरं सुधीः ॥ ३५७ ॥ अथ चंद्रस्वरकल्पम् ॥  
 प्रवेशे द्वाह यात्रा पथ च स्वात्तं कारं धारणम् ॥ संधिप्रशुभानि कार्याणि कार्याणि-  
 त्स्वरोदये ॥ ३५८ ॥ योऽष्टिकं श्रान्तिकं ग्रीति मोषधं चरं सायनम् ॥ योगाभ्यासा-  
 दिकं कर्म सिधेत्सर्वं स्त्रो विधी ॥ ३५९ ॥ आन्ते शोके विधोर्ध्वं च मूर्ध्विने ज्वरिने  
 पि च ॥ सज्जनस्य प्रवोधे च चन्द्रनाडी प्रवाहयेत् ॥ ३६० ॥ अथ सूर्यस्वरकल्पम् ॥ कु-  
 र्यात्सूर्यं स्त्रो युद्धं व्यवहारं च भोजनं ॥ मेधुनं विग्रहं दूतं स्नानं भंगं भयन्तथा ॥  
 ३६१ ॥ विदिषां सारणं शस्त्रं मोहनोच्चादनं वसं ॥ सूर्यनाड्यामिधा तिसिद्धिस्तत्पुत्रं  
 कर्मचारिवलम् ॥ ३६२ ॥ मंदमिभोजनादूर्ध्वं वष्यार्धं यो विता मपि ॥ सूर्यना-  
 ड्यां नरकुर्व्यात्तयत्नेनापि सर्वदा ॥ ३६३ ॥ आलिङ्गने प्रसंगे यो वष्यार्धं प्रायने

३६ ॥ अथ वह नाडी स्वर कल्पम् ॥  
 ३६ ॥ चन्द्र स्वर सूर्येणा सकाम स्तु पिवन्मवेत् ॥ ३६ ॥ अथ वह नाडी स्थिते प्रान्त्यं संक्रमेऽपि न सि-  
 ३६ ॥ पूर्णा नाडी स्थिते पूर्ण कार्यं सिध्यति पृच्छके ॥ ३६ ॥ अथ वह नाडी स्थिते प्रान्त्यं संक्रमेऽपि न सि-  
 ३६ ॥ ध्यति ॥ ३६ ॥ अथे दत्त्वा वजे ह्ये मान्पूर्ण नाड्याः पदत्रयम् ॥ ३६ ॥ प्रवेष्टा समये नाड्या न-

याद्यं सर्वे सिद्धि दम् ॥ ३६ ॥ दूरे युद्धे स्वर प्रान्त्यः समा सन्ने रवेः शुभः ॥ ३६ ॥ यायी सूर्य  
 स्वर जंता स्थायी चन्द्र स्वे जयी ॥ ३६ ॥ रिक्ता मंगं पुरः कत्वा वह नाड्या स्थितो ज-  
 येत् ॥ ३६ ॥ अथ भगो स्थित प्रश्नानु हेन्य ते नात्र संशयः ॥ ३६ ॥ मुरु शुक्र बुधे नृनां वास-  
 रे वाम नाडिका ॥ ३६ ॥ सीदित्वा सर्व कार्यं यु शुक्ल पक्षे विशेषः ॥ ३६ ॥ ३६ ॥ प्रष्टि प्रवाहे गम-  
 नादि प्रस्तं सूर्य प्रवाहे नहि किंच नाऽपि ॥ ३६ ॥ प्रष्टुर्ज्येष्ठ मस्या हृद् मान भगो रिक्ते च भा-  
 ने विप्रलं समस्तम् ॥ ३६ ॥ अथ स्वर पत्नेन तत्त्वोदयः ॥ ३६ ॥ तत्त्वानि पंचभूत पस्ते जो वायु  
 ने भः क्रमात् ॥ ३६ ॥ एकैकस्य घटी योगः पंच घट्यात्म के स्वे ॥ ३६ ॥ अथ तत्त्वानां प्रचारः  
 भयङ्गुलं दहे ह्यपु एतेन अ चतुर गुलः ॥ ३६ ॥ माहे योऽर्को गुलो दोयो वारुणः षोडशं गुलः

विभीषणो शुभं कार्यं यंत्र कार्यं सुनन्दने ॥ ३८६ ॥ याम्ये भवे त्मारण कार्यं मय  
 सो सोम्ये सभाया मय वेदानं स्यात् ॥ रगि से वनं भार्गव के सुहृर्त्सा विन्नि नाभिन् प्रप  
 ट सुविद्याम् ॥ ३८७ ॥ अथ मुहूर्त्तोदयं वार परत्वेन ॥ उदये रौद्र मादित्ये भेजं सोमं प्रकी  
 र्त्तितम् ॥ जयदवं कुजे वारे तुर देव बुधे तथा ॥ ३८८ ॥ रावणे च गुरो द्वेयं भार्ग  
 वे च विभीषणम् ॥ प्रानो याम्य मुहूर्त्तञ्च दिवा रात्रि प्रयो गतः ॥ ३८९ ॥ अथ  
 मुहूर्त्तगत्वेन गुणोदयम् ॥ गुरु सोम दिने सत्त्वं रजः प्रयागार के भृगो ॥ रवौ मन्दे बुधे  
 चैव तमो नाडी चतुष्टयम् ॥ ३९० ॥ सत्त्वं गौर रजः प्रयास तामसं कलस मेव च  
 ॥ इमं दणमिष जानीया त्सत्त्वा दीना यथो दितम् ॥ ३९१ ॥ अथ सत्त्वादि गुणानां फ  
 लम् ॥ सत्त्वेन साधवे त्सिद्धि रजसा धन सं पदात् ॥ तमसा साधये न्मोक्षं दाने द्वेयं  
 सदा बुधेः ॥ ३९२ ॥ सत्त्वे रजसि सत्ता कार्यं मय वा शुभं मेव च ॥ तमसा चेद भे  
 दादि साधयेन्मोक्ष मागिकम् ॥ ३९३ ॥ अथ मुहूर्त्तगत्वेन रेखा ज्ञानम् ॥ प्रत्येकं न-

५ भः रवादिभिरेव वर्णैर्विभ्रं धनुर्व्याम गणाधिपाद्यैः ॥ मृत्युं तथा पादयमादिच-  
 रैः श्रीविह्वनामा मृत सङ्क्षुसिद्धिः ॥ ३६७ ॥ असुरतप्योद्धरे रवे का कालरेखा  
 जयं भवेत् ॥ विप्रमावर्त कन्तत्र प्रन्ये प्रन्य मिति क्रमात् ॥ ३६८ ॥ अथरेखा  
 लम् ॥ प्रन्ये नैव भवेत्कायं विप्रमावर्त के भवेत् ॥ कालरेखा मृत्यु करी सर्वसि-  
 द्धिस्तथा मृते ॥ ३६९ ॥ धनुर्मन कर्कटानां घातं सत्वे विनिधिर्भेत् ॥ तुलालि-  
 ष्व मेघानां घातो रजासि निश्चितम् ॥ ४०० ॥ कन्या भिक्षुन सिंहानां कुम्भ  
 स्य मकरस्य च ॥ घानस्नाम सेवेलायां विपरीतं श्रुभा वहम् ॥ ४०१ ॥ ध-  
 नुः कर्कट मीनारव्या गोरवर्णाः क्रमो दितः ॥ द्रवे मेघे तुलायां च दृष्टिर्के स्या-  
 म वर्णिता ॥ ४०२ ॥ भिक्षुने मकरे कुम्भे कन्या सिंहे च हस्तता ॥ गोरस्य मृद-  
 ते सत्वे प्र्याम वर्णो रजो मृणो ॥ हस्तं तामस वेलायां मृदते नान्न संप्रायः ॥ ४०३  
 ॥ यस्मिन्वर्धं भवेन्मासो गोरणाधिक्यस्तथा क्षयः ॥ मासेन गृह्यते मास स्तव

[illegible]

॥ पदं निशायां रव रव विलुप्तं सूर्यं च नारायण विद्मनाथो ॥

|    |    |   |    |    |   |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |   |    |    |   |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |
|----|----|---|----|----|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|---|----|----|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| मे | चा | क | वै | वु | ग | वा | वि | सु | या | भो | भा | सा | तै | वै | चा | ज | वै | तु | ग | वा | वि | सु | या | भो | भा | सा | तै | वै | मे |
|----|----|---|----|----|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|---|----|----|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|

[illegible]

|   |   |   |   |   |   |   |   |   |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |     |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|
| ۱ | ۲ | ۳ | ۴ | ۵ | ۶ | ۷ | ۸ | ۹ | ۱۰ | ۱۱ | ۱۲ | ۱۳ | ۱۴ | ۱۵ | ۱۶ | ۱۷ | ۱۸ | ۱۹ | ۲۰ | ۲۱ | ۲۲ | ۲۳ | ۲۴ | ۲۵ | ۲۶ | ۲۷ | ۲۸ | ۲۹ | ۳۰ | ۳۱ | ۳۲ | ۳۳ | ۳۴ | ۳۵ | ۳۶ | ۳۷ | ۳۸ | ۳۹ | ۴۰ | ۴۱ | ۴۲ | ۴۳ | ۴۴ | ۴۵ | ۴۶ | ۴۷ | ۴۸ | ۴۹ | ۵۰ | ۵۱ | ۵۲ | ۵۳ | ۵۴ | ۵۵ | ۵۶ | ۵۷ | ۵۸ | ۵۹ | ۶۰ | ۶۱ | ۶۲ | ۶۳ | ۶۴ | ۶۵ | ۶۶ | ۶۷ | ۶۸ | ۶۹ | ۷۰ | ۷۱ | ۷۲ | ۷۳ | ۷۴ | ۷۵ | ۷۶ | ۷۷ | ۷۸ | ۷۹ | ۸۰ | ۸۱ | ۸۲ | ۸۳ | ۸۴ | ۸۵ | ۸۶ | ۸۷ | ۸۸ | ۸۹ | ۹۰ | ۹۱ | ۹۲ | ۹۳ | ۹۴ | ۹۵ | ۹۶ | ۹۷ | ۹۸ | ۹۹ | ۱۰۰ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|

五

॥ नक्तं च विद्मः ॥ इदं पदं मुकुटः ॥ १६५ ॥

六

[illegible]

यं श्रीजतिखंजयः श्रीः ॥ ४०६ ॥ दुषेधनुः लसयसो न योरिः सिद्धिद्वेनः सौरियभौव सिद्धिः

[illegible]

रत्नोत्पत्तिश्च जलवद्भूतमनयोऽथ दामोदरकुंजरस्यो ॥ ४१० ॥ गुरोर्गोपिनाथस्तथा विभ्रा

[illegible]



जोनभः केशवः कुंजरास्य स्तथैव ॥ निशायां पदं नंदजः सख्यं सन् नर्मभो माधव आप्नीकं ह  
रिध्व ॥ ४१२ ॥ शुक्रे कसः स्या पमः रवंशुराणि गौरी पुत्रः श्री पतिः सून्य मेकम् ॥ न तं कां

[illegible]

लः कं प्रहा रवं धुमं प्राद हृन्दी वा मनः रवं च पादौ ॥ ४९२ ॥ एनौ पदं श्रीः रवनं भीमभः

खं नारायणो नो हरि खं हरिश्च ॥ रात्रौ च शूल्यं यम द्रुम माधवो रव विष्णु राज्ञो नृ हरिश्च पादो

[illegible]

४२३ तत्राभिधुने कर्त्तिका मार्गयोवे सूर्यादेवरेषु मुहूर्तयो गाः ॥ नामाक्षराणां प्रचन प्रवृत्त्या ॥

[illegible]

संवि विचार पूर्ववि बुधै वि विं त्यम् ॥ ४१४ ॥ सूर्ये नृसिंहो द्विपदं च चापो हरिर्नरभः रवं पदम्  
 च्युतोऽग्निः ॥ एतौ पदं चापख मच्युतं च युगं यगो वशुख सिद्धि सञ्ज्ञौ ॥ ४१५ ॥ सि

मेंऽद्रि चपं ख न न्यौ भूकुन्दे नभश्च यभं हरि रवं हरिश्च ॥ पदं निशायां ख युगं नृराशिर्वि

|      |    |   |   |    |    |    |   |    |   |    |    |    |    |    |    |   |    |    |    |    |    |   |    |    |    |    |    |   |    |    |   |    |    |    |
|------|----|---|---|----|----|----|---|----|---|----|----|----|----|----|----|---|----|----|----|----|----|---|----|----|----|----|----|---|----|----|---|----|----|----|
| होम  | मं | च | ज | वै | तु | का | ए | का | व | तु | सा | सि | भा | सा | रै | ऋ | चा | जा | वै | तु | जा | ए | का | वि | सु | का | सै | भ | सा | रै | ऋ | गै | सै | मे |
| द्वि | स  | म | र | र  | त  | त  | स | र  | र | त  | त  | स  | म  | र  | र  |   | न  | त  | स  | स  | र  | र | त  | त  | स  | स  | र  | र | त  | व  | त | स  | रा | नौ |
| ०    | ५  | ९ | ५ | ०  | ५  | ५  | ५ | ०  | ९ | ९  | ५  | ५  | ५  | ५  | ५  | ५ | ५  | ९  | ०  | ५  | ५  | ५ | ५  | ९  | ९  | ९  | ५  | ५ | ५  | ५  | ५ | ५  |    |    |

नायको विस्तु नमश्च विस्तुः ॥ ४१६ ॥ भौमे महे भास्व नभोऽद्य विस्तुर्न भौयुगो गोपति रवंग  
 राग्राः ॥ नक्तं गजेंद्रस्य ख मच्युतं च युगं च मूर्यं च हरिश्च युगमम् ॥ ४१७ ॥

|      |   |    |    |   |    |    |    |    |    |    |    |    |    |   |    |    |   |    |    |   |    |    |    |    |    |    |    |    |    |   |    |    |   |         |
|------|---|----|----|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|---|----|----|---|----|----|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|---|----|----|---|---------|
| भौम  | ज | वै | तु | अ | रा | वा | वि | सु | या | सै | भा | सा | रै | ऋ | मे | चा |   | वै | तु | अ | रा | वा | वि | सु | या | सै | भा | सा | रै | ऋ | मे | चा | ज | भौम     |
| दिने | र | र  | त  | त | स  | म  | र  | र  | त  | त  | स  | स  | र  | र | त  | त  |   | स  | स  | र | र  | त  | त  | स  | स  | र  | र  | त  | त  | स | स  | र  | र | सञ्ज्ञे |
| ९    | ५ | ९  | ५  | ० | ५  | ५  | ५  | ०  | ५  | ५  | ५  | ५  | ५  | ५ | ५  | ५  | ५ | ५  | ५  | ५ | ५  | ५  | ५  | ५  | ५  | ५  | ५  | ५  | ५  | ५ | ५  | ५  | ५ |         |









एणां प्रिहानिं प्रत्यक्षमभिगत्य दिश्यमानम् ॥ आतोहेतिलयतहेमताञ्जभात्रं दत्वा दीमा  
 णा कलशयत्र प्रगच्छेत् ॥ ४२८ ॥ केचिच्च तु दक्षिणं पादं नये दत्वा दर्जनं दिति ॥ श्रोत्रं  
 तच्च स्वकालोक्तं स्वरश्चैव भवेत्तदा ॥ ४२९ ॥ प्राच्यां राजं रथं द्याम्यं प्रतीच्यां तु गौतम-  
 न् ॥ उदीच्यां शिविको भूपस्समारुह्य व्रजन् जयेत् ॥ ४३० ॥ दिश्युक्तं दाहनाभां ध्या-  
 त्वा तद्दाहनं व्रजेत् ॥ अथ सगमनविलंबे गतिं निधित्वेन प्रस्थानम् ॥ प्रस्थाने आहूता दीनां द-  
 द्वां सूत्रं मया शुधम् ॥ मध्यामल फलं चैव प्रशस्तं दृढि कारणम् ॥ ४३० ॥ अदत्ता तप-  
 न्नां भ्यज्जन्तानां भ्य विभूषणोऽस्मीद्यमजां वराणि ॥ अंशो लिङ्गरत्नं दद्याच्च चारान् प्र-  
 द्याश्च नाद्यं भन सस्त्वभीष्टम् ॥ ४३१ ॥ दृतं प्रस्थानं को वापि स्वयं सं प्रदियतोपि वा ॥  
 ततोऽपि गतये चित्तं सच्चन्द्रं प्राकुनादिकम् ॥ अथ प्रस्थितस्य गमनविधिः ॥ अथ मेऽन्दि-  
 त्वपः क्रोधां द्वितीये हृत्तियोऽन्यथा ॥ कोऽष्टावहं तृतीयेऽन्दिद्यष्टे च्छत्रं तु ततः परम् ॥ ४३२  
 ॥ अथ प्रस्थितविलंबे दिननिर्णयः ॥ प्रस्थाने भूपतिरस्ति देव्यैकं न दद्यात् ॥ सप्त दानं

तु सामतः पचाह प्राकृतो जन्मः ॥ ४३३ ॥ अथ द्विक्पलत्वेन प्रस्थानं ॥ प्राच्या महाग्निं धुनयः प्रवद-  
 न्ति सप्त धाम्या भतीव शुभं दानि दिग्गानि पंच ॥ श्री एषे वषथिश्च स दीर्घा हि तन्मायकानां प्रस्था-  
 नकेषु विषसह्य मुत्तरं स्थानम् ॥ ४३४ ॥ अथ प्रस्थान प्रमाणम् ॥ गेहा द्वेहा न्प्र अषि गम रसहिं यात्रे-  
 ति गार्गसी भ्यस्ती यांतरं अपि भृगु वर्णि विच्छेप मात्रम् ॥ प्रस्थानं स्यादिति कथयते ऽ सो भरद्वा-  
 ज एव यात्रा कार्या वहिरिह पुरा तस्या दृष्टि हो त्रवीति ॥ ४३५ ॥ प्रस्थानं भव धनुषां हि प्रा ता-  
 नि पंच के चि च्छत ह्य मुष्टानि दर्शे व न्याये ॥ सं प्रस्थितो यदहं मन्दिरतः प्रया नो गंत व्य दिक्षु त-  
 दपि प्रयते न कार्यम् ॥ ४३६ ॥ यात्रायां प्रथमं तस्या ज्यानि ॥ दात्रा हा त्पूर्वतं सप्त क्षरात्रं रत्नी से वलं  
 त्यजेत् ॥ अथ क्लृप्ते नृप ष्ठे करात्रं तु सर्वं धै वहि ॥ ४३७ ॥ द्वाधं त्याज्यं पूर्वमेव त्रि रात्रं-  
 क्षीरं त्याज्यं पंच रात्रं तु पूर्वम् ॥ क्षौद्रं तैलं दासरे ऽ स्मि न्च मिश्रं त्याज्यं यत्नाहु नि पात्ने न नून-  
 म् ॥ ४३८ ॥ भुक्त्वा गच्छति यदि चेत्तैलं गुडं क्षारं पक्कं च रात्रिनि ॥ विनि वनीते क्षुरणः रत्नी-  
 हि जं भव मान्य गच्छेत्तो मरणात् ॥ ४३९ ॥ अथ यथि रत्नार्थे याते पुष्य रत्ना ता स मा गमं कृत्वा



दुहितौ गच्छन्त्यभते मनो रथान् विरकोत्तेन ॥ ४४० ॥ अथ यात्रा काले प्रभुः ॥ शुभ २० ॥ १०००  
 नागर्षणे ॥ प्राथम्यं च वज्रं यनिर्गच्छ प्रज संभरेति सिद्धि करः ॥ रवत्येते ऽप्यधिष्ठाः म-  
 मोद जगत्जीव प्राक्काश ॥ ४४१ ॥ मागासि रत्न वर्तय क गम्यते मूढ दुर्भर्ते भीहान् ॥ वा-  
 ने च्छन्ति दुग्धाः क्षुण्ण काष्ठेन भीतिं प्राद्वैश्व ॥ ४४२ ॥ अथ ग्रह होरा प्रकुन्तानि ॥ अग्निहो-  
 दे प्रकुन्तान् स भुखं रक्षी पुन बुद्धा कलशं च दधत्येते ॥ द्वाये विभागे नग्नं च वायु सं दध्या क्रो-  
 गं वा न को नृणां प्र ॥ ४४३ ॥ चंद्र होरे मृगश्रैव फलं वा कुल भंदधीः ॥ रज्जु की धीन वर्यो-  
 ण नापितो दय्य रणा न्वितः ॥ ४४४ ॥ भीम होरेण साकुनं काष्ठ भागं न पुंस्तकम् ॥ वलीक-  
 च प्राकुर्नेन न तान्भी न्मतो मदी न्मनः ॥ ४४५ ॥ सोम्ये होरे द्विज श्रैव सवत्सा गोः श्र-  
 द्यते ॥ नारी सुवासिनी दासो तद्ये दक्षे मृगस्तथा ॥ ४४६ ॥ होरे देव गुरो प्राप्या सा-  
 पत्या रत्नी गुरो भवेत् ॥ पूर्णा कुम्भं द्विज श्रैव सवत्सा गोः श्रदर्शनम् ॥ ४४७ ॥ भृगु हो-  
 रे सदा प्रोक्तं सप्त कुनश्च विरोधतः ॥ नारी स कल प्रा चेव स पादि द्विज दर्शनम् ॥ ४४८ ॥

स क्रि. शानि होरे सद न्यासी नाक्या दुर्भर्गो दर्शनेन ॥ काष्ट पाषाण भारश्च सवि ज्ञेयो न संप्राप्यः  
२७७ ४४८ ॥ अथ ग्रहशकुन्तम् ॥ लग्ने वाक्यति शुक्राणां ब्राह्मण स्स न्मुखगतिव्यः ॥ बुधभु-

क्रौंचकेन्द्रस्थो सदत्सगोः ग्रहप्रवते ॥ ४५० ॥ चंद्रः सूर्यश्च भवति दशमस्थो यदा  
यदा ॥ दीपादग्ने सुमनसो रजकीधौ न वाससा ॥ ४५२ ॥ सुतस्थाने यदा सोम्यो द-  
धो दृष्टस्तु सन्मुखः ॥ चन्द्रे गुरुश्च सहजे स्वानी दावा म आगमाः ॥ ४५३ ॥ सर्वकर्मा  
य नवमे भारद्वाजो हिना कुलः ॥ चापस्य दर्शनं वास्या ह्यमंगोऽत्यंत दुर्लभम् ॥ ४५४  
॥ आदिस्थो राहु शैरो च सहजस्थो कुमारिका ॥ द्रोढानां भुभगानां च दर्शनं सर्वका-  
मदम् ॥ ४५५ ॥ घटे तृतीये कर्माये भौमश्चेत्फलं भवेत् ॥ दासो वैश्या सुरा मांसं-  
लाभश्चेव सुनिश्चितः ॥ ४५६ ॥ सप्ताष्टपंचमे यस्य जीवो ज्ञो वा न्न वर्हते ॥ आदर्श  
पुत्र्यमांसादि सुरा दर्शित्वा लाभदः ॥ ४५७ ॥ राहु भौमश्च यन्दर्शयत्तन्नाथादिततीयगः  
॥ उद्धृत गोमयं पश्येच्छीघ्रं लाभं धनं दिशेत् ॥ ४५८ ॥ अथ याज्ञवल्क्ये पुनराशुक्रानि ॥ पृथि-

॥ श्री वाजोवाजी रघो धेनु रसवत्सा तु विशेषतः ॥ प्रेतो हृषोऽन्य दहोऽपि हृदं कप्रोत्तदाशु  
मेः ॥ ४६७ ॥ वर्णी स्वयिन मुह्यी वंदर्भो हंसो मयूरकः ॥ नकुलश्च भरद्वाजश्चाप  
॥ अथ भूभ

राज्ञो वाजो रथो धेनु स्रवत्मा तु विप्रेषतः ॥ भवेतो हृषोऽन्य दृष्टोऽपि हृष्टे कथ्ये तदा शु-  
 भः ॥ ४६७ ॥ वर्णी स्त्रियत्र मुक्षीवं दर्शो हंसो मयूरकः ॥ नकुलश्च शरद्वाजश्चाप-  
 यस्त्राणस्तथैव च ॥ ४६८ ॥ चित्तोत्साहकरं वस्तु शुभं मान्ये तानि दर्शनात् ॥ अथ शुभ-  
 वस्तु निविशेयः ॥ कीर्तनाच्छ्रवणं श्रोत्रं श्रवणांशुवि लोकनम् ॥ दर्शनात्स्य दर्शनं चैवा-  
 दध्यादीनां गमादिषु ॥ ४६९ ॥ शुभदं दर्शनं ये वा तन्निवाद्य तथा नृपः ॥ कृत्वा द-  
 क्षिणं तस्मै र्वा न्दृष्टिर्दृष्टि मवाप्नुयात् ॥ ४७० ॥ अथ दृष्टकृन्ताः ॥ कर्णो ह्येकद्विधा-  
 न्यं च लोहकारश्च रोदनम् ॥ लोहं च रक्तं शुभ्यं च शुद्धं तैलं धृतं न्नया ॥ ४७१ ॥ वि-  
 रया कटुणा तक्राणि भस्मा स्थिजलदणं तुषः ॥ चापाणोन्धनं च र्मणिणि सभूतो वन्द्यो  
 यधम् ॥ ४७२ ॥ मत्तो वा त्तः रत्नलोहिंस्तो मुंदि तश्च द्रुमुश्चिन्तः ॥ अदिलश्च तन्मा-  
 रोगी संन्यासी मलिनो रियुः ॥ ४७३ ॥ रत्नं चोन्मत्तो गृहीतश्च तैलाभ्यक्तोऽथ गार्भि-  
 रणी ॥ काष्ठा यवश्च धारी च शुक्तं केप्रीऽथ प्राप्ता चान्द ॥ ४७४ ॥ वंश्चा च यदं रत्नलो-

चौरः त्वंही पान पलायनम् ॥ रचरोय महिषा रुढाः कुवाक्य भवरा तया ॥ ४७३ ॥  
 कृष्ण सव्योऽथ मंडूक प्रभारटो गाम प्रह्वरः ॥ कृपणाः पीतनो ज्यंगः कुडोऽभ्यो वधिसि  
 जडः ॥ ४७६ ॥ आर्द्ध चाभक्ष्य विधवा स्वर्ण कारो रज स्वला ॥ उपानत्क दे मां गाराः  
 धुरीयंद वसा दृणाम् ॥ ४७७ ॥ तयारजो वती पुष्पं कृष्णो च्छ महिषो दृकः ॥ स्व  
 गेह रहनं युद्धं माञ्जरिं स्व कुले कलिः ॥ ४७८ ॥ गोक्षुतं प्राणिना मंगशिरः श्रो  
 त्र प्रकंपनम् ॥ अञ्जरि मार्ग रोधय्य सवलं रक्ति कुंभकः ॥ ४७९ ॥ एतद्गुः प्राकृ  
 ना दाने सर्व कार्या निवेय काः ॥ अथ गङ्गा पण कुनानि ॥ सर्व दिक्षु क्षतं भिदं गो क्षुतं क्षर  
 णा प्रदम् ॥ अफलं तच्छुतं वाक्यं वद्ध पीन सके तवैः ॥ ४८० ॥ अथ कस्मिंश्चित्का  
 र्यं शुभाक्षिका ॥ नोपये दान मार्गे दे विवां दे प्रयत्नेऽयने ॥ विद्यारंसे रत्न वापि क्षुतं  
 सन्न सु प्रोभनम् ॥ ४८१ ॥ क्षिका विजाल सप्रभियां मार्ग रोधो हृते र्वचः ॥ मा  
 ज्जरि माहिषं युद्धं युनः कर्ण प्र कम्पनम् ॥ ४८२ ॥ अति धूसा न्वितो वान्हिः वेदे ते मरण प्र

संक्षि-  
 दाः ४८३. अथ दुःशकुनावाप्ततत्प्राज्जाः ॥ एते दुःशकुनावर्गं कृत्वा चेच्छकुनोत्तरम् ॥ अष्ट-  
 दश सर्वते रोयाः प्राकुना दक्षिणो शुभाः ॥ ४८४ ॥ अथ केयं चिन्वीर्त्तिनं केया चिदर्शनेन शुभमशुभं  
 च ॥ प्राश्रजाहं क गोधानां सर्वं स्रक्कार्यो रपि ॥ कीर्त्तिनं शुभमदं नाश्यां नीरुत न्न च दर्श-  
 नम् ॥ ४८५ ॥ अस्त्रवानरयो र्याने दर्शनं चरते शुभम् ॥ नास संकीर्त्तनं श्रेष्ठं द-  
 क्षिणो च रवरस्व नः ॥ ४८६ ॥ अथ वामभागे शुभाः ॥ वामांगो को किला पक्षी पीत की भू-  
 को रला ॥ पिंगला च्छुक्का श्रेया शिवा पुरुष स हिंसा ॥ ४८७ ॥ मध्याह्ने जुरत-  
 श्रेष्ठो चाप वधू च वायव्यो ॥ रवरोत्सूक प्ररगा लानां वाने पृथे शुभमस्वनः ॥ ४८८  
 अथ दक्षिणभागे शुभा ॥ श्री कण्ठो वानरो भायः छिक्कारः पिक्का क्रोरुः ॥ प्रया प्रस्त्रो  
 वायसः श्रेष्ठो र्ज्ञी संज्ञा श्चापि दाक्षिणो ॥ ४८९ ॥ न च भवी सुग व च्छे लः संभ्या  
 यां दक्षिण शिवा रवी ॥ प्रदक्षिण गताः श्रेयाः याने तु सृग पक्षिणाः ॥ ४९० ॥ दिक्-  
 मा श्चेद ति श्रेयाः व्रज तो भूपते भूर्देगाः ॥ वाम दक्षिण गाः श्रेयाः सृग वधू पतन्नि-

णाः ॥ ४८१ ॥ अथ विशेषः ॥ प्रणाला सारमेयाश्च दक्षिणा हाम गा प्रभुभाः ॥ पूर्व  
 दिगमने पूर्णवदनः शंकरः पिकः ॥ ४८३ ॥ वाम गोदक्षिणाः काक प्रभुभोऽन्यत्र  
 गमेऽन्यथा ॥ चाष पूर्णाननो व्योम्नि विधत्ते यदि तोरणाम् ॥ ४८३ ॥ अन्योन्य  
 विजयस्तनुकाकश्चेत्तरां भवम् ॥ अथ पुनश्चेष्टा विशेषः ॥ प्रीर्षीदरहनुर्घाणाहत्कं-  
 एहस्कन्धपृष्ठकम् ॥ अथादक्षिणेन पादेन कराड्डयेद्रमनादियु ॥ ४८४ ॥ लाभंक्षे-  
 मं जयन्दत्ते दक्षिणां गोविशेषतः ॥ वाम पादेन सर्वस्य नाशं प्रीतं फलस्य च ॥ ४८५  
 विष्टापं कादिलिप्तो गंश्रवणा स्फालनं क्षुतम् ॥ दत्तप्रकाशानं निजालस्यं कुर्वन्मु-  
 निप्रदः ॥ ४८६ ॥ नृत्यक्रीडोत्सवाद्यं श्रवा विदधन्चि लिहन्त सन् ॥ अस्त्रन्मोसं चि-  
 तास्थः सन् सहगच्छन् जयप्रदः ॥ ४८७ ॥ अथ प्रवेशे प्रकृन्वत्यथः ॥ प्रवेशे निम्नगो-  
 तारेनष्टसंवीक्षणो भवे ॥ दहाना जयाः प्रवाहे च द्यूते भेषज्य कर्मणि ॥ ४८८ ॥ द्युष्टे  
 ते व्यत्यया ज्ञेयाः प्राणुक्ताः प्रकृन्वाश्चये ॥ वामे च दक्षिणे च सं प्रीताः प्रकृन्वाश्चये ॥

॥ ५०० ॥ वैपरीत्येन विज्ञेयाः प्रवेष्टो नृपते वरुधैः ॥ यात्रो ज्ञाः प्राकुनाये च त एव नृ-  
 पद्वर्धने ॥ ५०१ ॥ अथ प्रकुनानां कियता कालविशेषे नैर्वल्पमाह ॥ नगरं प्रे ३ राय या ह्या-  
 नाराया ग्रामसंस्थिताः ॥ दिवा च येन प्र वर्ध्या न च नक्तं चरो दिवा ॥ ५०२ ॥ हं-  
 द्रो रोगादिस्तत्र कलहामिषकांक्षिणाः ॥ आपगां तदितामज्ञान ग्राह्याः प्राकुना-  
 कचित् ॥ ५०३ ॥ रोहिताश्वा जवालेय कुरंगो हृ मृगा प्रपाशाः ॥ निःफलाः शि-  
 शिरे ज्ञेयाः वसन्तो काक कोकिलो ॥ ५०४ ॥ ननु भाद्रपदे ग्राह्या प्रभूकराश्च वृकाद-  
 यः प्ररद्याक्षाद गो क्रौंचाः प्रावणो हस्ति चातको ॥ ५०५ ॥ व्याधर्षवानर हीमि महि-  
 षा सविलेखायाः ॥ ५०६ ॥ हेमन्ते निःफला ज्ञेया वालाः सर्वेपि ज्ञानुयाः ॥ मभ-  
 न भुक्कुमुम कंदकी यु प्रस शान भस्मा स्थि तु धान लेषु ॥ ॥ आकार प्रह-  
 न्या लयजर्जरीयु सौम्योऽपि पापः प्रकुनः प्रवल्गः ॥ ५०७ ॥ वरं प्रदेहूर्ज्जन कालसूर्यो  
 वरं क्षिपेद्या प्रमुखे स्वमंगाम् ॥ वरं तरे ह्यदि निधिं भुजाभ्यां नो लेखयेद्दुः प्राकुनं क-

संक्षिप्तं ॥ ५०८ ॥ अथ वायोः शुभाशुभप्रकृतम् ॥ शुभदोदक्षिणोऽष्टमे मन्दप्रवृत्तिः ॥ ५०९ ॥

२८४

रतः ॥ प्रवृत्तस्समुत्तरो वामेभंगादस्समरादिषु ॥ ५०९ ॥ अथोपशङ्कुने स्थि-

त्वा प्राणानेकादश व्रजेत् ॥ द्वितीये षोडश प्राणां सत्तीयेन क्वचिद्व्रजेत् ॥ ५१०

॥ याने दुष्टप्रकृतं त्राज्यं स्वर्गन्दत्वा व्रजेत्सुखम् ॥ स्थित्वा सच्छकुनं भूयो हृष्टा

हृष्टो व्रजेत्सुनः ॥ ५११ ॥ विरुद्धप्रकृते पादौ प्रच्छान्त्वा च स्य भूयतिः ॥ स्थित्वा सत्

क्षीरहृष्टा भूयः सच्छकुनैर्व्रजेत् ॥ ५१२ ॥ अथ त्राज्यदोषाणां संग्रहः ॥ लिख्य-

क्षयनमासाहर्भवाः शूलदयप्रये ॥ सञ्चरवस्थो भूगुप्तो म्यो भूगो वक्रादिक्-

न्तथा ॥ ५१३ ॥ ललाटीपरिषोऽष्टाहः रजस्तत्कमुद्रवं ॥ कृतपक्षोऽर्कषट्

कास्तिथयः पापवासराः ॥ ५१४ ॥ पृष्ठवामगतश्चन्द्रेऽभिजिह्वाभ्यां भयं च कश्च-

जन्मराशिभूतो रंभे लवने प्रवृत्तभूतोऽरिभूम् ॥ ५१५ ॥ रिपुराशिभूतो र्जंभे लवना-

शो कुंभमीनगौ ॥ लानघृष्टोदयं पृष्ठदिग्दक्षवशानि सत्सुखम् ॥ ५१६ ॥ चूर्णे शु-



स षि क्रस्तथा केन्द्रे वक्त्रो वक्त्रा वासराः ॥ स्तनेऽन्येऽपि विवाहोक्ता योगानेष्टा प्रयागा  
 २८५ के ॥ ५१७ ॥ अथान्नमुद्रयात्रा वसा भूतम् ॥ अथो वक्त्रेऽथ नक्षत्रे वारचोपचयावहे

॥ चंद्रताणवल्लोपेने कुमारेष्टनि वास्वरे ॥ ५१८ ॥ कालजोदि राभवे वापि स्वस्व  
 पूर्णवले स्वरे ॥ योगिनी कालदिक् प्रज्ञान चंद्रताणतुकूल के ॥ ५१९ ॥ दृष्टा  
 यामष्ट वर्गो वा गोचरे लाभगेरदौ ॥ युद्धोक्तजयदेयोगे प्रोभने देहजे स्वरे ॥  
 ५२० ॥ घृत कार्यं विनोदाय भनलाभाय भूतये ॥ ५२१ ॥ अथ युद्धेष्टने स्वरभू-  
 तलम् ॥ पूर्वोदि तश्चतुर्दिष्टुनदाद्यास्तिथयः क्रमात् ॥ मध्ये पूर्णोद्ग्रेषं च ह्यकाद-  
 राद्याः स्वरास्तथा ॥ ५२२ ॥ दिक्प्रतिषेधे स्वरतश्चैव षटी षट् प्रमाणतः ॥ ता त्का  
 लिकस्वरो द्वेयो दिक्स्वरस्तत्त्ववेदिभिः ॥ ५२३ ॥ वालमभूतयोऽवस्था स्ते-  
 यो द्वेयोऽक्रसा ह्युर्ध्वः ॥ पूर्णो जय स्वरे द्युनि वाले द्याता ज्ञतयो भवेत् ॥ ५२४ ॥  
 दध्वातः कुम्भारे च दृष्टे अभ्यो घृतो मृतिः ॥ स्वयं स्वरवल्लोपेन दिग्नि स्थित्वा द्याशा

शुभाचीनां निजपंचम वैरिणा मथो ॥ ८ ॥ स्ववर्गात्पंचमप्रशुभ्यनुर्थञ्जानि विजयः  
 ॥ तृतीयो निजसंज्ञस्तथा हृदाश्रयिनी द्वितीयकः ॥ ८५ ॥ नाप्रमाद्यकथोर्वयोर्वैकेस्याह  
 तमोत्तमः ॥ ८६ ॥ अथ काविका ॥ स्ववर्गाद्विगुणीकृत्यपरवर्गेरायो जयेत् ॥ अथ विमलसूरे  
 ज्ञानं योऽधिकस्तत्तद्वर्गं न वेत् ॥ द्रव्यं काकिर्णकाधिक्ये निवसे न्नगरे नरः ॥ ९१ ॥  
 अथ एते दिक्प्रकरणे ॥ ग्रामस्य भागं नवधा विधाय मध्ये हरिर्न्मकं वृषोऽथ युग्मम् ॥  
 पूर्वदिशो वृष्टिक मीनकन्याकर्काधनुस्तोत्थ ज कुम्भजाश्च ॥ ९२ ॥ वसेयुर्धार्हिन-  
 रानतज वासे तथा हानि रिहा विवर्जस्य ॥ बुद्ध्या स्वदिग्भागा गताश्च वर्गास्तैः परांशु-  
 रव्याः कथिताः क्रमेण ॥ ९३ ॥ अथ प्रः ॥ मध्ये ग्रामस्य गोहृद्भुजक्रोसिंहा रव्य राश-  
 यः ॥ मीनालि कन्यकाः पूर्वो दक्षिणो कर्कराशिकाः ॥ ९४ ॥ धन्विनः पश्चिमे मेघ  
 तुला कुंभा स्तथोत्तरे ॥ नो वसेयुर्नरास्तैरव्यधुन लाभात्स जाधिनिः ॥ ९५ ॥ दू-  
 नतेय भुवा वर्गा वलिद्या पूर्वतः क्रमात् ॥ स्वदिशा स्थ मद्रहं श्रेष्ठं पञ्चम्या न्दिशि

संनि मृदु हम् ॥ १६ ॥ अग्निं चतुर्थं कोणेषु वसेयुर्हीन जातयः ॥ विप्राश्चास्तुदिशस्त्वेवम

२८३

श्चेद्वासस्तुल्ये स्मृतः ॥ १७ ॥ अथ द्वाविचारः सप्तद्वयं अथाष्टद्वयं ऋग्नोऽष्ट ८ चाणारसा ई

क्षि ४ सज्ञे ७ न्दु १ गुणा २ धिवनोच ३ नृग्रामदिग्वर्गमितो क यो गो मूर्ध्या दृशेष्णा वसु  
भक्त प्रोधात् ॥ १८ ॥ दूर्यन्तु भोगा वृध सौरि जीवास्सिंहा सुतो वै भृगुजः क्रमेण  
॥ यद् ई चाण चंज्ञा १५ व सवो ८ धर्माश्चनाग्ना १० नवेन्दवो १३ को १२ कुय मा-  
२१ न्तथेत्थम् ॥ १९ ॥ त्वेत्वे ध्रुवर्ष प्रमितेयु तेष्वा दग्ना फलं तन्न निवासिनां च ॥  
तदुत्तरा द्दुत्तर तो दृशे प्रा फलं विकल्पं च दग्ना क्रमेण ॥ २० ॥ अथ दग्ना फलम् ॥ च-  
द्विभनचित्तः परि पूर्य विनो वन्त्या भित्तो वहु सौरव्य युक्तः ॥ रोगा भित्तो वहुं द्र-  
व्य युक्तो ज्वरा न्वित्त स्मर्द् सुरवा न्वित्त अ ॥ २१ ॥ यथा दृग्ना सौरव्य फलानि रक्ता  
तत्त दृग्ना कं सकलं शुभं स्यात् ॥ अग्नस्तफलाद्याः फल भेतदैव दृशो क्ता ही त्या त्व स-  
दन्यरीत्या ॥ २२ ॥ अथ वर्ण प्रत्नेन भूमि विचारः ॥ प्रवेता भूमिस्तु विप्राणां रक्ता प्रक्ता

भूतभुजाम् ॥ विश्रं पीताद्य प्रह्णाणां प्रथमाभिन्नेतरस्य च ॥ २३ ॥ याभूः कुशा  
 द्याप्रार संयुताच दूर्वान्विताका प्रायुताः क्रमेण ॥ माधुर्य्य युक्ताच कथा विक्ता  
 न्नाकट्टी प्रशस्ता हिजवर्त्यतीवा ॥ २४ ॥ प्रागादिप्रवराभूतिः सुआदीनां धुभा  
 क्रमात् ॥ सर्वदिक्प्रवराभूतिर्विप्रादीनां गृहादिषु ॥ २५ ॥ अथ प्रत्यक्षानम् ॥ भू  
 हस्यभिरिडकां चैव कृत्वा वै न व खंडिकाम् ॥ तेषु तेषु च भागेषु पूर्वार्दि क्रम  
 तोबुधः ॥ २६ ॥ तिरवे हकच तावर्णिएह साश्व पयस्तथा ॥ मध्यान्तं क्रमना  
 शुच्ये द्वाहारागमुद्यमेव च ॥ २७ ॥ क्षत्रियान्तिक्ष्णगाप्रभं वै प्रथा द्वे गणं स्तथा  
 ॥ प्रह्लादकलभितिक्ता ल्याप्रशनावर्णादिमेतदा ॥ २८ ॥ पूंगी फलादाता दीप्यगृहि  
 ला संनैमन्तिताम् ॥ प्राक्षिपेन्नव कोष्ठे द्युखेष्ट कोष्ठे विचक्षणाः ॥ २९ ॥ गृहप्र-  
 र्णाक्षरं पूर्वयदि वर्णादिमेतथा ॥ प्राल्यं तद्विप्रिजानीयात् हयाद्यै र्मध्यगं वेदेत्  
 ॥ ३० ॥ वकारं मानुषं प्राल्यं पूर्वस्यां सार्द्धं हस्तके ॥ मृत्युदं मनुजां न्नत्र वासिनां

संक्षि- नान्नसंप्राप्यः ॥ ३२ ॥ ककारेऽन्तोऽर्द्धमास्थि कटि मात्रे भुवि स्थितम् ॥ राज्ञो  
 ३३१ दण्डि त्विजानीया दण्डादुत्तरतो मृतिः ॥ ३३ ॥ चकारे यम दिग्भूमौ मर्कटास्थि-

स्थितं वदेत् ॥ कटि मात्रे गृहे प्रास्य मृत्यु भवति नान्यथा ॥ ३३ ॥ तकारे राक्षसे  
 ऽथ यस्य शल्पं वैसाह्वं हस्तके ॥ एक्षोदण्डं विजानीया दण्डादुत्तरतो मृतिः ॥  
 ३४ ॥ सकारे चैव चारुकां साह्वं हस्ते प्रिष्टो वदेत् ॥ शल्पं मृत्यु प्रवासादि कृत्वा  
 वै शून्यतां व्रजेत् ॥ ३५ ॥ हकारे वायु दिग्भागे योरुवं शल्पमा वदेत् ॥ भूमौ  
 हृदि क्षिते शुभ्रं वंसुखं भिजना प्राणम् ॥ ३६ ॥ शकारे हिज शल्पं च को वीर्या  
 कटि मात्रके ॥ निर्द्दन त्वं भना कानाम ल्यायुः करमेव च ॥ ३७ ॥ पकारे-  
 श्च भुवि बागे शल्प मृच्छ भवं वदेत् ॥ साह्वं हस्त भित्ते भूमौ धन नाशं पशु-  
 शयम् ॥ ३८ ॥ दकारे भानुवं मुहुं मध्ये भस्म चित्ता भवद् ॥ हृत्पानेऽङ्गुलिना-  
 श्वाय निष्शल्पं शुभ्रं भवेत् ॥ ३९ ॥ अथ भुजप्रक्षोभनं हटी करणम् ॥ मध्ये चोर्ध्वे

संक्षि

२६

हस्तमितं रव नि त्वा सं प्र दे त्पां शु भिण शुनस्य ॥ सं प्र दित्वा धि क ता मु धे तः  
पां शु र्य द्वा त द्द ह सु त्त मं हि ॥ ४० ॥ समे समं न्यूनतरे सर्वो न न कारये द्बन् म द हं क  
दा चित् ॥ त द्द त्तं मध्ये जल पूरितं स्या नि प्र ण मु रवे पू र्ण जले ऽप्य भ्रातः ॥ ४१ ॥ शु  
भ भव दे च्छु व्यति चे द्वि दुःखं भवे नि वा से स त त ज्ञ ना ना म् ॥ स्थि रे जने वै स्थि र ता  
वि धे या स्या द्द क्षि णा वर्त्त जने न सो र व्य स्म ॥ ४२ ॥ क्षि प्रं जलं प्रो य यती ह र वा तो  
मृ न्दु हि वा मे न जर्त्त न कर्तुः ॥ र वा ते अ दि प्र मा ल भ ते हि रा यं त थो ह का धं च स मृ द्दि  
र च ॥ ४३ ॥ इ व्यं हि इ व्य णि सु र वा नि ध ने ता आ दि धा नु र्य दि त्त न हृ द्दिः ॥ वि र्पा  
लि का द दु र का हि चे त्स्या द्द सं ज न ता वि ल का र्थ ह्वा निः ॥ ४४ ॥ तु वाः स्थि च्ची  
रा णि त थै व भ स्था द्वां हा नि श र्था मि णा प्र दा स्युः ॥ द रा टि का दुःख द रि द्द दा न्नी क  
र्षा स र वा ति द दा ति रो गा भ् ॥ ४५ ॥ का स प्र दा यं य दि रो गा द्द द्विः कालि र्भवे त्त्व  
र्ष र ल ध्य के ल ॥ लो हं न कर्तु र्भे रां प्र ण स तं वि चार्य वा त्तुं प्र व द्ति त द्वाः ॥ ४६ ॥

२६

नेरी मृदंगान कहुं दुभीनां प्रव प्रव प्रवस्य च संगलानि ॥ शुभानि इव्याणि भवंति  
 तत्र विज्ञा प्रववाला स्तरणी सवाला ॥ ४७ ॥ वेप्रया सुवेपारज की सुवत्वा दद्यादि चे-  
 तन सुवर्ण दृष्टिः ॥ अन्येऽपि चै न्मंगल वादिनःस्य भवन्ति तत्रैव सुमंगलानि ॥  
 ४८ ॥ ददाति कश्चिद्भूतिं फलं चैतदा हिरायादि समृद्धयस्त्युः ॥ अथ समभूतो  
 दिक्शेषतम ॥ दिक् शुद्धि रहितं गेहं प्राणदो वाजला प्रयः ॥ कुर्याद्भूतिं सृतिं त-  
 स्मादा दौ दिक्प्रोभनं चरेत् ॥ ४९ ॥ द्विप्रायामसितं सूत्रं द्विप्राप्रोत योर्दृष्ट-  
 म् ॥ कृत्वा यामे ततीयेऽद्यो चिन्हं तत्कर्षणापि च ॥ ५० ॥ विस्तारार्द्धं तु को-  
 णार्धक्षेत्रस्य मध्य सूत्रतः ॥ प्रान्ते प्रंकुद्वये पाशो कृत्वा षोडशर्षणाभिधम् ॥ ५१ ॥  
 चिन्हमाकथ्य कोणार्धे चिन्हे प्रंकुनिधापयेत् ॥ एवं कृते चतुःकोणाः स्वेष्टक्षेत्रे भ-  
 वंति च ॥ ५२ ॥ अथ गृहस्य आभाः ॥ आयः क्रमाद्भूजो धूम्रः सिंहः श्वद्वयः रवः ॥ रा-  
 जो भ्यां क्षद्रमेन्द्रे या प्राज्ञौ गेहादि कर्मसु ॥ ५३ ॥ विस्तारश्रुयिते क्षेत्रे स्वाद्यामेऽप्या-

रंक्षि रंक्षिर्दत्ते ॥ श्रेष्ठे ध्वजादिक आद्यः प्रशस्तो विषमोऽखिलः ॥ ५५ ॥ प्राचीनो च  
 स्तिन्न आद्याः ध्वजाद्याः क्रमस्तिल्यमे ॥ सर्वदिष्टु ध्वजे वभ्रांसिहे प्रादक्षिणोत्तरे  
 ॥ ५५ ॥ आद्यां द्युधे गर्जे आन्ये पूर्वयोः शुभ मालयोः ॥ ध्वजे प्रत्यङ्मुखं वापि सिंहे कु  
 र्यादुदङ्मुखम् ॥ ५६ ॥ दक्षिणाभिमुखं नागो गेहे प्राची मुखवदे ॥ द्वात्रिंशद्भुक्तकं  
 या वदे कादशाय वात्परम् ॥ ५७ ॥ चित्त्य आयादिकं तावन्नो चित्त्यमधिके ततः ॥  
 अलिंदादिभुवाणो वा मंदिरे वा चतुर्भुखे ॥ ५८ ॥ आयादिकं तु नो चित्त्यं तारो मासा  
 दिकं तु न ॥ विशेषोऽपि ॥ ध्वजे प्रतीची मुख मञ्जाना मुदङ्मुखं भूमिभुतां च सिंहे ॥ वि  
 शं द्ये प्रावदनं गजे तु भद्रस्य आभ्या ननयामनंति ॥ ५९ ॥ अथ आयानां प्रयोजनम् ॥ ६०  
 त्वं सिंह गतं चैव खंडे कर्ष्यत कादयोः ॥ द्विषः पुनः प्रयोक्तव्यो वापी कूपस्य स्तु च ॥ ६०  
 ॥ मृगेन्द्र नासने दद्यात् प्रयनेषु गजं पुनः ॥ त्वं भोजनपानेषु च्छनादिषु पुनर्ध्वजम्  
 ॥ ६१ ॥ अग्निदेवस्य सुसर्वेषु गृहे कन्धु पञ्चविंशत् ॥ पूर्वो नियोजयेत्केचिदस्थानं रं



शि च्छादि जातिषु ॥ ६२ ॥ त्वरो वे प्रयागदे प्रस्ताध्वांस् प्रधापि कुटीषु च ॥ दृष सिंहा  
 १ ॥ भज ध्यापि प्राप्ता दधुरवे प्रभनि ॥ ६३ ॥ गार्धवा भज जाये वीण जानां सदनं शुभम्  
 ॥ भग्नालये भज जाये च त्वराये तृपये ॥ ६४ ॥ अमंत्र प्रस्तव स्त्राणां तृपाये वा  
 भज ॥ पिपा ॥ पादुको पान हो कार्ये सिंहाख्ये ॥ ६५ ॥ उक्ता नाम व्य-  
 नुक्तानां सर्वेषां च भज जः शुभः ॥ अथ यदा सं निषेधमाह ॥ नीचे प्राप्नु गते जीवे शुक्ते चन्द्रे  
 ॥ अवार को ॥ निर्भिर्मेतं सदनं सन्वदति निस्त्व त्व मातृयात् ॥ ६६ ॥ अस्त दीपोऽन्नन-  
 रास्तः प्राति दैवसि को वृधैः ॥ नास्ति दोषस्तदा चन्द्रे न भैत्रे ॥ ६७ ॥  
 राहाय लब्ध भटक्षेत्र गन्तक्षेत्रे च चन्द्रमाः ॥ प्रलाका सप्तकं देयं कानि कादि क्रमेण  
 च ॥ ६८ ॥ वाम दक्षिण भगो तत्प्रस्तं प्राप्ति कारकम् ॥ अग्र पृथेन दातव्यं पृथी  
 क्षे च्छेय प्रालम्नः ॥ ६९ ॥ अस्त प्रचन्द्रस्य वास्तोश्च अग्र पृथेन प्रस्यते ॥ पुरस्त्रे  
 पृथगे वास्तोः त्वनिःस्था विधुभे मृतिः ॥ ७० ॥ अथ क्षेत्रफलप्रत्ययः ॥ विस्त्विति प्रो मृदा

॥ १६ ॥ यामो द्वेयं क्षेत्रफलं चरेत् ॥ राशि कृतादिकं सर्वदं पत्यो रिवचिंतयेत् ॥ स्वेष्टमं वैक-  
 ॥ १७ ॥ नाडीस्थं चिन्तयेत्सततं बुधः ॥ १८ ॥ देशे ग्रामे पुरे गोहे ग्रामो मित्रे ऽन्यथो विधिः ॥ स-  
 कनाडी प्रशस्ता स्याद्विरुद्धा भिन्ननां विका ॥ १९ ॥ गोह गोहेष्टयो र्मैत्र्यो र्वर्णाद्या-  
 स्तु विवाहवत् ॥ गोहे श्रालयमैक्ये तु भृत्युदं तद्गृहं स्मृतम् ॥ २० ॥ काष्ठपाषाणयो-  
 र्वाह्यमिष्टि कानां तद्वर्कम् ॥ मृत्तिकागर्भमात्रं च्छदाती प्राह पराशरः ॥ २१ ॥ जयेष्ट-  
 र्वाग्रोधनम् ॥ त्रिभिस्त्रिभिर्वैष्टमनि कृत्तिकाद्याहृद्ध्येदुन्नासिधना निष्टो कः ॥ प्राज्ञो-  
 र्भयं राजभयं च भृत्युः सुखं प्रवासी च नव प्रभेदाः ॥ २२ ॥ त्रिकोणाभं क्षौद्रं वापि षडष्ट-  
 भं वा भौक्यं न प्रास्तं भद्रं चामिनी प्रच ॥ द्वारक्षकं पृथदि गार्क्षकं च स्थितिं चर्चो ररूप-  
 योहितस्स्यात् ॥ २३ ॥ अथ पितृह ज्ञानम् ॥ एकोनिते वृक्षा हता द्वि ति व्यो १५२ स्तो-  
 निते श्याय ह ते न्यु नागैः ॥ युक्ता धर्मे प्रचापि युता १७ विभक्ता भूया ध्वि मि २१६  
 प्रशेष नितो ऽहि पिङ्गः ॥ २४ ॥ अस्मार्थः ॥ यदेव नक्षत्रं व्यवहारनाम्ना विवाहो-

धिनाशुभदंस्थत् ॥ तदेवं स्वेष्टभं कल्पम् यश्च ज्ञाद्योये विषमः ॥  
 यद्दीप्सितः स्यात् तस्य वेद्यायः कल्पः ॥ ताम्याभिविस्तायामज्ञानम् यथानोत्तकं  
 तस्य अग्नुराधानक्षत्रस्य रोहिण्या सहस्रे लापकः संभवति तस्येष्टभं रोहिणी कल्पि  
 तम् ॥ तत्संख्या ४ स्को नितेष्टर्क्षिम् ३ अनेन हितिष्ठोः १५२ हताः ४५६ दूष्ययः  
 सिंहः कल्पितः लतीयः ३ रूपो नित दूष्ययः ॥ अनेनेन्दुनागाः ८१ गुणिताः १६३  
 युताः ६१८ घनैश्च १७ युताः ६३५५ पाप्विभिः २१६ विभक्तः शेषे २०३ दूदमेव  
 क्षेत्रफलम् ॥ गृहस्य दूष्याय नक्षत्रं भवम् ॥ पिएडम् ॥ अथ क्षेत्रफलादर्थे विस्तारज्ञा  
 नम् ॥ भक्ते क्षेत्रफले स्वेष्ट विस्तारेण च दीर्घता ॥ स्वेष्ट दीर्घे तथा भक्ते विस्तारे वेष्ट  
 नः स्फुटः ॥ ७६ ॥ अथ कल्पितैर्धर्मैश्च अनेन भक्ते लब्धो विस्तारः ७ अथ कल्पित वि  
 स्तीः ७ ॥ अनेन भक्ते लब्धदंर्धर्मम् २७ ॥ अथ वयादंशं ज्ञानम् ॥ गृह नक्षत्रं संख्या कै  
 नागतये व्ययो भवेत् ॥ भुवादिनाम वर्णैश्च युक्ते क्षेत्रफले तथा ॥ ८० ॥ त्रिभिः १६

तद्येऽप्राकाशे वे प्राक्रान्तं कन्दपः क्रोधात् ॥ इन्द्रभूर्धोऽसुभगं वंशो यमो नैद्यो गृह्णादि  
 ८८ सु ॥ ८१ ॥ अथ भुवादि गोहन्ताय सारज्ञानम् ॥ अथ यत्नं प्रमं विप्रलम्भं निद्रं ह्यश्रुभिधम् ॥  
 श्रेष्ठानि त्र्यक्षरणि स्युः सतमञ्चतुरक्षरम् ॥ ८२ ॥ अथ भुवादि गृह्णाणि ॥ अक्षवंधन्य  
 श्रयन्तं त्वं खरं कंठं मनोरमम् ॥ सुमुखं दुर्मुखं चो गं रिपुदं वितदं तथा ॥ ८३ ॥  
 नाशं प्राक्रन्दं विपुलं विजयञ्चेति धोडप्रा ॥ अथ भुवादि गोहृत्ज्ञानम् ॥ दिक्षु पूर्वादि त-  
 प्रणाला भुवाभू १ द्वौ २ कृता ४ गजाः ८ प्राणाला भुवाङ्कः संयोगाः सेको वे प्रमं भुवादि  
 कम् ॥ ८४ ॥ अथ द्वौ न फलादायाद्यानयनम् ॥ गो ८ क ८ त्वे ८ हे ८ गुण ३ ८ नो ग-  
 ८ जलधि ४ व्यालं ८ हंसं ८ फलम् नागा ८ द्यं ७ क ८ दिवा क १ २ ८ ८ म २ ७  
 तिथी १ ५ यो गोः २ ७ त्वसूर्यो १ २ ० रजित् अयं चारमयां प्राकं धनं मृणं तारं ति-  
 थिं चिंतयेद्योगं चाद्दु रित्ती ह श्रेष्ठ कपदे भागे हते तां तिर्कैः ॥ ८५ ॥ अथैतेषां प्रयोज-  
 नम् ॥ अथायः ॥ विषमाय प्रभुभायेव समाय प्रभो कदुःखदः ॥ अथ चारः ॥ सूर्या

|       |      |     |     |     |     |     |      |      |     |      |      |      |     |      |      |
|-------|------|-----|-----|-----|-----|-----|------|------|-----|------|------|------|-----|------|------|
| १     | २    | ३   | ४   | ५   | ६   | ७   | ८    | ९    | १०  | ११   | १२   | १३   | १४  | १५   | १६   |
| धुवम् | धाम् | धम् | नम् | वम् | कां | मां | सुम् | सुम् | वम् | सिम् | विम् | माम् | कां | विम् | विम् |
| ३     | ३    | ३   | ३   | ३   | ३   | ४   | ३    | ३    | ३   | ३    | ३    | ३    | ३   | ३    | ३    |

तयं ह्ये ॥ मूलाख्यं धनुर्व्येव ह्ये भे प्रो ष रा शीषु ॥ ८७ ॥ गृहस्थागत नक्षत्रे तद्वि  
 शयात्मकं यदि ॥ तन्मवांशावशात्तत्र ज्ञातव्यं सर्वदा गृहम् ॥ ८८ ॥ धनस्योक्त्य  
 ॥ धनाधिकं गृहं नृह्ये निर्द्देनं गृहाणाधिकम् ॥ नक्षत्रस्य ॥ विपत्तस्य विपत्ताया प्रत्यरी  
 प्रति कूलदा ॥ निधनाख्यातारका तु सर्वदा निधनप्रदा ॥ ८९ ॥ द्वातेदुःखं तृतीयार्द्ध  
 पंचमर्द्धे यशः क्षयम् ॥ आयुः क्षयं सप्तमर्द्धे कर्तुं भावादि सप्तमम् ॥ ९० ॥ तिथि  
 प्रयोजनम् ॥ दृष्टिं ऋत्वा च वर्ज्यं येत् योगानां मपि दुःखं योगाः प्रजन्त्याः ॥ आयुः प्रयोजनं  
 नावत्कालं गृहस्थितीति ॥ अथ वर्णपरत्वेन गृहशुद्धिः ॥ द्वात्रिंशदष्टाधिक विंशति पञ्च

रकाराख्यं प्राः सदा  
 वन्द्यमयप्रदाः ॥  
 ८६ ॥ अष्टविंश्यादि  
 त्रयं मेघे मघातस्त्रि



३३  
३३

संभ्रमवर्त्मनिः ॥ वृषप्र कन्या मकरोऽथ वैश्यः शूद्रा तुला शुभ्रपटा भवानी ॥ २७ ॥ सा  
 त्वाङ्गुलं वासरा राशि सद्य चोदङ्गुलं क्षत्रिय राशि कन्याम् ॥ वैश्या कर्जानां यमदिङ्गु-  
 लं हिष्णु क्षत्रियानामथ पञ्चमं स्यात् ॥ २८ ॥ अथ द्वाविधः ॥ पूर्वार्थे प्रानान्यान्नेयदक्षि-  
 णानीयात् ॥ द्वाणाने क्रत्यादीनि पश्चिमानि वा योश्च ॥ २९ ॥ अथ पूर्वार्थे हिष्णु द्वाणानां फलम्  
 अनलभयं १ सुतजन्म २ धनता ३ नोद्ग तो लाभः ४ कोध परता ५ नृत्तत्वं ६ क्रोर्ध्वं ७ चो-  
 र्यं च ८ पूर्वोण ॥ १०० ॥ अत्य सुतत्वं १ प्रेष्ठं २ नीचत्वं ३ भक्षयानासिः ४ ॥ ऐदं भूकतम् ६  
 मधनं ७ सुतवीर्यं च ८ याम्येन ॥ १०१ ॥ सुत पीडा १ रिपु वृद्धिः २ धन सुतासि ३ स्मस्त-  
 गुण संपत् ४ ॥ धन संपत् ५ वृषति भयं ६ धन नाशः ७ योग ८ द्रव्येव धन वंधो ॥ १०२ ॥ वंधो १  
 रिपु वृद्धि २ र्द्धि सुत लाभः ३ समस्त गुण संपत् ४ ॥ पुत्र धनासि भर्वे ६ सुतेन दोष ७ स्त्रियो  
 नै प्रलम्ब ८ ॥ १०३ ॥ अथे प्रान्यादि चतुर्णाम् फलानि ॥ दुःखं १ प्रोको २ धना सिद्धि ३ नृप पूजा ४ म-  
 हद्वनम् ५ स्त्री जन्म ६ पुत्रता ७ क्षत्रियः ८ अर्था द्वा फलानि च ॥ १०४ ॥ निधनः १ वंधनं २ नीति

३०३

३ पुत्रासि श्व ४ धनागमः ५ यशो लब्धिर्दृष्टो गम्य ७ व्याधि रक्षो ८ तद्वत्क्षण ॥ १०५ ॥ न प्रव  
 र्त्नी दूषणं चैव लक्ष्मी प्राप्तिर्द्धानागमः ॥ सोभायं धन लाभश्च दुःखं रवं शोकश्च पश्चिमे ॥  
 १०६ ॥ प्रात्रुद्विर्म्महदुःखं हानि रसस्य त्सुखागमः ॥ प्रातिर्दुःखं प्रात्रुवाधा चोत्तरस्यादि  
 शिक्कमात् ॥ १०७ ॥ आय संश्रानि परत्वेन महद्वहानि श्वयः ॥ कुंभेर्द्वि फाल्गुणे मासे श्रावणे कर्क  
 सिंहयोः ॥ पौषे न के महं कुर्यात्सर्व पश्चिम दिङ्मुखम् ॥ १०८ ॥ मार्गते तु लालिगे भात्री वैश्या  
 वे दूष भाजयोः ॥ दक्षिणोदङ्मुखं श्रेष्ठं मंदिरं नेष्ट मत्पथा ॥ १०९ ॥ पूर्णिमातोऽष्टमी या  
 वत्पूर्वास्य वर्जयेद्गृहम् ॥ उत्तरास्यं न कुर्वीत नवम्यादि चतुर्दश्या ॥ ११० ॥ अमाया व्यावृ  
 मी यावत्पश्चिमास्यं विवर्जयेत् ॥ नवम्या दौ दक्षिणास्यं यावच्छुक्लं चतुर्दश्या ॥ १११ ॥ न  
 वभातं महं कुर्यात्सं च भातं च दक्षिणे ॥ त्रिभाग मुन्नेर त्याज्यं श्रेष्ठं द्वां विनिर्दिशेत् ॥ ११२  
 तिथिं पंचगुणी कल्प न्यामास्तु श्रेष्ठोऽर्थुत्तमः ॥ शिव नेत्रे हेरे ज्ञानं श्रेष्ठां के फलमादिशेत् ॥  
 ११३ ॥ एकेन लभते राज्यं द्वितीये सुखं संपदम् ॥ शून्ये च मरणं प्रोक्तं गृहं रंभे विप्रो वतः ॥ ११४ ॥



॥ अथ मंगलं लभनविचारः ॥ हिस्त्र भावे स्थिते लगने शुभैर्द्विष्टा त्यगे ग्रहः ॥ पाप रज्यम् ॥ १९५ ॥ दुः  
 १९५ ॥ अन्दिशरं गणं बुधः ॥ १९६ ॥ अथ गेहासीसभयोगः ॥ लगने गुरो रदौ पश्ये द्यूने चै भा  
 गीवे सुखे ॥ मन्दे त्रिगे कृतं तिथे न्यदि रं प्रारदां प्रतम ॥ १९६ ॥ ततः शुके सहो स्थे ५  
 के पद्ये भोगे सुते गुरो ॥ सभा रव्यं गृहं तिथे द्वाय नानां प्रत द्वायम् ॥ १९७ ॥ सूर्ये लाभ  
 गते शुके तनो नभसि चन्द्र जे प्रोहं वर्य प्रता पुष्य निष्पिनं नृचै र्भवेत् ॥ १९८ ॥ चतु  
 र्धे वाक्या तौ लाभे भोगे मन्दे च विविधोः ॥ अश्रुति हायना पुष्य मारव्यं मन्दिरं स्तनम  
 ॥ १९९ ॥ शुके स्वीचे तनो वापि जीवे पाताल गो ५ धवा ॥ लाभो वा प्रभो स्वीचे संप्रधु  
 लं चिरं गृहम् ॥ १९० ॥ लग्नस्थे त्वर्षिगे चन्द्रे केन्द्रे जीवे ५ पश्ये चरीः ॥ स्त्रीश्च भिन्नां प्र  
 भेहं लक्ष्म्या शुक्लं स्थिरं भवेत् ॥ १९१ ॥ अथ नेष्टयोगः ॥ नीचांशे स्थे स्तथा रवेर्दे निर्ध  
 नं मन्दिरं हितम् ॥ रवेर भवे को हिस्त्रे द्यूने परां प्रस्थो ह्य मभ्यगः ॥ १९२ ॥ कुप्यास्त्रिभ  
 पराधीनं लग्ने प्रोददि निर्दलः ॥ अथ नक्षत्र ग्रह वरा हिस्त्रे पयोगः ॥ पूर्वाषाढो जहा पुष्ये पश्ये

तं हि पा रोहि त्रवे सुगे ॥ जीव युक्ते मुरो वीरे गोहो राज्या धर्ष पुत्रदः ॥ ११३ ॥ विप्रगवादी ॥  
 ३५५ निर्या धिव शत चित्रा स्थिते भुगे ॥ अमु वार कृतं वेप्रम धन धान्य सुत प्रदम् ॥ ११४  
 ॥ पूर्व धादा मया हस्त पुष्य मूलो न्यगे कुजे ॥ कुजे हि निर्मितं गोहं भस्म सा दयित ना  
 भवेत् ॥ ११५ ॥ उक्ता हस्ता धिनी चित्रा रोहिणी मृगगे बुधे ॥ बुधे ऽन्हि भंदि रा रक्षः  
 सुरव पुत्रार्थे सिद्धये ॥ ११६ ॥ भरणी स्वात्य नूरा धा ज्येष्ठा पुष्या द्यौ प्रानौ ॥ शनि वार  
 कृतं वेप्रम रक्षो भूत युतं भवेत् ॥ ११७ ॥ शेषे चैत्रे द्यौ ज्येष्ठे आषाढे कर्कटे रवौ  
 ॥ सिंहो भाद्र पदे तोलि ना धिने कार्तिके ऽलिंगो ॥ ११८ ॥ पौषे नर्के तथा माघे मक  
 रे कुंभगे ऽपि च ॥ प्रकुर्या न्मंदि रं विद्वान्मा न्यैः कौश्लि दिती रितम् ॥ ११९ ॥ कृत्वा  
 पक्षा द्यौ मासा विज्ञेया ह्यत्र सूरिभिः ॥ अथ मृगा रंभ सय ध्यां द मास परत्वेन ॥ श्लोको ध्या  
 न्यं मृति प्रप्नु हती द्रव्य दृढि र्विनाशो भुद्ध भूत सति राध धनं श्री ध्वज न्हे भूयं च ॥  
 लक्ष्मी प्राप्ति भवति भवना रंभ कर्तुः क्रमेण वैवा दूचे मुनिभिरिति फलं वास्तु श्ला -

३०६ स्त्रियोपदिष्टम् ॥ १२२० ॥ त्यक्त्वा चतुर्दशैः षष्ठं चतुर्थी मयमी ममाम् ॥ नवमी च राविं भी-  
 मं गृह्णारंभो विषयं के ॥ फलं च ॥ दारिद्र्यं प्रतिपत्कुर्याच्चतुर्थी भूतहारिणी ॥ अथ-  
 म्बुक्त्वा दनं चैव नवमी प्रत्ययातिनी ॥ १२२१ ॥ दर्शे राजभयं क्षेप्य भूति दारविना प्रान-  
 म् ॥ १२२२ ॥ विषयं के दति ॥ रुग नल चप चौर मृत्यु सञ्ज्ञक पंचक रहिते ॥ प्रुथेयस्योऽनु-  
 राधायां भनिद्या युगलोत्तरे ॥ हस्तत्रये च रोहिण्यां रेवत्यां गृहमारभेत् ॥ १२२३ ॥ ह-  
 तिका मन्दिरं कुर्यात्पुनर्भः भिज्जिति श्रवे ॥ १२२४ ॥ अथ भूमिसुतम् ॥ प्रद्योतना न्यं च-  
 न मां क सूर्यन वेन्दुष दिश मिता नि भानि ॥ शैते महीने व गृहं विधेयं तद्भागवा पीद-  
 ननं न प्रस्तम् ॥ १२२५ ॥ अथ गृहारेवत्त चक्रम् ॥ शीर्षे दृषे गोह विधा विनक्षोद्वाहोऽ-  
 निन्धिश्चाधिभिरग्रपादे ॥ धूम्यं युगेः पश्चिम पादजातेः स्थेय्यं गुरोः दृष्ट्वा गतेर्द्वेना-  
 धिः ॥ १२२६ ॥ स्नाभो युगे दक्षिणा कुक्षिपातेः पुच्छेऽग्निभिस्सप्त पतेर्विनाशः ॥ वा-  
 मे युगे निर्द्वेनता च कुक्षो पीडा च पत्युर्मृत्युवर्गे र्त्रिभिश्च ॥ १२२७ ॥ अथैतदेव पुनः स्पष्टी

संक्षिप्तं ॥ राविभास्मन्नेत्यानि शुभान्येकादशस्थमात् ॥ इष्टशेषाण्यनियुक्तानि साभिभिजिह्व-  
 ३०० पदास्तु नि ॥ १२८ ॥ अथखलम ॥ अथोमुखैर्भैर्विदधीत रवातं शिलास्तथैवोर्ध्वमुखैश्चपद-  
 म् ॥ तिथ्यङ्मुखैर्दक्षिणपाददानं गृहप्रवेशे मृदुभिर्दुर्वर्तैः ॥ १२९ ॥ अथश्लेष्मासङ्घेहाशेवा-  
 स्तोर्मुखं शुद्धं कटिस्थ ॥ दृष्टाकर्णदित्रयं वेद्यां सिंहदिग्गणयेद्गृहे ॥ देवालये च मीनादि तडा-  
 गो मकरादिकम् ॥ १३० ॥ दर्शनतः सूर्याति कालसूर्यो विहाय स्थितं गणयेद्दिदिष्टम् ॥  
 श्रेयोऽस्य वास्तो मूर्खमथ पुच्छं त्रयं परित्यज्य रवने च तुर्यम् ॥ १३१ ॥ कन्या सिंहवु-  
 ल्यायां सुजागपतिमुखं ग्राम्यकोणेऽग्निखानं वायव्ये स्यात्तदास्यं त्वलिपुन मकोर्वेष-  
 खानं वर्तते ॥ कुंभे मीने च मेघे निवर्तते दिशि मुखं खानं वायव्य कोणे चाम्भेः कोणे मुखं  
 वैदव्यमिधुनं गते कर्कटे रक्ष रवातम् ॥ १३२ ॥ ऊर्ध्वभागा त्रयं त्र्यङ्गप्रयोगागत्रयं तथा ॥  
 मध्ये वीडशः त्र्यङ्गाणि रवननं तत्र शेषमनम् ॥ १३३ ॥ अथवा त्र्यङ्गासा द्वारं निष्य वायव्यं वास्तु भि-  
 रे ॥ खाने भाद्रपदाहास्तुः क्रमान्मास त्रिषु त्रिषु ॥ प्रागाशदिग्गोहाद्वारं शीतं दि-

मन्त्रिः प्रसूतम् ॥ १३४ ॥ वास्तो प्रशीर्षे दिशो दिवं पुच्छं समुखं दिगा तम् ॥ अथ चाली नमि  
 १३५ कुक्षीं स्वाने प्रकुरेणाम् ॥ अथा विप्रति कान्मा स्तु पुच्छा तस्य दशां सत्यजेत् ॥ १३५ ॥ अ  
 थोत्तया दश रवात चाग्रे भागे च मध्यतः ॥ गेहाग्ने मुहूर्त्वेऽनश कुन्त्वा स्म दूरणाम् ॥  
 १३६ ॥ चतुर्हस्त प्रमाणान्नुखात्वा गर्त्तं समन्ततः ॥ कुम्भोदके प्रशेचयेद्युः शान्तिपाद पुर  
 त्सरम् ॥ १३७ ॥ ततर्द्धशानं दिग्भागे साक्षत रत्न पंचकम् ॥ साज्यं कुम्भ स्थिरं कृत्वा वा  
 लु पृजन पूर्वकम् ॥ कुम्भो परिप्रिला न्यासः कर्त्तव्य सदनन्तरम् ॥ १३७ ॥ अथ द्वार श्रा  
 ख्येणः ॥ अष्टि वन्या भुजरा हस्त पुष्य भुलि मृगे सुन्न ॥ रोहिण्यां स्वाति भेत्ये च द्वार श्राखा  
 प्रयेपयेत् ॥ १३८ ॥ अथ द्वार चक्रम् ॥ सूर्या भावेद भू प्रशीर्षे स्थिते प्रच धन संपदः ॥ गेह  
 स्यो द्वासनं तस्मादष्टभिः कोणा संस्थितैः ॥ १३९ ॥ श्राखा स्वष्ट भित्ते स्तस्माद्भुजं सौरव्यं  
 भवेद्द्वे ॥ देह ल्या न्नुच्चिभि द्विष्टे मृत्यु र्देह प्रते भवेत् ॥ १४० ॥ चतुर्भिर्मध्यगै स्तस्मा  
 द्द्वय लाभः सुखं भवेत् ॥ एतच्चक्रं विचार्या दी द्वारं कुर्यात्स्वमहिरे ॥ १४१ ॥ कस्याचि

नमो  
३०८

नते विप्रोः ॥ कृतः कणादि युगमन्त्रेन संतकश्चकारिभिः कास्ससुद्धसूर्यभादिनसितस्त  
तः क्रमात् ॥ धनाग्रामं विनाशसौख्यं च धनं मृतिः क्षतिः शुभं न स त्पुनरवपदं क्रमात् क्रान्तिं वि  
चक्षणेः ॥ १४२ ॥ अथ गवाक्षनिर्यायः ॥ पूर्वदिता न्यशास्ता सुगवास्तु हि स क्रारयेत् ॥  
अथ हारस्यतिर्य्यगान्निर्यायः ॥ आधामे नवभाभे तै हारमेका प्रमान्तः ॥ प्राच्या तु र्य्यक्ती  
ये चारुद्र कोणादिधीयते ॥ १४३ ॥ प्राच्या षष्ठे चतुर्थे च तुरीयेऽशेषपंचमे ॥ उदीच्या च  
दनीच्या च सव्यमार्गेण धीमता ॥ १४४ ॥ अथ हारस्तीक्ष्णा ॥ गेहोच्चस्य चतुर्धा शोदिगु  
णे हार उच्छ्रयः ॥ अथ गेहोच्चता ॥ विस्तारोऽष्ट शेषभागश्चतुर्भिर्मर्मः करैर्युतः ॥ गेहो  
च्चं तन्मित्रं दीपं न्यूनं अधिक्य मसत्सुतम् ॥ १४५ ॥ विस्तारतुल्यप्रमितिं गृहस्य चोच्छ्रय  
ताभ्यं नारभू प्रदेष्टात् ॥ गृहोपरि स्थस्य गृहस्य तद्विस्तारहस्तोच्छ्रयता विधेया ॥  
१४६ ॥ अथ हारस्ये वेधविचारः ॥ कोणागामी भूमि हार कर्द्वस्तं मभू रुहम् ॥ देवास्तप प्रकु  
पाणां वेधो हरेऽथ सन्मुखे ॥ १४७ ॥ अथ वेधपवादः ॥ गेहोच्चदिगुणाधिक्ये ह्यनुरेससि

१५ ॥ नैव कोणादि को वेधो भिति मार्गान्तरेऽपि च ॥ १४८ ॥ कुलम् ॥ कृपेनाप्रमारे  
 भवति विनाशो देवता विद्मे ॥ स्तम्भेन स्त्री दोषः कुलनाशे ब्रह्मणोऽभिमुखे ॥ १४९ ॥  
 उन्मादस्त्वय मुहुटितेऽपि विहिते स्वयं कुलविनाशः ॥ मानाधिक्येन भय व्यसनदेभि  
 ति दुर्गोचे ॥ १५० ॥ द्वारद्वारस्यो परियत्नं न शिवाय शोकवाय च ॥ अग्निस्त्रिभुवः सुभ्र  
 यं कुब्जाः कुलनाशनाय भवति ॥ १५१ ॥ पीडाकस्मति विततं भति न्यूनं भवेदभवाय  
 ॥ बाह्ये विततप्रवाशो दिव्यास्ये द्रव्युभिः पीडा ॥ १५२ ॥ दृष्टानादिव कोणेषु संस्थि  
 ता बाह्यतो गृहस्थिताः ॥ चरकी विदारिनामाय पूतनापाय राक्षसी चेति ॥ १५३ ॥ दृष्टि  
 ता भूषणानि दादे व्योमस्त्यमांसाश्च वादिभिः ॥ अन्यदा विप्रकारिण्यो वासिनातु विना  
 वत्तिम् ॥ १५४ ॥ अष्टागणज्ञानम् ॥ अष्टागणायाम विस्तारवैकी कृत्य गृहे भजे ॥ अ  
 गी १ विचक्षुरागोऽभिरुः ३ कुलही ४ दान ५ चान्द्रपुः ६ ॥ १५५ ॥ क्विवि प्रथोरोऽधनी  
 ७ चेतोऽस्मान्नवफलं त्विदं ॥ अथ हव विचारः ॥ उद्गगादिलवसिष्ठ विप्रो दीना इक्षिणो नै

३११  
 वि ॥ १५६ ॥ अथ धौडप्रमद निर्माणम् ॥ प्राचीतः क्रमतस्नातपाकः शय्या च प्रास्मन्म ॥  
 भोजनस्यान्मभांडार देवतानां महं स्मृतम् ॥ १५७ ॥ मथनाज्यपुरीषारव्यविद्याभ्या  
 संश्रुचां क्रमात् ॥ एतिभेषज्ययोः सर्वभासस्तन्मथ्यागमहः ॥ १५८ ॥ अल्पत्वेवाभु-  
 वोऽप्राक्तेस्नादीभ्यग्रहाभ्युभः ॥ प्राक्तेभुवोऽनुसारेण प्रकुर्वीत ययारुचि ॥ १५९ ॥ उ-  
 त्तरवत्तपटाद्यं वुस्थानं नुल्लहादि कंततः ॥ ह्मालनं पितृपादानां गेहा दक्षिणातस्तदा ॥  
 १६० ॥ अथ चित्रारम्भः ॥ हस्तत्रयेऽनुराधान्त्ये सगोऽधिवन्यां प्रवत्रये ॥ पुनर्भेरोहिणी  
 पुष्ये पूर्वाषाढाभिधेतया ॥ १६१ ॥ नंदयांच भुर्भेवोरे प्रकुर्याद्भ्राजवे प्रमनि ॥ चित्रं-  
 नाना विभं रस्यं शिल्पी रामाप्रणं विना ॥ १६२ ॥ अथ नेहोपकरणं चल्ही कल्पम् ॥ पूवाद्भि  
 रोहिणी पुष्ये उत्तरा त्रितये भिभे ॥ स्थितिर्मज्ञानसस्येयागेहो प्रस्करणो स्मृह ॥ १६३ ॥  
 सूर्यार्क्षाद्रसभैर्वधो नृपसुरवं वेद र्क्षसंख्योऽसुरवम् ॥ तारात्राय मितारमाहि रुमयोश्चु-  
 ल्लसोऽसदा प्रारवयोः ॥ मध्ये पंच भवेद्गृहे प्रामणी नाप्रोऽतिन के चाख्यस्ततं स्थास्ततं ॥ ३११



संक्षिप्तं विचार्य मतिमान् चुल्ही गृहे स्थापयेत् ॥ २६४ ॥ अथ गृह समीपं कलम् ॥ समिचवालेयं

३१३ र्धनाग्रे धूर्त्त गृहे सुत वधः समीपस्थे ॥ उद्देशे देव कुले चतुःपथे भवति चाकीर्तिः ॥

२६५ ॥ चेत्यभयं गृहं कृतं चल्मीके स्वकुले विपदम् ॥ गार्ध्यातु पिपासा कुम्भीकारे

धनविनाशः ॥ २६६ ॥ अथ गृहं गले शुभ वक्षाः ॥ पुंनाग श्वं पकोऽशोकः पिप्यली दाहिमीष्टा

मी ॥ चकुलालिल कोद्राशापि चुमंदोऽमरा जपाः ॥ २६७ ॥ गार्धिके लं तथा ज्ञाती पाद-

लागेद मक्षिका ॥ मक्षिका प्राग्वंधकाः पनसः सरसी रुहम् ॥ २६८ ॥ एते महां गार्धे वृ-

क्षाः शरीरव्यामंगल प्रदाः ॥ अथ गेह प्रदेशा जालिदिष्टं वक्षारोपणम् ॥ न्ययोधं रोपयेत्मा च्यां-

गे हाद्याभ्यामुदं चरम् ॥ उदक् स खंच कर्कशुः प्रतीच्यां कुंच राप्रानम् ॥ २६९ ॥ अथ

गृहं गले शुभ भवक्षाः ॥ मातुलुंगं खुदीरं भादुरिज्ञा च वमहुम्भः ॥ एते हः स्वप्रदाने हे संजा-

नारोपिता अपि ॥ २७० ॥ अथ केषां चिन्मते सर्वेऽपि वक्षा अंगणे निविष्टाः ॥ केचिद् चुर्नु चारोप्यो-

निजवास गृहं गले ॥ कोऽपि वक्षो यतः स्वर्गं हुषोऽपि न शुभो गतो ॥ २७१ ॥ अथ गृहं सम-

प्राकारदीनां निर्माणे स्रज साधनम् ॥ प्राकारपुत्रन ग्रामनिर्मितो स्रज साधनम् ॥ अथ स्रज-  
 स्याच्छुभे काले गोहारस्मोक्तभादिषु ॥ १७१ ॥ अथ देवालये महाद्यारम्भः ॥ गृहारम्भोक्त-  
 नस्त्रैर्मदं कुर्यात्तु साधिवैः ॥ सर्वदेवालयन्तेस्तु पुनर्भ्य अवराणान्वितैः ॥ १७२ ॥  
 अथ जैन्यालय प्रपादरीणा मारम्भः ॥ पूर्वाद्रिभरणीधिसिरोहिरयां च राखिरोद्देये ॥ शुभाहेजौ-  
 न्यगोहस्य प्रपादर्योः कतिष्ठुभा ॥ १७३ ॥ अथ कृष्यवननप्रदेशः ॥ ऐश्वर्य्यं पुत्रहानि-  
 श्वरत्नीनाम्नो निधनं भवेत् ॥ संपच्छुभयं सौरव्यापुष्टिः प्रागादितः क्रमात् ॥ १७४ ॥  
 कृपैकाने मध्यदेशे धनहानिर्हिवास्तुनि ॥ अथ जलाशयात्म्भः ॥ अनुशया मया हस्तेरे-  
 वनीयूजरात्रये ॥ रोहिणीयुगले पुष्ये धनियं दितये तथा ॥ १७५ ॥ पूर्वावादासि-  
 धे भेन्व शुभे नासि शुभे दिने ॥ वापीक्ष्णं तद्व्यागान्मासारम्भः काष्ठिनी क्षुधैः ॥ १७६ ॥  
 अथ कृष्यरम्भे चारफलम् ॥ रवि चोरे जलं नास्ति सोमे पूर्णजलरम्भवेत् ॥ वालुका भोगं चोरेदु-  
 वृधे वहुजलं भवेत् ॥ १७७ ॥ गुरौ च मधुरं तोयं ह्युक्ते क्षारं प्रजायते ॥ शोने अथैरजलं ना- ३३

संक्षिप्ति कीर्तितं दारुजं फलम् ॥ १७८ ॥ रोहिण्यक्षाभ्यो ममात्सूर्यभाच्च राहोऽरुक्षा दारुण  
ते कूपचक्रम् ॥ यस्मिन्काले सर्वमेतत्प्रप्राप्तं तस्मिन्मौ निर्वर्त्तते सज्जलत्वं ॥  
१७९ ॥ अथ रोहिण्यक्षात्कूपचक्रम् ॥ रोहिण्यादिलिखेच्चक्रं यावत्तिष्ठति चंद्रमाः ॥ एकं म-

ये द्वयं पूर्वततयं चानि कोणके ॥ १८० ॥ याम्येव वाणसंज्ञं स्थाने ऋत्ये रसमेव च  
॥ पश्चिमे शुगलं वायो युगं च त्रय मुन्ने ॥ १८१ ॥ ईशाने त्रिणि हातव्यं ब्रह्म ऋक्षादनु  
क्रमात् ॥ नार्थे शीघ्रं जलं स्वादु पूर्वमुत्तौ च खंडजम् ॥ १८२ ॥ आग्नेयं सजलं प्रोक्तं  
याम्ये च निर्वर्त्तितं भवेत् ॥ नैऋत्ये सजलं प्रोक्तं पश्चिमे क्षारमेव च ॥ १८३ ॥ वायव्ये च  
व पाणाला मुन्ने च तमुद्वत् ॥ ईशाने कटुकं वारिकूपचक्रं विचारयेत् ॥ १८४ ॥ अथ भौ-  
मभाक्षुपचक्रम् ॥ प्राग्निश्रेयुः त्रिधा धिगुणाद्वयः . वयजलं च सुसिद्धिरभंग दम ॥ रु-  
जमसिद्धि यशोऽर्थं प्रसिद्धिदं जलविभंग करः कुंजभादिति ॥ १८५ ॥ अथ सूर्यभाक्कूपच-  
क्रम् ॥ सजलं खंडजलं सजलं जले शुभजलं लवणं च शिलाजलम् ॥ लवणं मुसक-

सन्नि- राहुभादिति नवफलानि विदुस्त्रिनयोद्भिः ॥ १८६ ॥ अथ राहुभाक्पचक्रम् ॥ राहु अस्का-

३१५

स्त्रापमूर्ध्वत्रयमन्नौतनः क्रमात् ॥ मध्येचत्वारिदशानि फलं वाच्यं शुभाशुभम् ॥ १८६ ॥  
पूर्वप्रोक्तकरोराहुः अग्नेय्यां जलसंपदा ॥ दक्षिणे स्वाभि मरणं नैऋत्ये दुःखदायकम्  
॥ १८७ ॥ पश्चिमे सजलं प्रोक्तं वायव्ये चालुका तथा ॥ उत्तरे निर्जलं वारिर्दशानेव स-

मुद्रवत् ॥ १८८ ॥ मध्ये स्वल्पजलं वाच्यं नान्यथा रुद्रभाक्वितम् ॥ अथ जलज्ञानम् ॥ नक्ष-

त्रचारैर्निधि संप्रयुक्तौ वेदाहत न इणकेनकार्यं ॥ एकावशिष्टे च जलं हि नागोद्भाभ्यां च

प्रोक्ते सलिलं हि स्वर्गो ॥ त्रिप्रलयश्रेये भुवि संस्थितो वं प्रजापतीनां रत्ननेजला प्रायः ॥ १८९ ॥

अथ क्रमेण निर्गरे विचारः ॥ वर्तमान तिथि वार नारका वारि राशि सहिता वसंस्कृता ॥ शेष तुल्य-

| संहितापुस्तकम् २७ | भोगभातम् २७ | सूर्यभातम् २७ | राहुभातम् २८ | दिशि पर्वतः क्रमात् निरर्करो भवति |
|-------------------|-------------|---------------|--------------|-----------------------------------|
| ३३३ ३३३ ३३३       | ३३३ ३३३ ३३३ | ३३३ ३३३ ३३३   | ३३३ ३३३ ३३३  | कृपकर्मणि ॥ १९० ॥ अश्वि-          |
| ३३३ ३३३ ३३३       | ३३३ ३३३ ३३३ | ३३३ ३३३ ३३३   | ३३३ ३३३ ३३३  | न्या दोषाश्रित्यतिथिभिश्च         |
| ३३३ ३३३ ३३३       | ३३३ ३३३ ३३३ | ३३३ ३३३ ३३३   | ३३३ ३३३ ३३३  |                                   |

संक्षिप्तमन्त्रम् ॥ चतुर्भिस्तु हरेः श्वांशं प्रेषां के फलमादिशेत् ॥ १८१ ॥ एके जलानुरागं विन्द्या-  
 ३३६ तद्विदो पातालमेव च ॥ त्रिभिः क्षारं विजानीया च्छून्ये प्रान्त्यं विनिर्दिशेत् ॥ १८२ ॥ अथ  
 नेवारचक्रम् ॥ निर्वारे हर्वत स्त्रीणि त्रीणि च सवतः ॥ मध्ये च त्यादि धिस्तानि शतानि च  
 एते बुधः ॥ १८३ ॥ मध्ये पूर्वजलं सौरव्यस्तरे धनवर्द्धनम् ॥ धाम्य नैऋत्ययोर्द्वयं अप-  
 मरतो परे कक्षम् ॥ १८४ ॥ अथेककारमाशुभालेपश्च ॥ उत्तराश्विश्च भवे पुष्ये ज्येष्ठान्ते रो-  
 हिणी करे ॥ स्थिरे ऽङ्के गुरो मन्दे द्वादशकारं भूषणं चरेत् ॥ १८५ ॥ तथा गेहे सुधाले-  
 पः द्वादशकारं भूषणं दिष्टु ॥ १८६ ॥ अथ द्वादशकारचक्रम् ॥ द्वादशकं प्रवक्ष्यामि भौतान् कदा-  
 प्रयत्नतः ॥ पंच त्रीणि त्रिकं पंच सप्त पंचावन्ती जभात् ॥ १८७ ॥ शुभा शुभं कर्म रो-  
 व द्वादशिका स्थापने मतम् ॥ अथाग्निदानम् ॥ सप्त पञ्च मुनिर्देव पंच भिः षोडशैक जगत्-  
 जभिति सुखादिः ॥ स्थापने ऽग्निं किल द्वादशकारं गृहे भौतान्मादिति बुधाः प्रवदन्ति ॥  
 १८८ ॥ अथ तद्वागचक्रम् ॥ सूर्यभा चन्द्रभंग्या वदन्त्ये त्वसर्वदा बुधः ॥ दिक्षु दिक्षु ह्यं ३९६

न्यस्य मध्ये यच्च निधाय जयत् ॥ १२४ ॥ षड् च चारवाहव फल तस्य वावचारयेत् ॥ पूर्वस्व  
 वारि शोष स्यात् प्राप्ते यथा हलिलं वदु ॥ २०० ॥ दक्षिणस्यां वारि नाशो नैर्ऋत्या ममृत  
 जलम् ॥ पश्चिमायां जलं स्वादु वायव्या वारि शोषणं ॥ २०१ ॥ उत्तरस्यां स्थितं तो  
 य भेषान्या कुस्मिन् जलम् ॥ मध्ये पूर्णं जलं दुग्धं वारि चामृत मेव च ॥ २०२ ॥ तडा  
 मयु सर्वेषु चक्रमे तद्दिचारयेत् ॥ द्विषेदि कुल संभूत सारदू कृत संग्रहे ॥ शिरो मणौ  
 समाहेया प्रभेयं विंशति प्रभुभा ॥ २०३ ॥ दक्षिणी संग्रह शिरो मणौ वास्तु कच्छुलं  
 नाम विंशतिः प्रभा ॥ २०४ ॥ अथ ग्रह प्रवेश प्रकरणम् ॥ प्रवेशे नव गेहस्य कुर्यात्स्वोभ्या  
 यने नृपः ॥ आरमणे दि न मासेऽपि कृत्वा प्राग्वास्तु प्रजननम् ॥ १ ॥ साव फाल्गुण वैशा  
 ख ज्येष्ठा आस्ता नवे ग्रहे ॥ प्रवेशो भावणे भार्गो कार्तिकेऽपि प्रशस्यते ॥ २ ॥ पुनर्विनि  
 र्भिने जीर्ण ग्रहे शुक्ल स्तये वह्निः ॥ प्रवेश प्रज्ञान गेहस्य आस्तादि भवि चारणात् ॥ ३ ॥  
 शुक्ले चास्तु राधाया रेवत्या रोहिणी हरे ॥ चित्रायां प्रविशे हेमं हार भेतु वि शेषतः ॥

४ ॥ हार भेति ॥ यस्मिन्नाहे प्रवेशः कर्तुं शिष्यते तस्य यस्यान्दिशि मुखं तदिह ॥ क्षत्र्यैः  
 पूर्वादिषु चतुर्दिक्षु सप्त सप्ता नल क्षीत दत्ता द्युक्तेः मृदुभुव नक्षत्रैः प्रवेशो नं स्यात् ॥  
 यदि गद्गार मंदिरं लाह गृहे रक्त क्षेत्रे स्यात्स प्रवेशो न सर्वे रिति वक्षिष्योक्तेः ॥ अर्कानिला-  
 र्थादिति दत्त विष्णु ऋषिप्रविष्टं नव मंदिरं यत् ॥ अक्षत्रया तत्परा हस्त यातं शेषे द्युधि-  
 स्तेषु च मृत्यु दं स्यात् ॥ ५ ॥ अथ जीर्ण गृह प्रवेशः ॥ धनिष्ठा हितये पुष्ये अश्विने रोहिणी द्यु-  
 दित्रया स्वात्या नुराधान्ये प्रवेशो जीर्ण मन्दिरे ॥ ६ ॥ अथ प्रवेशे अन्य नक्षत्र फलम् ॥ अथ एषा  
 दित्रये ॥ अश्विन्यां स्वाती पुष्ये तथा कोरे ॥ पुनर्वस्योः पुनर्यात्रा राजा नाशो प्राताभिधे ॥  
 ७ ॥ पूर्वात्रये भरण्यां च विष्णवाद्या म्वभूक्षयः ॥ ज्येष्ठा श्लेषा रव्य मूलार्द्र कुमारे ना-  
 प्रमाश्रयात् ॥ ८ ॥ कृत्तिका यान्दहे देहे प्रवेशो नव मन्दिरे ॥ तथा यात्रा निवृत्तौ च भूयानां  
 फलमीदृशम् ॥ ९ ॥ अथ वार फलम् ॥ गुरु शुक्र बुध राव्ये शुक्रासरेषु सुखार्थं दम् ॥ प्रवेशे  
 तु भानौ स्थे र्थं किञ्चि चौर भयमभवैत् ॥ १० ॥ वशिष्ठः ॥ नव प्रवेशो ह्यथ काल शुद्धिर्न द्वन्द्व

॥ इत्यत्राभ्याः फल ॥ चत ॥ अथश्रुप्रच ॥ ॥ इत सुलभवास्तत्त्वेन पूर्ववदेव कुर्वन्ति ॥

११ ॥ नित्ययाने गृहे जीर्णे प्राशने परिधानके ॥ बभ्रुप्रवेशे मांशाल्ये न मोक्षं गुरुशुक्र-  
योः ॥ १२ ॥ अथप्रवेशेत्याज्यः ॥ चैत्रोमासः कुजाकोच्च अह्नादग्यातिथिस्त्वभा ॥ दुरक्ष  
न्नादभेवज्ज्वानिवगेहप्रवेशने ॥ १३ ॥ अथलग्नवलम् ॥ चैत्रे लग्ने चरांशे च प्रवेशे न शु-  
भानहः ॥ शुभांशे न द्युते चोपचयस्थेऽपि चरेऽपि सत् ॥ १४ ॥ शुभैः केंद्रत्रिकोणाद्यदि  
गैरायत्रिपदयोः ॥ यौपेऽभ्युद्देऽद्यमेतुर्थ्ये एविर्जन्माद्युर्मेगके ॥ १५ ॥ शुभे मकंदके मे-  
हे विधायाद्ये हि जन्मनः ॥ जलग्ना पूर्णघटं दीपं वेदयोद्यैर्गृहे विधेय ॥ १६ ॥ रन्भासुजा-  
हनादायात्तंच स्वर्के स्थितं क्रमात् ॥ पूर्वाग्नादिभुरवंगेहं विधेद्दामो भवेद्यदि ॥ १७ ॥  
अष्टमपंचमद्वितीयौ कादशस्थानेभ्यः पंचसु स्थानेषु स्थिते रवौ सवित्रा गवदनादिभेदि  
प्रवेशे कर्तव्यो मोरविर्द्वयः ॥ यथा ॥ यस्मिन् लग्ने गृहं प्रवेशः कर्तुं दिव्यते तस्मादद्यमे  
न तस्थानंततः पंचसु स्थाने क्वर्के सति पूर्वाभिमुखे गृहे प्रवेशः कर्तुः ताम्रसूतर्कः स्यात् ॥



५२ तथा लग्नमप्येवमस्थानं ततः पंचसु स्थानेषु रावौ स्थिते दक्षिणाभिमुखे वा मोऽर्कः ॥  
 ५३ तथैव लग्नमप्येवमस्थानं ततः पंचसु स्थानेषु रावौ स्थितः पश्चिमाभिमुखे वा मोऽर्कः  
 तथैव लग्नमप्येवमस्थानं ततः पंचसु स्थानेषु सूर्यो स्थिते उत्तराभिमुखे एहे प्रवे-  
 प्रकर्तुं चाभिः सूर्यः ॥ अथ ग्रहद्वयवर्णनमथः ॥ प्रवेशे प्राङ्मुखे पूर्वाभिर्नृणां याम्यमुखे  
 शुभा ॥ अथ प्रत्यङ्मुखोऽथोदङ्मुखे गेहे तथा जया ॥ १८ ॥ अथ गेहे तत्प्रवेशे च विशेषः ॥  
 वेप्रसहस्यं दिवा प्रसप्तं प्रवेशे रजनी क्वचित् ॥ सती नृर्कवल्ले यान्नाह दृष्ट्या नभ्रुगोनि-  
 क्षि ॥ १९ ॥ अथ ग्रहप्रवेशे कलप्रचक्रम् ॥ अर्कभाङ्गमिति १ चक्रे वनिह द्वाहः प्रवेशने ॥ उदा-  
 सोऽधिमितैः ४ मास्यां याम्यां लाभोऽधि ८ संभितैः ॥ २० ॥ पश्चिमेऽधिमितैः १९ स्वर्द्धिमीर-  
 दन्वदभितैः १७ कलिः ॥ नाशो युगमितैः २१ र्मध्यधः कोटत्रि २४ त्रिभिः २७ शुभम् २९ ॥  
 अथ तदेव स एवति ॥ आन्यदोऽसूर्यभात्यया द्वाविंशच्चैव भाति पदद्वि ॥ कुम्भचक्रे च विष्टा  
 निगेहं प्रविशतां नृणां ॥ २१ ॥ अथ प्रवेशविधिः ॥ यथोक्तसमये प्राच्या विताने स्तोत्रं गेह्यु-

तम् ॥ वेदमंगलनिर्घोषे स्संप्रविश्य महं शुभम् ॥ २३ ॥ शिखितं गीता तल्लभम् ॥  
 धि विद्धं पुरोधसम् ॥ पूजयेच्च यथा देवं देम रत्ने स्तथां वीरैः ॥ २४ ॥ कृत्वा गीतो द्वि-  
 ज्वरान्ध पूर्णकुंभं दध्य क्षताम् दलपुष्प फलोपयोगम् ॥ दत्त्वा हिरण्यवस-  
 नान्नि तथा द्विजेभ्यो मंगल्य गान्ति नित्यं स्वपदे विशेच्च ॥ २५ ॥ गीहोक्त होम-  
 विधिना चालि कर्म कुर्यात् प्राणद वासु रामने च विधिर्युजक्तः ॥ सत्तर्पयेद्विज-  
 वरान्ध भक्ष्यभोज्यैः शुक्लां वरः स्वभवनं प्राविशे त्व रूपम् ॥ २६ ॥ नय प्रवेशि-  
 विधः ॥ अपूर्वसंज्ञः प्रथम प्रवेशो याज्ञा वशानेन स पूर्वसंज्ञः ॥ दन्दाभयस्त्वभि-  
 भयो हि जातस्त्वेवं प्रवेशस्त्रिविधः प्रदिष्टः ॥ २७ ॥ आत्मोद्दिगभे भूयैः कार्यो पूर्वप्रवे-  
 शकः ॥ पूर्वा पूर्वोऽध्वनी मूलश्रवो पतैः कार्स्थितैः ॥ २८ ॥ स पूर्वस्त्वज्ञेयश्चिन्ताऽनु-  
 राधारेवती मृगो ॥ रोहिण्यां कथितः प्राज्ञैः प्रवेशस्त्रिविधो महः ॥ २९ ॥ अथ वासु पूजादि-  
 कं विना प्रवेशो निषेधः ॥ यद्वास्तु पूजा रहितं त्वदज्ञे चालित्वनाच्छन्य महं विरूपं ॥ कपटदो-

सति न न विप्रोद्य न तत्सर्वा पदा भालय मेव तत्स्थानम् ॥ ३० ॥ अथ चालु हृज्जनम् ॥ अथा ल्य-  
 ३३ मे मृगो मूलः ५ नुराधान्ये करत्रये ॥ पुनर्भेऽभुनोः पुष्ये रोहिण्या मधिभे नथा ॥ ३१  
 ॥ अस्तो रभ्यर्च्चनं श्रुतं वलिदान पुरस्सरम् ॥ अथ नवदुर्ग प्रवेष्टः ॥ रोहिणी रेवती ह-  
 स्तत्रये पुष्ये श्रवत्रये ॥ अनुराधो ज्येष्ठो नव्यो पुरे दुर्गे प्रवेष्टानम् ॥ ३२ ॥ अथ जितस्त्र प्रज्ञोः  
 पुरे प्रवेष्टः ॥ विषारत्ना कान्तिका हर्षो ज्ञायादभिधे नथा ॥ श्रानो ज्यार्क् कितस्थारं वि-  
 ज्यो नगरं विप्रोत् ॥ ३३ ॥ द्विवेदि कुल संभूत सरयू कृत संग्रहे ॥ द्विरो मणो समा-  
 दैषा प्रमेयं चैक विंशतिः ॥ ३४ ॥ द्वाति श्री संग्रह शिरो मणो गृह प्रवेश कथनं ना-  
 मस्क विंशतिः प्रभा २१ ॥ अथ देवालय विप्रतिष्ठा प्रकरणम् प्राप्ता दामरयोः कार्या प्रतिष्ठा  
 चोत्तरायणे ॥ तथा जला श्रया रामोत्सर्ग प्रणस्तो विचित्रके ॥ १ ॥ चैत्रो मासः प्रति  
 ष्ठायां वृधैः केचिच्च दितीरितः ॥ शुक्ल पक्षे अनुराधान्ये पुनर्भे रोहिणी सृगे ॥ ३ ॥ अ-  
 चत्रयो ज्ञा हस्तत्रये पुष्ये विधीं पुरी ॥ स्ववाक्ष्णान्कत्र निषिद्ध स्थापनं स्मृतम् ॥ ३

१॥ विस्वादि देव सुराद्यानां विलम्बे भुव लोकिने ॥ अथ देवताविशेषेण नक्षत्रविशेषः ॥ चि-  
 स्तोः पूर्वोदिते भेत्वा नुराधाशिवयोः शिवम् ॥ रोहिण्यां भवरो ज्येष्ठा पुष्ये चाभिजि-  
 दीरितम् ॥ ४ ॥ विधिवासवयोस्तस्य कर्मातिष्ठापनमायुर्कैः ॥ ५ ॥ भाजोर्हस्तेऽनु-  
 राधायां कुबेरस्तकन्दयो रपि ॥ मूलेऽनुगोदि कानां च भवरो सुगतस्य हि ॥ ६ ॥ देवत्यां ध-  
 र्महेरं वफणि प्रथम राक्षसाम् ॥ यक्षभूता सुराणाञ्च वारदेव्याः स्थापनं स्मृतम् ॥ ७  
 व्यासागुरुमयहाणाञ्च चाल्मीकैः पुष्यमेव च ॥ यत्र सप्तर्षयो यान्ति धिक्तेनैकाञ्च तन्न  
 च ॥ ८ ॥ सर्वेया भेवरो हिरण्या मुत्तरा जितये तथा ॥ धनिष्ठायां हि गोश्रानां प्रतिष्ठाप-  
 नमीरितम् ॥ ९ ॥ अथ देवविशेषे लयविशेषः ॥ सिंहैः सूर्यः शिरसो हन्ते लये स्थाप्यस्त्रि-  
 यां हरिः ॥ कुम्भे वेधाश्च रेऽसुद्धाः द्यौर्देव्यस्त्रिस्थरेऽखिलाः ॥ १० ॥ गणा परिहृत्त रक्षो-  
 यक्षभूता सुराणां प्रथम फणि सरस्वत्यादि कानां च पीप्से ॥ भवसि सुगत नाचो ज्ञा-  
 सवे लोकपानां निगदित मखिलानां स्थापनो हि स्थिरेषु ॥ ११ ॥ अथ चारफलम् ॥ प्रति-

२५ ॥ १२ ॥ अथ देव विप्रयेण माकमनम् ॥ याम्यायनेऽपि चागहमात् भेरवत्तामनान् ॥ महि  
 तं ह्येता तथा क्षिमावन्ति दा वरदा ददा ॥ शानन्द दायिनी कल्प स्था धिन्य कर्तिरिवासे  
 पासुरहन्त्री च नृसिंहं स्थापयेद्बुधः ॥ १३ ॥ विप्रैः ॥ आवणे स्थापये स्त्रिंशमाधिदने  
 जगदं विकासम् ॥ मार्ग प्रीये हरिं वैव यैये सर्वासु केचन ॥ १४ ॥ अथ प्रतिष्ठायां लभ  
 तम् ॥ केन्द्रकोणद्विजामस्थैः शुभैः पापेभ्यः सेतुभिः ॥ आचारिणैस्तैः प्रवर्त्य प्रदा  
 देवाः प्रतिष्ठिताः ॥ १५ ॥ द्विवेदि कुलसंभूत सरद्वहन संग्रहे ॥ शिरो सरणे समाहे  
 वा प्रमेयं च द्विविंशतिः ॥ १६ ॥ इति श्रीसंग्रह शिरो मणौ प्रतिष्ठा कथनं नाम  
 द्वाविंशतिः प्रश्ना २२ ॥ अथ निम्न प्रकरणम् ॥ तत्राक्षवंग सुराणाम् ॥ १ ॥ दृष्टी  
 तं वक्ष्ये दक्षिणांग समुद्रं ॥ पुरुषाणाम्नु तद्देयं चामभागे मयीदृशम् ॥ १ ॥ दृष्टी  
 लाभ शिखरस्थाने धन लाभो ललाटके ॥ प्रियाङ्गिः स्याद्बुधोर्म्ये च्चुबोर्म्ये मुखे  
 वहा ॥ २ ॥ शुभा चार्त्ताश्रुतौ कर्णे लोचने प्रिय दर्पनिम् ॥ हर्कोणाभायायोर्हस्मीर

भिः पक्ष्मणि सज्जयः ॥ ३ ॥ गणह देशे त्रिपासी ख्यं नाश्यायां गंधजं सुरखम् ॥ उन्नते-  
 हेतु बागवाद् ध्रुव नं चाधरे त्रिपाः ॥ ४ ॥ हनु देशे भयञ्जेय मुरले मधुर भोजनम् ॥ भू-  
 वाहिः कंठ देशे स्यात् ग्रीवायां रिपु जं भयम् ॥ ५ ॥ क्षेयः पराजयः दृष्टे स्तन्ये मित्र-  
 सभा गमः ॥ त्रिपासि दादु देशे स्थान्मभ्ये चाहोर्दना गमः ॥ ६ ॥ दक्षिणाभिः के विद्याहि  
 जयं वक्षसि भूवम् ॥ प्रमोदं च कलं कलाया ध्वं ग्रीति मनुक्षयम् ॥ ७ ॥ स्थानात्प्रचल-  
 नं नाभौ कोष्ठा वृद्धि रणान्न के ॥ कोष्ठासि रुद्रे नाय्या जघने पति सं गमः ॥ ८ ॥ स्फिरागु-  
 र्वाह नासि स्यात् लिंगे योयित्समा गमः ॥ तृपणे पुत्र लाभ प्याभ्युदयो वसि देश-  
 के ॥ ९ ॥ ऊरौ सहा तसो प्राप्ति रिपु संधिस्तु जायुनि ॥ कश्चिद्वा निरुजं चायां स्थाना-  
 नि प्यरणा परि ॥ १० ॥ पादाधो लाभ दं यानमङ्गः स्फूर्ति फलं त्विदम् ॥ वामभ्युत्तां-  
 फलं चै तद्बुधे क्षेपं विपर्ययात् ॥ ११ ॥ नासीरां दक्षिणां गो स्याद्दङ्गः स्व स्फुरात् ॥ तथाः  
 ॥ अंग स्फूर्तिः समा क्षेया लां क्षणं मग्नं कास्तिलाः ॥ १२ ॥ कर्णादूतिर्दक्षिणो पाणी-

सन्नि- नृपाणां ज्ञाप्यदां स्तुता ॥ अन्त्येषां ताभूदापाह तस्मिं गमन कारिणी ॥ १३ ॥ अथ प्रह्नीप-

१३

तन्मन्त्रम् ॥ तन्नाशुभाशुभतिथिवारनक्षत्राणि ॥ भू१ नेत्रा २ शि ३ शरां ४ गा ५ द्या १० विद्या

१३ दित्वे १२ अ १२ संमिताः ॥ तिथयः प्रशुभदा प्रह्नीपतिऽन्यास्त्यशुभामताः ॥ १४

॥ सैन्या वाराः प्रशुभा नोक्ताः पापादुह फल भूदाः ॥ पुण्याश्चिह्नो हिरणी वृद्धं पुन र्धैरिक्ता-

करभयम् ॥ १५ ॥ अनिष्टान्त्यानुगाधारकं प्रतभंच शुभभद्रम् ॥ दूतोऽन्याङ्गं निविद्धस्या-

त्यक्षी पावे नृणां सदा ॥ १६ ॥ दृष्टिणां मेऽरविस्ते पुंसां वामां च मृगा हयानम् ॥ नाभौ ह-

स्तुरै चैव मन्त्रके हनु वाज्जिने ॥ १७ ॥ प्रह्नीपात प्रशुभो द्यौषस्ततो न्यङ्गान् प्रीतिभनम् ॥

यत्फलं प्रतने पश्याः शरदारो हरोऽपितत् ॥ १८ ॥ शरदस्य प्रपते च चक्रद्वारोर्ध्वे लुप्यफ-

लम् ॥ स्नातकं स्पर्धने पश्याः शरदस्य सवाससा ॥ १९ ॥ जन्म ह्ये मृत्यु योर्ध्वे च द-

रये विद्यादि ह्यविते ॥ लाभे पाप युगे चन्द्रेऽद्यो रिष्टं प्रजायते ॥ २० ॥ तन्न प्रणक्ति ज्ञ-

पंक्षेभं रुद्धं मृत्यु ज्ञेया दिकम् ॥ पंच गव्य युगं ज्ञानं हुत्वा द्रव्या वलो कनम् ॥ २१ ॥

३३

अथ खल्वन दृष्टि फलम् ॥ किं च ह्यणि कार्य सिद्धिं तुला प्राक्ते हुताद्यो भयं याम्ये रोगभ  
 यं सुएरि कल हो विनं समुद्रालये ॥ वायव्ये वरवरयथान प्रयनं दिव्यांगना चोत्तरे  
 दृष्टाने मराणं न्धुनं निगादित न्दिगलक्षणं खल्वने ॥ २३ ॥ अथासमीपेण जमस्तके वा  
 सूर्यो द्ये वा एण सन्निधौ वा ॥ आकाश मार्गे गहने वने वा धन्यो नरः प्रयति खल्वने द  
 म् ॥ २३ ॥ अथ स्कन्धेन प्राकुने वशंत एकः ॥ अथ देवेषु गोषु गजवाजिमहो रगेषु राज्ञ्य भद्रः  
 कुशलदः शुचि प्रादुर्लेषु ॥ अस्मास्थिकाख न विददन्ति चतुर्क केयु सद्यो ददाति  
 मराणं खलु खं जरीदः ॥ २४ ॥ यः कंधोरेः शिरसा समंतात् विभर्ति कायञ्च समंत  
 भद्रः ॥ आकाश वद्यो गलमात्र लक्षः श्रितान्न नो यः खलु कार्य नाशः ॥ २५ ॥ सा  
 र्थो हारिद्रा रस सन्निधौ यो गो मूत्रभाभः खलु खं जनो धमः ॥ सर्वत्र कार्यं विपुलां च ल  
 क्ष्मी समंत भद्रः प्रददाति भद्रम् ॥ २६ ॥ स्वरोष्ठ के व्देव च पृष्ठ यातः छिदं  
 स पक्षो विदधाति मृत्युं ॥ पक्षे विपुल न्दिख संस्थ चान्ते लक्ष्मी मृतो चान्धुभः कदा



३८ चित् ॥ ३७ ॥ यादृशवस्था शकुनेरमुष्य मृगपुमावाप्रपद्येति दृश ॥ स्वस्था  
 ३८ धितादृश्युपलक्षणायात हिस्तेराल्लभिहापरेण ॥ ३८ ॥ अथ क्षतम् ॥ श्रीवध्यध्य-  
 यनं वादेवाहने प्रायणेऽशने ॥ वीजवर्षबुधेऽशोक्तं शोभनं सप्त सुक्षुतम् ॥ ३९ ॥  
 मृदुर्वन्ति भयं हानिस्तुष्टिर्देव्या गमस्सुखम् ॥ तैशोऽर्थागमनं शोक्तं दिक्षु क्षि-  
 ष्णा फलं क्रमात् ॥ ३९ ॥ अत्रोहल्लाम् ॥ यामार्द्धे सञ्ज्ञकाद्यातो विज्ञेयं च छष्यं दृष्ट-  
 क् ॥ शोघेऽर्द्धे ग्रहरेऽर्द्धाद्यां द्वितीयेऽग्निदिशि क्रमात् ॥ ३९ ॥ तृतीये याम्यतः प्रथमे  
 फलमुक्तं विचक्षणेः ॥ वामे च दृष्टे शुभदं फलं च स्याद्दक्षिणेऽग्ने फलमन्नचित्यम् ॥  
 ३९ ॥ स्थानोपविष्टस्य दृष्टा क्षुरं स्याद्दृष्टा त्कृतं प्रलेभ्य भवच्च दृष्टात् ॥ स्याद्भोजने-  
 वा प्रायणे तस्यादौ स्थानं लेहो भनमन्नं नान्यत् ॥ ३९ ॥ अत्यर्थं निशंक्षुलमन्नवाच्यं-  
 तद्गर्भं तस्याश्च कुमार्तिकोऽयः ॥ मधस्य कर्तुः प्रमदाज्जनानां स्याच्चर्मिकायाश्च यवं-  
 प्राक्तन्याः ॥ ३९ ॥ मयो जने यत्र कृतेऽपि जातं क्षुतं क्षणात्तद्विनिहन्त्य वाश्यम् ॥

कार्योत्सुकेनापि मननापीत्यंतस्मादुपेक्ष्यंनविचक्षणेन ॥ ३५ ॥ होमं प्रजापान-  
 होमधर्मान्तेच भवेत्सुतम् ॥ सविशेषं तदा कार्यं पुनर्वाच्यं ज्ञायते ॥ ३६ ॥ अथ  
 खानफलम् ॥ वामान्दिशं दक्षिण भूमिभागा इच्छन्प्रयाणे शुनकः प्रशस्तः ॥ वाम-  
 प्रदेशात्सपुनः प्रवेशे प्रशस्यते दक्षिणभागा मी ॥ ३७ ॥ मूत्रं च कृत्वा भिक्षुखं प्र-  
 यातियो जगत्कः शुभदस्स पुंसाम् ॥ कार्यं यु सर्वं द्विषि सर्व कालं न मूत्रयन्ती शु-  
 नकी प्रशस्ता ॥ ३८ ॥ वजे त्मुस्ता यदि नृत्रयित्वा सर्वैव तस्मिन् यति कार्यं निष्ठम् ॥  
 मिथान्नभोज्यं यदि गो मयेतु शुकेन शस्तं सज्जते प्रशस्तम् ॥ ३९ ॥ अयातिरुष्टो  
 ऽभिमुरवो यदि प्रवात्री ह्यभ्यकुर्वन् चित्कृत् ॥ श्रीधनं दानी भुवं मध्वगानां-  
 भुवं नभस्तो धन धान्यलाभः ॥ ४० ॥ दृणां प्रयाणे भवनागमं वा प्रयानो रमन्ते यदि स-  
 प्रमोदाः ॥ तदेष्ट कार्यं ऽपि भवेत्तमोदः समागमश्च स्वजनैः ससं स्यात् ॥ ४१ ॥  
 प्रवाधे पुरस्तादवनीं विलिख्य यातुर्मुखं पश्यति चेत्तदानीम् ॥ तत्रैव देशे इति विना ॥

संक्षिप्तं स्वलाभं वृजन्ति कार्ये न हि संशयोऽत्र ॥ ४२ ॥ फलं गृहीत्वा सहसा निवासं-  
 ३० प्रवाधे विशेषेज्जल्यति पुनर्लाभम् ॥ योऽभ्येति दृष्ट्वाभिमुखं प्रयातुः प्रीतिं प्रकु-  
 र्याद्विना भान्यलाभम् ॥ ४३ ॥ अथ काकप्रकुनानि ॥ वामेन गत्वा विनिवृत्य सर्गि-  
 का को यदा दक्षिणा भागं गच्छ्यात् ॥ यातुः प्रकुप्याद्वित्तकार्यसिद्धिं क्षेमं च सि-  
 द्धिं पुनरागमं च ॥ ४४ ॥ कृत्वा रवं यः पुरतः प्रयाति पुनरस्थितोऽधो गृहमादधाति  
 ॥ कण्डूयते यश्च क्षिप्तोऽङ्घ्रिना प्रणःपुंसां तदा भीष्टफलान् ददाति ॥ ४५ ॥ केके क्षि-  
 ह र्गो धाति यो विहास्ये यो नायं को को भिति प्राप्तिं तं स्यात् ॥ अपत्यलाभः कुकु-  
 हे न्यनेन गन्तं फलं केके कदल्यनेन ॥ ४६ ॥ कोको भित्तीदं सुखलाभमाप्ते कुंकु-  
 निनादः शिथ संगमाय ॥ मैत्र्या जये स्यात्कदलीव प्रब्धं कश्चेव वारणी धनहा नि-  
 कर्त्री ॥ ४७ ॥ अथ काकसर्पफलम् ॥ मस्तके वायुसस्य श्रेष्ठिद्विभ्रं मरणं कालिः ॥ क-  
 स्यात्कान्धे महाम्भिति रित्येयो योगो केवधि ॥ ४८ ॥ यो विहासं मस्तके भर्त्सि ॥ १ ॥

सुतस्य च ॥ तथकाकस्य र्हे होषा भवतः ॥ लुह्वा धो वाप्यसिद्धान्त्वभस्य दध्या दिद्यो गतः  
 ॥ ४८८ ॥ काकस्य र्हे नदीषा यत्न कस्माद्दुष्पण नदा ॥ वरमासाभ्यन्तरे मृत्युः काक  
 मैथुन दर्शने ॥ ४९० ॥ दिवा वाप्यदिवा रात्रौ यः पश्येत्काकं मैथुनम् ॥ संनरो मृत्यु  
 प्राप्नोति ह्यथवा स्थान नाशनम् ॥ ४९२ ॥ काकं घातयन्नतं यद्वा विदधीता यवत्स  
 रम् ॥ पितृ न्देवा न्द्विजान्मत्स्या गत्व हं वा मिवाहयेत् ॥ ४९३ ॥ जिजेत द्विद्यो जितक्रो  
 धस्तत्त्व धर्म परादराः ॥ तद्दोष प्राप्तुं नार्था यश्चान्ति कर्म सत्मा रयेत् ॥ ४९५ ॥  
 क्रपो लो वायसः पक्षी प्रारदो मूर्द्धि चेत्येतत् ॥ वयमासाभ्यन्तरे तस्य स्वाभिने वा  
 मृतिस्तदा ॥ ४९६ ॥ अयकिंगला ॥ एहो परिग्रहहारि पिंगला यस्य रोदिति ॥ हानि  
 स्तस्य गृहस्यैव न शुभा तस्य सा स्मृता ॥ ४९७ ॥ प्रान्नायां दिशि वृक्षे यं शुभे  
 दु यदि पिंगला ॥ रौते भव्यं तु तत्रेति नाशुभं तत्र भावितम् ॥ ४९८ ॥ एधिष्यां  
 कीचि कीचां तिचि लिचीति जलोद्भवम् ॥ पण्डितं शुभकहेयं पिंगलाया वृथा

संक्षि विदुः ॥ ५७ ॥ अथोक्तकः ॥

महस्यो परिभाष माणोऽनुः रवाय स स्स्या त्वलु

३३

महस्यवेच ॥ महस्य नाशाय च सवराणां त्सायं च राक्षो हि गुणानुबंधी ॥ ५८ ॥ अ-  
हं मह हारि चरत्युत्तु को हसति चोराः इविणं प्रसह ॥ तस्मिन्मदे प्रो निशि मां-  
सयुक्त स्तदोष नाशाय वलिः मदेयः ॥ ५९ ॥ धूष प्राक् स्स्या त्सदा प्रा न्तरुषः  
महत् प्राक् स्तादप्र प्रवेदवेद्यः ॥ अन्ये प्राक् निर्दिता एव वेद्याः पूर्वार्थाः सु-  
द्यभितस्य चोक्ताः ॥ ६० ॥ प्रा न्ता यान्दिशि वृक्षेषु ग्रामादुरे च प्रावितः ॥ धूका-  
स्या तसर्व लोका ना मृद्धि दृद्धि सुरा र्थकत् ॥ ६१ ॥ अथ सत्या रिह ज्ञानम् ॥ यस्य सु-  
य्य स्वरोऽज खंधोऽप्रा हं व हे तदा ॥ सद्यो मृत्यु त्ततो न्युने न्युना ह मिति मासकं ॥  
६२ ॥ एवं वाम स्वरे सौख्यं तथो न्नो भे मृतिः क्षणान् ॥ यस्य चन्द्रायते सूर्य्य अथ-  
न्द्र स्सूर्या यते तदा ॥ ६३ ॥ अहे ह्यं त्रयं तस्य षण्मा साभ्यं तरे मृतिः ॥ निष्प्रभं  
आ स्करं पृथे न्दु यते दप्र भिर्दिनैः ॥ ६४ ॥ जा गत्य प्रयति यः स्वप्नं सोऽपि वर्धन

जीवति ॥ न हि ते न कर्णं धीयं वा नाश्रयं रसो भुवम् ॥ ६५ ॥ मेदो वा मनस्येव  
 यमासात्स न जीवति ॥ मणिर्धं ललाटस्थं यदि हृत्स्थं न पश्यति ॥ ६६ ॥ यो हं गीधिं वि-  
 नाहेनृः श्रौको वा हतिर्दीप्तिमान् ॥ कृशं गस्मूलं देहः स्यात्सरत्नस्स न रवोऽपि वा-  
 ६७ ॥ ततश्चा मे क्षणो वापि मास षट् न जीवति ॥ भुवं विक्षोः पदं चैवा रुन्धती मातृ सं-  
 हलम् ॥ ६८ ॥ भस्मा लां चंद्रगं चिन्हं म पश्य नैव जीवति ॥ कफो मज्ज नि यस्या शु-  
 पं कारो रं डि तं पदं ॥ ६९ ॥ हात स्य मा गुरु शुष्यं चूना लि स्या च्च हृदि नि ॥ नो सु भुक्ता  
 धनिं धने स्थूल देह कश्च स तथा ॥ ७० ॥ अथ संशयं शुभं चिन्हं ॥ जिह्वा शीघ्रः प्रकं पश्य तां-  
 दूले राग हीनता ॥ वाणी मग्न हाय स्य तस्य मृत्यु रणो भवेत् ॥ ७१ ॥ अथ शुद्ध जप ल-  
 षणम् ॥ प्र फुल्लित वपुः कायो रोमां ची स्थिर दृग्गदः ॥ धैर्यो येन स्व मुत्साही विजयो  
 सरणो भवेत् ॥ ७२ ॥ अथ क्षया गुरु दर्शनं अकारं ललकलं च ॥ प्रातः पृथु गते सूर्ये रना-  
 त्या म न्यु ड्युरादी नः ॥ तिष्ठ न्गाना विधे र्देशे पश्ये च्छायां निजां ततः ॥ ७३ ॥ इत्कं द

विदुः ॥ ५७ ॥

अथ तथान्वितम् ॥ ततो द्वागत्वे परस्मै च्छाया पुरुष मात्मनः ॥ ५८ ॥

सत्यवेत्तव्यं वतं चेतसं मुखे प्रवेत मीक्षते ॥ यावदहं सुखं क्षेमं विजाय प्राप्नुयात्तदा ॥

॥ दृष्टे तस्मिन्मिहोर्हीने मास धद्वं न जीवति ॥ विकर्णे ह्यायनं चैकं व्यसेधे तत्र ना-

सकम् ॥ ५९ ॥ सरं भद्रदर्थं सप्त दशं मासान्वि हलके ॥ विपार्थे श्रीभूयुरस्के द्वौ व्यास-

आसं हि जीवति ॥ ६० ॥ द्विदह दर्शने मृत्युः सद्य एव न संशयः ॥ मित्रनाशो विपार्थे च

बंधुनाशो विहलके ॥ ६१ ॥ आत्मनाशो विपार्थे स्यात्सर्वोभावे कुलं क्षयः ॥ दुर्मि-

हं सारुणं देशे कर्तुरेव पण्डितुर्वे ॥ ६२ ॥ विद्वरे भूषके रुद्धे मित्रे छिन्ने विघात नम् ॥

पीते रज्जोऽरुणे हानिः कृत्से मृत्युः प्रजायते ॥ ६३ ॥ अथ सप्त दर्शने कलम् ॥ आद्ये यास्ये नि-

श्वि स्वर्गो वर्धेण फल द्यो भवेत् ॥ द्वितीये मास पट्केन त्रिभिर्मर्मासैः सप्ततीयके ॥ ६४ ॥ आ-

तस्सद्य फलः स्वन्नः श्मात्वा सुप्या न्न वेन्नरः ॥ शेषा चिंतो ज्ञवा व्यर्थानि वा चैव दिवे स्थि-

ता ॥ ६५ ॥ अथ शुभ फलदा स्वभाः ॥ सद्गजा चाक्षणा देवाः सिद्धि रं भवार्थं किं नरः ॥ गुरुः प्रवेत्ता

वेत्ता

वेत्ता

वेत्ता

संधि स्वरागरी तेषां चेद्दर्शनं शुभम् ॥ ८३ ॥ प्रासाद गुरु धौलानां भवेत्तोस्तु भज वाञ्छि नाम् ॥ दर्शनं रोह-  
 ३३३ रां लाभः संह स्या शोहरां तथा ॥ ८४ ॥ ध्वजं स्तनं सुवर्णं क्षिरल रौप्य दधी निच ॥ यव गोधू-  
 मसिद्धार्थाफलं दीपश्च कन्यका ॥ ८५ ॥ श्री यंडाक्षत दूर्वा प्रस्व दूर्ध्वाः पुष्पिनी हुमः ॥ ला-  
 भेवा दर्शने चैषां लाभस्तोयं भवेद्यथाः ॥ ८६ ॥ भोजनं रोदनं वीराणां वादनं नौ भरो हराम्  
 ॥ अगम्या गमनं विद्या लेपनं प्रालम्बी रितम् ॥ ८७ ॥ आरुढो यो हि जागर्तिसपुष्यं फलितं,  
 द्रुमम् ॥ दंष्ट्रः श्वेताहि नादं से करे स्यात्स महोधनः ॥ ८८ ॥ रुधिरस्तान पाति च सप्यं दंष्ट्रो मृ-  
 ति निर्जः ॥ शय्या हर्म्यं प्रानं गानं ज्वलनं स्वप्निरपि कदा ॥ ८९ ॥ रक्तं भ्रावी जलैः स्नानं मरणं  
 मांसमक्षणम् ॥ सुरायाः पयसः पानं प्रशस्तं पायसाशनम् ॥ ९० ॥ कदली कल्प वृक्षाश्च ती-  
 र्थं गंगादिकं स रित् ॥ तोराणां भूषणं राज्यं स्वोन्नै प्रस्य ग्राम वेद्यनम् ॥ ९१ ॥ वैदवाद्यादि निर्वोषा  
 ज्ञो निस्सरां तथा ॥ दंष्ट्रे वृश्चिक कीटानां तडा यो दान दर्शनम् ॥ ९२ ॥ पीतं रक्तं फलं पुष्यं स्वप्ने प्राप्नोति यो  
 नरः ॥ लभते सोऽचिरात्स्वर्गं पदरागमर्षिं तथा ॥ ९३ ॥ जयो द्युते रणो वादे पुरु हृत भजे स एष ॥ आत्मनो वं ॥ ३३



नं श्रीर्विवहं रावमनुजमम् ॥ ९४ ॥ अभिविचकारो विप्रो वासुनधारणम् ॥ कुरुते म-  
 हिषी व्याधी गोसिंही स्तन्यपानकम् ॥ ९५ ॥ स्वनाभी तृणा वृक्षांश्च पुण्याणां मुह्यवस्ती-  
 षा ॥ भुवो भूमि धरस्यापि क्रमेणोक्षेपणोऽप्युभः ॥ ९६ ॥ मरिणसो वसरीषोऽप्याणं पानेनो-  
 भोजिनीदले ॥ योऽश्नाति पाय संस्वने स राज्य मधि गच्छति ॥ ९७ ॥ गौर्लिङ्गी वासु-  
 णो राजा पिता मित्रं च देवता ॥ यद्भूते सदसत्स्वने ततश्चेव प्रजायते ॥ ९८ ॥ त्व-  
 लिंगं च देवता वा तथा विधा ॥ खल्वेह ह्यप्रयच्छंति नराणां त्रिपुल्लं धनम् ॥ ९९ ॥ त्व-  
 क्ता तक्रास्थि कर्पा संश्वेतं सर्वं पुनं मतम् ॥ सर्वं कृत्स्नमस हित्वा गोदेवा प्रव गज हित्वा नृ-  
 ॥ १०० ॥ अथास्तु न स्वप्नाः ॥ तैला भ्यक्तोऽद्यदि ग्वासा आरुहं महिषं रवम् ॥ उदं हसं वृ-  
 षं चास्याभ्यां गच्छन् जीवति ॥ १०१ ॥ पाकस्थाने वने उक्तं पुण्यां वै सति का गृहे ॥  
 विकलां गोविशे त्वन्ने सोऽप्युभिविप्रयुज्यते ॥ १०२ ॥ उपद्रवं तियं स्वने प्रहं मिनो द्रंष्टु-  
 णोऽपि वा ॥ वानरो वा वराहो वा भवेद्राज्य कुलांतकः ॥ १०३ ॥ जतु कोऽकुमसिं दूर-

स हि त वीयस्य मन्दिरम् ॥ यतान्तरात्तस्य गते ॥  
 ३६ गात्रेषु तस्या पुण्या हुमोद्गमः ॥ इव रोद्ध कपि सूर्याद्यै र्यानिं स्नेहस्य भक्षणम् ॥ १०५ ॥  
 ॥ कञ्जु येणास्तुता मय्या कर्दुमैर्गोभयेन च ॥ स्नेहेन वपुषो लेपः कर्दुमैर्विनिमज्जन-  
 म् ॥ १०६ ॥ प्रातो हृदंत हस्तानां जिह्वायाभ्यां त्रयोस्तथा ॥ एते प्रोक्तप्रदाश्वन्ना-  
 दृष्ट्या हानि कण भ्रमपि ॥ १०७ ॥ स्वप्ने सान्देश लज्जं गीतं क्रीडितं स्कोटितं तथा ॥ हृसितं  
 भूषितं स्तोतो वहन्मोह रथो गतम् ॥ १०८ ॥ सूर्येन्दुभञ्जनागणं प्रातस्त्वस्य चित्ता-  
 पिवा ॥ रज्जा खेदः शिरोभागे कांस्यचूर्णस्य धारणं ॥ १०९ ॥ प्रवेष्टो जननी गर्भं हु-  
 दमेतद्विद्वद्वम् ॥ कारवीरमग्नौ कंच लतापाशेन वंधनम् ॥ ११० ॥ कृत्वां वरधरा-  
 योषा लिंगानं मृत्यु कारणम् ॥ भारुहा शुष्यता नृक्षान्यो विचिंत्य निजं वधुः ॥ १११ ॥  
 भूषयत्यरुणैः पुष्पैस्सोऽपि प्राणैर्विपुष्यते ॥ धृतराजं वराश्लक्ष्यं हृत्वा सान्नोति सान-  
 वः ॥ ११२ ॥ द्रुस्तु भूमितं मात्मानं व्याप्तं धूमेन वेक्षते ॥ भस्माज्ज्य लोहं लाभं च सत्त्व ल-

हस्याविद्युज्यते ॥ ११३ ॥ क्लोहकुक्कुटमाज्जगि गोधावभुभुजंगमाः ॥ जम्बुकादिभि-  
 दंशाभ्यहयास्त्वन्नेनशोभनाः ॥ ११४ ॥ एतद्रथ्याधुधोपानतशय्याभूषाभ्यद्योधि-  
 ताम् ॥ सवस्त्रादिभिन्नवस्त्रनामहारेऽर्थनाशकः ॥ ११५ ॥ विवाहोत्सवयोऽप्यो-  
 केभ्योवानरवकेषयोः ॥ कश्यावयवानांतुक्षेदनेस्त्वन्नशोकः ॥ ११६ ॥ वृषजं-  
 प्रमधुकेशानां नैवंरुक्स्वजनंतथा ॥ कृपगर्तदरिभ्यांतविवरेद्युनशोभनम् ॥  
 ११७ ॥ कपोतप्रयेनगुग्गाद्याऽमृहसकौशिकवायशाः ॥ प्रदगालप्राशकस्वानोदृष्टाः  
 स्वन्नेनशोभनाः ॥ ११८ ॥ प्राक्कुलीकशरान्नानां गुडपूयादिभक्षणम् ॥ गोमूत्रं  
 चोसपानीयंस्वन्नेपीतंनशोभनम् ॥ ११९ ॥ रत्नेपुरुषमूर्त्तौवाश्रयन्मृत्युमवाप्नुयात्  
 रत्नद्वष्टानिवासांसिपुण्याणिचविभर्तियः ॥ १२० ॥ पितृकार्यंभक्तुर्वारिणोऽमृतं  
 नसंशयः ॥ भूतप्रेतपिशाचाद्यैः प्रवपचैस्सहसंगतः ॥ १२१ ॥ अग्राहतोवाधतै-  
 र्योभ्यास्वल्पाहैर्विप्रतेनुसः ॥ असूर्य्यं हिवसें रात्रिंविचंजंगततारकाम् ॥ १२२ ॥ व्यं-

संस्थितो को लज्जां पश्येत्स्वप्ने सोऽपि विनश्यति ॥ सीसपि न लकस्तीरं कांसताम्राय संवपुः ॥

३२३

१२३ ॥ प्रुक् दक्षीणधर्मं शिलपी दृष्टा स्वेतेन शोभनाः ॥ प्रासा दस्तनभूर्मीद्रधिरव  
रणं ध्वजस्य च ॥ १२४ ॥ पतनं प्राक् चापस्य नरादृस्य विनाश कृत ॥ तारको ला  
हलाक्षी न निर्दिता ज्ञोषा दि संभवः ॥ १२५ ॥ विद्या राज्ञ्य भयं दृष्टि प्रदं गी के प्रादि वि-  
द्वत् ॥ अथ तन्न फलद्वयवत्या ॥ ये दृष्टा स्वप्नति स्वप्नाः स्वस्यैव फलदा भवते ॥ १२६ ॥  
परं प्रति च ते तस्य फलदा किंचि दात्मनि ॥ अथ दृष्ट स्वप्नदर्शनदीप प्रणतिः ॥ दृष्टे त्वा लोक-  
ते स्वप्ने निवेद्यो ब्राह्मणाय तत् ॥ आप्री भिर्भक्तो यितो विद्मैः पुनः सुय्यान्नेरे प्रवरः ॥ १२८ ॥  
न द्रव्यं पुन स्वप्नं संस्तु या त्पुण्य वारिभिः ॥ मृत्युञ्जय जपे होमः प्रांति स्व स्व त्वा य ना-  
दिकम् ॥ १२९ ॥ सेवा स्व त्व भवां प्रातर्दानं स्वर्गादि प्रकृति च ॥ अवरण म्भारता दीन्यां स्व-  
प्ने शेषा न्तये ॥ १३० ॥ अथोत्पत्ताः ॥ उत्पत्ता त्स्त्रिविधा ज्ञेयादि विभो मां तरि क्ष ज्ञाः ॥ भेषु  
दिव्या स्तथा दक्षध्वजा दावन्तरि क्ष ज्ञाः ॥ १३१ ॥ भूर्भो भौमाः क्रमादुग्र मय्य मा त्व फ-

संस्थितप्रदाः ॥ अथोत्पत्तानां वंशः ॥ भूमिकंठो दिष्टा दाहो निघातो धूलि वयर्णि ॥ उत्क्रापा-

३५

तस्तरुच्छेदो न भसो दृष्टि रस्य नाम ॥ १३२ ॥ अंधकारो दिवा विद्युत्प्रातोऽथर्तु विपर्य-

यः ॥ प्रकृति प्रसवो जन्तो रक्षीत्येव च विपर्ययः ॥ १३३ ॥ ग्रहाणां वायु तिष्ठुर्द्वं स्वका-

लेयत्रे जायते ॥ वर्षा कालं दिवा विवोरक्षीत्योऽपरि मंडलम् ॥ १३४ ॥ आकाशमसुस्य

लाईत्वं ह्य ग्रसं ग्रहाणां ह्ययम् ॥ बाल रक्षी द्विज वयर्णि वधः पीडा जनस्य च ॥ १३५ ॥ प्रा-

णादस्य च देवस्य ध्वंसः पातोऽथ जनस्य च ॥ ग्रहाः वक्राति चारस्थाः सर्वे वास्वर्षिणा खगाः

१३६ ॥ सर्वेऽप्येव कर्षागाः खेटाः एकर्षेऽर्किं वहस्यती ॥ शुक्ल पक्षे भूगो रक्तो द्योवा-

के तु दर्शने ॥ १३७ ॥ सुप्रालं रवग र्षिज्ञस्य द्यादि चर्द्धि दर्शनम् ॥ चंद्राभ्यामन्यु-

द्भवोऽकस्मात् जले धूमादिकं भवेत् ॥ १३८ ॥ उच्छ्रव र्णाघ रद्यादि चलनं स्फोटनं तथा

॥ अतिमायाः प्रकंषा वा हसनं रोदनं तथा ॥ १३९ ॥ भुवो विवर द्रव्या द्या उत्पत्ता तास्त्वप-

रेऽपि च ॥ ग्रंथां नराच्चेते ज्ञेयाः फलमेवांश्च वीम्यथ ॥ १४० ॥ अथोत्पत्तानां यच्चतुर्विध-

३५

नण्डलानि ॥ कृत्तिकाभरणीपुष्यमघाश्रमाविशारिक्का ॥ पूर्वाफाल्गुणिकेतानिभानि  
 सप्तमिभंडलम् ॥ मूलाश्लेषाश्रतामोत्योतराभाद्रपदस्ताथा ॥ पूर्वाषाढाशिक्षितानि  
 सप्तवारुणभंडलम् ॥ १४१ ॥ शुक्रमौफाथिनीहस्तंजितयंमृगश्रीर्षिकं ॥ वायुभंडल  
 सञ्ज्ञानिभानि सप्तस्तरानिच ॥ १४२ ॥ अभिजिच्चोतरास्वाढानुराधाश्रवणाह-  
 यम् ॥ ज्येष्ठाचरोहिणीभानि सप्तचैत्रस्यभंडलम् ॥ १४३ ॥ भूकपादिमहोत्तानां  
 यतेयभंडले ॥ ततस्त्वभाक्जद्रव्यंजतुदशचपीडयेत् ॥ १४४ ॥ द्विजिभण्डलकेतव-  
 ततस्त्वाननिवासिनाम् ॥ छिन्नेखंडफलंज्ञातिदुरेनासिफलंस्विरम् ॥ १४५ ॥ द्वे-  
 तेभ्यश्चपीतेतुदृष्टिनीलशरीरजः ॥ कसेभूषक्षयोधुमेनीहारपरिवभवेत् ॥ १४६  
 प्राविदकालविनाय्यत्रपरिधिष्येत्तदास्विरम् ॥ तस्मिन्कालतुदृष्टिःस्यात्परिधौ-  
 रुस्तताडिते ॥ १४७ ॥ अकालेफलपुष्पाणांमुख्येधान्यनाशनम् ॥ जलाद्विषेस्थितेक-  
 र्द्विर्भवेत्तुपरि कीर्तिता ॥ १४८ ॥ स्त्रीवयेचातिदुर्भिक्षविप्रकालवधेऽपि तत् ॥ देवध-

संक्षिप्तं च देशस्य राजध्वंसः प्रजायते ॥ १४३ ॥ सर्वग्रासे ग्रहे सर्ववस्तूनां च महर्घता ॥ १४४ ॥  
 ३४३ भिक्षं कुर्वते खेताभ्यो माघादङ्गाभिः नः ॥ १४५ ॥ अतीचारगताः सर्वे खर्हा खोच्चग-  
 ता भवति ॥ ज्ञेयाभव्यफलाग्नेयकणशिरस्यादेशनाशकाः ॥ १४६ ॥ स्यातामस्तोदयो  
 षुक्तेषु क्षेपेद्भागवस्य च ॥ राजयुद्धं तथा घोरं दृष्टिः स्यात् नृनिर्गतं ॥ १४७ ॥ जीवार्क  
 पुञ्जयो यो गेहभिर्क्षिं विग्रहस्तथा ॥ संग्रामश्चातिहुर्भिक्षं जायते मुशलोदये ॥ १४८ ॥  
 ॥ अथ केतवः ॥ मुशला कृतिधूमाभादीर्घषुच्छनिभाश्च ये ॥ तथा श्वेतशिरवाका  
 विग्रहो तो निभाश्च ये ॥ १४९ ॥ द्रव्याघाः केतवस्सर्वे राष्ट्रभंगकरा मताः ॥ धू-  
 मकेतूदये मृत्युर्जायते दृष्टिर्वापते ॥ १५० ॥ शिरवाः श्रोतो निभाः केचिच्छेभ-  
 नाः परिकीर्तिताः ॥ शितः खिन्नाः इत्यर्को दीर्घः शीघ्रोऽतीव शुभप्रदः ॥ १५१ ॥  
 ॥ वह्निर्भीमश्चिरक्ताभो हस्तवर्णो मतिप्रदः ॥ शक्रध्वजसमो नेष्टः धूम्रवर्णोऽपि  
 तद्विधः ॥ १५२ ॥ नेष्टो द्वित्रिचतुःशृङ्गा दुर्यन्तिः कथिता बुधैः ॥ रक्तपङ्क्तिर्निभे स्व-

त्वर्णो प्रागपरोदये ॥ १५८ ॥ नृपनाशस्तथैव शान्त्या नैला लभो महर्धता ॥ नाशो ह्यल्पवि-  
 तस्य प्रञ्चत्योऽद्यो तारका प्रभः ॥ १५९ ॥ वाक्पथसदृशो धाम्ना दुःखदे भूमिचारिणाम् ॥  
 यावद्विवसमुत्पलः समुदेति न भस्वले ॥ १६० ॥ तावन्मासं फलन्यति मासैर्वर्षाणि संव-  
 दित ॥ अयान्योत्पल फलानि ॥ आरण्यपशवो ग्रामे चेद्विश्रान्ते निजेच्छया ॥ कुर्वन्ति च मृ-  
 दं मृत्पशुसृक्की च मृदं विप्रम् ॥ १६१ ॥ चल्मीकं क्षौद्रजालं वा यस्य सख्य निजायते  
 ॥ तदा गोहपतेर्नृपिणः कथ्यते वायुहं गते ॥ १६२ ॥ ह्यादिचंद्रार्कविवे स्याद्भोगभी-  
 तीणो मृतिः ॥ गृहाभावे फलं नेष्टं ह्यादिजीवे तु शोभनम् ॥ १६३ ॥ पराणी विवरोद-  
 शे नृपनाशो रियो र्भयम् ॥ त्रयोदश दिनः पक्षो यास्मिन्नवदे मर्वतदा ॥ १६४ ॥ प्रजाना-  
 म्प्रोऽप्यदुर्भिक्षं तथा भूमिभुजां क्षयः ॥ अय निर्वाणस्तस्मै तत्फलं च ॥ प्रचण्डवातस्तस्मात् निर्वा-  
 तपतनं भुवि ॥ पक्षिदीप्तेऽरण्ये नेष्टं नृपहाभारकोरदये ॥ १६५ ॥ निर्धतिप्रचंडशब्दोऽ-  
 धागच्छन्तो नाशयेद्दिशम् ॥ घोरचौरद्विजान्यै प्रयान्न्याघातैः क्रमाद्विदा ॥ १६६ ॥



वा न्य ज्ञानार्थो हरे प्रथया क्रमात् ॥ यातिन्या धान्य पैशादु स्तर्चै रमतु  
 रंग भान् ॥ १६८ ॥ अथो ज्ञानार्थो हरे प्रथया क्रमात् ॥ पराणी प्राण संवाह धोर रात्रा स निर्भता ॥  
 तदतद द्वा विबुज्ज्वलती दीर्घवक्षगा ॥ १७० ॥ अत्युच्चमिमा तद्विहस्ता च  
 सपत्रगा ॥ तिर्यग्गर्ह्यगता प्रवेता रक्त लम्बी तु तारका ॥ १७१ ॥ ऊका त्रुवि विधाका  
 रा कल्लु च्छति सावगा ॥ अथ दिक्क फलम् ॥ दिग्दाहः पीत चर्षा अद्भु मि पालं निहं  
 तिलः ॥ अथि वणो निजं देवं चरणि नृतरतः क्रमात् ॥ १७२ ॥ भूयो इत्य प्राम तां क्यार्थ  
 द हस्तो देशां तु निर्दनुम् ॥ माच्या भूमि भुजा न्हन्या देशान्यां विदिषाः क्रमात् ॥  
 १७३ ॥ वैश्वान् शिलय विदध्मे रात्रान् क्रमल रत्वथ ॥ निशि स्वर्षा निभः सव्य-  
 वायो रवे विभस्ते शुभः ॥ १७४ ॥ अथ भूकं प फलम् ॥ भूकं पोषा मतो चरणि न् क्रमा ह्न्या दि-  
 वा निशि ॥ बाधु मंडल जो भूष प्रस्थां तु भय धंतया ॥ १७५ ॥ एषा न्न मुदकं वह्नि मंडल  
 स्थो निहंति य ॥ चन्द्र भराडल यो र्भूयो रत्वथा गुर्जर देश कान् ॥ १७६ ॥ भूपालो अवीन-

॥ १७७ ॥ अथ राजावाचः ॥ राजा अयच्छेत्पुत्रं भवत्सु ॥

३४५

नृपभीस्तथा ॥ भयं तदिष्टिभूभ्राभेतस्मिन्कुक्षेरुजांभयम् ॥ १७८ ॥ राजं स्मृर्योद-

ये व्योमच्छादयेद्विज्यहं यदा ॥ तदा रोगाः श्वभूतास्थुर्निर्ग्रायानितुभूषहन् ॥ १७९ ॥

॥ नित्यं रात्रिद्वयं नेत्रं क्षुद्रयं त्रिचतुर्धनम् ॥ पञ्चाहं चेद्भयं घोरमृते कालं च शेषिणम् ॥ १८० ॥ अथ गंधर्वनगरं तत्फलं च ॥ गंधर्वनगरं हतिवर्णा निश्चेतादिवरकिम् ॥ क-

मात्सुर्विद्विषो भूपा मातु सैन्यपुरोहितान् ॥ १८१ ॥ सध्वजं निर्द्वनं कुर्व्यादायुधानि-

निभं भयम् ॥ अथैवाभुतानां फलपाकसमयः ॥ षड्विम्बसिर्भुवः कंठो जायते फ-

लमुकवत् ॥ १८२ ॥ दिग्दाहे विकृतौ सूर्यौ केतुर्नियतिर्योस्त्रिभिः ॥ रजोऽभिवर्षेण

सद्यः उत्पत्तिः न्यत्र ह्ययनात् ॥ १८३ ॥ अथ दृष्टिविकृतिस्तत्फलम् ॥ अकाले रुक्मपा-

तिश्रसन्नाहं व्यभक्तेऽपि च ॥ वर्षेणो वारजो वृष्टौ नैत्रवं मासादिभिर्मृतिः ॥ १८४ ॥

भयमंगारकैर्हान्यैः फलाद्यैस्स्यान्नसंशयः ॥ देशनाशः सुकोक्षां वृत्तवृष्टौ-

प्रजायते ॥ १८५ ॥ दीने सूर्ये प्रतीपं स्यात् तच्छादिने भीतिर्हातः ॥ दंडं चोपेति वृष्टिः स्यात्  
 ह्यो भिन्नचराणां शुदीयते ॥ १८६ ॥ अथ पक्षिमार्गं विवृतिस्तत्फलमपि ॥ ग्रामाराया रजस्यानी-  
 रस्थलजास्तु निष्पाचराः ॥ प्राणिनो व्यत्ययं जानांस्त्वचक्रं पीडयं त्यमी ॥ १८७ ॥ जेष्ठा  
 कालेऽथ दीप्तायादिशो मार्गे पतन्निपाः ॥ क्रोशंति जंबुका दीनो संघाहारे च तदिष्टि-  
 ॥ १८८ ॥ विहंगा विधति व्यस्तचक्रायां तद्वत्स्ततः ॥ कुङ्कुटोऽस्ते च गोर्नृत्तं हेमन्ते  
 रौति कोकिलः ॥ १८९ ॥ रजराज्या नोऽथवा स्वैरं प्रकीर्तितं परस्परम् ॥ दृत्वादि विवृती  
 भवे पीडा भवति भूयसी ॥ १९० ॥ मार्गे बुधं तु महिषी भ्रातरे वडवादिवा ॥ सिंहगात्रः  
 प्रसूयते स्वाभिनी मृत्युदायिकाः ॥ १९१ ॥ अथान्येऽप्यशुभोत्पत्ताः ॥ अस्थि क्षिपति गेहेषु  
 सन्मृत्वीऽस्ते चोदति ॥ यस्य तद्देहनाशः स्यात् परमासाभ्यन्तरे तदा ॥ १९२ ॥ ऐति-  
 मूर्यो द्ये स्वावेद्गामांते सूर्यदिङ्मुखः ॥ भूपनाशस्तदा चास्ते कपीशानां शमाञ्जयः  
 ॥ १९३ ॥ संभट्टारनिपातश्चेद्भूतोत्पतिर्विनाशिनः ॥ युद्धानेवातकास्त्वेरं कायलो-

वः परस्परम् ॥ १८६ ॥ तदाभूय भयङ्गुरं विज्ञेयं दीर्घदक्षिणिः ॥ अंगना वालका मन्ना-  
 द्युते यन्त्वभावतः ॥ १८७ ॥ सत्वं तज्जायते तस्माद्गूढा च ये सरस्वती ॥ अथोत्पन्नदोषाधवा-  
 दः ॥ स्वस्व श्रान्त्या महोत्पाता विनश्यति च सर्वश्रः ॥ सहाहाभ्यन्तरे वृक्ष्यां धुभादै-  
 वनहुः २ व दः ॥ १८८ ॥ अथोत्पन्नानामुपहारः शान्तिश्च ॥ धूमकेतुर्मही कंयोदिग्दाहो धूलि-  
 वयणम् ॥ भुवो गार्वाश्च निघोत्पन्नानामुपहारः ॥ १८९ ॥ यस्मिन्नेषो प्रजायन्ते म-  
 होत्पाता महाभयाः ॥ प्रजापीडाभवेत्तत्र विनाशः पृथिवी पते ॥ १९० ॥ तदा श्रान्ति-  
 विधातव्या देशे ग्रामे पुरेऽतिवर्तते ॥ श्रान्त्या दोषा विनश्यति त्वन्यथा दोषमहुतम् ॥  
 इत्युत्पाताः ॥ अथ महर्षिर्काण्डम् ॥ अथोत्पन्नानामुपहारः ॥ चैत्रमासि श्रिते पक्षेऽर्कदिग्दोष-  
 ति पतिष्यो ॥ यो वासरस्स राजा स्यात् तस्मिन् चर्यते तः फलम् ॥ १९१ ॥ मेघेऽर्के स्वप्न-  
 वे श्लेषो चारो मन्त्री सकथ्यते ॥ चापे धान्यपतिर्दोषः ॥ १९२ ॥ जलदाधिपः ॥ १९३ ॥  
 रसाधिपस्तुलायां स्यात्कर्कोशास्यपतिस्तथा ॥ मकरे स्वर्गं राजा दिनी रसे श्लेषो वृषेऽस्तुतः

नि ॥ २०१ ॥ अथ विशेषकायनयनम् ॥ प्रागेति मे हते श्रोत्रे लब्धं स्थाप्यं पृथक् कृत्वा दत्तम् ॥ श्रो-  
 त्रं हि द्विजं श्रोत्रे र्युक्तं चर्या स्याच्च ततः पुनः ॥ २०२ ॥ लब्धं ॥ प्राकं प्रकल्प्यैव कर्तव्या प्रोक्तं वद्वि-  
 दम् ॥ तस्मान्निद्रा तथा लस्य सुद्यमः प्रांतिरेव च ॥ २०३ ॥ क्रोधो दंभोऽद्यभिन्नत्वमुत्सवः  
 पाप प्रणयकैः ॥ अथ प्रकाशान्तरेण धुधाद्यानयनम् ॥ प्रागे वेदै हते श्रोत्रे भर्तु लब्धं च पूर्वव-  
 त् ॥ श्रोत्रे च दिगुणे सैकं क्षुधा तस्या सुषुप्ति का ॥ २०४ ॥ आलस्य मुद्यमः प्रांतिः क्रोधो  
 लोभोऽप्यवेदकः ॥ दंभोऽद्य मैद्युनं चोर्व्यं रसनिः पतिरेव च ॥ २०५ ॥ फलनिः पतिरुत्सा-  
 हः पुण्यं पापं तथैव च ॥ सर्वनिः पतिरित्येवं संपत्तिश्च यथा क्रमात् ॥ २०६ ॥ अथोपलानय-  
 नम् ॥ प्राकं श्वाष्टगुणः रवैर्दंभको लब्धं च पूर्ववत् ॥ द्विज श्रोत्रं त्रिभि र्युक्तं मुग्रत्वं च र-  
 सोद्भवः ॥ २०७ ॥ कलोत्पत्ति स्तथा लब्धा धिरोगनाश स्तथैव च ॥ आचारश्चाप्यनाचारोऽप्य-  
 ति र्जन्म ततः परम् ॥ २०८ ॥ चोरो पशुमनं वन्दे भीति रग्नि शमकृत्मात् ॥ अथ प्रालम्भाद्यानय-  
 नम् ॥ प्रागेति मे हते नदै र्ज्ञेयं स्थाप्यं तदुक्तवत् ॥ द्विजे श्रोत्रं त्रिभि र्युक्तं प्रालम्भो मूलवत्

३ भि. स्तथा ॥ देविकं पीतं ताम्रं च स्वचक्रं परचक्रकम् ॥ २०६ ॥ अथ प्रकारांतराण्यलभ्यान्वचनम् ॥

३४६

शैलघ्नो नवहस्ताकः शेषद्विभंयुतं त्रिभिः ॥ शालभो मूषको दैवं पीतं ताम्रं स्वचक्रकं

म् ॥ २०७ ॥ परचक्रागमश्चैव क्रमादिवं च पूर्ववत् ॥ अथोद्दिष्टादिप्राप्त्या नयनम् ॥ प्राक्केवारी

नगैरंध्रेरीशैर्निम्ने पृथक् पृथक् ॥ सप्तभक्ता च शेषयत् द्विभं पंचयुतं क्रमात् ॥ उद्भि-

जः ष्वेदजश्चैव जरायुप्रभवो हुजः ॥ २१० ॥ अथ युगानां प्रमाणात् ॥ द्वात्रिंशति सहस्रैश्च

युक्तं लक्षचतुष्टयं ॥ प्रमाणं कलिचर्माणां प्रोक्तं पूर्वैर्महर्षिभिः ॥ २११ ॥ युगानां कृत

मुख्यानां क्रमान्मानं प्रजायते ॥ कलिर्मनं क्रमान्निभं चतुस्त्रिंशतिभिर्तेस्तथा ॥ २१२

कृतमानं १९२८००० त्रेतायाः १२९६००० द्वापरमानं ८६४००० कलिमानं ६३२००० ॥

अथ गतकलिभान्तरम् ॥ स्वगा शैलेन्दुरा मादौ प्राक् केऽव्हास्ते कलेर्गताः ॥ ते विर्हीनो क-

लेर्मनं शेषे शेष कलेर्मिति ॥ २१३ ॥ अथ भर्मानयनम् ॥ स्वाभ्याभ्यां केऽश्व वेदेऽश्व-

कलि शेष स्समायुतः ६ कलिमानेन संभक्ताद्यस्त्रिभ्यधर्म्मैस्त्वसः ॥ २१४ ॥ प्राक्कोर्दे च

लि युतं जीव राग्निभिस्तद्दुर्गेऽपके ॥ लब्धं पुरातन न्यूना विप्रतिः पाप भुच्यते ॥ २१५ ॥  
 १० जाय व्यपान्नपार्थ भुवाकाः ॥ रस ईस्तिथ्यो १५ गजा ट प्रश्ने ल चंद्रा १७ नंदे रव १८ स्तथा ॥  
 स्वर्गा २१ दिशः १० क्रमात् द्वेयार व्यादीनां भुवाद्भे ॥ २१६ ॥ निज राग्नि युगे वर्ष स्वाभिनी-  
 भवयोग के ॥ निमि वाण युते भक्ते तिथि भि प्रेष्य संमि ते ॥ २१७ ॥ आया स्सुखि गुणे लब्ध-  
 प्र एते तिथि मि हेते ॥ श्रेये व्ययोः क्रमात्स्व स्य राग्निनां कथिता वृथैः ॥ २१८ ॥ अथ प्रकाश-  
 भिस्तज्ञानम् ॥ एके नि मेहेते वारोः शैले भक्तेऽथ श्रेय के ॥ क्रमान्मध्यं सुभिस्तं च दुर्भि-  
 स्तं च सुभिस्तकम् ॥ २१९ ॥ महर्धं समता द्वेयार्थैक तो रैर वंतुरे ॥ अथ मंत्रात्सुभिस्तदि-  
 ज्ञानम् ॥ निमि संवत्सरे वृत्ते शरैर्भक्तेऽथ सज्ञाभिः ॥ चतुर्द्वि वि मिते श्रेये सुभिस्तं विपुलं  
 भवेत् ॥ २२० ॥ निमि व के च दुर्भिस्तं वट् भू संख्ये च मध्यमम् ॥ धूम्ये तु रैर वं द्वेयं फलं  
 वर्षे वृथैः सदा ॥ २२१ ॥ अथा प्रः प्रकारः ॥ द्विप्र संवत्सरो राग्नि ईतो भक्तो न गौ स्तथा ॥ श्रेये-  
 वाणा भिने युगे सुभिस्तं हायनं भवेत् ॥ २२२ ॥ वेद चंद्र भिते द्वेयं दुर्भिस्तं खेतु रैर वम् ॥ २२३ ॥

सकि सा नलमिने मध्यमै तदर्थ फलं बुधैः ॥ २२४ ॥ अथ राजा दीनां वर्धे संक्षेपाफलम् ॥ राजा मात्य-

३५५ नृपदीनां वच्मि संक्षेपतः फलम् ॥ गुरुशुक्रादयोऽधीराः संति चेज्जनसौख्यदाः ॥ २२५ ॥

मुभिस्तं प्रोभना वृष्टिर्देवासास्थं प्रकुर्वते ॥ यानि शैभौ प्रकुर्वते दुर्भिक्षं विग्रहं भयम् ॥

२२६ ॥ अल्पसौरव्यप्रदः सौम्यस्त्वल्पदुःखप्रदोऽरविः ॥ फलं सविस्तरं चैवां विज्ञेयं संहि-

नादियु ॥ २२७ ॥ अथ दीपमालायां नद्योगाफलम् ॥ यदि भवति नद्या चित्कार्त्तिके नष्टचंद्रे यानि-

रविपूजां वारं स्वाति चायुष्मयोगे ॥ गगनचरपशूनां जंगमस्यावराणां नृपतिजनवि-

नाशो राज्यभंगस्तु चोक्तः ॥ २२८ ॥ अथापरेणपि ॥ दर्शे चायुष्मतो स्वातौ पापाहेमासि का-

त्तिके ॥ प्रदेशे चैतज्जनापीडा राजबुद्धाद्युपद्रवाः ॥ २२९ ॥ अथ ज्येष्ठश्रुतिपदादियोगः ॥ ज्ये-

ष्ठे शुक्लतिथावाद्ये चन्द्रे ज्येष्ठगुवासरे ॥ सुमिक्षं प्रोभना वृष्टिर्दुर्भिक्षं पापवासरे ॥

२३० ॥ अथाषाढद्वितीयानवमीयोगः ॥ आषाढे शुक्लपक्षे च द्वितीया नवमी दिने ॥ चन्द्रे

ज्येष्ठगुवारे स्यात्सुवृष्टिश्च समर्चना ॥ २३१ ॥ बुधे सायं रवौ तापः कुजे वृष्टिर्न जायते ॥



प्राणिवारे प्रजा पीडा दुर्भिक्षं रोषं तदा ॥ २३२ ॥ अथ प्राणिचारफलम् ॥ गुरुर्जरेऽपि प्राणी-  
 पीडा प्रभासा दुदयो दृष्टे ॥ मरुस्थले च युगमेक्षं कर्क काशमीरमंडले ॥ २३३ ॥ प्राक-  
 स्ये च सिंहर्क्षे कन्यायां मालवे तथा ॥ गुलादिनिष्ठधियां च दुर्भिक्षं जनपीडनम् ॥  
 ॥ २३४ ॥ सुभिक्षं च मृगे कुंभे मीने सर्व प्रजा क्षयः ॥ अथ कर्मचक्रम् ॥ कूर्मचक्रे प्राणिर्म-  
 ध्ये ततः प्राच्यादिषु क्रमान् ॥ २३५ ॥ नाशयेन्न ततो देशान् कृत्तिकाद्यैस्त्रिभिस्त्रिभिः ॥  
 निजाधिष्ठितसैर्हृष्टानं तर्वेदिगुलाः स्वतः ॥ २३६ ॥ मागधाद्यान् कलिं गादीनां धंति कमु-  
 खां स्वधा ॥ ततो कोकन पीडा दीन् सिंहुसौराष्ट्रकादिकान् ॥ २३७ ॥ पौलिनंदचीनका-  
 द्यांश्च कुरुकाशमीरमत्स्यकान् ॥ खलवाल्हीकपातांश्च नवखंडानि भौस्तथा ॥ २३८ ॥  
 दक्ष्या न्याधिष्ठिता देशादीशान्यां यमदिगा तान् ॥ अथ ग्रहचारवशाच्च हर्षादिः ॥ मेवे गुरो-  
 सुभिक्षं च सुवृष्टिश्च सुखी नरः ॥ दधे गुरोस्खल्यदृष्टिः प्रजा पीडा च विग्रहः ॥ २३९ ॥ अना-  
 दृष्टिः प्रजानाशो रौरवं मिथुने गुरो ॥ कर्के गुरो महादृष्टिः प्लुनभंगो महादृता ॥ २४० ॥

कसि सिंहे गुरौ सुभिषं च सुहृदिश्च प्रजासुखं ॥ कन्या गुरौ रोग पीडा दुर्भिषं स्वल्प जन्म च ॥

३५३ २४२ ॥ तुले गुरौ स्वल्प प्राख्यं बहु क्षीं प्रजायते - अलो जीवि च दुर्भिषं राजं दीर रणा

इयम् ॥ २४३ ॥ चापे गुरौ सुभा वृष्टिः शुभं प्राख्यं सुखी जनः ॥ दुर्भिषं भर्करे जीवे राजा दु-

हं पशु शयम् ॥ २४३ ॥ कुंभे गुरौ सुभिषं च धातु मूलं महर्षता ॥ दुर्भिषं दक्षिणे दे-

शे नान्य देशे भवे गुरौ ॥ २४४ ॥ अथा बाढी पूर्ण विचारः ॥ अथा बाढी पूर्णिमायां च वाय-

व्ये यदि मारुतः ॥ मशका मूषका कीटा जायन्ते शूलभा स्तथा ॥ २४५ ॥ अथा बाढी पूर्णि-

मायां चेद निलो वाति नेत्रते ॥ अना वृष्टि र्धान्य नाशो जलं कूपेन हृष्यते ॥ २४६ ॥ अ-

था दी पूर्णिमायां स्याद्दुर्जरे यदि मारुतः ॥ धर्मं प्रीला स्तथा लोका धनं धान्यं ग्रहे ग्रहे ॥

२४७ ॥ अथा बाढी पूर्णिमायां चेदशाने यदि मारुतः ॥ सुखिनो हि नदा लोका गीतं वाद्यम-

होत्सवैः ॥ २४८ ॥ अहि कोणे वन्धि भीतिः पश्विमे च जला इयम् ॥ अन्यत्र यदि वायुः स्या

सुभिषं जायते सदा ॥ २४९ ॥ अथा बाढी भास्करा सोमुर पति ककुभो वाति वति सुहृदिः ३५

संक्रि

३५६

प्रस्य ध्वंसं प्रकृत्या दृदिदह नदि प्रो मन्द हृदि धमेन ॥ नैऋत्या मन्त्रनाशो वरुणा व-  
हुजलं वायुना वायुकोपः ॥ को वेर्या च भवति वसुमती तद्वदि प्रणन कोरो ॥ २५० ॥ सर्वमा-  
सेष्टि सिमाया मृमि कपो यदा भवेत् ॥ उक्ता तारा वज्रपातः परिधिः शशि सूर्ययोः ॥  
२५१ ॥ भूखकेतुः शक्रचापं ग्रहणं बहुधा तथा ॥ तदा सकल वस्तुना ज्ञायते च महर्षि-  
ता ॥ २५२ ॥ अथ प्रतिमासे दर्पकलम् ॥ शुभवारान्विते दर्शे सुभिस्त्रिं च प्रजा सुखम् ॥ पापवा-  
रान्विते ह्युः खं तदा धान्यमहर्षता ॥ २५३ ॥ रावि वारेण संयुक्ता यदा स्या तस्यैष ज्येष्ठयोः ॥  
अमा वा स्या तदा षड्यारं रं ह मुं हा च जायते ॥ २५४ ॥ चैत्रस्य शुक्लपंचम्यां पूर्ववायुर्दना गमः ॥  
भाद्रे गुणत्रयं मोल्यं प्रस्य ना ज्ञायते तदा ॥ २५५ ॥ ज्येष्ठस्य शुक्लपंचम्यां दृष्टिः पश्चिमं सार-  
तः ॥ तदा चतुर्गुणं मोल्यं धान्यानां कार्त्तिके भवेत् ॥ २५६ ॥ आवणे शुक्लपंचम्यां दृष्टिर्वि-  
तो दिनद्वयम् ॥ दक्षिणे पश्चिमे ज्येष्ठं दुर्निष्ठं धान्यसंस्थः २५७ ॥ अथ ग्रहचारवसात्सर्ववस्तुनां म-  
हर्षता ज्ञानम् ॥ यदि तिथिर्भौमस्य क्षेत्रे कोऽपि ग्रहस्तदा ॥ १ ॥ घणमासं तु य धान्यानां

जायते च महर्घता ॥ २४९ ॥ शुक्रक्षेत्रे कुजे मासं द्वयं सर्वमहर्घता ॥ चंद्रे नदिना धेनु स-  
 ३५५ वरेणोऽपु भंतदा ॥ २५० ॥ प्रानो राहो सर्वधान्यमहर्घराजविग्रहः ॥ शुक्रक्षेत्रे च चंद्रे च-  
 चंद्रे क्षेत्रे भुगोऽस्तुते ॥ २५१ ॥ पायंडानां भवेद्द्विर्धान्यानां च महर्घता ॥ सविक्षेत्रे भुगोऽपुत्रे प-  
 ष्णानां च महर्घता ॥ २५२ ॥ बुधक्षेत्रे प्रानो चन्द्रे सर्वधान्यमहर्घता ॥ शुक्रक्षेत्रे गुरो भौमे कर्षा-  
 सादि महर्घता ॥ २५३ ॥ भौमक्षेत्रे प्रानो राहो ताभ्या दीनां महर्घता ॥ शनिक्षेत्रे प्रानो रा-  
 हो सुभिक्षं चंद्रभास्को ॥ २५४ ॥ पशुनाशे धान्यच्छिगुडादीनां महर्घता ॥ गुरुक्षेत्रे शनि-  
 राहो पशुनाशस्तथा क्षयात् ॥ २५५ ॥ भौमे राजविरोधश्च बुधे च छिद्रश्च भूयसी ॥ भौमक्षे-  
 त्रे यदा संति राहु भौमार्क भार्गवाः ॥ २५६ ॥ बरमासे शुक्रकार्प्यं स दत्तक्षिरमहर्घता ॥ मंद-  
 क्षेत्रे यदा संति मन्दराहु बुधास्तथा ॥ २५७ ॥ चतुःपदानां नाशश्च द्विपदानां च जायते ॥  
 भौमक्षेत्रे यदा संति शुक्र भौम निष्ठा कराः ॥ २५८ ॥ गदा मुक्ता पशूनां च शंखस्य च महर्घ-  
 ता ॥ शुक्र भौमो गुरु क्षेत्रे प्रजा पीडा च जायते ॥ २५९ ॥ ग्रह राशि समायोगे फलमेतत् ॥

कीर्तिर्वत् ॥ अथार्थाप्रत्येनगृहीतप्रकृतम् ॥ चंद्रोदये कुजक्षेत्रे नृषधान्यस्य चंद्रयः  
 चंद्रोदयो भृगुक्षेत्रे स्वल्पं दृष्टिं क्रियादिके ॥ २७१ ॥ मृजा पीडा बुधक्षेत्रे सोमभृगुक्षेत्रे  
 भवेत् ॥ एवं क्षेत्रे तुला दृष्टिः शनि सोमभृगुदये ॥ २७२ ॥ चंद्रक्षेत्रे राहुचंद्रबुधा-  
 ना सुदयो यदि ॥ एषां सस्याच्च भुवि क्षमति वृष्टिश्च जायते ॥ २७३ ॥ अदितौ बुधक्षे-  
 त्रे च यदि राहुं शनौ श्वरो ॥ पशुक्षयः प्रजा पीडा धान्यानां च महर्षिता ॥ २७४ ॥ षु-  
 क्रक्षेत्रे सोमसूर्यसूर्यपुत्रो दयो भवेत् ॥ उदयास्तमनं पीडा जायते च महर्षिता ॥  
 यदोदयः शनिक्षेत्रे भौमभास्कारयो भवेत् ॥ दूतानां च तदा दृष्टिर्गुह्यानां रक्तवा-  
 सताम् ॥ २७५ ॥ यदा समुदयं याति शनिक्षेत्रे शनौ प्रचर ॥ तदा तृणानां काष्ठानां लो-  
 हानां च महर्षिता ॥ २७६ ॥ अथ नक्षत्रस्थितग्रहवसन्तमहर्षिताक्षरं ॥ गुरुर्व्यंहा विष्णुः  
 यो तदा धान्यमहर्षिता ॥ मंगलस्य च कालस्य शनौ सर्वत्र मंगलम् ॥ २७७ ॥ अग्नि-  
 वरणि यदा र्द्रायां शनि रभ्ये तदा अभयम् ॥ बुधभाद्रे च बुधिसंमुखि भृगुनंदने ॥

संक्रि ॥ २९७ ॥ सुनिष्ठं चानुराधायां यदि श्रेयग्रहाः स्थिताः ॥ कल्याणं चैव सौभाग्यमस्तु  
 ॥ २९८ ॥ कर्पासा वह्नो मंदे भौमे कटकपीडनम् ॥ बुधे तिलाश्वमा  
 धाश्व महर्धं वर्षकालतः ॥ २९९ ॥ सूर्ये सर्वाणि धान्यानि महर्धारिण भवंति च ॥ प्रु-  
 क्रेच महती वर्षा शस्यानि सकलानि च ॥ ३०० ॥ मूले गुरौ कुलत्थानां मुद्गाणां व-  
 हुधा भवेत् ॥ भौमे मूलस्य चापस्य बुधे च सर्व संपदः ॥ ३०१ ॥ पूर्वाषाढा यतिभौ-  
 मे पीडा स्यात्पशुपक्षिणाम् ॥ केतो महर्धता धान्ये पूर्वाषाढा यते भवेत् ॥ ३०२ ॥  
 ज्ञानाषाढ के जीवे गुहानां च महर्धता ॥ भौमे च पुष्यजातीनां जायते च महर्धता  
 ॥ ३०३ ॥ अभिजिन्मास्ति नक्षत्रे यदा ख्याया सुतो भवेत् ॥ सर्वं प्रस्थानि जायते सुधि-  
 र्धं च कुजे तथा ॥ ३०४ ॥ श्रवणे च यदा जीवं स्तदा स्युः सर्व संपदः ॥ बुधे नाशश्च भू-  
 पानां प्रानो भूरि उसीरकः ॥ ३०५ ॥ कृत्तिकायां च रोहिण्यां यदा जीवो हि तिष्ठति ॥  
 मध्यमा द्वि च शस्यानि तदा वृष्टिश्च मध्यमा ॥ ३०६ ॥ आर्द्रायां मृगशिरि च यदा च च

संस्थितः स्थितिः ॥ सुभिस्तु च सुवृष्टिश्च प्रजानां च सदा शिवम् ॥ २८ ॥ पूर्वाण्यु  
 ह्वये हस्ते मघायां च यदा गुरुः ॥ सुभिस्तु च सुवृष्टिश्च प्रजानां सदा दरो जाता ॥ २९ ॥  
 चित्रा स्वात्यो र्षदा जीवस्तदा चित्राः पयोधराः ॥ विचित्राणि भवन्त्येव प्रसूयानि च  
 क्वचित् क्वचित् ॥ ३० ॥ विष्णोरावा मैत्रयो र्जीवे धान्यं वर्षा च मध्यमं ॥ ज्येष्ठा मूले मास  
 युगं विष्टिर्मास ह्वये न च ॥ ३१ ॥ पूर्वा षाढा ज्येष्ठा विष्टिः सदा विष्टिः ॥ तदा रेणुं  
 सुभिस्तु च सुवृष्टिश्च प्रजायते ॥ ३२ ॥ अनाद्यष्टिश्च दुर्भिक्षं रेवत्यां संस्थिते गुरौ ॥  
 धनिष्ठायां च शुक्रे च पीडा भवति हस्तिनाम् ॥ ३३ ॥ कृता कर्कशाताः खेटा स्सौम्याः य-  
 दानि चारणाः ॥ तदा भूपक्षयो युद्धं जगद्गोभयादितम् ॥ ३४ ॥ अथैकमासे पंचवारफल  
 म् ॥ शुक्लाद्ये मास कं पंच पाप खेटस्य वासराः ॥ प्रजा पीडा भवेत्तत्र धान्यस्यापि म-  
 हर्षता ॥ ३५ ॥ मासे पंच शुभा वारा यद्येकस्मिन् प्रजायते ॥ सुभिस्तु सर्वप्रसूयानां तदा  
 च सुखिनो जनाः ॥ ३६ ॥ वैषे पंच प्राणिभ्यो व माद्ये पंच रविस्तथा ॥ फाल्गुने पंच भोम-

अथ महीनाशाय कौवलम् ॥ २८ ॥ अथ चंद्रस्थष्टगोन्नति साफल्यम् ॥ चंद्रायामान्वतां भो-  
 नमेयगोऽभ्युदितो मतः ॥ समष्टुगोवर्षे कुंभे शेषमेष्टरेऽन्नतः ॥ २८ ॥ याम्योन्नते  
 चतुर्भिर्हंसविरुद्धस्यात्समे विधौ ॥ सुभिर्हंससौम्यदिग्भागे चोन्नते मृगालां कर्णे ॥ ३०० ॥ पृ-  
 लाकारे विधौ भीतिः शोदितो महतां रुजः ॥ अथ प्रति मास संक्रातिवसात्समर्घमहर्षज्ञानम् ॥  
 सुभिर्हंसं संक्रमे सौम्ये चारऽधिकमुहूर्त्तके महर्षपापचारवामुहूर्त्तं चास्तुभूमिते ॥ ३०१ ॥  
 पूर्वसंक्रममाहिविभिते च संक्रमे रवेः ॥ सुभिर्हंसस्याच्चतुःपंचमिति भेतु महर्षिता ॥ ३०२ ॥  
 पक्षमे संक्रमे चाति दुर्भिर्हंसैरैवं भवेत् ॥ अथ वैष्णवाख्याननिष्पत्तिज्ञानम् ॥ चर्षे संक्रम  
 एो भानोः केन्द्रत्वात् यतैः षष्ठ्युभैः शारदीयान्यनियतिरुत्तमाहायने मता ॥ ३०३ ॥ पापै  
 रैवं स्थितैः स्वल्यामिभ्यैर्मिमां प्रकीर्तिता ॥ पापाधूनगते न प्रयेद्व्यन्नमपि प्रास्यक्रम ॥  
 धूनप्राप्तुगते पापे नियतिरस्वल्पिका भवेत् ॥ द्रव्यं दृष्टिश्च संक्रातौ विज्ञेयं ग्रीष्म  
 धान्यकम् ॥ ३०५ ॥ चापादि त्रितये सूर्ये सौम्यैर्युक्ते क्षिते ग्रहेः ॥ सरहान्यं



संक्षिप्तमर्षस्यात् प्रसृतं तद्धान्यजीविभिः ॥ ३०६ ॥ पार्थय्युक्ते क्षिते धान्यं महर्षिः जायते रिव-  
 लम् ॥ एवं मेपाद्विगे श्रेयमे धान्यं ज्ञेयं विचक्षणैः ॥ ३०७ ॥ अथ संक्रातिवप्राद्वर्षयोर्ल-  
 मास्योरुत्पातश्चिक्तात् धान्यादीनां समर्षमहर्षिज्ञानम् ॥ श्रेयमे प्रसृतं रततो मूलं रस-  
 न्यं शृणुनादिकं ४ हेमाद्यं ५ तुरगो दं वस्त्रं ७ मणिः ८ काचो ९ वु १० धान्यं के ११ ॥  
 ३०८ ॥ मूलं च १२ क्रमनो ज्ञेयं मेपाद्यं के याले क्षिते ॥ दं प्रोवा योर्षि मायां चेदु पर-  
 गोः ति वर्धनाम् ॥ ३०९ ॥ परिवेषस्तथा दंड उक्ता पाता ह्युपद्रवाः ॥ जायते जतदने-  
 या वस्तूनां च महर्षिना ॥ ३१० ॥ रक्षो सोम्ये क्षिते ज्ञेया उत्पत्तिः ५ न महर्षिना ॥ अथ वृक्षादि-  
 यत्र पुष्पफलाद्ये भान्यादिनि ध्याति ज्ञानम् ॥ वृक्षादौ वहुभिः पुर्वो मर्हा चटिः प्रजायते ॥ पत्रे-  
 रत्नस्य तरावटिः र्वर्षिभिश्चेत्स्योः धिकाः ॥ ३११ ॥ मधुके वहु गोधूमाजवाऽस्युर्दत्तैः  
 फलेः ॥ सुभिर्द्वानागनिर्वैः स्था च्छालं वृक्षे शालयः ॥ ३१२ ॥ अथ रत्यादधिकं धा-  
 न्यमर्चुनादधिकं जलम् ॥ क्षेमसा श्रेष्ठं प्राजायोः बोद्धं वाजं वृतं स्ति लाः ॥ ३१३ ॥ दुर्भि-

सन्निहोः खदि रै रोगः कुटजैः परिकीर्तितः ॥ दूतिसमर्पकाङ्गसमाप्त ॥ अथ दृष्टि ज्ञानार्थमेघगर्भज्ञानम्  
 ३११ मार्गे शुक्लादितो द्वायो मेघगर्भसमुद्भवः ॥ फाल्गुणे ताम्रवर्णा किंत्स्निमथाश्वाच्च ख-  
 रानि जात ॥ ३१४ ॥ चैत्रे तु परिधे दृष्ट्या वायुनावाभ्यरेखया ॥ अथ केयचिन्मतात्  
 केचिन्मार्गादि मासेषु द्रोचुर्गर्भस्य लक्षणम् ॥ गर्जनात्यवनात्तोयवर्षस्मादिष्टु-  
 तोऽथवा ॥ ३१५ ॥ अथ शुभगर्भलक्षणानि ॥ श्वेतनीलाङ्गजा आच्च न चानि विगल-  
 ज्जलाः ॥ एतन्मार्गश्चित्ते मेघाज्जमीशानपूर्वजाः ॥ ३१६ ॥ दृष्टिं प्रयाति ते ग-  
 र्भाः विष्टुद्वाताभिर्वर्जितैः ॥ भाद्रपदे द्वयोस्तन्नाविप्राखोत्थावहृदकाः ॥  
 ३१७ ॥ अथ गर्भधाणादिना दृष्टिज्ञानम् ॥ दृष्टिगर्भाहमास्यपक्षे विष्व १३ मितै-  
 र्भवेत् ॥ रात्रिगर्भे दिवा दृष्टिर्दिवा गर्भे निशि स्मृता ॥ ३१८ ॥ अथ प्रकारांतेण गर्भहाह-  
 रिज्ञानम् ॥ आसद्यैकादशी कृष्णा कृष्णा दोषाधमासके ॥ द्वादश स्वपि पक्षे यु विष्टुद्वाता  
 र्भो गर्जितैः ॥ ३१९ ॥ रोहिण्यादिषु सूर्यास्यमेघदृष्टिर्भवेत्कमात् ॥ अथ पुनरन्यत्र-

मस्त्रिकोण मेषगर्भज्ञानं हृदि ज्ञानं च ॥ मूलक्षेत्रभास्करे याते तदा रभ्यदशा हकस् ॥ ३२० ॥  
 ३६ विद्युद्भादिना गर्भे यत्र तत्र दिने भवेत् ॥ क्रमादाद्भादिने क्षत्रे भानो हृदिः प्रजा-  
 यते ॥ ३२१ ॥ अथ प्रकारेण ॥ मूलभाङ्ग एषा यावद्देवेषु वैकादश स्वपि । पीष मास-  
 दिन क्षेषु गर्भस्त्वभादिना भवेत् ॥ ३२२ ॥ तत आर्द्रादिके सूर्य्यक्रमेण हृदिः प्रजायते ॥  
 पुनः त्रकाशं तस्मै ॥ अग्निन्यादिद्विष्विहो वैने दश सुवेदं वेत् ॥ अभादिके तथा गर्भः  
 ज्यार्द्रादौ हृदि दः क्रमात् ॥ ३२३ ॥ मेषाऽर्कदिन नारभ्य द्वेयमेव मध्याह्निना ॥ अथ ज्ञाना-  
 न्यतो हृदि ज्ञानम् ॥ यदि साभ्यं नभो मध्यं सुभिष्वाचापि मेऽवके ॥ यद्यभ्रं दृश्यते व्यो-  
 म्नि चैकादशं त्रुका त्रिके ॥ ३२४ ॥ आयादे मासि हृदि दृश्यं तदा भवति भूयसी ॥ आ-  
 गायस्यां यदा विद्युद्द्वयं प्रावणे तदा ॥ ३२५ ॥ पीये कल्ले दशम्यां च हृदि भीमि द-  
 तथा ॥ सप्तम्यां माघ शुक्लस्य भवेद्भादिके यदा ॥ ३२६ ॥ ज्येष्ठे कल्ले च चै हृदिः सुहृ-  
 दि र्बहुला मता ॥ अथ ज्येष्ठ शुक्लाष्टम्यादिदिनं चतुष्टये चार्यफलम् ॥ ज्येष्ठेऽष्टम्या तु

३३७ ॥ शुक्लायाश्च त्र्युदिवसेषु च ॥ आवणादीन् क्रमाद्विदिमैर्ग्रेष्वास्तेऽसमीरणेः ॥ ३३७ ॥  
 ३३८ ॥ अथ स्वात्यादिषु दृष्टौ आवणादावनायतिः ॥ ज्येष्ठे च त्र्युधिषेऽष्टौ स्वातीमारभ्य वर्षणे ॥ क्रमा-  
 च्छ्रावणे केद्विदिर्नर्भवन्तत्र तत्र ॥ ३३८ ॥ अथाषाढ शुक्लद्वितीयादिदिन चतुष्टयफलम् ॥  
 आषाढे नासि शुक्लायां द्वितीयायां प्रवर्षणम् ॥ तृतीयायां पुनो वायुर्मेघः पूर्णश्च दिशतः  
 ॥ ३३९ ॥ चतुर्थ्यां जलदः प्राच्यां दक्षिणे यदि मारुतः ॥ पंचम्यां पूर्वदिग्मेघस्तदा आ-  
 वणा मासतः ॥ ३३९ ॥ ध्रुवं दृष्टिः शुभाक्षया क्रमान्मासचतुष्टये ॥ चतुर्थ्ये च दिने द्यौर्व-  
 यदि दृष्टिर्निर्गतम् ॥ ३४० ॥ तदा स्यादति दृष्टिश्च धान्यनाशः प्रजायते ॥ धान्य-  
 प्रत्यक्षमवेक्ष्यो ह्यहं दुर्भिक्षमीरितम् ॥ ३४१ ॥ तृतीया पंचमी च स्नेयश्चुदक् पूर्वजो मरु-  
 तः ॥ तदा स्य धान्यनिष्पन्नं विदुर्ज्ञाद्विदुर्ज्ञमा ॥ ३४२ ॥ अथ आवणा शुक्लपंचमीफल-  
 म् ॥ पञ्चम्यां आवणे शुक्ले द्वाहं दृष्टिर्भवेद्यदि ॥ धान्यप्रत्यक्षमवेक्ष्यो ह्यहं दुर्भिक्षं जायते  
 तदा ॥ ३४३ ॥ अथ सूर्यस्य रेवत्यादि भेषु दृष्टिफलम् ॥ रेवत्यां वर्षणे तोयं न प्रयेद्धान्यम्

नाश्रये ॥ अरावां न हयं वृष्टिः कृत्तिकायां न चैव वेत् ॥ ३३५ ॥ रोहितायां गर्जने वृष्टि-  
 र्येयमास ह्यो नरम् ॥ मृगशिर्यो यदा न स्याद्वृष्टिर्भूयो वह्नदका ॥ ३३६ ॥ अथ संक्रान्तिदिनं  
 वृष्टिफलम् ॥ संक्रान्ति दिवसे वृष्टौ मार्ग कार्तिके योर्द्वयम् ॥ वर्षान्तमध्यमं क्षेपं पौषे  
 दमासं स्याच्छूवणे वृष्टि रत्नमा ॥ ३३७ ॥ भाद्रे रोगस्तदा सौख्यमाश्रिते वर्षे रोग भवे-  
 त् ॥ ३३८ ॥ अथ कार्त्तिके फलम् ॥ सवृक्षे कार्त्तिके ही स्यात्तनीच्या वृष्टि रत्नमा ॥ उद-  
 र्यास्ये भवेन्मध्ये नैऋता वांति मास्तुता ॥ ३३९ ॥ अल्पवृष्टि रथो क्षेप्या सदन्व्यस्या-  
 च्छिवेऽनिले ॥ मध्ये मध्याऽथ वृक्षा मेव ह्रजा वृष्टि रीरता ॥ ३४० ॥ इति भीतिर्महा-  
 वीरा नीहे सर्वदिशां गते ॥ नीहे संकट के भीति रसानां जायते भुवम् ॥ ३४१ ॥ प्रागुद-  
 कप्रशिसाई स्थे सुवृष्टिः कैश्चि रीरता ॥ अथ हि हि मांड फलम् ॥ स्थिते वृक्षे प्रदेष्टो वृष्टि-  
 दिभां देष्टु चोत्तमा ॥ वृष्टिः संजायते मासै रथो वक्रो ह संख्य कैः ॥ ३४२ ॥ निम्नप्रदेशा संस्थे

॥ अथ युस्वल्पा वृष्टिः प्रजायते ॥ वृष्टिर्नैव भवेन्मासैश्चोर्द्ध्वक्रांढ संख्यकैः ॥ ३४४ ॥

अथ रोहिणी चक्रम् ॥ द्वावृष्टारं लिखेच्चक्रं मेघ संक्रान्ति भादिनः ॥ चतुर्द्विस्तु समुद्राश्च-

| पर्वत | तट | संधि | मधुद्र | संधि | तट | तट | पर्वत | प  |
|-------|----|------|--------|------|----|----|-------|----|
| प     | ५  | ४    | ३      | २१९  | २८ | २७ | २६    | प  |
| त     | ६  |      |        |      |    |    | २५    | त  |
| स     | ७  |      |        |      |    |    | २४    | सं |
| सं    | ८  |      |        |      |    |    | २३    | सं |
| सं    | ९० |      |        |      |    |    | २२    | सं |
| त     | २१ |      |        |      |    |    | २०    | त  |
| प     | २२ | २३   | २४     | २५   | २६ | २७ | २८    | प  |

चतुःकोणेषु पर्वताः ॥ ३४५ ॥ समुद्रपाथ्व्यो र्योनतस्तच्चै लयास्तथा ॥ मध्यो र्यो संध्ययोः स्तत्र साभिजिह्वा गणान्यसेत् ॥ ३४६ ॥ द्वायं समुद्रेषु तथैकैकं तटादिषु ॥ रोहिणी संस्थिता यत्र द्वेयं वृष्टि फलं तथा ॥ ३४७ ॥ तदेतु प्रोभना वृष्टि र्महा वृष्टिस्तु सागरे ॥ अना वृष्टि र्गिरौ देशे खंडे वृष्टिस्तु संधिषु ॥ ३४८ ॥ अथ सप्त नाडी चक्रम्

एकविंशति लिखेच्चक्रं साभित्सप्त नाडिकम् ॥ चंडा वायुस्तथा चन्द्रः सौम्यानी राज-

३४९

मं. लासुता ॥ ३४८ ॥ नाडीनां सप्त नामानि ज्ञेयान्येतानि पंडितैः ॥ क्रमानुसार्क्य भोमे  
 ३४९ ज्यमुक्तज्ञाज्ञास्तदीयराः ॥ ३५० ॥ अथैतेवस्यधृति ॥ चंडारव्याभरणीद्वे

| अथसप्तनाडीचक्रम् |      |       |    |      |     |      |
|------------------|------|-------|----|------|-----|------|
| नडा              | याता | वर्ति | सो | नीरा | अलं | रखला |
| क                | ऐ    | य     | गा | गु   | गु  | पने  |
| वि               | खा   | चि    | रु | ख    | ह   | भ    |
| भा               | ज्ये | मू    | व  | उ    | भि  | श    |
| म                | ज    | इ     | उ  | ह    | प्र | ध    |
| रा               | ख    | म     | र  | ख    | वु  | चं   |

विशारवादितयप्रानेः ॥ ज्येष्ठाधिरोहिणीस्वातीवायु  
 नाडीरवेःस्तृता ॥ ३५१ ॥ चिन्नामूलंमृगात्यचदहना  
 रव्याकुजस्यच ॥ पूर्वाषाढाकरोभार्गुसौम्यानाडीद्वे  
 स्यतेः ॥ ३५२ ॥ पूभोपाचपुनधिसिंखफानीरभृगोःस्तृ  
 ता ॥ पूफायाताभिजितुष्यजलानाडीबुधस्यसा ॥  
 ॥ ३५३ ॥ प्रवहयंमघाश्लेषाद्वेरोरमृतनाडिका ॥ अ  
 वेतासुग्रहसंस्थितेफलम् ॥ अहोरात्रिकनाडीस्थाःसौम्याः  
 चानान्चातनाड्यातथातिलक्ष् ॥ चान्हेनाड्यास्थितादाहंसौम्यनाड्यामहाभृक ॥

॥ ३५५ ॥ नीरजाङ्घ्रा पया दृष्टिं जलनाङ्घ्रं च वपुणाम् ॥ कुर्वन्त्या दहत नाङ्घ्र्या च मही-  
 दृष्टिं न भक्ष्यताः ॥ ३५६ ॥ एकोऽयं निजनाङ्घ्री स्थो हस्ते ततः कलं गहः ॥ कुजस्तु सर्वना-  
 ङ्घ्री युस्थितो नाङ्घ्री समुद्रवम् ॥ ३५७ ॥ आर्द्रा दृष्टिं गते सूर्ये नाङ्घ्र्ये को फलमुच्यते ॥ च-  
 दनं केच नाङ्घ्री स्थीः प्राप्राप्तौ स्याद्भवे चराः ॥ ३५८ ॥ मिश्रा भवेद्समा युक्ता स्ता हिने  
 दृष्टिरुत्तमा ॥ तोय रार्प्य गता मिश्रा स्ता व दृष्टिं प्रकुर्वते ॥ ३५९ ॥ पावनीयो प्रागभ्यर्द्र-  
 केवलः स्वल्प दृष्टिदः ॥ अतिश्रेष्ठः खेचरैः सौम्य पापैः विद्धो यदा प्राप्ती ॥ ३६० ॥ पानी-  
 यं च तदा तुच्छं भान्या दीनां च नापुनरम् ॥ यस्य खेचरस्य नाङ्घ्री स्थी विद्युत्तेन गहं एव  
 ॥ ३६१ ॥ युक्तप्रे दृष्टिदो ज्ञेयो यदि क्षीणो गणे न हि ॥ चन्द्रः पीयूष नाङ्घ्री स्थः शिश्रुः  
 खेचरेभ्यः संयुतः ॥ ३६२ ॥ त्रिचतुःपंच सप्ताहं शुभ दृष्टि प्रदो भूतः ॥ जलं नाङ्घ्री स्थिते  
 चंद्रे मिश्र खेचरं संयुते ॥ दिग्गर्द्धभ त्वहं मृष्टिः पञ्चाहं ज्ञायते शुभा ॥ नीरजां  
 ङ्घ्रां गते चंद्रे शिश्रुः खेचरेभ्यः संयुते ॥ ३६३ ॥ पावो न तदिदं दृष्टिं वृंहतो या भवेद्दृष्टा ॥ ३६४



॥ निर्वाणव्ये जलार्थं प्रयेनाडी स्याः खंचराः क्रमात् ॥ ३६४ ॥ भूत्य १८ के १३२ स ६ सख्या  
३६८ कान्वा स ए न्वहु दृष्टिदाः ॥ सौम्या नाडी स्थिताः सर्वे अहं दृष्टि प्रदाः खगाः ॥

॥ ३६५ ॥ चंद्रवादाग्रि नाडी स्याः महावाता तप प्रदाः ॥ योगे शुभाधिके नाडी नि  
ज्जाला सजल प्रदाः ॥ ३६६ ॥ योगे कुराधिके ज्ञेया सजलानि ज्जाला बुधैः ॥ सौम्य नाड्यो  
स्थिता पापा भ्राना दृष्टि कार मताः ॥ ३६७ ॥ शुभां स्तोयां प्राकाशे स्युः स्वल्प दृष्टि प्रः  
दास्तदा ॥ एक नाडी स्थिता भौमजीव चंद्र मसौ यदा ॥ ३६८ ॥ वारिष्णां भवे लृध्वी व  
हु दृष्ट्या तदा खिला ॥ भुगु सौम्यौ यदेकत्र स्थितां जीवां चिंतो तदा ॥ ३६९ ॥ दृष्टि -  
स्थ्या हे हुला कस्मा चंद्र योगे विप्रेषतः ॥ भुगु चंद्र मसौ पापेः खंचरे र्यादि संयुतो ॥  
॥ ३७० ॥ तदा खल्योद का दृष्टिः जलयोगे मह त्यपि ॥ इति सप्त नाडी फलम् ॥ अथ  
शुक्र स्थिति वषा इह धेनवना च दृष्टि ज्ञानम् ॥ मघादि पंच चिह्न स्थः शुक्रः प्रागुदितो नि  
धाम् ॥ दृष्टि कृत्य श्रिमा प्रास्थः स्वत्यादि त्रितये स्थितः ॥ ३७१ ॥ वैपरीत्य मितो

संज्ञितां भृगुः कुर्यादवर्णणम् ॥ कुर्यातां बहुलो वहिः बुध शुक्रौ च संयुतौ ॥ ३७२ ॥  
समुद्रं प्रोपितुं शक्तस्तयोरंतर्गतो रविः ॥ शुक्रात्सप्तमश्वं द्रोहं दृष्टिदस्स्यच्छुभोक्षितः ॥  
३७३ ॥ मंदादिद्वन्द्वनकोणस्य श्वं द्रमाहृष्टि कृतदा ॥ ग्रहाणां मुदये चास्तो राश्य-  
न्तरांतेऽयने ॥ ३७४ ॥ संयोगे वापि पक्षांते प्रायो वहिः प्रजायते ॥ उदयास्तमनं शु-  
क्रौ बुधश्च वहिः कारकः ॥ ३७५ ॥ चलत्यंगारके वहिः स्त्रिधा वहिः प्रशाने चरे ॥ चारि-  
शृणां नदी क्वापश्चात्संचलते गुरः ॥ ३७६ ॥ शुक्रे चाला मिते मंदे त्रिविधः पितृजा-  
यते ॥ भौमाक्षी एक राशौ चेदन्योन्यं समसप्तमौ ॥ ३७७ ॥ अथाक्षी रवि नक्षत्रप्रवेशे-  
स्त्रीपुंयोगो दृष्टिज्ञानम् ॥ स्त्रीसंज्ञानि दृष्टार्द्रौ तो भानि प्रोक्तानि कोविदैः ॥ विष्टा-  
स्वादित्रयं स्त्रीवं पुंसं ज्ञानी न राणि च ॥ ३७८ ॥ रवे र्हिस्त्रिप्रवेशस्य काले चंद्रार्कयो-  
मे ॥ चिह्ने च यादृशे स्यातां विज्ञेयं तदृशं फलम् ॥ ३७९ ॥ स्त्रीपुंसौ स्तुमहावृष्टि-  
रल्यस्त्री स्त्री वयोः क्वचित् ॥ अभ्रच्छाया स्त्रियोः पुंसोः स्त्री वयोर्वान किंचन ॥

३०० ॥ ३८० ॥ तीयवारविलम्बेचवृष्टिर्गोपयदारवेः ॥ नक्षत्रं च प्रवेष्टा स्स्यात्तदा वृ-  
 ३०० ष्टिसुप्रोभना ॥ ३८१ ॥ निशायामर्द्धरात्रे चारवेऽप्यस्य प्रवेष्टाने ॥ बहुतोयासु वृ-  
 ष्टिस्स्यादन्यथा नैव जायते ॥ ३८२ ॥ अथ सूर्यर्धचंद्रक्षीतो वृष्टिज्ञानम् ॥ आर्द्रादिपंचभ-  
 प्रभारं चत्यादिचतुष्टयम् ॥ पूर्वाषाढा चतुःकंच चंद्रक्षीणि चतुर्दश ॥ ३८३ ॥ प्रोक्ता-  
 णिरविधिस्तानि विज्ञेया निमनीषिभिः ॥ सूर्ये चंद्रक्षीणो वृष्टिश्चंद्रे सूर्यर्धक्षीणे सं-  
 ति ॥ ३८४ ॥ पूर्वादिपंचके सूर्ये चंद्रे चंद्रक्षीणेऽपि च ॥ उभौ चंद्रक्षीणौ स्यातां स्वत्या-  
 वृष्टिस्तदा भवेत् ॥ ३८५ ॥ तावेव यदि सूर्यर्धक्षीतदा वृष्टिर्न जायते ॥ अषाढकप्रमाणम्  
 धुमा ३ जं १ गो २ मत्स्य १२ गते प्रांशुके भानुर्धरा कर्कटके त्रयाति तदा प्रातादु-  
 १०० हरि ५ काभर्मुके ८ ३ ५० तुले १०० यः कन्यादिभुग १० यो रश्मि तिः ८० ॥ ॥  
 कुलीर ४ कुंभालि ११ ८ गते यदा स्यात्पट्टिप्राकादं ३६ भुवि वारिप्रातः ॥ ३८६ ॥ अर्द्ध-  
 पर्वत भागेषु तद्वर्द्धं मासने जातम् ॥ तद्वर्द्धं याति मेदिन्यां चारुहेरा च भाषितम् ॥

प्रातः योजनमुत्तुंगं सहस्रं विस्तृतं ततः ॥ आदकस्य प्रमाणेऽयं वाराहेण च आधितम् ॥ ३८८ ॥  
 अथ रविनक्षत्रवाहनम् ॥ दिनेषु आत्सूर्य भवं हि धनं विगणय सप्तोदुतमर्कं  
 वाहनम् ॥ भवेत्तुरंगः प्राक् कश्च शूकः रश्मिचानको गोमर्मा हि यश्च ददुर्दः ॥ ३८९ ॥  
 अथ वर्धाकाले सद्यो वृद्धि लक्षणानि ॥ नभः काकोड भंगो हक्क निभंति रसं निभम् ॥ प्रां-  
 त्यो जलावामेघा सस्युर्गिरि कज्जल सन्निभाः ॥ ३९० ॥ जलजंतु समाकार मूलाभा-  
 सव्यगाभयि ॥ गिरयोऽज्जन संकाशा सवाय्याशिरिव नर्तनम् ॥ ३९१ ॥ शुभ्रनेत्र-  
 निभः क्षौद्र सन्निभः स लिलह्लुगः ॥ सन्निधौ परिवेषा क्य श्रुदं माशो प्रवृद्धि कृत् ॥  
 ॥ ३९२ ॥ विक्रान्तिर्ष्व वणो वासा स्तेनु बंधोद्यभाऽप्यधि ॥ जले मीनो रक्तवोरवो भेकानो  
 नीरसं जलम् ॥ ३९३ ॥ व्यालानां मेधुनं वृक्षा दारो हः पशवस्तथा ॥ महिषा कान्त्पतां  
 याति सांडा स्यात्सुविपीलिकाः ॥ ३९४ ॥ उत्सृष्टाश्च गृह्णाद्रावोने क्खंति गन्ननं वहिः ॥  
 खनंति भूतलं पचानो भाज्जगिः सप्रवः खुरैः ॥ ३९५ ॥ स्त्रिया न्त्यं कुरा श्योर्द्विप्रारदारो

५ ह्य । तरो ॥ तृणाद्ये वृश्चिका रोहो गवा मूर्द्धनिरीक्षणम् ॥ ३२६ ॥ पक्षिणां धूलिभिः  
 २ एतान्प्रदीपे मेघगर्जनम् ॥ अग्निदण्डा वृत्तिर्मघः रतिः प्राची भवो मरुतः ॥ ३२७ ॥  
 ३ तत्पदिदं धनुः संख्या रागो ऽधो मेघगर्जनम् ॥ आशुदक् सैव दिक्प्रातारक्ता सौ  
 दामिनी तथा ॥ ३२८ ॥ मध्ये तीव्रतपश्चान्निद्रालवो भृशम् ॥ विक्षेपा ल  
 क्षणे रभेस्सद्यो वृष्टि र्वनागमे ॥ ३२९ ॥ नो माघे हिमवर्षणं न मरुतश्चण्डास्तथा फा  
 ल्युने चैत्रे वृष्टि विवर्जितं नु गगनं मेघेन दूणे रविः ॥ वैष्णवे नवर्गो पलस्य पत  
 नं ज्येष्ठे न च गङ्गो रवि र्वृष्टि स्स्वल्पतरा सदैव कारिणा वर्या सुनित्यं बुधैः ॥ ३३० ॥  
 ४ इति वृष्टिकाण्डाः ॥ अथोपश्रुतिप्रकृताः ॥ गणाधीशं प्रपूज्यादौ कार्यं तस्मै निवेद्य च ॥  
 साक्षतं सफलं तोयं पात्रमादाय संव्रजेत् ॥ ४०१ ॥ उपश्रुते श्रुत्वा पात्राद्य चण्डालादि  
 यद्देवहिः ॥ निग्रासुहजने तत्र स्थित्वा सुत्वा क्षतान् क्षिपेत् ॥ ४०२ ॥ अथोपश्रुति  
 मन्त्राः ॥ ॐ उपश्रुतिर्महालक्ष्मी व्याण्डालयद्देवाग्निनी ॥ यत्तया चिंतितं कार्यं सत्यं ॥ ३०२

वदसुरेष्वरि ॥ ४०३ ॥ ब्राह्मणानां प्रातं दत्त्वा कर्पिलानां प्रातत्रयम् ॥ तेन धर्मेन लिङ्गा-  
 भिसि यदि सत्यं न भावसे ॥ ४०४ ॥ पंचानां पांडुपुत्राणां ज्येष्ठो भ्राता युधिष्ठिरः ॥ ते-  
 न सत्येन धर्मेन सत्यं दूहि न मोऽस्तुते ॥ ४०५ ॥ भवत्या विदितं सर्वं सर्वं कार्यं वि-  
 शेषतः ॥ द्रुपुकाश्चण्ड्या ह्यणी प्रह्लावाकात्रया न्विताम् ॥ ४०६ ॥ प्राक्षिप्य च ज-  
 ले तत्र समागच्छेत्स्वमालयम् ॥ तद्वाकस्यानुसारेण फलं क्षेत्रं द्रव्यार्थतः ॥ ४०७  
 ॥ वारविशेषे नोपश्रुतिनिवासः ॥ चंडाली भवने सूर्ये चन्द्रे नाश्रित मन्दिरे ॥ रजक-  
 मन्दिरे भौमे वोधने वैश्य मन्दिरे ॥ ४०८ ॥ ब्राह्मणी मन्दिरे जीवे भार्गवे पण्डितो-  
 धितः ॥ द्वाप्या द्वारि शनोपायाच्छेते चोपश्रुतिं शुभाम् ॥ ४०९ ॥ अथ खुवंश-  
 दिप्रकुणाः ॥ खुवंशस्य दुर्गायाः पाठस्य निवासस्तत्र ॥ पूजितं पुस्तके पुष्पे राक्षि-  
 तैश्च फलादिभिः ॥ ४१० ॥ शनो संस्थाप्य स पूज्य प्रातरेव तिलो कथेत् ॥ कुमा-  
 र्युक्तं प्रमाणेन निःकास्य श्लोकं मुत्तमम् ॥ ४११ ॥ विज्ञेया प्रप्रकुनां तस्माद्यथार्थं

३५ वचनाहिते ॥ अविस्मर्मानि पूर्वार्द्धस्तवर्गेतरपंचमः ॥ स्तुति लिङ्गज्जितश्रुत्यो क  
 ३६ प्रपु कुने च शुभावहः ॥ ४१२ ॥ अथागविद्याप्रज्ञः ॥ श्रिते मुखं कर्णेनेत्रं स्पृष्टा पृच्छ  
 तिवे ज्ञानः ॥ सुवर्णधनधान्यान्नालाभस्तस्य न संशयः ॥ ४१३ ॥ स्कंधग्रीवाकण्ठ  
 दस्तस्य श्रेलाभो हिङ्गः खतः ॥ कुक्षिनाभिसमालंभे भक्षयानादि सिध्यति ॥  
 ॥ ४१४ ॥ जंघा लिंगा कटि स्य श्रे कन्या लाभस्तुतो ज्ञवः ॥ जानुशुल्कपदस्य श्रे महान्  
 ज्ञेयः प्रजायते ॥ ४१५ ॥ केयस्य श्रे भवेन्मृत्युः फलादि स्य श्रे ने शुभम् ॥ तृणागार  
 कसंस्थ श्रे काव्यं सिद्धिर्नै जायते ॥ ४१६ ॥ काष्ठपंकपदस्य श्रे ग्रहपीडामनोभयम्  
 ॥ भृगाशमानभङ्गादिस्य श्रे सिद्धिः प्रजायते ॥ ४१७ ॥ शून्या लये स्मरणे वा शु  
 र्ककाये क्षते तरो ॥ गुल्मवन्नाथमस्थाने ज्ञस्ते ज्ञेयः प्रजायते ॥ ४१८ ॥ देवगेहे  
 नदी तीरे दिव्यस्थानेषु भवेदेत ॥ शुभदिसु स्थिते सिद्धिर्विदिक्षुन प्रजायते ॥ ४१९ ॥  
 दत्तगविद्या ॥ अथ सर्वप्रज्ञनिर्णयः ॥ प्रज्ञाह काले फलनामवर्णान्मक्षत्रनिष्पन्ननिधिचार

ऽश्रिः चक्षुः ॥ योगेश्वरपुक्ता नवनीश्वरर्हभक्तान्शेषफलं प्राप्नुयात्तन्जः ॥ ४२६ ॥ एकावशेषे  
 ३०५ ये इविणस्य धान्यश्रेस्ताथा स्यात्सदनस्य लाभः ॥ नेत्रावशेषे सुजनस्य संगो भ्रातु-  
 स्सुतस्यैव विनाशानंच ॥ ४२७ ॥ त्रिशेषकेनेत्रशिररेरेदुरोगोद्भवो वस्त्रविनाशानंच  
 ॥ वेदावशेषे नृपदर्शनस्यादश्वस्य लाभो नृपतेः सकासात् ॥ ४२८ ॥ प्रागवशेषे  
 निजवस्तुहानिः त्रियावियोगस्सुतबंधुनाशः ॥ रसावशेषे रथवाजिलाभोरिषो भयं  
 चौरभयंतथा स्यात् ॥ ४२९ ॥ स्वरावशेषे रिपुभिश्च युद्धे जयो भवेद्दासजनस्य ला-  
 भः ॥ वस्त्रस्य लाभः क्रयतश्च लाभो मार्तण्डशेषे च कलत्रलाभः ॥ ४३० ॥ नवावशेषे  
 मयस्य लाभः स्वस्य हानिः पुराजगजा ॥ दशावशेषे नृपतेः सकाशाद्दण्डश्च वा-  
 च्यः स्वसुतस्या नाशः ॥ ४३१ ॥ भवावशेषे कृषितीक्ष्णलाभो लाभश्च त्रियायः पृथिवीशलाभः  
 ॥ सूर्यावशेषे राजशेखरास्याद्भुजस्य लाभस्तु विदेशगस्य ॥ ४३२ ॥ विष्णावशेषे बह-  
 द्रदेशेयानंतथा क्षेत्रपुतंच प्राप्तं ॥ दंडावशेषे बहुराज्यं पूज्यस्तथा धनं हिंस्रजनेन



धर्मसंगः ॥ ४३३ ॥ पंचेन्द्रशेषे त्वश्वनस्य लाभो भयनस्य लाभः ॥ भूपा-  
 १०६ वशेषे वपुनेन मेघे लाभस्तु तस्मात्त्वजने प्रतिया ॥ ४३४ ॥ यथा तद्वजस्य मतविशेषा  
 त्वपयकैस्सम्यग्दःप्रतियम् ॥ विचार्यवाच्ये गणकेन साधुता साधुतु सुतराच प्र-  
 सत् ॥ ४३५ ॥ अथ नक्षत्रप्रश्नः ॥ मघादि ज्यय्यमांतं च समीपे वस्तु हश्यते ॥ हस्तादि-  
 वस्तु पर्यन्ते मन्त्रहस्ते च हश्यते ॥ ४३६ ॥ श्रुतताण्ड्यमांतं तु स्वगृहे वस्तु हश्यते ॥ अग्रा-  
 दिश्वर्य पर्यन्त महदृष्टं हृष्टं तथा ॥ ४३७ ॥ तिथिचारं च नक्षत्रं ग्रहेणा समन्वितम् ॥ दिक्  
 संख्यया हतं चैव सप्तभिर्विभजे त्वनः ॥ ४३८ ॥ एकेन भूतले द्वयं द्वयं चेद्भांडं संस्थितम् ॥  
 तृतीये जल मध्यस्य मन्तरि ह्ये चतुर्थके ॥ ४३९ ॥ तुयस्थं पंचमेतत्स्यात्तु षष्ठे गो मय  
 मध्यगम् ॥ सप्तमे भस्म मध्यस्य मिलितं तप्तं प्रज्ञाद्वयम् ॥ ४४० ॥ अथ गणप्रश्नः ॥ म ति-  
 थिप्रहर सपुङ्गं तास्का चारमि श्रितम् ॥ अग्निभिस्तु हरे ज्ञायां शेषं सत्वं राजस्तमः ॥ ४४१ ॥  
 फलं ॥ सिद्धिस्तार्कालिकी सत्वे राजसानुं विलं वतः ॥ तमसा निःफलं कार्यं क्वातव्यं प्रश्न

किं कोविदैः ॥ ४४२ ॥ अथापतु कप्रजः । तिथि प्रहर संयुक्ता तारका चार मिथ्रिता ॥ सप्तभि-  
 स्तुहरे ज्ञायं प्रोयंतु कलमादिशेत् ॥ ४४३ ॥ फलं ॥ एक प्रोयंतथा स्थाने द्वितीये प-  
 थिवर्तते ॥ तृतीये ऽर्थाई मागेतु चतुर्थे ग्राम नादिशेत् ॥ ४४४ ॥ पंचमे पुनरावृत्तिः  
 यथे व्याधि मुतं चेदेत् ॥ अयं क्षेत्रं सप्तमे वै चैत तप्रश्नस्य लक्षणात् ॥ ४४५ ॥ अथ  
 गर्भ्या प्रजन्म ॥ तिथिनयानवधू शुभ साक्षरं मृनिद्युतं त्रिगुणं मुनि भाजितम् ॥ स-  
 कल प्रारब्ध विचार विचक्षणे विषम पुत्र सये खलु कन्यका ॥ ४४६ ॥ अथ नष्ट पशुल-  
 भप्रभजः ॥ शुभरिण भान्नव भेयु बने स्थितं तदनु यद् सुचकर्ष पथे स्थितम् ॥ अचल-  
 भेयु गतं गृहजा गतं ह्य गतं गत मेव मृतं त्रिषु ॥ ४४७ ॥ अथ सामुद्रिक मीक्षा ॥ वि-  
 शाल भालवक्त्रा शिवशो बह्व कर्ण द्विदम् ॥ तुष्टव मस्तके नाभि र्गर्भरि नाद्रि को-  
 न्ता ॥ ४४८ ॥ शिवध दंतत्व च्चः केशाः रत्नाभाः स्निग्धाश्च कुंचिताः ॥ नेत्र प्रोते रुणो-  
 स्तिग्धं निखालं रुक्ष तारकम् ॥ ४४९ ॥ दक्षा वतीधि पुरो वासी गध गभीर निःश्वनः ॥

संकेतसूत्रको धन्यो नरो नोत्पलपार्श्विकः ॥ ४४७ ॥ नरो मालमुखो धन्यो नारी पितृमुखी त  
 या ॥ रक्तमोटमुखं पाणीपादयुग्मं तलं तथा ॥ ४४८ ॥ श्रोत्रार्थधैर्यं गांभीर्यं महारंभ  
 यशः प्रियः ॥ असन्नवंदनों वंशं विमानो प्रियस्तत्पवाक् ॥ ४४९ ॥ नीतिमान् गुरुवाक्  
 स्यः शुचिर्दक्षोऽप्यपापभी ॥ इत्यादिगुणस्मृतो नरो भवति भाग्यवान् ॥ ४५० ॥ रेखा  
 यातर्जनीया तानिर्व्यक्ता पुष्पसंज्ञका ॥ तर्जन्यं गुरुयो र्मध्वेतिर्व्यक्ते भवत्यं सन्नका  
 ॥ ४५१ ॥ मणिवं धतरे भवत्यरेखा मूलं हि याति या ॥ सारेखा पितृवंशं रेखा बृहन्नागे ह  
 से रेखा दा ॥ ४५२ ॥ समायोगवती चैवाधिलवंशं विवर्दिनी ॥ अशुः कनिष्ठयो र्मध्वे रेखा  
 कांत कला क्रिया ॥ ४५३ ॥ कर्मांत्ये गतरेखा सा तु मातुलवर्तिका ॥ सुश्रमा माव्यवसुः सु  
 ला मातुलस्यैव मन्यतः ॥ अंशुमुखमूलरेखा चि विज्ञेया सन्नविर्बुधेः ॥ दक्षिणाभिः कल्पका पु  
 न्नास्थिनाभिश्च तथा विधा ॥ ४५४ ॥ अश्विनाभिर्नरेखा भिस्सन्ननिर्दिष्टजीविनी ॥ रेखा या  
 नाभि का मूलयशः पुण्यातिधातुसा ॥ ४५५ ॥ धनरेखा तु सा याता अष्टौ वं धातु संपन्न -

शेषे ना ॥ स्याच्चैस्त्वं हि ता पूर्णा सोद्दिरेत्वा तु राज्यं द्यो ॥ ४४२ ॥ गंभीरा स्तुं द्यः रक्षिग्धाः प्रु  
 ३०६ भद्रा मनु पिंगलाः ॥ दक्षिणे तु कोर्युं सां वामा स्त्रीणां तु वामके ॥ ४४३ ॥ अग्रमुष्ट स्तज्ज  
 वी यस्य स भवेद्भज्य भाग्यः ॥ श्रीवत्सा चरथा दर्शध्वजस्तंभगिरिस्त्रजः ॥ ४४३ ॥  
 हस्तिच्छत्रो वुजः कुंभः श्रीवृक्षः कुलिशं कुप्रभम् ॥ अंगारी व्यजनं वीणा जवो नत्स्या  
 दिकं तथा ॥ ४४३ ॥ कारपाद तले यस्य स भवेद्भरणी पतिः ॥ खल्वा दस्तु धनी विद्वान् दं  
 दुरस्सं दतां गुलिः ॥ ४४३ ॥ धनाढ्यो ल्यवयः प्रोक्त उद्गारे विरत्नां गुलिः ॥ तिलः पाद  
 तले हस्ते नाशायं दृष्टि गोचरः ॥ ४४४ ॥ हृदि प्रजनने भाले धनभाग्य प्रदो नृणां ॥  
 रेखाः कारतले चेत्यु रक्ताभ्यस्त्य धिका तथा ॥ ४४५ ॥ रक्तस्मरुद्ध्याः सितः छिन्नाल दारुण  
 च्चदिरिद्रा ॥ स्थूलं प्रजननं दीर्घं के प्रो वाने कथा कम् ॥ ४४६ ॥ यस्य चैतस्तरिद्रः ३५  
 तं शुभलक्षणं वानपि ॥ हरिः कारयुग्मेन कंडूयति शिरस्तुयः ॥ ४४७ ॥ अथ लीलां  
 विशेषः ॥ शुभानि यानि चिह्नानि पुंसां प्रोक्तानि स्त्रिभिः ॥ तान्येव यो धितां योत्र विशेषः प्रो

चतुर्गुहः ॥ ४६८ ॥ ननु द्विकदंभालं विप्रालं श्रीनृतं तथा ॥ यादं गुलि ह्यं चं लं ग-  
 ननेन सप्रो ह्यवध ॥ ४६९ ॥ अस्यालविभवा नारी धत्वा हा मदिनदिभः ॥ दीर्घलिङ्ग  
 हंति शशिर्दीर्घभाला नृदेवरम् ॥ ४७० ॥ तुच्छा दीर्घादरी नारी चसुरं हंति निश्चितम्  
 लस्य गुहा तथा मूढकं नितं वापति याति नी ॥ ४७१ ॥ कुलं दीर्घ मला हंति निःस्वानिद्र-  
 स नाशिका ॥ दृष्टु नाशा भवे चंडी इति वता कमठीदरी ॥ ४७२ ॥ हसि ते गर्तं गंडाया-  
 दुःश्रीला सा प्रकीर्तिता ॥ मिलद्भूगला वर्तके श्रमा लप नाशिका ॥ ४७३ ॥ दीर्घ  
 शिमान्वितां गा बालं बोधी विकलिका ॥ दृष्टा वैरश्च भेद्यिने द्युक्तां नारी परिस्थजेत् ॥  
 ४७४ ॥ अथ र्थाणं गृभचिह्नानि ॥ विशाल लोचना तन्वी प्रया मा मधुर आदिणी ॥ कृश  
 लं व कचा गौरी प्रलक्षणाना मनो हरा ॥ ४७५ ॥ हंसे भग मना मृही चंद्र वक्रा नितं विर्वा ॥  
 सुचित्राल्प हरा च मूढ गुल्फा कशोदरी ॥ ४७६ ॥ जघुहस्तां प्रिका कं वृषी वा वृत्तो न्यत  
 स्तनी ॥ दृष्ट्यादि लक्षणे पिता सुभगा पुत्रिणी तुला ॥ ४७७ ॥ अथ सामान्यत प्रभु भलक्षणानि

अथार्चितवचनं चेत्तच्छ्रोत्रं शुभमंगवपुः ॥ पापभीरुमतिश्चेत्सिंहं चिह्नं रज्यं च यो विनाम  
 ॥ ४७८ ॥ अथापरचिह्नानि तर्वा प्रसोरयुमानि ॥ हस्तच्छेदी शिरानां सुविनखलिरवनं पादयो  
 रल्पपुञ्जा ॥ दंता नामसुल्यशैल्यं वसनमलिनता रुक्षता मूर्ध्नि जाना मूर्ध्नि सन्ध्ये चापि नि  
 श्चा विवसन पादनं ग्रासहस्तावलोके स्वांगे पीठे च वा दं विनखरति हरेते के श्च वस्थापि  
 लज्जमीम् ॥ ४७९ ॥ द्विवेदि कुलसंभूतसख्यकृतसंग्रहे ॥ शिरोमणौ समाज्ञेयं त्रयोविं  
 प्राति का प्रभा ॥ ४८० ॥ इति श्री संग्रह शिरोमणौ मिश्रकथनं नाम त्रयोविं  
 प्रातिः प्रभा २३ अथ लिप्यो विभुक्तकर्मो नृपानकल सिद्ध्यर्थं तदंगतया निर्णीयते ॥ अत्यन्ता  
 माह्न प्राप्यं विधिः ॥ नहुत्तं ममांसायां ॥ विधिरत्यन्तमन्नाह्नो नियमं पाक्षि के सति ॥ तत्र  
 चान्यत्र च नानाहो परि संख्येति गीयते ॥ १ ॥ सच विधिर्वेदवाक्यं स्मृतिपुराणादि वाक्यं  
 २ ॥ तत्रार्गः ॥ सविधिर्विधिः प्रवर्तको निवर्तकश्च ॥ प्रवर्तकस्तु ॥ दर्शेनात्वापिल

संश्रित्यो दद्यात्कृत्स्नतिलोदकं ॥ अर्ज्यं च विधिवद् दद्यात्संतति स्तेनवर्द्धने ॥ ३ ॥ निवर्त-

३८३

कस्तु ॥ अमायां च नगच्छेत् प्राप्नोति कालमपि स्थिरयम् ॥ अमां वा स्यादयं नाथी धीमता ॥  
पयेदिति ॥ ४ ॥ तिष्ठि नक्षत्रवासादि साधनं पुण्य पापयोः ॥ प्रधान गुराभाद्विजयं  
रवा तंत्रेण तेस्तमाः ॥ ५ ॥ अतश्च तिथयो विध्यं गत्वेन निश्चितव्याः ॥ तत्र कातिथ-  
यः ॥ अति पदाद्याः षोडशा एव तत्रा होरात्रेण सूर्य मंडला चंद्रस्य प्रथम कला नि-  
र्गमे षुक्ल प्रति पद्मवति ॥ एवं द्वितीया होरात्रेण द्वितीया कला निर्गमे द्वितीया भव-  
ति ॥ एवं तृतीया दयो द्वादश्याः ॥ एवं पंचदशे ना होरात्रेण पंचदश्याः कलायाः  
निर्गमे सूर्या च चमसो रत्यंत इरा सूर्यिना ॥ एवं अस्मिं पूर्णिमायां संपूर्ण मंडलस्य  
नक्षोः षोडशे ना होरात्रेण एक कलाया रवि मंडल प्रवेशे कृत्स्न प्रति पत् भवति ॥  
एवं क्रमेण द्वितीयाद्याः ॥ एवं त्रिंशत्तमे ना होरात्रेण पंचदश्याः कलायाः प्रवेशा  
लक्ष्या चंद्रमसो रत्यंत सन्नि कर्षादिमावा स्या भवति ॥ नन्वेवंति धीनां विध्यं गत्वे-

३३॥ नविधि नैवस्मिद्धत्वात् तन्मिर्त्यया प्रयोजनम् ॥ सत्यं ॥ षष्टिर्घातकालमकं कालावधि-  
 ३४॥ नानां सित्थानां संपूर्णत्वेनानिर्णयत्येऽपि यत्र तिसृषु र्द्विद्विहसौ भवन्तस्तत्रैकस्यास्तिसृषु-  
 द्विन्वद्वय व्यापित्वेन तसिथो विहितं कर्म भुक्त्वा कर्तव्यमिति तेषामे ॥ अवश्यं निर्णय-  
 कर्तव्यः ॥ सानिश्चिजिभा ॥ पूर्वो ह्यर्थः हिंसा चेति पूर्वः समातिथिः ॥ ह्यर्थः तद्विद्विः हिंसा-  
 ह्यर्थः ॥ यदाहौधमन्तः ॥ पूर्वो ह्यर्थस्तथा हिंसा त्रिविधिं तिथि लक्षणं ॥ पूर्वो ह्यर्थो फले-  
 ष्वर्थो हिंसा स्यात्पूर्व कालिकी ॥ तत्र तिथीनां वेधनिर्णयमाह ॥ सर्वोस्तिथयः पक्षद्वयेऽ-  
 पि सामान्येन पूर्वया परया च तिथ्या त्रिभिर्महर्हैर्विद्वांस्युः ॥ यदाहौधै नसिः ॥ पक्ष-  
 द्वयेऽपि तिथयः स्तिथिं पूर्वास्योत्तरम् ॥ त्रिभिर्महर्हैर्विद्वांसि ति सामान्योऽयं वि-  
 धिः स्मृतः ॥ नत्वेयं वेधतिथिस्सामान्यविधये न भवति ॥ तथा च कुंहे ॥ नागो ह्यद-  
 शनाडीभिर्द्विफेऽनंच दशभिस्तथा ॥ भूतोऽष्टादशनाडीभिर्द्वयस्तु त्वरं तिथिम् ॥  
 सत्यम् ॥ अयं विप्रोऽयं वेधउत्तरं तिथि विधयः ॥ सामान्यवेधस्तु त्रिभुहर्है एव पूर्वति-



कथं विधिविषयः ॥ तद्वक्तृकोर्मो ॥ चतुर्दशी पंचमी च तथा च दशमी तिथिः पूर्वोत्तिथिं द्-  
 ३५ जयंति विभिरेव सुहृर्न कैः ॥ अयंच त्रिसुहृर्नादिवेध उदयादूर्ध्वं पूर्वतिथ्या अस्त  
 मस्यात्पादपरतिथ्या चेत्यवगम्यते ॥ कुतः वचनवलादेव ॥ देवलः ॥ उदयन्नेव सु-  
 वितायां तिथिं प्रातिपद्यते ॥ मातिथिस्तकला द्येया दानाध्ययनकर्मसु ॥ साति  
 थिस्तद्द्वेरात्रं यत्रास्तं याति आस्करः ॥ उदिते दैवतं भर्तौ पैत्र्यं चास्तं गतिरदौ ॥  
 त्रिसुहृर्न महोपासातिथिर्वेदव्यकव्ययोः ॥ अतः उदयात्त्रिसुहृर्न व्यापिन्यां दैवतं  
 कर्म ॥ अस्तमया त्रिसुहृर्न व्यापिन्यां पितृकर्मका धर्मस्य एकभक्तजलादियुभिर्नोपेध  
 स्य विचारः ॥ एकादशी जलादियु च तिथयोऽवश्यं हास्य चक्ष्यापि निर्णयोः ॥ अथ तिथ्या  
 नां पटिकात्मकत्वात् पटी निर्णयिते ॥ सख्यसिद्धन्ते ॥ दाद्विः प्राणेर्विनाडी स्यात् तत्पद्यमा भाना  
 उच्यते ॥ आस्यार्थः ॥ दशगुर्वक्षरोच्चारणा कालः प्राणाः ॥ कंकंकंकंकंकंकंकंकंकंक  
 इति ॥ विनाडी कला तस्याः साधकः ॥ स्तोको यथा ॥ लोके क्षेमायासीन्मत्स्यः कु-

स्मः कालः पुंसि हो इत्याकारे एमो एमः छलो वौडः कल्कीवेत् ॥ सर्वानां क्लारं  
 ज्ञाना रूपं नाना नामानं योगिभ्यो देवानां देवं वंदे तं गोविंदम् ॥ दृष्टि कल्पाभि  
 र्भोगो घटी अन्योऽपि प्रकारः ग्रंथान्त्रे ॥ ताम्रस्य षड्विः परैर्भोजनम् ॥ त्रिंशद्गुल  
 वित्तार मुच्छ्रुतं चतुरंगुलम् ॥ स्वर्णमायेन हत्वा च चतुरंगुल कंटिकां ॥ मध्यभागे  
 तपादिदं घटिका तु प्रजापते ॥ तद्वंशेणं मसा प्राञ्चं यावत्कालेन पूर्यते ॥ सकललोष  
 टिकायास्तु पूर्वाचार्यै रदाहृतः ॥ एकभक्तादि ज्ञतां गत्वा देकभक्तादि ज्ञतानां स्व  
 रूपं कालश्च निरूप्यते ॥ तत्रतानि ॥ ज्ञतान्येकभक्तनक्तायाचितोपवासभेदेन चतु  
 र्द्वर्भवंति ॥ तत्रैकभक्तं नाम दिगार्द्ध रूपं मध्याह्नादुपरि नियमेन भोजनम् ॥ दि  
 गार्द्धसमयेऽतीते शुज्यते नियमेन यत् ॥ एकभक्तमिति त्र्योक्तं यतस्तस्मादिदं व  
 हि ॥ तत्रैकभक्तस्तु मध्याह्नव्यापि न्यामैव ॥ तदाहौषधयनः ॥ उदयेतु यदा सख्य  
 इ नक्तस्यास्तमयेति धिः ॥ मध्याह्नव्यापिनी ग्राह्या एकभक्तव्रतति धिरिति ॥

कालोऽत्रपंचविधः ॥ प्रातः संगवमभ्यान्हा परान्हा सायान्हा भेदान् ॥ पुराह व्यासः ॥ सुहृ-

र्षे त्रैत्रितयं प्रातस्सावानेवतु संगवः ॥ मध्याह्नरित्रमुहूर्तस्याह परान्हा श्रुता ह्यष्टाः ॥

सायान्हा त्रिमुहूर्तश्च सर्वकर्म्मसु गार्हितः ॥ एवं त्रयोदशं घटिका भारभ्यासाद्याह-  
शी घटिका यावत्सु षट्षटिका धिकी मभ्यान्हाः ॥ तत्राप्युत्तरस्त्रिंशद्यटिका त्रये-

एकभक्तं कर्त्तव्यं ततः सूर्यास्तपर्यन्तं गौणः ॥ तत्र पूर्वेषु भ्याह्निरपरिष्टुर्भ्यस्तत्र विंशोऽथवा

त्रिंशत्त्रयापि सान्ध्यं वैषम्यमिति षट्षट्षाः ॥ तत्राद्ययोरसंदेहस्य ॥ तृतीयेतु पूर्वोन्हि

गौणमूल्यव्याप्तिः सत्त्वात्पूर्वेति ॥ माधवः ॥ युगमाकथान्त्रिसंयुः ॥ इति हेमादिः ॥ च-

तुर्थपक्षे परैव संकल्प्य काले सत्त्वादिति चोचितं ॥ गौणकालव्याप्तिश्चतुर्थपक्षे स-

त्वात् ॥ वैषम्येणां प्राच्याहो याधिका साग्रह्यास्तभ्यो पूर्वा ॥ अयंचत्वं तत्रैकभक्तनिर्णयः

॥ अत्र गौणोऽयं वास प्रतिनिधी तदनुषारेण निर्णयः ॥ तथा चोक्तं ॥ कर्म्मणोऽयस्य यः

कालः तत्कालव्यापिनीति धिः ॥ तदा कर्म्मणि कृत्वा तदा स हृद्दीन कारणम् ॥ अथ-

संवि  
त्वं ॥ यो यस्य विहितः कालः कर्मणः स्तदुपक्रमे ॥ विद्यमानो भवेद्दं गो नो ज्जितः

३२७

प्रक्रमणोतु दूत्येकमहानिर्णयः ॥ अथ नक्तं तिथिनिर्णयः ॥ नक्तं नाम दिवा शानवर्ज्यपि  
त्वारं शोभोक्तव्यमिति ॥ दिवा एति व्यापिन्यामेव तिथोः कार्यार्थः प्रदोषव्या-  
पिन्यामेव ॥ तथा च स्कंदे ॥ दिवा एति व्रतं यच्च एकमेव तिथोः स्मृतम् ॥ ताभ्यामुभय-  
व्यापिन्यां चार्थादेवं व्रतं व्रती ॥ अत्रोभयव्यापिन्यामेव ॥ तथा च कौर्म ॥ प्रदोषव्या-  
पिनी यत्र त्रिमुहूर्ता यदा भवेत् ॥ तदा नक्तं व्रतं कुर्यात्स्याध्यायस्य निषेधव्रतम् ॥ वस्तु-  
क्तिर्य ॥ प्रदोषव्यापिनी गण्यतिथिर्नक्तं व्रते सदा ॥ प्रदोषस्तु ॥ उदयात्माकृतनी-  
संध्या षटिका त्रयमिष्यते ॥ सायं संध्या षटिका अस्तादुपरि भास्वतः ॥ त्रिमुह-  
ूर्तं प्रदोषस्याज्ञाना वस्तं गते सति ॥ नक्तं तत्र तु कर्तव्यमिति शास्त्रस्य निश्चयः ॥  
इति महान्ते व्यासोक्तिः ॥ ननु षड्षटिकात्मके प्रदोषे आद्यं घटी त्रयं संध्या कालः ॥ त-  
दिति अस्य च तस्मिन् षटिका त्रये नक्तं व्रतं निमित्तं भोजनं प्राप्तमिति ॥ तस्मिन्का-

स्वे भोजनाभावादिति निविद्धम् ॥ तथा च स्वभावपि ॥ चत्वारो मासि कस्मर्षिणि संभ्यायां  
 परि वर्जयेत् ॥ आहारं भेषुन निद्रां स्वाध्यायं च चतुर्थकम् ॥ संभ्या काले भोजन  
 नियमे नैव विघटिकात्मक संभ्या अयणे संभ्या नाम दिन एभ्योः संधी उपानादि  
 क्रियैव श्रेया ॥ संधिश्च खंडमार्तण्डोपनादितः कालस्तस्यात्य त्वात्किञ्चाप्या-  
 श्ववितत्वेन स्वल्पकाले कर्तुं भक्षक्यत्वात् ॥ श्रुत्यार्थवाधे सति संभ्या शब्देन सं-  
 धि शब्दः ॥ पूर्वपरौ वा क्रिया पर्याप्तः कालो लक्ष्यते ॥ यतः लक्ष्यते ॥ प्रातः संभ्या स-  
 नस्तत्रा मध्याह्ने मध्यभास्करा ॥ ससूर्या पश्चिमा संभ्या संभ्या त्रयमिति ता ॥ अ-  
 तो मुरव्य काले संभ्या वंदनं देवान् कृतं तत्र गौण काले घटी त्रयात्मके कर्तव्यता-  
 मभ्यनुज्ञापनार्थं संभ्या गार्जितादिना विहिता नध्ययनादि परश्च नक्तं ज्ञात विहि-  
 त भोजनं न क्षत्र दर्शने एव कर्तव्यम् ॥ तथा च भविष्ये ॥ शुक्लर्त्तान् दिनं नक्तं प्रवदन्ति  
 मनीषिणः ॥ नक्षत्र दर्शना नक्तं महं मन्ये गणाधिप ॥ नक्षत्र दर्शनादिति त्यप-

संस्मृत्योपे पंचमी ॥ अतश्च नक्षत्र दर्शनं प्राप्य नक्त विहितभोजनं विधेयमित्यर्थः ॥ सुहृ-  
<sup>३२४</sup>त्तीर्तं दिनं तु यति परम् ॥ यदाह देवलः ॥ नक्षत्र दर्शनात् नक्तं गृहस्थानां स्मृतं बुधैः ॥  
यत्तर्हि नायमेभागो तस्य राज्ञो निधिष्यते ॥ सौरजक्त विषयेषु ॥ आत्मनो हि गुणा द्वा-  
या यदा संतिष्ठते रविः ॥ सौरनक्तं विजानीयात् नक्तं निशि भोजनम् ॥ इति द्वा-  
हृदये षतस्सुमं वृत्तिरपि ॥ त्रिमुहूर्तस्य गेवाह्नि निशि चैतावतीति धिः ॥ तस्यां सौ-  
रभवे नक्तमहं न्येव तु भोजनम् ॥ तथा च स्कंदे ॥ नक्तं निशायां कुर्वीत गृहस्थो वि-  
धिं संयुतः ॥ यतिश्च विधवा चैव कुप्यात् तत्स दिवा कश्चिति ॥ शुभर्वास्तु राजा वै-  
व ॥ हरिनक्ते विशेषः ॥ कालादर्शे स्कंदे ॥ उदयस्था सदा पूज्या हरिनक्तं ज्ञेयं ति धिः ॥ अ-  
न्यनक्तं तु संक्रांत्या दौ राजा देव ॥ निधेयस्य रात्रां भोजनं गोचरत्वेन वाप कल्पा-  
त् ॥ दिनद्वय व्याप्नोषात् ॥ उभयोर्व्याप्तिव्याप्योः प्रदोष व्यापिनी ति धिः ॥ तत्रोत्तरं तु  
नक्तं स्याद्भूमयं चापि सायतः ॥ इति कालादर्शे जाचालिवाक्यम् ॥ अन्यपक्षे तु एकभक्तवर्तिनो



असिदि ॥ चोष्य नामद्रव्यां तर्गतं प्राप्तं ॥ हंतेन मुख व्यापारो वा गृहीत्वा याद्द्रव्यतश्च सा-  
 रसन्ध्यस्य ज्यते ॥ यथा अफले क्षुद्रं डादिः ॥ अस्य च सामान्यत एक भक्ष रूपत्वात् ॥  
 एक भक्त वदेव मथ्यान्ह व्यापिन्या मेव तिथौ सति संभवे विधेयं ॥ पर आर्षार्थनया दिने-  
 भोजनासंभवे सति ॥ एतौ वा प्र आर्षार्थनया भोक्तव्यम् ॥ अन्यथा ॥ भोक्षेह भवेति सं-  
 कल्प भंगः स्यात् ॥ एतेषां मेकं भक्तादि व्रतानां खंड तिथिं विहाया खंड तिथावेवोप-  
 क्रम समाप्ती कुर्व्यात् ॥ यातिथी ह्दयार्थ्यदिनाद् व्यापिनी भवेत् ॥ सा खंड तिथिः ॥  
 तस्यां व्रतानां प्रारंभ समाप्तिं च न कुर्व्यात् ॥ पक्षह सत्यव्रतः ॥ उदय स्थार विध्या-  
 दि नभवेदि न भयागा ॥ सा खंडान व्रतानां सा तप्रारंभं समाप न भिति ॥ अथ व्रत परिभा-  
 वा व्रताधिकारिणो मदन रत्ने भविष्ये ॥ अथ प्रथम स्तुत्ये विप्रास्तेषां श्रेयो विधीयते ॥ व्रतोप-  
 वास निवर्धने न्मां नादाने स्तथा नृप ॥ उपवासं तु अन्नमिन्नास्त्राण परम् ॥ अत एव देवलः ॥  
 आहि ताग्नि रनञ्जुं प्र वक्ष्यन्वा गीतु ते त्रयः ॥ अक्षंत एव सिन्धु निनेषां सिद्धिरन प्र-  
 ण



तम् ॥ एका रूपा एव भित्तु प्राक् च्छूद्र स्यादप्यधिकारः ॥ यथा ॥ भूद्रीवर्णभ्रानुर्थेऽपि-

वर्णत्वाद्भ्रममहेति ॥ वेदमंत्रस्वभावात्साहाय्यद्वारादिभिर्विनिनेति ॥ व्यासः ॥ आद्यास्तु ॥

वैश्यभूद्रयोर्हि एव्यधिको पवास निषेधः ॥ यत् ॥ वैश्याः भूद्राभ्रयै मोहादुपावासं  
प्रकुर्वते ॥ निरात्रं पंचरात्रं वा तेषां सुद्धिर्न विद्यते ॥ दहीहेमादिः एवं स्त्रीणामपि तु स्कंदे  
नास्ति स्त्रीणां पृथक् यज्ञो न व्रतं नाप्युपकरणम् ॥ भर्तुं भ्रूभ्रूषयैवेता लोका निष्ठान्  
व्रजंति हि ॥ अन्यथापि ॥ यदेवैभ्यो यच्च पित्रादिकैभ्यः कुर्याद्भर्ता भ्रज्जनं स क्रिया  
च ॥ तस्य सार्द्धं साफलं नान्यचित्ता नारी भुंक्ते भर्तुं भ्रूभ्रूषयैव ॥ आदित्यपुराणे ॥ नारी  
खल्वननुज्ञाता भर्त्ता वापि सुतेन वा ॥ विकलं तद्वेत्त स्याद्यत्करोत्योर्द्ध्वेहि कम् ॥  
सोर्द्ध्वेहि कं पारलोकि कं तद्वर्तुं नुज्ञा विषयं ॥ अत्र विशेषो हरिवंशे ॥ ज्ञानं च कायं प्रि-  
रसस्ततः फलमवाप्नुयात् ॥ ज्ञाता स्त्री प्रात रृत्याय पतिं निज्ञापयेत्सती ॥ तथा च ॥  
यस्मिं त्वेहिवरं पात्रं सकुशं साधतं तथा ॥ गोभृगं दक्षिणं सिन्धुं प्रगृहीयाच्च तज्जलम् ॥

श्रौतद्वर्ताप्रभय ॥ ततोभर्तुस्सती दद्यात्तना तस्य प्रयतस्य च ॥ आत्मनंश्चाभिधेत्कु-  
 श्च ततश्चिरसित ज्जालम् ॥ उपवासेषु कर्तव्यमेतद्वि व्रतकेषु च ॥ सर्वव्रतेषु संकल्प-  
 विधिश्च ॥ भारे ॥ गृहस्थोऽवरं पात्रं चारिष्यति गृहस्थः ॥ उपवासं तु गृह्णीयाद्यज्ञा सं-  
 त्ययेद्बुधः ॥ हस्तेनैवेत्यर्थः एवं यथाविहित काले व्रतारंभः ॥ व्रतारंभे च विप्रो यो नृणा-  
 रणे ॥ सत्यव्रतदेव लौ ॥ अभुक्ता नातएहरे स्नात्वा च म्यसमाहितः ॥ सूर्याय देवता अभ्य-  
 निवेद्य व्रतमाचरेत् ॥ अभिषेकं कर्तुं निषमाः ॥ क्षमा सत्यं दया दानं शौचं भिक्षा निग्रहः ॥  
 देव प्रजामि हवनं संतोष स्तेय वर्ज्यं नमः ॥ सर्वव्रते व्ययं धर्म्यं स्नामान्यो दशा धा स्मृतः ॥  
 ॥ अग्नि होमस्त देव त्यो व्या हति स्तेमो वा ॥ विबुधैर्मन्त्रिभिः ॥ तज्जप्य जपन ध्यानं तत्क-  
 था प्रवणादिकम् ॥ तदर्पणं च तन्नाम कीर्तनं प्रवणादयः ॥ उपवास कृताभेते  
 गुणाः प्रोक्ता मनोयिभिः ॥ कौर्म ॥ वहिर्गोमांस्त्यजावृष्टिं पतितं च रजस्वलाय ॥  
 न स्पृशे न्याभिभाषे तने क्षेत व्रत वासरे ॥ पृथ्वी चंद्रे ह्ये अग्निपुराणे ॥ स्नात्वा व्रत वना-

सर्वं सर्वं यत्तु ब्रतं सर्वं यः ॥ पूज्याः सुवर्षं मय्याद्या प्रशुभ्या वैभूमि प्रायिना ॥ उपो होम  
 रं यः सामान्यं ब्रतानां दानं भवत् ॥ चतुर्विंशद्वाह्येण वापंच वा एक एव वा ॥ विप्रो ह्य-  
 ज्या यथा प्रगत्या तेभ्यो ह्येव च दक्षिणाम् ॥ अत्र विप्रो ह्यतिशुद्धिं निर्देष्टुं त्मुमां सर-  
 वभोज्या नतु विप्रयः ॥ ब्रतं सर्वं यो ब्रतं देवता प्रतिमाः ॥ प्रतिमा स्वरूपं मदनखे ॥ अनुक्तं  
 इव्य तत्संख्या देवता प्रतिमा नृप ॥ सौवर्णी राजनी तात्री हस्तजा मतिर्की तथा ॥ चि-  
 त्तजा पिटु लेखो त्या निज किं तानु रूपतः ॥ आमाया स्थल पर्यंतं कर्तव्या श्राद्ध वर्जि-  
 तैः ॥ तत्रैव ब्राह्मे ॥ आहुतं इव्य मना देष्टुं जुहोतिषु विधीयते ॥ मंत्रस्य देवता या अथ प्रजा-  
 पति रिति स्थितिः ॥ मंत्रानुक्तो समस्त व्याहृति रूपो मंत्रः ॥ प्रजापति अथ देवतेति ॥ कल्प  
 तः ॥ अनुक्तं संख्याय तस्याच्छेदयद्येवं भवेत् ॥ उपवासं द्विजः कृत्वा ब्राह्मणा नो  
 च भोजनम् ॥ ह्युपार्जेनास्य सगुण उपवासो विधीयते ॥ ब्रतो द्वापना नुक्तो प्रथमी चंशे द्ये नंदि-  
 पुण्ये ॥ कुर्यात्तु द्वापनं तस्य समानो यद्दुष्टिरिति यः ॥ उद्यापनं विना यत्तु तद्भुतं निःफलं-

संक्षि भवेत् ॥ यदि चोर्धा पनं नोक्ते व्रतानुगुणतश्चरेत् ॥ किंता नुसारतो ह्यद्यादनुक्तोद्या-

३६५ पनेव्रते ॥ गार्ध्वैवकाचनं दद्याद्व्रतस्य परिपूर्तये ॥ अग्रकोनारदीये ॥ सर्वेद्यामप्यस्या-

मेतु यथोक्तं कर्णे विना ॥ विप्रवाकां स्मृतं शुद्धं व्रतस्य परिपूर्तये ॥ दृष्ट्या विप्रवचो

यस्तु गृह्णाति मनुजः शुभम् ॥ अदत्त्वा दक्षिणां पापः स याति नरकं भुवम् ॥ भारते वोदर

नंदे देवीप्रणये ॥ व्रते च तीर्थेऽध्ययने आर्द्धेऽपि च विप्रो व्रतः ॥ परान्नभोजनाद्देवि यस्या

नंतस्य तत्फलम् ॥ ज्ञान्ये ॥ नित्यस्नायी मिताहारे गुरुदेवद्विजाच्चैकः ॥ क्षारं-

क्षौद्रं च लवणं मधुमांसानि वज्रयेत् ॥ क्षारस्तु तत्रैवोक्ताः ॥ तिलमुद्गादते शिमं प्रा-

स्य गोधूमकोद्रौ ॥ धान्यं कदेव धान्यं च शमी धान्यं तथैव च ॥ स्विन्नधान्यं तथा

पण्यं मूलं क्षारं गणाः स्मृताः ॥ गोधूमान्ननु तत्रैव प्रशस्तम् ॥ द्वाहि पष्टिक-

मुद्गाश्च कपालाः सतिलं पयः ॥ ग्रामाकाः शालिनी चारः गोधूमाद्या व्रते हिताः ॥

कृष्मां ह्यल्लवहंता कपालं कीज्यो त्स्विन्काः त्यजेत् ॥ चरुसैर्द्वयं प्रोक्तं कणाः प्राक्ते दक्षि-

विद्यतं मधु ॥ प्रथमा माकाः शालिनी चारः प्रावकं मूलं तदुल्लभम् ॥ हविष्यं व्रत नक्ता द्वाविमि  
 १६६ कार्यादि के हितम् ॥ मधुभासं विहायान्यद्वते च हितमीरितम् ॥ प्रामी धान्यं आयादिः  
 पालं की मध्यक्षे पोद् इति प्रसिद्धा ॥ ज्योतिषका को प्रातकी ॥ मिताक्षरायां गो तमः  
 चरभै द्यप्रफुल्लकणायावक शक पयोदधि ॥ धृतमूल फलोदकानि हवीं व्युत्तरैस्तरप्र-  
 शस्तानि ॥ पयोदधि दृतं च गव्यमिति ॥ गृहीत व्रतस्य गोतु मदन रत्ने तु व्रत लेपः ॥ पूर्वव्रतं  
 गृहीत्वा योना चरेत्काममोहितः ॥ जीवन् भवति चांडालो मृतः न्याचाभिजायते  
 ॥ प्रायश्चित्तं तु दध्नी चंद्रे दधे ॥ ओषात्प्रमादा स्त्रोमादा व्रत भंगो भवे  
 दारि ॥ दिनत्रयं नक्षुं जीत मुंडनं शिरसोऽधवा ॥ यच्च ॥ प्रायश्चित्तं ततः कृत्वा पुनरे  
 व व्रती भवेदिति वचनं ॥ श्रुति क्रान्तमपि व्रतकार्यं भवेति ॥ शूलपाणिः ॥ तन्मभ्येतु  
 व्रत श्रेय सत्त्वं क्रैयम् ॥ एतच्च शक्तं विषयं ॥ अष्टौ तु कालहेमाक्षे पुराणां तरे ॥ उ-  
 पवासा समर्थाश्चैदेकं विप्रं तु भीजयेत् ॥ तावद्नादि वा दद्याद्भुक्तश्चेद्दिश्रयं तथा ॥

भुक्तः कृत भोजनः ब्राह्मण भोजनं विनोति श्रेयः ॥ सहस्र समितां देवीं ज्येष्ठा आरा-  
 संयमान् ॥ कुर्याद्वा दशसंख्या कान् यथा शक्तवानु यो नरः ॥ इति शुद्धित्वे मात्से ॥ उप-  
 वासे च शक्तानां नक्त भोजन मित्यते ॥ मदन त्वेवाय वीथि ॥ इत्यादातो पवास स्थ फलं-  
 प्राप्नोत्य संशयम् ॥ अणुर्कैवलः ॥ ब्रह्म चर्यं तथा श्रेष्ठं सत्यमभिषवर्जनं ॥ इति-  
 ध्वेतानि चत्वारि दानीति विनिश्चयः ॥ मात्से ॥ तस्मात्कृतो पवासेन स्नानमभ्यंगा-  
 र्चकम् ॥ वर्जनीयं प्रयत्नेन व्रतं तत्परं नृप ॥ नियमस्तु तत्र स्यान्दिवाणीयाः ॥ अथ  
 स्त्रीव्रतेषु विशेषा उच्यन्ते ॥ तत्र हेमाद्रौ व्रतकांडे गारुडे ॥ गोपालं कार तां वृत्तिं शुभ्य मात्मानु  
 सिपनम् ॥ उपवासेन दुष्ट्यातिहतं भावनमजनमिति ॥ इदं च सभर्तृ को पवास विवयम् ॥  
 अंजनं च सतां वृत्तं कुंकुमं रक्तं वा ससी ॥ भार्ये त्सापवासायि भवे धव्य कारं यतः ॥ वि-  
 धवायति भार्येण कुमारी वाय दक्षयति ॥ विबुधैः सि ॥ सर्वेषूपवासे शुभं मात्वा छ-  
 सुवासिनी ॥ भार्ये इत्तं वस्त्राणि कुर्यान्मानि सिता निच ॥ विधवा शुक्ल वसन मेकं मे-

१ वरिधारयेत् ॥ मनुष्य ॥ पुष्पा लंकारवर्णाणि गंधधूपान्नुलेपनम् ॥ उपवासं न द्रव्यंती  
 २५६ त्यादि ॥ गहनस्तेज्मासोऽपि ॥ दंतधावनपुष्पादि व्रतेषु स्थाननुद्ध्यति ॥ यद्यपीदं सर्वोप-  
 वास विषयं प्रतीयते ॥ तथापि शिष्टाचारानुभूतात् ॥ सौभाग्याद्यर्थं क्रियमाणा नवरात्र  
 त्रिरात्राद्युपवासविषयमेव ॥ नत्वेकादश्यादि विषयम् ॥ असकृज्जलपानाच्च सकृत्तो-  
 वृत्तभक्षणान् ॥ उपवासः प्राणश्रेयसदिवास्वापाञ्च भेषुनात् ॥ इत्यपरेर्केदेवत्वेन ॥ तन्ननि-  
 वेधात् ॥ नचास्यपुंविषये सावकाशत्वात् ॥ स्त्रीणां तां दूलादिशमं प्राप्नोत्वात् ॥ तां दूला-  
 दिनाप्यकस्यैवैकादशी तत्र विषयत्वेनैव परीत्यस्यापि सुवचत्वात् ॥ हरिवंशे ॥ अंजनं-  
 रोचनां चैव गंधाः सुमनसस्तथा ॥ व्रते चैवोपवासे च नित्यमेव विस्मर्जयेत् ॥ शिरसोऽ-  
 भ्यंजनं सौम्यं नैव भेतत्प्राप्तये ॥ नपादयोर्नोऽत्रास्य स्नेहेनेति स्थिति स्मृता ॥ तत्रैव ॥  
 अशुभप्राप्तौ रोषश्च कलहस्य कृतिस्तथा ॥ उपवासाद्भूताद्वापि सद्यो भ्रंशयति स्त्रियमम् ॥  
 तद्विद्यमित्युपलक्षणम् ॥ शिवधर्म ॥ दानं व्रतानि नियमं ज्ञानं ध्यानं हुतं जपः ॥ यत्ने-

नापि कृतं सर्वं क्रोधि तस्य दया भवेत् ॥ अथ सत्काशे निर्णयः ॥ तत्र शा वस्त्या प्रोच-  
 योः सर्वस्मार्तकर्म नि दृति निबंधेषु स्य द्येव ॥ गोडास्तु सता द्योचाद पिता मातुः ॥  
 जानुह्वं क्षतजे जाते नित्य कर्मज चाचरेत् ॥ नेमिति कंच तद धश्च वद्रक्षो न चाच-  
 रेत् ॥ लूत केच स मुत्पन्ने ज्वर कर्मणि मेधुने ॥ धूमो हरे तथा वांती नित्य कर्मणि सं-  
 त्यजेत् ॥ द्रव्ये मुक्ते ल्व जीरे च नैव भुक्तापि किं चन ॥ कर्म कुर्यान्नरो नित्यं सूत के चत-  
 के तथेति ॥ कालिका पुराणात् वस्तुतः ॥ पूर्व देवी पूज्योप क्रमात् नाना विषय त्व मस्येति  
 युक्तं ब्रतमिः ॥ तथा हेमाद्रौ पाद्ये ॥ गमिणि ॥ स्तुति कादिश्च कुमारी वाय रोगिणी ॥ ददा भ्यु-  
 ह्ना तदा न्येन कार्द्वे त्प्रयता स्वयमिति ॥ तेन यस्मिन् ब्रते यत्पूजा युक्तं तद न्येन कारये-  
 त् ॥ प्राण नियमान् स्वयं कुर्यात् ॥ अद्वैतत्वे विष्णुः ॥ बहु कालिक संकल्पो गृहीत अच्युत  
 दि ॥ सूत के चत के चैव ब्रतं तं नैव दुष्यति ॥ एतत्काभ्य परम् ॥ नित्यं त्वना र्द्वमिति  
 कार्यमिति ॥ गोडाः ॥ मंदनले ॥ पूर्व संकल्पितं यच्च ब्रतं सु नि यत द्यौः ॥ त ल्कर्तव्यं नरेः



स<sup>१८</sup> वहि धारयत् ॥ मनुर्मप ॥ पुष्पा लंकारवन्नाणि गंधधूषानुलेपनम् ॥ उपवासन इव्यती-  
 त्यादि ॥ गदनस्ते व्यासोऽपि ॥ दंतधावन पुष्पादि व्रते य्य स्थान इव्यति ॥ यत्तपीदं सर्वोप-  
 वास विषयं प्रतीयते ॥ तथापि प्रियं चारु भतात् ॥ सौभाग्या चार्थं क्रियमाणं नवरात्रि-  
 तिरात्राद्युपवासविषयमेव ॥ नत्वेकादश्यादिविषयम् ॥ असहजलपानाच्च सहजतो-  
 वृत्तभक्षणम् ॥ उपवासः प्रणश्येत दिवा स्वायाच्च भैषुनात् ॥ इत्यपार्द्धैस्त्वेनेन ॥ तन्ननि-  
 धेयात् ॥ न चास्य पुंविषये सावकाशत्वात् ॥ स्त्रीणां तां वृत्तादि रागप्राप्तत्वात् ॥ तां वृत्ता-  
 दि प्रापकस्यैव कादशी तर् विषयत्वेनैव परीत्यस्यापि सुवचत्वात् ॥ हरिवंशे ॥ अंजनं  
 रोचनां चैव गंधाः सुमनसस्तथा ॥ व्रते चैवोपवासे च नित्यमेव विस्मर्जयेत् ॥ शिरसोऽ-  
 भ्यंजनं सौम्यं नैव भेत तत्प्रस्यते ॥ न पादयोर्न शिरस्य स्थेहे नीति स्थिति स्मृता ॥ तत्रैव ॥  
 अशुभप्राप्तौ रोपश्च कलहस्य कृतिस्तथा ॥ उपवासाद्वाताह्वापि सद्यो भ्रंशयति शिष्यम् ॥  
 तत्रियमित्युपलक्षणम् ॥ शिवधर्मे ॥ दानं व्रतानि नियमं ज्ञानं ध्यानं हुतं जपः ॥ यत्ने-

वेत् ॥ तत्रैव ॥ त्वयं कर्तुं मया कृतं कारयेत्तु भूषसा ॥ इदं च सर्वं वर्तमानं साधारणं भावं प्रेषा

६०१

त ॥ अथ त्वत्पत्नीर्यं सेवाप्रदञ्जयप्रसाधनम् ॥ विप्रैस्संयादितं यस्य सपन्नं तस्य तत्फलम् ॥ अत्र विप्रेयमाह त्रिकांडभंडनः ॥ काम्ये प्रतीतिनिधिर्नास्ति नित्येनेमिति केचनः ॥ काम्येऽप्युपक्रमे इदं केचित्प्रतीतिनिधिर्विदुः ॥ न स्यात्प्रतीतिनिधिर्न स्यादिति चेत्तद्विदुः ॥ सदेव कालयो न्यस्ति नारणे रश्मिरेव सा ॥ नापि प्रतीतिनिधानं व्यतिथिद्वयं त्वत्कुत्रचित् ॥ हिरण्यकेशिस्तर्जने ॥ न स्वाति त्वस्य भार्यायाः देशस्य कालस्याग्नेर्देवतायाः कर्मणाः शब्दस्य च प्रतीतिनिधिर्विद्यत इति ॥ अथ ब्रह्मादि सन्निप्रतीतिस्तर्जने ॥ तत्र तिथिद्वयसन्निपति ॥ तत्रोक्तं दानहोमादि क्रमेणानुष्ठेयमपि रोधात् ॥ इदं पूर्वोक्तं वैव ॥ एकमध्येऽन्यकामः कर्मैरभस्तु न भवत्येव गुणफलद्वये ॥ यद्ब्रूवतामिह कर्ममात्रमनं येन व्यदधानं दोषस्सर्वत्र साम्यतः ॥ शिष्टास्तु ॥ कार्तिके रजानादिदिशेषे लक्ष्मणे मनुजाभारतं अचरादिश्चाचरंति तच्चित्तमभ्ये काम्यं संप्रदुर्चितं मया यन्नैके

१०  
 धुइं सानाच्चन विवर्जितम् ॥ माधवीये कोर्मोऽपि ॥ काम्योपवासे प्रभाते स्वतः स्नानं कृत्वा  
 ४० के ॥ तत्र काम्यं व्रतं कुर्याद्दिनाच्चन विवर्जितमिति ॥ एतेन सांगेऽधिकप्रातर्द्वितीयाहं व  
 पूजादि कार्यमिति वर्द्धमानोक्तिः परस्ता ॥ प्रारब्ध पूजादि कार्यमेव तत्रैव वि श्रेयं वक्ष्या  
 मः ॥ एवं जस्त्रलापि ॥ यत्तु सत्यं जलः ॥ प्रारब्ध दर्शितः पुंसां नारीणां यद्भजौ भवेत् ॥ न तत्रापि  
 व्रतस्य स्यादुपरोधः कदाचन ॥ तद्व्यति निधिनो कारयेत् ॥ तदुक्तं नरनरि मास्व ॥ अंरा  
 एतुरजो योगो पूजामन्येन कारयेत् ॥ अति निवयश्च निर्णयाम्यते ॥ पेशी नसिः ॥ आर्योपलु  
 र्न्नतं कुर्यात् भाव्यायाश्च पतिर्ज्ञातम् ॥ अस्माभ्योऽपरस्त्राभ्यो ज्ञातभंगो न ज्ञायते ॥  
 स्त्राहेऽपि ॥ पुत्रं वा विनयोपेतां भगिनीं भ्रातरं तथा ॥ स्वामभवाद एवाभ्यं चाहरे वा नियो  
 जयेत् ॥ काल्यायनः ॥ पितृभ्रातृभ्रातृपतिगुरुर्ध्वं च विशेषतः ॥ उपवासं प्रकुर्यात् ॥ पु  
 रयं प्रात गुणस्मवेत् ॥ मदनस्ने प्रभासखंडे ॥ भर्ता पुत्रपुरोधाश्च भ्राता प्रत्नी सखापि च  
 ॥ यात्रायां धर्मकार्येषु जायते प्रतिहस्तकाः ॥ एभिः कृतं महदेव स्वयमेव कृतं भ-

एवं द्वादश्यां मासो पवासश्चाद्धप्रदोयादिषु ज्ञेयम् ॥ एवं काम्यनेमिनि काभृत्यत्वात् ॥ द्वादश्यां  
 वलावलं स्वयम्बूह्यमिति दिक् ॥ इति व्रतपरिभाषा ॥ अथ व्रतोपवासादिषु तिथीनां साधारणानि-  
 एयिः ॥ अथ शुक्लपक्षे द्वितीया तृतीया युक्ता तृतीया द्वितीया युक्ता ॥ चतुर्थी पंचम्या पंचमी च  
 तृथ्या षष्ठ्या सप्तमी सप्तम्या षष्ठी ॥ अष्टमी नवम्या नवम्यष्टम्या ॥ एकादशी द्वादश्या द्वा-  
 दश्या कादश्या ॥ चतुर्दश्या दोर्णमासी दोर्णमास्या चतुर्दशी ॥ अमावास्या अति पदा अति प-  
 दमावास्यायेति ॥ तद्वक्तृनिगमे ॥ युगमासियुगभूतानि षण्मुन्यो र्वसु रंधयोः ॥ रुद्रेण द्वादशी  
 युक्ता चतुर्दश्या तु पूरणिमा ॥ अति पदाप्यमावास्यातिथ्योऽर्धुगं महाफलम् ॥ व्यस्तमेतन्  
 महादोषं प्रवदंति मनीषिणः ॥ इति ॥ युगमं द्वितीया अग्निहृतीया युगं चतुर्थी भूतं पंचमी  
 षट्षष्ठी मुनिः सप्तमी वसुष्टमी रंधं नवमी रुद्रेकादशी नन्वत्र वाक्येषु शुक्लपक्षे एव कथं  
 पदस्य ते तदुच्यते ॥ चतुर्दश्या च पूरणिमिति प्रतिपदमावास्यायेति ॥ उभयोः साहचर्या च  
 एतयोस्तुल्यपक्षे असंभवात् ॥ देशस्येकादशी युता नवमी युता वा कार्या ॥ संपूर्णदश

भक्तादौ विराधस्तत्र ग्राथम्यादेक भक्तकार्यम् ॥ नर्तकं तु परेषु स्ततिथी गणकार्त्तकार्यम् ॥  
 समकाली न विरुद्धतादौ त्वेकम् स्वयं कृत्वा न्यङ्गार्थादिना कारयेदिति माधवः ॥ यत्र तु  
 शिवरात्र्यादौ त्रिधिमध्ये पाण्णया हि भोजनं प्राप्तं ॥ भूताद्यभ्योर्दिवा भुक्ता रात्रौ भुक्ता च  
 पूर्वाणि ॥ एकादश्यां दिवा रात्रौ भुक्ता चांदायणं चरेत् ॥ इति तन्निषेधश्च तत्र परया वेध-  
 त्वा हि वैव भोजनम् ॥ निषेधस्तु रागप्राप्तं भोजनं विषयः ॥ एवमष्टम्यादि नर्तकवर्तिसंज्ञा-  
 त्यादौ रवौ संकष्टचतुर्थ्यां च रात्रौ भोजनम् ॥ यत्र त्वष्टम्यादौ तु दिवा भुज्जि निषेधः ॥ सं-  
 क्रमे च रात्र्या निति निषेधद्वयम् ॥ तत्रोपवासस्वकार्यः ॥ यद्यपि पुत्रिणां उपवासोऽ-  
 पि निन्दः ॥ तथाप्युपवासनिषेधेऽपि किंचिद्ब्रह्मं प्रकल्पयेत् ॥ इति वचनात् ॥ किंचि-  
 द्ब्रह्मयित्वोपवासः कार्यः ॥ चांदायणमध्ये एकादश्यादौ तु भोजनमेव कार्यम् ॥ चां-  
 दायणस्य कान्ध्वत्वेन नित्यवाधकत्वात् ॥ अत्राधेन गत्यं तस्य संभवाच्च एकादश्यामेका-  
 न्तरेपवासादिपाण्णयां जलपाणं कृत्वोपवसेत् ॥ अपोवा अस्मितमनसितं चेति श्रुतेः ॥

विधि व्यवस्था माह ॥ गर्गः ॥ विधिः पूज्यतिथौ तत्र निषेधः काल के इति ॥ पूज्यत्वं च क  
 स्मीनुद्यानयोग्यत्वम् ॥ एवं च खंडतिथौ पूज्यत्वं निर्णयं यदा तु भगवास्याद्वितीय-  
 याच प्रतिप्रदोर्द्योगस्तदा मासु तैव ग्राह्या ॥ बहुकनिगमे ॥ युग्माग्निपुगाभूतानां पराश  
 न्योर्वसुर्धयोः ॥ रुद्रेण द्वादशी युक्ता चतुर्दश्या तु पूर्णिमा ॥ प्रतिपद्यप्यमावास्या  
 तिथ्योर्द्युयमं न ह्यफलम् ॥ अत्र पूर्वतिथिस्तु उत्तरविद्धेव च नरा तु पूर्वविद्धेव ॥ चैत्र  
 कृष्ण प्रतिपदि वसंतरंभः ॥ तत्र चैत्र कृष्ण प्रतिपदि पूर्वविद्धायां विभूति वंदनादि कर्म्म  
 कर्त्तव्यं ॥ होलिकानंतरत्वेनैव ॥ होलिका समीपं गत्वा तद्भस्म गृहीत्वा ॥ षडनीयोगं भ  
 ज ॥ ॐ वंदितासि सुरेदेरा ब्रह्मराणा प्रकरेण च ॥ अतस्त्वन्धारयिष्यामि ॥ सविभूते कृतिदा  
 भव ॥ सर्वदनमात्रमुकुलं च प्राप्नीयात् ॥ गोमयोपलिप्ते श्रुचौ देशे कृतस्तत्पु-  
 द्नः ॥ आश्विनमंत्रः ॥ आश्वमन्त्रं वसुतस्य चाकंदकुसुमं तव ॥ सर्वदनं पिचाभ्यद्य सर्व  
 कामार्थसिद्धये ॥ चैत्रशुक्ल प्रतिपदि वत्सरंभः ॥ सा चौरदय व्यापिनी ॥ यथा चैत्रमासि जग

सर्वे नी काय्या पूर्व्या परया यवा ॥ युक्ता नृधिता यस्माद्यत स्मा सर्वतो मुरवीति ॥ पुराण स-

४७ सुत्रये ॥ संपूर्णा दृष्टानी काय्या भिलिता पूर्व्या यवेति ॥ तिथेः क्षयवृद्धिभ्यां पूज्यतामाह ॥ त्रिमु-

हूर्त्वाधिकर्तव्या याति थि च वृद्धि गामिनी ॥ परमुहूर्त्वाधिकर्तव्या याति थिः क्षय गामिनी

॥ वृद्धि गामिनी स्त्रत्या क्षय गामिनी महती पूज्यतेति ॥ ब्रह्मवैवर्तेऽपि ॥ तिथि द्वासादिभ्यो

रमानां वृद्धि द्वासा विधी तथा ॥ ज्ञात द्वाह विभागो न विज्ञातव्यो व्यवस्थिगोऽपि ॥ अत-

श्च तिथि क्षय वृद्धिभ्यां पूज्य तथा ज्ञातदि कं कर्तव्यमिति दिक् ॥ अथ प्रतिपदादि विशेष

तिथि निर्णयः ॥ विप्रतिपन्नानां वाक्यानां परस्पर विरोध परिहारे निरूप्यः ॥ यदुक्तं ॥ तत्वे-

विप्रतिपन्नानां वाक्यानामिति तेतरस् ॥ विरोध परिहारेऽतल्य निरूप्य दर्शनम् ॥ अथा

है प्रतिपत्तिर्लभ्यते ॥ सा च यदि सूर्योदये मारभ्य पुनरुदयं प्रयन्ति भवति तदा सा संपूर्-

ण्यया चि संदेहं काय्या ह ॥ नृदुक्तं स्नाने ॥ इति पंचमोऽध्यायः सर्वाहुर्दया सोदया इवेः ॥

संपूर्णा इति विख्याता हरि वासर वर्जिताः ॥ हरि वासरः स्यात्पर्यंतं द्योतिषो नृविधिनि-

४७

४७

शिर्षे च पूर्वयुतैव कार्या ॥ तत्र देवलः ॥ पूर्वविद्देवकतं व्याधिवरात्रवलद्विजम् ॥ अथ देव  
 क्तैः ॥ देवलैः पि ॥ प्रतिपद्वर्षा संयोगे श्रीजनतु गवां मतम् ॥ परविद्देवयुयः कुर्व्यात्पुनरा  
 धनदायमिति ॥ पुराणसम्बन्धेऽपि ॥ गवां श्रीवादिने यत्र रात्रौ दृश्यंत चंद्रभाः ॥ सोमो रा  
 त्रा पशून् हन्ति सुरभी पूजकोस्तथा ॥ तत्रैव वार्षिकजयपराजयहेतुत्वेन द्यूतं कार्यम्  
 ॥ स्कादेयथा ॥ प्रातर्गोवर्द्धनः पूज्यो द्यूतं चापि संमाचरेत् ॥ ज्ञात्वा ॥ प्रतिपदि जयो यस्य  
 तस्य संवत्सरे जयः ॥ अतो वर्षपरोक्षार्थद्यूतं चैव समाचरेत् ॥ गोपूजा मंत्रास्तु ॥ श्रीगोव  
 र्द्धनधराधारगोकुलत्राणाकारक ॥ बहुबाहुकतच्छायगवां कोटिप्रदो भव ॥ लक्ष्मी  
 द्यां लोकपालानां धेनुक्षेत्रा संस्थिता ॥ द्यूतं बहुति यज्ञार्थे मम पापं व्यपो हतु ॥  
 अग्रतस्सन्तु भेगा गो गवो मे सन्तु पूरुतः ॥ गवो मे हृदये सन्तु गवां मध्ये वसा अग्रहम्  
 ॥ अत्रैवा पराहे ॥ कुशकाशा निर्मितमार्गपाली पूर्वस्यां ग्रामतस्तत इहसादिद्युनिव  
 द्य सर्वे वार्तास्तस्यास्तले स्थेयुः ॥ तदुक्तं स्कादे ॥ ततोऽपराह्णसमये पूर्वस्यादि



द्वह्नाससर्ज्जं प्रथमे हनि ॥ शुक्लपक्षे समं तु तदा सूर्यो द्ये सति ॥ दिनद्वये व्याप्ता व्या-  
 ३६ हो पूर्वैव ॥ चण्डिकासर्जने तु भ्रमा युक्तैव ॥ तदुक्तं कालिकाप्रणणे ॥ भ्रमा युक्तै वसें ग्राह्या भ्र-  
 ति पञ्चद्विकासर्जने ॥ ज्येष्ठशुक्लश्रुतिपदिष्टप्रहरणं ॥ भाद्रशुक्लश्रुतिपदिष्टि वन्नतं तदेव भोजनं व्रत-  
 म् ॥ यदुक्तं ब्रह्मवैवर्ते ॥ रुद्र व्रतेषु सर्वेषु कर्तव्या समसुखी तिथिः ॥ श्रिं वन्न तदेव भोजनं व्रत-  
 एना रंभः ॥ सा च पूर्वार्धे पूजयेच्छिवाम् ॥ भ्रज कर्म काल व्यापिन्येव तिथिर्गृह्यते ॥ क-  
 र्मणो यस्य यः कालस्तत्काल व्यापिनी तिथिरित्युक्तेः ॥ भ्रज शुक्लश्रुति पदपूर्वैवोपो-  
 व्या ॥ त्रिं सुहृती न्यूनत्वेऽपि पूर्वैश्चैव युग्मवाक्यात् ॥ प्रातरावाहयेद्देवी प्रातरैव विस-  
 र्जयेत् ॥ भ्रज सति संभवे श्रुति पत् ॥ आदिनाडी षोडशकं त्यक्त्वा कलशः स्थाप्यः ॥  
 आद्याः षोडश नाड्यस्तु लब्धा यः पूजयेच्छिवाम् ॥ कलशं स्थापनं तत्र हारिदं जायते ध्रु-  
 वम् ॥ देवीपुण्योक्तेः ॥ एतौ तु तान्येवधौ ॥ मास्ये ॥ न रात्रौ स्थापनं कार्थ्यं न च द्रुं भाशि-  
 धे च न भिति ॥ भ्रज कार्तिके शुक्लश्रुति पत् ॥ सा च तिथि वृद्धौ तद्व्य व्यापिनी गोत्री डा हो ह-

अथैव पूर्वयुतैव कार्या ॥ तत्र देवलः ॥ पूर्वविदेव कन्या प्रावरा अवलङ्गनम् ॥ अथ  
क्षेः ॥ देवलैःपि ॥ प्रातिपद्वर्षा संयोगे श्रीजनतु गवां मतम् ॥ परविदेव यः कुर्यात्पुनरा  
धनदाय मिति ॥ पुराण समुच्चयेऽपि ॥ गवां श्रीवादिने यत्र रात्रौ हस्त्यंत चंद्रभाः ॥ सोमोरा

जा पशून्हति सुभी पूजकोस्तथा ॥ तत्रैव चार्थिकजय पराजय हेतुत्वेन दूतं कार्यम्  
॥ स्कांदेयथा ॥ प्रातर्गोवर्द्धनः पूज्यो दूतं चापि समाचरेत् ॥ ब्राह्मे ॥ प्रातिपदि जयो यस्य  
तस्य संवत्सरं जयः ॥ अतो वर्धपरीक्षार्थं दूतं चैव समाचरेत् ॥ गोपूजां मंत्रास्तु ॥ ॐ गो व  
र्द्धन धराधार गो कुलत्राण कारक ॥ बहुबाहु कवच्छाय गवां कोटि भद्रो भव ॥ लक्ष्मी  
ध्यां लोकपालानां धेनुस्थेण संस्थिता ॥ दूतं वहति यज्ञार्थं मम पापं व्यपोहतु ॥  
अथ तस्सन्तु भेगा वो गावो मे सन्तु पूरुतः ॥ गावो मे हृदये सन्तु गवां मध्ये वसा म्यहम्  
॥ अत्रेवा पराक्षे ॥ कुशकाश निर्मितं मार्गपालीं पूर्वस्यां ग्रामतस्तत हस्तादिषु निव  
ध्य सर्ववर्णास्तस्यास्तले स्थेपुः ॥ तदुक्तं स्कांदे ॥ ततोऽपराह्ण समये पूर्वस्यां दि

सद्भिः भात ॥ मार्गपालीनि वद्भी पाततुं ये स्तंभे ऽथ पादये ॥ कृष्णकाश मयी दिव्या लव-  
 के वर्द्धिभिर्मूर्ति ॥ कृते होमे द्विजेन्द्र सुवशीया न्मार्गपालिकाम् ॥ नमस्कारे ततः शु-  
 र्या न्मंत्रेणा नेन सुव्रतः ॥ ॐ मार्ग पालिनमस्ते स्तु सर्वलोक सुवचरे ॥ विधेयैः पु-  
 नरायणैः पुनरेहि व्रतस्य मे ॥ इति पूज्यनी राजनमपि कृत्वा ॥ चतुर्वर्णा स्तां समुत्सं-  
 द्वेयुः ॥ स्कंदे ॥ मार्गपाली समुत्संध्यनी रुजःस्युः सुत्वा न्विताः ॥ अथ तत्रैव दृष्टि का कर्ष-  
 णमपि काव्यं मे ॥ तदुक्तमादित्य श्रुणु ॥ कृष्णकाश मयी कुर्व्यान्कृष्णकाश मयी दृढाम् ॥  
 नवांगारिकेनो राजा हीनवर्णा स्तथा न्यतः ॥ गृहीत्वा कर्षयेद्युत्ता यथा सारं मुहुर्मु-  
 हुः ॥ जयो ऽत्र हीनजातीनां द्वेयो राज्ञस्तु वत्संरात् ॥ जय चिन्ह सिद्धं राजा वि-  
 दधीत प्रयत्नतः ॥ अत्रैव राजा स्वयं ह स्थातः ॥ वक्ष्यमाणा लक्षणां वलिपंचरंग के-  
 रातिरव्यस परिवारः ॥ योऽप्योपचारै र्वलिं पूजयित्वा नवीत्यर्थं यथा प्राप्तिर-  
 नं वाट्यं ॥ तद्दानमक्षय फलं भवति ॥ अन्येऽपि स्वस्तु गृहे तं हुतैः प्रायश्चाया-

वल्लिमातिरव्य पूजयेद्युः ॥ तथा च स्फादे ॥ यद्दस्यां दीयते दानं स्व रूपं वा यो दि वा बद्ध  
 ४३३ ॥ तद्दस्यां भवेत्सर्वो विस्त्रोः प्रीति कां परम् ॥ अन्य मासि प्रति पत्सु व्रतादि विभे-  
 द्यो न प्राप्ति सद्दः ॥ यदि कश्चित्स्यात् तदा पूर्वं विज्ञाया मेव कार्यं मे वेति सिद्धान्तः  
 इति प्रति पत्ति सविः ॥ अथ द्वितीया निर्णीयते ॥ द्वितीयाति विरुप वा सा दिष्टु ततीया यु-  
 नैव संग्रहा ॥ युनस वाच्यात् ॥ तत्र चैव शुक्ल द्वितीयायां ॥ यमा पूजा शिव पूजा बहिर्पू-  
 जा च कार्य्या ॥ तदुक्तं भावि व्योहरे ॥ चैत्रं शुक्ल द्वितीयाया सुभा पूज्या फलार्थिभिः ॥ शिव  
 पूजाभि पूजा च कर्तव्या मुनि सत्तम ॥ इति चैत्र द्वितीया ॥ अथ आ वणादि कल द्वितीया सु च  
 तुर्व ॥ अथ पूज्य व्रत मसा पूर्वं कल्ला कृष्णी दह तल्ला सा वित्री वद धेत की ॥ कामात्रयो द-  
 शी रंशा रपो व्या पर्व संयुता ॥ दह तल्ला अथ पूज्य प्रायश्चा द्वितीया ॥ इति संवर्गोक्तिः का-  
 तिक शुक्ल द्वितीया दम द्वितीया ॥ साऽपरा न्द व्या पिनी ॥ अस्यां य शुभा रंजानं कल्ला य  
 मं पूजये त्तर्था ये च ॥ अग्निनी मि र्था तरे भोजनी वाः ॥ अग्नि न्यश्च दल्ला लंकारादिभिः

सत्कार्याः ॥ तथा च खांदे ॥ ऊर्जं शुक्ल द्वितीयाद्या म परान्हे ऽर्चयेद्यमसु ॥ स्नानं कृ-  
 त्वाभानुजायो यम लोकं न पश्यति ॥ तर्पणं च ॥ यज्ञोपवीतिनाकार्यं प्राचीनावीति-  
 नाथवा ॥ देवत्वं च पितृत्वं च यमस्यैव द्विरूपता ॥ कान्तिके शुक्ल पक्षस्य द्वितीयाद्यां  
 तु नाराद ॥ यमो यस्मिन् यापूर्वं पूजितस्त्वगृहे ऽर्चितः ॥ अस्यां निजगृहे विप्रनभोक्तव्यं  
 ततो वृधैः ॥ स्नेहेन भगिनी हस्ताब्जोक्तव्यं पुष्टिर्वर्द्धनम् ॥ दानानि च भेदेयानि भगिनी  
 भ्यां विधानवित् ॥ सर्वाभगिन्यस्तं पूज्याः अभविप्रतिपन्नकम् ॥ इति पन्नकाः कृत्रिमाः  
 ॥ अस्यां च भगिनी भिर्भानुरग्युर्वृद्धये चिरजीविनः पूजाकार्याः ॥ ते च ॥ अथ चत्वारः  
 मावलिर्व्यसो हनूमाश्च विभीषणः ॥ कथं परशुरामश्च सप्तैते चिरजीविनः ॥ इमा-  
 न्पूज्यन्नातु राशिं वं प्रार्थयेत् ॥ इति यमद्वितीयाः ॥ पक्षद्वयगता सुचतुर्विंशति संख्या-  
 खपिहितप्राप्तु सर्वोपचारैर्व्रक्षा पूज्यः ॥ इति द्वितीयां निर्णयः ॥ अथ तृतीयां निर्णयते  
 सर्वास्तृतीया रंभा व्यतिरिक्ता चतुर्थी युते व ग्राह्याः ॥ खांदे ॥ द्वितीययानु संयुक्तानव-

तीयाकदाचन ॥ कर्तव्याव्रतिभिस्तानधर्मकामार्थतत्परैः ॥ अस्ववैवर्ते ॥ रंभा-  
 धिक्त्वाचतृतीयांशुनिसन्नम ॥ अन्येषु सर्वकार्येषु गणयुक्ता प्रशस्यते ॥ अथ चैव शुक्ल-  
 तृतीया ॥ आंदोलनाख्या ॥ तत्र प्रंकोरेमांसं पूज्यरात्रोजागराणं दक्षिणा दानमपि का-  
 र्यं ॥ नहुं देवीपुण्ये ॥ तृतीयायां यजेद्देवीं प्रंकोरेण समन्विताम् ॥ सौवर्णी चतुष्पा गो-  
 रीराजतप्रंकोरस्तथा ॥ चतुर्भुजश्च देवोऽसौ द्विभुजापार्वती भवेत् ॥ कुंकुमागर-  
 कर्पूरस्त्रिगांधधूपदीपकैः ॥ संपूज्यांदोलयेत्तत्संश्रितो मानुष्ये सदा ॥ रात्रौ जागरा-  
 कार्यं प्रातर्देवा च दक्षिणा ॥ दयं नन्वादि रधि ॥ इति चैव शुक्लतृतीया अथ वैष्णवशुक्ल-  
 तीयाक्षयतृतीया ॥ सापूर्वाह्णव्यापिनी ॥ नादीये ॥ हे शुक्ले ह्येनया कर्त्तव्यं युगादीकृ-  
 यो विदुः ॥ शुक्ले पूर्वाह्णे कोग्रहा कर्त्तव्यं चैवापरान्हकी ॥ देवीपुण्ये ॥ तृतीयायां तु  
 वैष्णवे रोहिण्यक्षे प्रपूज्य च जलकुंभप्रदानेन शिवलोके महीयते ॥ मंत्रस्तु ॥ एष ध-  
 र्मे धातोदन्नोन्नसि विष्णु शिवात्मकः ॥ अस्य प्रदानाच्छयं तु पितरोऽपि पिता महाः ॥ गं ॥

ॐ धोदक तिलैभिर्भ्रं सान्त्रं कुंभं सदसि एण म् ॥ पितृभ्यस्त्वं प्रहृत्या तिलपितृभ्यामुपनि  
४४ द्यतु ॥ साचेयं पूर्वान् ह व्यापिनी ॥ विष्णुपुराणेऽपि ॥ पानीयमप्यत्र तिलैर्विभिर्भ्रं दद्यात्

तिलभ्यः प्रयत्नो मनुष्यः ॥ श्राद्धं कृतं तेन समाः सहस्रं रहस्यमेतन्मुनयो वदन्ति  
भास्वे ॥ कृतं श्राद्धं विधानेन मन्वादिषु युगादिषु ॥ हाय नानि हि सहस्रं पितृणा  
न्यसिदं भवेत् ॥ गोभिलः ॥ वैष्णवस्य तृतीयांशः पूर्वविद्धं करोति वै ॥ हव्यं देवान  
पृच्छति कव्यं च पितरस्तथा ॥ पूर्वान्हेतुं सदा कार्यां शुक्लामनुयुगादयः ॥ परेतु  
अपरान्हः पितृणां भित्त्यादि वचनां क्प्राद्धविधावपरान्हं व्यापिन्येव ग्राह्या ॥ हे  
शुक्ले दत्त्यादि वाक्यतः ॥ परान्हं शब्दस्तु कुतः पूर्वार्द्धं परः ॥ गोभिल वचनं तु हि  
श्रुद्देशेन क्रियमायानव्याणादि परतया व्याख्येयमित्याहुः ॥ सांचेयं कल्पनान्न  
सतीव भाति ॥ अपरान्हः पितृणां भित्त्यादि वचनस्याक्षयतृतीयातिरिक्त विषय-  
त्वेनापि व्याख्यानसंभवात् ॥ मलमासयोस्तु भयत्र श्राद्धं श्राद्धचंद्रिकायाम् ॥ यो

गादिकं मासिकं च आहं चा पर्याक्षिकं ॥ मन्वादिकं तैर्धिकं च कुप्यान्मास द्वेयेऽपि  
व ॥ अथ पक्षोऽत्र कस्य पक्षो गृह्यते ॥ महालयस्य मले निषेधात् ॥ नारदीये विशेषो  
पि ॥ वैशाखे शुक्लपक्षे तु तृतीया रोहिणीयुता ॥ इक्ष्वाभुयवारोऽसौ मेनेव युता  
यवा ॥ रोहिणी बुधशुक्लापि पूर्वविद्धा विवर्जिता ॥ भक्त्या कृतापि मांभातः हन्ति पु-  
रयं पुरा कृतम् ॥ इत्युक्तं तृतीया ॥ ज्येष्ठशुक्लतृतीया रंभासा ॥ पूर्वाषाढा नुदा हतस्काद-  
वाक्यात् ॥ तथा च भविष्ये ॥ ज्येष्ठशुक्लतृतीयायां पतिपुत्रफलार्थिनी ॥ नारी सूर्यो  
द्वये स्नात्वा सती व्रतपरायणा ॥ तत्र व्रतनियमं गृहीत्वा ॥ चतस्र्यकुंडेषु स्थंडिले-  
षु चाग्नीन्संस्थाप्य मंत्रं च भो भारुकर इति पंचाग्निमध्ये वेदिकायां रंभा स्तंभो पथोभि-  
नोऽपुष्यमेव पिकां कृत्वा तत्र सर्वशक्तिमयी देवी आवाह्य सर्वोपचारोऽर्चोमोऽन्ते नार्चयेत्  
त्रैदशो संपूज्य सूर्यास्तमय पर्यन्तं निश्चेत् ॥ चाक्षणाश्च प्रणवादि नमोऽन्ते मंत्रैः  
सोभाय इत्यादि जुहुयात् ॥ ततो द्विजसं पत्यं च नृप्यां भोजयित्वा यथा ग्राह्या आद्या



कर्तव्यार्थदक्षिणां दत्त्वा गृहमाव्रजेत् ॥ इति भाद्रशुक्ल तृतीया हरितालिका ॥ सा मुहूर्तमा-  
 ष्चिपरेव ॥ मुहूर्तमात्रसत्वेऽपि दिने गोरे व्रतं परेति ॥ माधवः ॥ द्वितीयां श्रेष संयु-  
 क्तां या करोति विमोहिता ॥ सा वैषम्य मवाप्नोति प्रवहंति मनीषिणाः ॥ इत्यापस्तवः ॥  
 आद्या मधुआवणिका कज्जली हरितालिका ॥ चतुर्थी मिश्रिता स्त्रीभिर्दिवान्तं वि-  
 धीयते ॥ तृतीया नभसः शुक्लामधुआवणिका स्युता ॥ भाद्रस्य कज्जली कस्मा शु-  
 क्तानुहरितालिका ॥ इति चोदासीये ॥ तस्यां गोरे शर्हि विधाय संपूज्य गुडापूपनैवेद्यं  
 दद्यात् ॥ भविष्येऽपि ॥ गुडापूपास्तु ता तव्या मासि भाद्रपदे तथा ॥ तृतीया शुक्लपक्षस्य  
 सर्वपापहरा स्युता ॥ माघ शुक्ल तृतीयायां गुडस्य लवणस्य च ॥ दानं श्रेयस्कारं राजन-  
 स्त्रीणां च पुरुषस्य च ॥ गुडेन नुय्यते देवी लवणेन स्वयं शिवः ॥ इतस्तृतीया चतुर्थी  
 युते वेतिसिद्धांतः ॥ इति तृतीया निर्णयः ॥ अथ चतुर्थी निर्णयते ॥ सा चोपवासादिषु गणेशे  
 चतुर्थी कुंड चतुर्थी बहुला चतुर्थी व्रतव्यतिरिक्तेषु पंचमी युते वद्यम वाक्यान् ॥ अथ

केचि चैन शुक्लचतुर्थ्यां ॥ गणेशं लङ्घकादिभिरभ्यर्च्य सर्वान्कामानवाप्नोति ॥ देवीपुण्ये ॥ ग-  
 ४९४ णेशोकारयेत्पूजो लङ्घकादिभिरादरात् ॥ चतुर्थ्यां विघ्ननाशाय सर्वकामसमृद्धये ॥  
 स्त्रीभिर्ज्येष्ठशुक्लचतुर्थ्यामुमा पूज्या ॥ ब्रह्मपुण्ये ॥ ज्येष्ठशुक्लचतुर्थ्यां नृजातापूर्वमु-  
 मासती ॥ तस्मात्सातनसंपूज्यास्त्रीभिस्सोभाय दहद्वये ॥ उपहरैश्च विविधैर्भर्ति नृ-  
 त्योत्सवादिभिः ॥ होमैः पर्यामिर्वस्त्रैश्च पत्रपुष्पैस्सुगंधिभिरिति ॥ आवाणकृत्तचतुर्थी  
 संकष्टचतुर्थी साचंद्रोदयव्यापिनी ॥ स्कंदे ॥ आवाणे वहुले पक्षे चतुर्थ्यां च विभूदये-  
 ॥ तस्मिन्दिने व्रतं कार्त्तिकसंकष्टारव्यं सुरेश्वरि ॥ इति दिनद्वयेतद्याज्ञावध्यासो पूर्वव-  
 मालविज्ञे गणेश्वर इति वाक्यात् ॥ अथ भाद्रशुक्लपदचतुर्थीश्रवण्य ॥ तत्र स्नानदाना-  
 दिकं गणेशपूजनंच ॥ अनंतपुरणपदं सान्निध्याभिव्ये ॥ श्रित्वाष्टं तासुरा राजन् चतु-  
 र्धीत्रिविधा ख्यतेति ॥ भाद्रशुक्ले श्रित्वा नाघे शंता शुक्लचतुर्थिका ॥ भौमवारदु-  
 ता सा चैत्सुखानामप्रकीर्तिता ॥ रविवारदुता सा हि प्रोक्ता महाचतुर्थिका ॥ गणेश-

प्राप्नोतु ॥ पूर्वव चतुर्थी तु लतीयार्था महीप्राप्य फलप्रदा ॥ कर्तव्याप्रतिनिधित्वप्रदा  
 नाथ सुतोषिणीति ॥ गोविंदणीति ॥ नागज्ञतेतु मध्याह्नव्यापिन्त्येव ॥ शुभं मध्याह्नेत्येव  
 तनोपोष्य फली भूतान् ॥ क्षीरेणास्नाप्य पञ्चव्यां पूजयेन्नयतो नरहति ॥ देवलोकेऽभाद्र  
 कालचतुर्थीवह्नासा पूर्वव ॥ भाद्र शुक्ल चतुर्थी मध्याह्न व्यापिनी ॥ पूर्वोक्त मदिने मध्या-  
 ह्न व्याप्ते परैव ॥ मध्याह्ने वह्नस्नाति ॥ चतुर्थी राणा नाथस्य भालविज्ञाप्रदास्यते ॥  
 मध्याह्न व्यापिनी चेत्स्नात पराचेच्च परैरहनि ॥ भाद्र शुक्ल चतुर्थी चन्द्रदर्शने नि-  
 विध्यते ॥ तदाह नार्कयडेयः ॥ भाद्रमासि धिते पक्षे चतुर्थी स्नाति योनिनी ॥ भिष्यमि-  
 ष्यापं कुरुते तस्मात्सपक्षे नतं तदा ॥ प्रभादाह काल होय प्रांतये विष्णुप्राणोक्तं मंत्रं-  
 नयेत् ॥ सिंहः प्रसेन भवधी सिंही व्याप्नवता हतः ॥ सुकुमारि किमारेदी स्तवहोष-  
 स्स्य भनक्तः ॥ माघ शुक्ल चतुर्थी तिलचतुर्थी ॥ सामदेव व्यापिनी ॥ काशी खंडे ॥ माघ शुक्ल  
 चतुर्थी तु नक्त ज्ञात परादयः ॥ देवां दुंदेऽर्चयेत्ति तेऽर्चा स्सुरसुर इहाम् ॥

विधाववादिः कीं याञ्चो चतुर्थी प्राप्य तापसी ॥ शुक्लान्नतिलान्गुडैर्वर्ध्यां प्राप्नीयास्त  
 दुक्कान्चती ॥ तापसी साधीमः ॥ अत्रैव सदा शिवं कुंदं पुष्पैरभ्यर्च्य लक्ष्मीप्राप्नोति ॥  
 क्षीर्मेयम् ॥ कुंभे शुक्लचतुर्थ्यां तु कुंदं पुष्पैः सदा शिवम् ॥ संपूज्य यो हि न तापरी संप्रा-  
 षोति श्रियं नरः ॥ इत्यनेव कुंडं चतुर्थी ॥ माघ मासे तु संक्रान्ते चतुर्थी कुंडं संक्राका ॥ सातु पं-  
 पोद्या सुरभ्येष्ट ततो राज्यं भविष्यति ॥ इति चतुर्थी निर्णयः ॥ अथ पंचमी निर्णयः ॥ सातु पं-  
 चमी चतुर्थी युतेव ग्राह्यो पवासदिद्युः ॥ महाह जावालिः ॥ प्रतिपत्पंचमी चैव उपोष्या  
 ध्वसंयुता ॥ चैत्र शुक्ल पंचम्यां नागान्दृज्य स्तीरादि नैवेद्यं दैयम् ॥ देवीपुण्ये भयि ॥ पं-  
 चम्या पूजयेन्नागान नं ताद्या नमो रगन् ॥ क्षीरं सर्पिणं स्तुनैवेद्यं दैयं सर्वं सुरवा वह-  
 म् ॥ नागस्वस्वमास्त्ये ॥ नागा भ्यैव तु कर्तव्यास्तद्वस्वदेव क धारिणाः ॥ अथ स्तव्या कृति-  
 स्तेषां नाभेरुद्धं तुषोरुषी ॥ फणाश्रमूर्ध्नि कर्तव्या हि जिव्हा वह्नवोऽसमाः ॥ विधमेनि  
 ना वत् ॥ ध्रावणं शुक्ल पंचमी नाग पंचमी ॥ नाग पंचमी सा पर विद्मः ॥ चमत्कारं विंता मरणे ॥

पंचमी नाग पूजायां कार्या यद्यी समन्विता ॥ इति ॥ तस्या मुधि नाग पूजा आदराद्भु-  
 त्क पंचम्यां गोमयेन द्वास्त्यो यथोः पाथ्योः ॥ नानान्विलिख्य ॥ इधि दूर्वा कुण्ड-  
 ल्यैः संपूज्य नाग प्रीतये ब्राह्मणाभ्योजयेत् ॥ तस्य सार्धं भयं न भवति ॥ भवित्ये ॥ इ-  
 शेष फल मन्त्रे धर्मायम् ॥ आदृष्टुक्त पंचमी ऋषि पंचमी ॥ सा च सध्या नृ व्यापिनी ॥ हा-  
 रीतः ॥ पूजा व्रते शु सर्वेषु मध्याह्न व्यापिनी सिधिः ॥ वैही सभ्य कर्तुर्वीत गोमये चो-  
 पलेषिताम् ॥ रंगा बलि समा युक्तां नाना पुष्प समन्विताम् ॥ तत्र मत्त नदधीन हि व्या-  
 भक्ति युक्तः प्रपूजयेत् ॥ अर्थं च दद्यात् ॥ तत्र मंत्रः कस्य पोऽत्रिभर्त्तृ राज्ञो सिद्धा नि-  
 चोऽथ गोतमः ॥ द्यम दमिन र्वशिष्ट द्यमसे ते ऋषयः स्मृताः ॥ मत्त नदधीन पूज्या द्वा-  
 र्भस्युत्पन्न प्राजा हरेणो पोष्य मत्त वयसिण व्रत माचरेत् ॥ सर्व पाप विनिर्मुक्तः ॥  
 सर्वा न्का मानवाप्नोति ॥ अथाग्नि शुक्ल पंचमी ॥ तत्र नागां कुण्ड मय मिद्राणी सहितं दृ-  
 तादिभिः स्नापयित्वा संपूज्य नैवेद्यं दद्यात् ॥ तथा च भवित्ये ॥ तथा चाप्येव पूजे मा-

पञ्चम्यां कुरु नंदनं कृत्वा कुशं मयं नागा मिद्राया सह पूजयेत् ॥ घर्तोरुकेन प्रयसात् ॥  
 पयित्वा विष्णोपते ॥ गोधूमैः पयसा क्षिप्तैः भक्षैश्च विविधैस्तथा ॥ पूजयेत्कुरुर्गृह्यत  
 स्यां प्रोषादयो नृप ॥ नागाः श्रीना भवंतीह प्रणति माप्नोति वै प्रभो ॥ इति एमाय शुक्लपंचमी  
 श्रीपंचमी स्तुच्यते ॥ तत्र च महान पूजा ॥ वसंतोत्सवश्च ॥ तदेव ब्रह्मण समुच्चये ॥ साय मसि नृप  
 श्रेष्ठ भुक्त्वा पां पंचमी तिथौ ॥ एति कौमोतु संपूज्य कर्तव्य स्सु महोत्सवः ॥ दानानि च भ्र-  
 देयानि तेन तु ध्याति कायवः ॥ इति वसंत पंचमी ॥ पक्ष इत्य गता सु सर्वासु पंचमी चू ति-  
 थि पति त्वेन नागा एव पूज्याः ॥ इति पंचमी निरुपयः ॥ अथ यक्षी निर्मायते ॥ सा तु स्कंद त्र-  
 ता दन्यत्र पौरव युग्म वाक्यात् ॥ अतः सप्तमी विद्मैव ॥ तथा च बृहस्पतिः ॥ नागा विद्वां  
 तूयां यक्षी मुपेय्यंती ह मा नवाः ॥ इति श्रेष्ठेय स्स संतानं तेषां नश्यति पूर्वजैः ॥ अतः  
 नागा विद्वान कर्तव्या यक्षी चैव कदा चन ॥ अत्र षण्मुहूर्तात्स को वेधः ॥ नागो द्वादश  
 नाडी भिर्द्वेष्य च्युता इति धिम् ॥ तेन षण्मुहूर्तं न्यून पंचमी योरो दूर्ध्वैव ॥ आधाद शुक्ल-

सर्ग

४२०

पयसीमापूर्वा ॥ लक्ष्मि ॥ कृष्णाषष्ठीस्कन्दपयसीप्रिवणानिप्रसन्नतुर्हृषी ॥ एताःपूर्वयु-

४२० वाःकाय्यासिध्यन्तेपारणंभवेदिति ॥ अत्रपंचम्याम्भुषोव्यकुमारःपूज्यः ॥ तथावारहे-

॥ आघातेपुष्कपयसीतुतिधिःकोमारिलास्मृता ॥ कुमारमूर्चयेतत्र्योषोव्यपूर्वतुपं-

चमीम् ॥ यमेवसूर्ययक्ष ॥ अत्रलंतात्वाभास्करपूज्यमयंप्राप्यमहाफलंभाष्यते ॥

शुक्लेभारपदेवद्योत्पानंभास्करपूज्यम् ॥ प्राशनं पंचगव्यस्यअभ्यभिषेकफलप्रदमिति ॥

॥ आदप्रदषष्ठीकृष्णाकपिला ॥ भोमेरोहिणीव्यतीपातयोगानुका ॥ तत्रभास्करपूज्यपि-

त्वाविप्रायकपिलांरक्षात् ॥ अणममृचये ॥ आदमासिसितेपक्षेभान्जोचैवकरेस्थिते

॥ पातयुचैवरोहिण्यांसाषष्ठीकपिलाभवेदिति ॥ आदकृष्णाषष्ठीचंद्रमासेनेत्यर्थः

॥ भारकृष्णाषष्ठीचंद्रपयसी ॥ साचंद्रोदयव्यापिनीगच्छा ॥ उभयत्रचंद्रोदयव्यापि-

न्यापूर्वविह्व ॥ यद्वक्तं ॥ तद्वद्भाद्रपदेमासिषष्ठ्यांपक्षेस्थितेनरे ॥ चंद्रपयसीव्रतंकुम्भ-

वपूर्वविधःप्रशस्यते ॥ चंद्रोदयेयदाषष्ठीपूर्वाहेचापरेहति ॥ चंद्रपयसीप्रितेपक्षे

४२०

संधिः सेवो पोष्या प्रयत्नत इति ॥ सैव ह्यपथी ॥ सा सप्तमी युतेति दिवो दासः ॥ न्यायां भवनं शु-  
 ३२ लं पंचम्यां देव्याः स्नापि तयाः ॥ सप्तम्यां पूजार्थं षष्ठ्यां । अथेष्टा नक्षत्रयुक्ताया वस-  
 भदे केवलाद्यां दृष्टानि मंत्राणं कार्यं यद् ॥ तत्राप्यंमंत्रः ॥ ॐ एवणास्य वधायावि एवस्या  
 नुग्रहभ्यन्व ॥ अकाले ब्रह्मणा वेधो देव्या स्वयि ततः पुरा ॥ श्रीशैलप्रियरेखातः  
 श्रीफलप्रीनिके तन ॥ तेन व्योम सुभगा गच्छ पूज्यो दुर्गा स्वरूपतः ॥ इति ॥ अथ कार्ति-  
 कं ब्रह्म पथी ॥ तत्र भौम युतायां वन्हिं संपूज्य वन्हि महो त्सवं कार्यं म् ॥ तदेव मात्स्ये  
 दृष्टि कार्के शुक्ल पथी भौम वारेणा संयुक्ता ॥ ब्रह्म पथी तु सात्रीका सर्व प्राय हरति धिः  
 तस्यां स्वपिति वै वन्हिः पूर्वतो पोष्य वै दिने ॥ पथ्यां वन्हिं सम अभ्यर्च्य कुर्याद् दान्ति  
 महोत्सवम् ॥ इति । दृष्टि कार्के कार्ति के मासीति कालादर्शः ॥ अथ मार्गप्रिय शुक्ल प-  
 थी ॥ तस्यां तारकं स्कंदो हतवान् ॥ अतः स्कंदं संपूज्य दानादि कृत भक्षयं भवति ॥  
 भविष्ये ऽपि ॥ येयं मार्ग प्रिये शासि पथी भगवत सत्तम ॥ पुण्ये पापहर एव न्या प्रिये वा-



प्रांता गुरु विद्या ॥ खान दानादि कं कर्म तस्या भक्ष्य मस्तुने ॥ द्वाविष्य निर्वयः ॥ अथ  
 सप्तमी निर्णयते ॥ सप्तमी पक्षी युते चोपवासदिषु ग्रह्या ॥ युग्म चाक्यात् ॥ भविष्ये ॥ पक्षी  
 समेता कर्तव्या सप्तमी नाटमी युता ॥ पतंगो पासनाथेह पक्ष्या मादुरूपोषणम् ॥ पतं  
 गः सूर्यः ॥ पुराणोत्तरं वि ॥ पक्ष्याश्चैक कलायन्नतन्न संनिहि तोरविः ॥ तन्न क्रतु प्रातं पु  
 रय मष्टभ्यां पाशो न च ॥ पक्षी च सप्तमी चैव एतन्नि शेषे पदाष्टमी ॥ त्रिष्टया नाम  
 सा द्वेष्टा त्रिष्टयैका दशो यथा ॥ पूर्व विद्वैव कर्तव्या सप्तमी त्रिष्टयि चर्तु रे रि  
 ति ॥ अतः सप्तमी पक्षी युते चेति सिद्धांतः ॥ अथ चैत्र शुक्ल सप्तमी सूर्य पूजा ॥ दंसन कारि  
 षिः काट्या ॥ देवी पुराणे ॥ भास्करस्य तु सप्तम्यां पूजां दंसन कारि षिः ॥ कत्वा प्राप्नो  
 ति भोगा दीप्तिगता रिर्म्महा तयाः ॥ वैष्णव शुक्ल सप्तम्यां ॥ गंगा पूजोक्ता ॥ तथा च ब्रह्मे वैष्ण  
 रवे शुक्ल सप्तम्यां जङ्गना जाल्दी स्वयम् ॥ क्रोधात्पीता पुन स्वयत्ता कर्णै रंध्रा न्मुद हिरणात्  
 ॥ तालन पूजे ये देवी गंगा गगन केवल्ला भिति ॥ इयं पूर्वोक्त व्यापिनी ॥ अत्रैव निवससु मी

सिद्धं कुर्यात् ॥ भवित्येऽपि ॥ तृतीयां सप्तमीं वीरं तच्छृणुष्व प्रतोमम ॥ निंव पत्रैः स्तुता-  
 यानु पापघ्नी शोक नाशिनी ॥ अथाष्टमं शुक्लसप्तमी ॥ तत्र सूर्यं वर्तुलं मङ्गलैरुक्तं गंधधु-  
 व्यादिभिः पूज्य नैवेद्यादीनय्ययेत् ॥ वरुणं वक्राहं शृणो ॥ अथाष्टमं शुक्लसप्तम्यां विवस्वाभ्या-  
 मभास्कारः ॥ जातः पूर्वा सुतस्मान्नो तन्नो पोष्य यजे तमदा ॥ एष चक्रा कर्तौ रस्ये मङ्गलैस्तत्रा-  
 मदम् ॥ मरुदे र्भोज्येस्तथा येयैः पुष्ट्यैर्द्वैपिलिपेनेरिति ॥ अथाश्विनशुक्लसप्तमी ॥ देवी पूजा-  
 यां परशुता गाहा ॥ तथाच भवित्ये ॥ युगाद्या चर्यच्छिष्टसप्तमी पार्वतीप्रिया ॥ एवेत्यस्त्री  
 क्षन्तेन तासु तिथि शुभशता ॥ चर्यच्छिष्टे र्जन्म तिथिः ॥ अत्रैव मूल युक्तायां केवलयायां चापं  
 चर्यां स्नाथिनां देवीं वित्वादितिभिः पूजयेत् ॥ अत्रैव पुस्तकं स्थापनं मुक्तम् ॥ मूलं तद्वह्नि-  
 सुगंधीश पूजनीया सरस्वती ॥ पूजयेत्सत्यहं देवया वह्निस्तव मृदुसकम् ॥ नाध्यापयेन्न्य-  
 लितवे न्नाधीयात् कदाचन ॥ पुस्तके स्थापिते देवि विद्या कामो द्विजोत्तम ॥ इति ॥ मार्गशु-  
 क्लसप्तमी मित्रसप्तमी ॥ तत्र पूर्व दिने उषोष्य कृतवपनः स्नात्वा ॥ रविं संपूज्य ॥ पश्चाद्भास्व-

४६। एतन्मो जयेत् ॥ स्वयं सप्तम्यामष्टम्यां च मधुस्तु तमिष्टान् भुज्जीत ॥ अथ नाथ शुक्लं सप्तम्यर्चनम् ॥  
 ४७ ॥ अस्यां रत्नान् प्रलं महदिति विस्तृक्तेः । सैवा चला सप्तमी ॥ जयेती च ॥ तद्वत् भविष्ये ॥ माघ  
 स्य शुक्ल पक्षे तु सप्तमी या त्रिलोचन ॥ जयंती नाम सा श्री कौ सर्व प्राप ह्यतिथि रिति ॥  
 रवति चंद्रिकाया मधि ॥ सूर्यग्रहा तुल्या च शुक्लं माघस्य सप्तमी ॥ अरुणोदय वेलायां  
 न रत्नानं मह फलम् ॥ अस्यामेव सूर्य पूजा ॥ माघे मासि खिते पक्षे सप्तमी कोटि भास्करा  
 दुर्ग्या त्रिजाला धि दानाभ्यामायुशो गय संपदः ॥ इति अर्घ्यहन मन्त्रश्च ॥ यद्यज्जन्म कृतं  
 प्रापं मया जन्म सु सप्तम् ॥ तन्मे रोगं च श्लोकं च भास्करा हंतु सप्तमी ॥ इत्यमेव पुन्यमभं  
 स्तत्रेण यदि वारेण च युक्ता महती ॥ तत्र सूर्य मर्चयेत् ॥ तस्य हं गर्भः ॥ एविवारेण युक्तायां  
 सप्तम्या मुत्तम्यते ॥ पुनश्च ध्येय न क्षत्रे पूजयेच्च दिवा कारम् ॥ पुनश्च नक्षत्राणि गोपेणोक्तानि  
 ॥ पुनश्च नक्षत्राणां बाहो तिव्यो हस्त पुनर्वसु ॥ मूलं मीढ पदं चानुराधा मृगशिरा श्रिनि  
 अत्र गंगा रत्नानि फलाधि कयम् ॥ तथा च मात्से ॥ अरुणोदय वेलायां शुक्लं माघस्य सप्तमीम् ॥ ४८४

नंयायां यदि लभ्येत सूर्यः पर्वणताविका ॥ अन्यत्रापि ॥ सोमवारं त्वमावास्या भानुद्वारं  
 च सप्तमी शृंगारद्वारे प्रासा चतुर्दशी वा चतुर्दशी ॥ षष्ठिवर्षसहस्राणि तत्कक्षी लभ  
 ते फलम् ॥ षष्ठी च सप्तमी योगे चार्य्ये शुभालिनः ॥ योगोऽयं प्रयुक्तो नाम सहस्रा  
 र्कभूते त्सम ॥ इति ॥ इति सप्तमी निर्णयः ॥ अष्टमी निर्णयते ॥ साहस्रा पूर्वा शुक्लपरा  
 शुक्लपक्षे अष्टमी चैव शुक्लपक्षे चतुर्दशी ॥ पूर्वादिहानकर्तव्या कर्तव्या परसंयुतेति नैय  
 मन् ॥ कृष्णपक्षे इष्टमी चैव कृष्णपक्षे चतुर्दशी ॥ पूर्वादिहैव कर्तव्या परविज्ञानकुत्रचि  
 त् ॥ इति भाष्ये ॥ उक्तं वनादन्येषु सप्तमी युते वेत्यविरुधः ॥ ब्रह्मपुराणे ॥ अष्टम्या नव  
 मी युक्ता नवम्या चाष्टमी युता ॥ अर्द्धनारीश्वरशायाममा माहिषरी त्रिभिः ॥ अष्टम्यां  
 प्राप्यते रुद्रानवम्यां प्राप्तिरुच्यते ॥ इत्योद्योगे तु संज्ञाते प्रजायां तु महाफलम् ॥  
 अथ चैत्रशुक्लष्टमी क्षणोकाष्टमी ॥ तस्यां पुनर्वसु युतायामप्रोकाशे कलिकाः प्राप्स्य  
 ॥ तद्वह्निं गुराणे ॥ क्षणो क कलिकाप्राशे चोपिवर्ति पुनर्वसो ॥ चैत्रे मासि सिताष्ट-

১৫

स्यान्ते श्लोकमवाहयद्वयसिद्धिः ॥ आश्विनमंत्रः ॥ त्वामग्नौ कनारमिह मयमास समस्त ॥

三

पिवाभिः शोके संतप्तो भाम शोके सदा दूर ॥ दानदेव्या महा पूजा पि काव्या ॥ नदं कं भर्क  
खेये ॥ प्रादल्काले महा पूजा क्रियते या ज्ञानाभिनि ॥ नदं कं भर्क

शुक्लमिति पदक्रमादृष्टमी पर्यंतं त्रीयमार्गाद्भूजाविधीयते ॥ अतश्च प्रारहसंतयोस्तु  
त्यएवदुर्गोत्सवः कार्यः ॥ अथैषात्तद्वत्प्रवृत्तिः ॥ तस्याद्युपेक्षितः आक्षेपलरसनरना  
त्वाद्यप्रारब्धा देवीमांसी चालक दारिणि रक्षापथेत् ॥ पुनः शार्करक्षीर नैवेद्यं दत्वा आ  
स्तरांस्तुभारौ भोजयित्वा पारणां कुर्यात् ॥ देवीपूजणे ॥ सहकारफलैः रत्ना नैवेद्याश्च  
सहमीहिने ॥ आत्मनो देवतां रत्नाय्यमासी चालक वासिभिः ॥ तेषां फलकव्यां रत्नं  
चैव प्रदापयेत् ॥ शार्करक्षीर नैवेद्यं कन्याविप्रसुभोजनम् ॥ आत्मनः पारणां तद्वद  
क्षिणां शक्तितो ददेत् ॥ सर्वतीर्थान्निवेकं स्रजनेनाहोतिभार्गव ॥ इति अथ ज्येष्ठ  
शुक्लवर्गी ॥ तत्र शुक्ला देवी पूजयेत् ॥ तद्वत्तं चक्षुः ॥ शुक्लावस्थां पुरा जाता शुक्ला दे

一

क्षी दी महा प्राणा ॥ तथाप्य दान वेदाणां शुक्ल पक्षे ततो यजेदिति ॥ अथा पाद शुक्लायमी ॥ त-  
 ओषोषिपुनः ॥ हरिद्रा तोयेन रक्तात्वा महिषमी नाक्षी देवी ते नैव स्वापयित्वा ॥ पूजा का-  
 र्या ॥ यदुक्तं देवीपुण्ये ॥ अष्टभ्यां च यदा यादे निष्ठा तोयेन मानवाः ॥ स्वयं स्वात्वा च-  
 कथ्युर् प्रचंदने स्तां विलेपयेत् ॥ धूप चंदन कथ्युर् वैलर्कैः श्रित सिल्हर्कैः ॥ भक्ष्यां  
 अथ शर्करा पूर्णान् प्राण कानि शुभा निच ॥ सापयेत्कन्यका विभ्र भोजनं चात्मन-  
 स्तथा ॥ शक्तितो दक्षिणां दद्यात् महिषमीं च कीर्तयेत् ॥ दीप भाला कृते नैव सर्वा-  
 न्कामा अभ्युच्छति ॥ अथ भाद्र कृत्वायमी ॥ साहिधा अष्टमी जयंती च ॥ सा चार्द्र रात्र-  
 व्यापिनी ॥ विबुधर्म्मांजे ॥ रोहिणी सहिता हस्ता मासि भाद्र परे ऽष्टमी ॥ सप्तम्या भर्द्र-  
 रात्रा धः कलया पियदा भवेत् ॥ अत्र जातो जगन्नाथः कोत्तु भी हरि शेष्वरः ॥ तमेवो-  
 पवसेत्कालं सत्र कुर्याच्च पारणाम् ॥ अर्द्ध रात्रे त्रयो गोऽयं तत्पत्युदये सति ॥ वशिष्ठोऽ-  
 पि ॥ अष्टमी रोहिणी शुक्ला निष्यद्धे हष्यते यदि ॥ मुख्य कालं स्वविद्येषु स्तत्र जातो हरि-

स्वयमिति ॥ एवं च भूयो भूयो धुरेव वा निशीथ व्याप्तौ कर्म काल व्याप्ता व्याप्तौ सैव ॥ द्विन ह्येव व्या-  
प्ता व्याप्तौ तु परेव ॥ संकल्प काले सत्त्वाधिव्याप्त ॥ ब्रह्मवेवर्तेऽपि ॥ वर्जनीया प्रयत्नेन सप्त-  
मी सहिताष्टमीति ॥ एवं रोहिण्यापि ॥ यदि पूर्वधुरेव निशीथ योगस्तदा सैवोद्यो व्या ॥ का-  
र्यो विद्यापि सप्तम्या रोहिण्या सहिताष्टमीति पाच्यात् ॥ इति मयूखादिभ्यः ॥ वयं त्वालो-  
चयामः ॥ सप्तमी चिह्ना सर्वथैव वर्जनी प्रयोजिका ॥ वर्जनीया प्रयत्नेनैतु क्त्वा कश्चि-  
द्व्याप्य विद्यापि सप्तम्येति ॥ पाच्यं ॥ यत्र सप्तम्या मेव संपूर्ण रोहिणी योगस्तद्वि-  
षयं यत्र तु अन्यस्यां शुद्धत्वं मपि रोहिणी तदा सैव प्राप्ता ॥ तद्वत्त्वं वक्ष्ये वैवर्ते ॥ वर्जनीया  
प्रयत्नेन सप्तमी सहिताष्टमी ॥ सप्तम्यापि न कर्तव्या सप्तमी सहिताष्टमीति ॥  
॥ स्तोत्रे ॥ सप्तमी सहिताष्टम्यां भूत्वा ऋक्षं द्विजो नमः ॥ प्राजा पत्यं द्वितीये ऋ-  
हर्वा हि भवेद्यदि ॥ तदाष्टया भिक्वं द्वेयं प्रोक्तं व्यासादिभिः पुत्र ॥ पाच्येऽपि ॥ शुद्धत्वं व्यापि  
संयुक्ता संपूर्णा साष्टमी भवेत् ॥ किं पुनर्नवमी युक्ता कुल कोटि विमुक्तिद ॥ न नृक-

मर्मकालस्य प्रावल्यात्पूर्वेद्युरेव ॥ निशीथव्याहो मैव ग्राह्या मैवम् ॥ तस्य प्रातिप्रदि-  
 कप्रारोणादाधात् ॥ तथाहि ॥ विष्णुहस्ये प्राज्ञा पत्यर्क्षे शुक्ला कले नभसि धावमी ॥ शु-  
 क्तं मपि लभ्येत सैवोपोय्या मह्य फला ॥ वह्निश्रुणे ॥ क्लृप्ताष्टम्या भवेद्युन्नकले कोशे  
 हिरणीं स्मृता ॥ जयंती नाम सा मोक्षा उपोय्या सां प्रयत्नतः ॥ क्लृप्ते ॥ उदये चाष्टमी किंचि-  
 न्नवमी सकला यदि ॥ भवेद्युधुध संयुक्ता प्राज्ञा पत्यर्क्षे संयुता ॥ अपि वर्ष प्रतेनापि  
 जभ्यते यदि वा न वेति ॥ ननु उदये चाष्टमी किंचिदिति त्कंदवाक्याद्दुदय प्राप्ते न चं-  
 न्द्रो दयो ग्राह्यः ॥ ता ए पत्युदये सतीति मूल काल्पना लाघवादिनिवेन ॥ उदय प्रा-  
 द्येन सूर्यातिरिक्तो दय परतायाः क्षाप्य इष्टत्वात् ॥ किंचैव निशीथे चाष्टमी किंचिदिति  
 वाक्यात् ॥ अथ च ॥ उदय प्राद्वस्य चंद्रो दय परत्वे जहानी मष्टम्याः ॥ कर्म काल व्याप्त  
 त्वेन नित्सं दिग्धनया तस्मिन्नेव वाक्येन वमी सकला यदीत्युक्ते र्वैयव्यापते ॥ नच शे-  
 हिणी योगस्य वृधयोगावत्प्राप्त्य मात्र परता ॥ अन्यथा समानवाक्योपासत्त्वात् ॥



किं कदाचिद्गोहिणीयोगाभावेन ॥ वधयोगोर्नेवोत्तरादेर्गोहिणीपक्षे रिति वाच्यम् ॥ ग्राजापत्यं  
 द्वितीयं हि सुहृत्तीर्क्षं भवेद्यदसीति ॥ स्कंदे ॥ चाक्येन ग्रहणप्रयोजकत्वात्तदगम्यात् ॥ सप्त-  
 क्षाधिपनकर्तव्या गोहिणी संहितायमीति ब्रह्मवैवर्तचाक्येन सप्तक्षायीत्युक्ता ॥ अ-  
 क्षयोगस्य निर्णयकत्वात्तदगमाच्च ॥ भवेत्तुबुधसंयुक्तेति स्कंदचाक्येन संभावार्थो लिङ्-  
 लकारेण तु शब्देन च ग्राह्यस्तत्पत्तया स्फुटं प्राप्तीति रिति हिक् ॥ ब्रह्मचव्रतं नित्यम् ॥ जन्मा-  
 यमीदिने प्राप्ते येन भुक्तं द्विजोत्तम ॥ त्रैलोक्यसंभवं पापं तेन भुक्तं न श्रेयसय इति स्कंदे  
 तदकरणं प्रत्यवायप्रवणात् ॥ भविष्ये ॥ प्रावणे बहुले पक्षे कृत्स्नजन्मायमीव्रतम्  
 न करोति महाप्राज्ञव्यालो भवति कानने ॥ वत शब्देनापि पूजा गृह्यते ॥ तत्रैव ॥ अहो-  
 रात्रे तु गोहिण्यां यदा कृत्स्नायमी भवेत् ॥ तस्याभयपक्षे न श्रेयसं हन्ति पापं त्रिजन्मजन्म ॥  
 ब्रह्मवैवर्ते ॥ अहम्यामप्यगोहिण्यां न कुर्यात्प्राणं कदाचिद् ॥ हन्यात्पुनः कृतं कर्म  
 उपवासात्तिर्जितफलम् ॥ तस्मात्प्रयत्नतः कुर्यात्तिथिभांते च प्राणम् ॥ उभयान्तोऽ-

भविष्यः कल्पः ॥ एकतरलु गोलाः ॥ वल्वैर्वर्हि ॥ सर्वेष्वेवापचासमुद्भवा पारंगामयन्तः  
 ४३ इति अथ भाद्र शुक्लाष्टमी ॥ दूर्वाष्टमी सा शुक्लापि पूर्वविधैव ॥ अविद्येऽपि ॥ शुक्लाष्टमी-  
 ति धिर्यात् मासि भाद्रपदे भवेत् ॥ दूर्वाष्टमी तु साक्षेयानोत्तरासा विधीयते ॥ इदं च त्र-  
 तं भाद्र शुक्ले श्रगस्त्योदय संभावनायां भाद्र कृत्ति एष कार्याम् ॥ नयास्त्रिंशे ॥ शुक्ले भाद्र-  
 पदे मासि दूर्वासञ्ज्ञा तथाष्टमी ॥ सिंहार्के सा च कर्तव्या न कन्यार्के कदाचन ॥ सिंहस्थे-  
 सोत्तमा सूर्येऽनुदिते मुनि सप्तमे ॥ श्रगस्त्याभ्युदिते पूजायां दोषश्च तत्रैवाक्तः ॥ श्रग-  
 स्त्यजदिते तान पूजयेदमुत्तोद्भवाम् ॥ वैधव्यं पुत्रप्रीकं च दशजन्मनि पंचच ॥ दूर्वाष्टमी  
 सदा त्याज्या ज्येष्ठा मूलार्क्षे संयुता ॥ परविश्वयया कृत्वा मुनिप्रशाला वयीऽत्रदीत् ॥  
 सेदृक्षे पूजिता दूर्वा हंत्य पत्या निनान्यथा ॥ भर्तुराशुर्हरा मूर्त्ते तस्मात्तां परि वर्जयेत् ॥  
 अत्र प्रातिवर्षं म पूजने दूर्वाया वैधव्यादिदोषा विहिताः ॥ यदा पुनर्ज्येष्ठादि विरहिणेन  
 संभवति ॥ तदा दूर्वासंभ्यर्च्यैकभक्तं कार्याम् ॥ बहुकर्म ॥ मुहूर्ते रीहिरोगऽष्टम्या पूर्वोवा-

४३५

५।

यदिवा परा ॥ इर्वाद्यमीनु साकार्या ज्येष्ठा मूलतु वर्जयेत् ॥ रै हिलो नवमो मुहूर्तः ॥ पर  
विज्ञानिवेधेऽपि यदि वा परेति पर विज्ञा विधानं पूर्वस्यां ज्येष्ठा मूल युक्तायां परस्यां कर्म  
काले व्याधिन्यां परापि कारयेति ज्ञापनार्थम् ॥ अतश्चस्यां पूर्व विज्ञायां ज्येष्ठा मूल रहि  
ता या मगः स्या नूदये सिंह स्थे सवितरि इर्वा मभ्यर्च्य श्रमि पक्षमन्त्रं भोक्तव्यमेवं कृतं  
॥ नारी सह जन्मनि पतिं पुत्र विरहं नाशो तीति दिक् ॥ अथाधिनः कला दृमी ॥ तत्र दोष  
चतुष्टय रहितायां महा लक्ष्मी ज्ञतं कार्यम् ॥ तत्र चन्द्रे द्य काल व्यापिन्या मेव ॥ चं  
दो रये सव पूजां चोदि विधानात् ॥ सप्तमी पुष्य संयुक्ता कर्तव्या चाधिनो दृमी ॥ इति  
त्सवेऽसितं पक्षे वहुले श्रीवने शुभा ॥ तत्र सप्तमी संयुक्तेति विशेषणं बहुला दृ स्या स  
व पुष्य संभवात् ॥ तथा ॥ अर्द्धरात्र भति कथं वर्तने योऽतएति धिः ॥ तदा तस्यां तिथौ  
कार्यं महा लक्ष्मी ज्ञतं शुभम् ॥ अणसमुद्यमेऽपि ॥ पूजनीया प्रयत्नेन अष्टमी प्राहपि धि  
यः ॥ दोषे अतुभिस्तन्य कारवर् संपत्करी तिथिः ॥ दोषा अतन्ने वोक्तः ॥ अतः ॥

1430

यं हि ज्ञायन्मिथिनी सा प्रकीर्तिता ॥ तस्मात्सर्वं प्रयत्नेन त्याज्या कन्या गतिरद्वी ॥ कन्या  
 ४३ स्थरविनिधेयः ॥ आरंभ समये एव बोधव्यः ॥ तथात्र दिने चावममे चैव अष्टमिंशो प-  
 चासयेत् ॥ पुत्रद्वी नवमी विद्वास्वद्वी हस्तार्द्धगे रवौ ॥ धर्मश्री त्रिदिने प्रोक्ता त्याज्या चै-  
 नावमे सति ॥ स्वश्री धनहेति यावत् ॥ त्रिस्तगवमौ पूर्वोक्तावेव ॥ एतद्वै धर्वावर्जनिमु-  
 पक्रमोद्यापनयोरेव प्रायेण ज्ञातव्यं ॥ अन्यथा षोडशवार्य साध्यं तस्य भोगदो-  
 ष संभवेऽकारणं असज्जेत ॥ अन्यदपि सति संभवे दोष वर्जनम् ॥ नतु नियमो न तथा  
 चोक्तं शिवाऽर्चनं भाद्रपदे सिताष्टमी प्रारब्धकन्यामगते च सूर्य्ये ॥ समापयेत्तन्निति-  
 क्षौ च यावत् सूर्य्यश्च पूर्वार्द्धगतो युवत्याः ॥ नवमी वेधनिषेधोऽपि परदिने चंद्रीहया  
 दर्विक्र द्वेयाः ॥ चंद्रीहया हर्द्दगाभिनी त्रिमुहूर्ताष्टमी चेत ॥ त्रिमुहूर्तं व्यापित्वे तद्वरे-  
 व नवमी विहापि कार्या ॥ तदुक्तम् ॥ पूर्वार्द्धापरार्द्धा वाग्राह्या चंद्रीहये सति ॥ त्रिमुहूर्त-  
 तीपि सा पूज्या परतश्चोर्द्धगाभिनीति ॥ चंद्रीहया हर्द्दगाभिनी त्रिमुहूर्ताष्टमी चैतदपि-

पात्रार्थान् चेत्युच्येति ॥ इति महालक्ष्मीनिर्यायः ॥ अथाधिवनश्रुत्वाष्टमीनिर्यायः ॥ सा च नव-  
 मीधुतेवदुर्गोपवासादिद्विग्राहा ॥ सहस्रीविह्वलुनकार्यादीष्वश्रवणात् ॥ तदुक्तं ॥ पुत्रा-  
 न्हंति प्रसूहंति हंति राद्वसराजकम् ॥ हंति जातान जातंश्च सप्तमीसहिताष्टमी  
 ॥ तस्मात्सर्वप्रयत्नेन सहस्रीसंख्य संयुता ॥ वर्जनीयाष्टमी चैव ध्रुवोरज्यमभीप्सुभिः  
 अन्यथापि ॥ नूत्नेनापि हि संयुक्ता सदा त्याज्याष्टमी बुधैः ॥ इत्यादि वाक्यैर्नवमीविह्व-  
 दमी कार्याति सिद्धम् ॥ यतुग्रहं भद्रा च भद्राहं नावयोरं तरेष्वाचिनः ॥ सर्वसिद्धिं गदा-  
 स्थाभि भद्राद्यामर्चिता प्यहम् ॥ भद्राद्या भद्र काल्याप्र अध्येस्या दर्शनं क्रिया ॥ तस्माद्दे-  
 सतर्मा विह्वलकार्या दुर्गाष्टमी बुधैः ॥ इति ॥ विहित्यत्वा महादृष्ट्यां मम पूजां करोति यः  
 तस्या पूजा फलं न स्या तेनाहमवमानिता ॥ इत्यादि सप्तमीवेधविधा यिक वाक्यं ॥ तदु-  
 यत्नतिष्ठि ग्रासात् इति ॥ यद्दिने अष्टमी विरहस्तत्र सावकाशं ॥ तदुक्तं ल्यति संग्रहे ॥ यदासू-  
 यो ह्येन स्यान्नवमी चापरे हनि ॥ तदाष्टमीं प्रकुर्वीत सहस्र्यां सहितां च येति ॥ दुर्गोत्सवप्रकरणे ४३६

सं. ३५ ॥ उद्वात्तिव्ययो यत्र क्षयं याति न राधप ॥ पूवाद्यनाम राधप ॥ तत्र हर्षोत्सवं कुर्यान्ननु

1322

॥ उवाच ॥ स्तिव्यो यत्र स्तयं याति न राधे ॥ पूज्यमानः स तत्र ॥ तत्र हुनोऽस्मिन् कुर्वन्नु-  
दिति ॥ अन्यदापि ॥ सहस्रमूर्तिः सूर्यो परतश्चाद्यमी भवेत् ॥ तत्र हुनोऽस्मिन् कुर्वन्नु-  
दिति ॥ तथा ॥ यदाद्यमी नु संप्राप्य अस्तं याति दिवाकरः ॥ तत्र हुनोऽस्मिन् कुर्वन्नु-  
दिति ॥ तथा ॥ ह्यारिवाक्यानि ॥ मुनीनामनिर्हेषादां तरालिका नीति केचित् ॥  
न कुर्व्यादपरेह नीति ॥ ह्यारिवाक्यानि ॥ ह्यारिवाक्यानि ॥ ह्यारिवाक्यानि ॥ ह्यारिवाक्यानि ॥  
यदि तु प्रमाराणि तर्हि कृत्स्नपक्षाद्यमी विहित पूजा विषयानि ॥ कृत्स्नपक्षेऽद्यमी चैव-  
ति पूर्ववाक्य संबंधे नैवेति ॥ तस्यां देवी पूजा ॥ देवीपुण्ये ॥ कन्यायां कृत्स्नपक्षे तु पूजायि-  
त्वाद्देवेऽपि च ॥ नवम्यां वोधयेद्देवीं गीतवादित्रो निरस्त नैवेति ॥ अत्र देवी पूजा दिवा-  
रात्रावपि ॥ भविष्ये ॥ तत्राष्टम्यां भद्रकाली दक्षयज्ञ विनाशिनो ॥ प्रादुर्भूता महाधोरा-  
चोतिने कोटिभिस्सह ॥ अतोऽर्थं पूजननीया सा तस्मिन् न हनिमान वैः ॥ तथा ॥ निष्प्रा-  
यां पूजिता देवी वैष्णवी पापनाशिनो ॥ तस्मात्सर्वं भयं त्तेन पाह्यम्यां निष्प्रा पूजयेत् ॥ अ-  
थात्रैव वद्विद्विशेषः ॥ अथैव नस्य सिते पक्षे प्रारब्धे नवरात्रके ॥ प्रावसुत्योऽस्मिन् नवरात्रके

या कार्या कथं बुधैः ॥ अर्तिप्रश्ने ॥ अस्योत्तरं ॥ विष्णुसन्निधे ॥ प्रावसूते समुत्पन्ने तत्रोत्पन्नं च  
 दाभवेत् ॥ देवी पूजा प्रकर्तव्या पशुपत्तविधानतः ॥ देवी पूजा रंभे अंतर्गसूत केयानेऽपि  
 पुनादिनव एनं यावद्विधेयं अग्राधेतु परहरेव ॥ अग्नि होत्रादिवत्कारयितव्यं ॥ इति अ  
 धर्कार्ति कृत्वा दमी सा गोदादमी ॥ तत्र गो पूजा कार्या ॥ कूर्मपुराणे ॥ शुक्लादमी कार्तिके तु  
 रसुता गोदादमी बुधैः ॥ तत्र कुर्यात्तवां पूजां गोपायं गोमदक्षिणां ॥ गवानु गमनं काव्यं  
 सर्वाच्चामानभीक्ष्णतः ॥ इति अथ यौष शुक्लादमी बुधपुक्ता महाभद्र ॥ तत्र महेश्वर पूजादिकं का  
 र्यं शुक्लकं भविष्ये ॥ यौषे मासि वदं देवि शुक्लादम्यां बुधो भवेत् ॥ तदा तु सामहा पुराया महाभद्रे  
 ति कीर्तिता ॥ तस्यां स्नानं जपो होम स्तव्येणं विप्र भोजनम् ॥ मन्थीतये महादेवि पूज्यो  
 ऽयं विधिवद्बुधै रिति ॥ भाष शुक्लादमीष्मादमी ॥ तत्र भीष्म तर्पणं ब्राह्मं च कार्याम् ॥ श्री  
 धर्मतर्पणे तु भीष्मस्य देवा वतारत्वा द्वास्तथा स्याप्यधिकारः ॥ तथा च पाथे ॥ नाथे मासि  
 सिताष्टम्यां सति तं भीष्म तर्पणम् ॥ ब्राह्मं च देनराक

५१

विद्याश्रये वर्णद्वयभीष्माय नोजलम् ॥ संवत्सरं कृतं तेषां पुराये नश्यति सत्तम ॥ तर्पणं  
३३ वसु ॥ ॐ भीष्मः शान्तनवो वीरः सत्यवादी जि तेंद्रियः ॥ आभि रद्विर वा द्रोत पुत्र ये त्रि-

चितां क्रियाम् ॥ वैद्या ध्य पद गोत्राय सां कृत्य प्रवराय च ॥ अपुत्राय प्रदानं व्यंजलं भी-  
ष्माय वरमेतौ ॥ वस्त्रनाम चताराय संतनो रात्म जाय च ॥ अर्घं दद्यानि भीष्माय आवाह  
वस्त्र चारितौ ॥ द्दं च जीवन्मृत को ऽपि कुर्यात् ॥ अने नैव तर्पणा मर्घदानं च ॥ इति ॥  
अथ फाल्गुन शुक्ल अष्टम्यां ॥ तस्मी सीता च पूज्या ॥ यदेवान्मं ज्ञास्यो न्यो दत्तं तद वशि-  
ष्ट मेव भोज्यं नान्यत् ॥ ब्राह्मे ॥ आस्तमुभिरवृष्ट्यां सुता तैश्चै र्त्वलं कृतैः लक्ष्मी सी-  
ता संश्लज्या शंभु मास्त्यादिभि रसदा ॥ प्रदोष समये दीपाः देया यथा तसह तशः ॥ दत्त  
शिशु तदा भोज्यं भस्मि त्वयं च वंधुभिः ॥ तस्यां संपूर्णायां यदा वंधुवारे भवति तदैक भक्तं  
कार्यम् ॥ तथा च भविष्ये ॥ यदा यदा सिता वृष्ट्यां वंधुवारे भवेद्यदि ॥ तदा तदा हि संग्राह्य  
एक भक्ता स नैर्दुपः ॥ बुधा वृषी तु संपूर्णा यथा क्त फल दायिनी ॥ अथ निविहानाह ॥ द्दं ध्य व



काले तथा चैत्रे प्रसुप्ते च जनार्दने ॥ बुधायमी न कर्तव्या हंति पुरा यथा कृतम् ॥ इति ॥ इत्यमी निर्णयः ॥ अथ नवमी निर्णयने ॥ उपवासदिषु नवमी पूर्वयुतैव ग्राह्या शुभमवाक्या-

त ॥ ब्रह्मवेवर्ते ॥ अथ स्यां नवमी विद्वा कर्तव्या फलकांक्षिभिः ॥ न कुर्व्यान्नवमी तात दशम्यां तु कदाचन ॥ तथा ॥ नवमीं दशमीं विद्वां ये कुर्वन्ति विमोहिताः ॥ दृष्ट्या सर्वभ-  
वे तथां वलिभूजा विधानक मिति ॥ अतो नवमी पूर्व विद्धे वेति सिद्धांतः ॥ अथ चैत्रशुक्लान-  
वमी एव नवमी ॥ सा च मध्याह्नव्यापिनी ॥ दिनद्वये च व्याप्ता व्याप्ते च पुनर्वसुयुगा तादृ-  
ष्यपि च दिनद्वये परा ॥ चैत्रे मासि नवम्यां तु शुक्लपक्षे रघूत्तमः ॥ पुनर्वसावा विरासीत्यु-  
रा ब्रह्मैव कैवल्यम् ॥ उपोषणं जागरणं पितृनुद्दिश्य तर्पणम् ॥ तस्मिन्दिने तु कर्तव्यं-  
ब्रह्म आर्क्षि मभीष्टुभिः ॥ एतद्वृत्ता करणे प्रत्यवाय प्रवणात्करो फलप्रवणाच्च नित्यं का-  
र्यं च ॥ पर्व द्वये कुरुक्षेत्रे महाहानीकते मुहुः ॥ यत्फलं तदवाप्नोति श्रीराम नवमी व्रते ॥  
कुर्व्याद्राम नवम्यां तु उपोषणं मतं दितः ॥ मातुर्गर्भे च चाप्नोति सुखं रामो भवेद्भुवम् ॥ इत्या-

दीनि वह्नि वाक्यानि अगास्य संहिताया मुक्तानि ॥ निश्च ॥ यो वै राम नवम्यां तु भुक्ते मा-  
 हं हादि मूढधीः ॥ कुंभी पाके शुभो रेषु पच्यते नात्र संशयः ॥ इदं च शुद्धादिभेदात् हादराधा-  
 तथा च ॥ शुद्धादिहादिभेदेन नवमी सादिधा स्मृता ॥ समान्यनाधिका चेति शुद्धापि नव-  
 मी त्रिधा ॥ पुनर्नक्षत्र संयोगवियोगाभ्यां च षड्विधा ॥ समादि ऋक्षयोगादिभेदे विद्वापि ष-  
 ड्विधा ॥ एवं हादराधाभिन्ना नवमी तत्र निर्णयः ॥ महाफलप्रदा शुद्धा पुनर्वस्वक्षयो गतः ॥  
 चैत्रे शुद्धा तु नवमी पुनर्वसु श्रुता यदि ॥ सैव मय्यान्हयोगेन महापुण्यतमा भवेत् ॥ केवल-  
 पिसदोषो व्यानवमी सा च संग्रहात् ॥ अस्मिन् चोत्ते सर्वेषां भिकारः ॥ विद्वैव चेद्दक्षयुता व्रतं त-  
 न्न कथं भवेत् ॥ उत्तरं तत्रैव ॥ नवमी चाद्यमी विज्ञात्याज्या विस्तु परा यतौः ॥ उपोषणं नवम्यां चै-  
 दराभ्यामेव पराणाम् ॥ दराभ्यां तिष्ठति द्विद्वये त्रितया ज्येष्ठे च वै स्रवेः ॥ तदन्येषां तु सर्वेषां व्र-  
 तं तत्रैव निश्चितम् ॥ दक्षम्यामेव प्राप्ते न दराभी नैवलं घयेत् ॥ निश्चित्यैवं विचार्येण नव-  
 मी व्रतमाचरेत् ॥ इति ॥ अथ वैष्णवमासे ॥ उभय नवम्यो रूपवास पराश्राद्धिकां पूजयेत् ॥

पुनर्भविष्ये ॥ वैशाखे मासि राजेन्द्रनवम्यां पक्षयोर्द्वयोः ॥ उपवास परोभक्त्या पूजया नस्तु दृष्टि-  
 काम् ॥ हंसकुंदे हंस का प्राप्ते जसा भुव सन्निभः ॥ विमान वरमा रुढो देव लोके महीयते ॥ इ-  
 ति ॥ अथ ज्येष्ठ शुक्ला नवमी ॥ तस्या मुभां वास्याणी नाक्षी पूजयेत्वा वास्याणां कुमारीं श्रद्धा भिज-  
 येत् ॥ अविद्येऽपि उपवास परोभूत्वा नवम्यां पूजयेद्दुर्गाम् ॥ वास्याणित्वितिवैना नाश्वेत रूपे  
 राक्षसिणी ॥ ज्येष्ठ मासि चतुर्थे शुक्ल नक्षत्रे वैविधम् ॥ प्रात्पन्नं पयसां पेलं च वंभु-  
 जी तवाभ्यतः ॥ कुमारी भोजयेत्वापि स्व शक्त्या वास्यां स्तयेति ॥ अथापादस्य हेतव्यो अथ-  
 म्यां पंच गव्यस्नात उपो विर्तः ॥ हंसी देवी पूजयित्वा नक्तं कुर्यात् ॥ तदुक्तं भविष्ये ॥ उपवास परो  
 भूत्वा नवम्यां पक्षयोर्द्वयोः ॥ अथापादे मासि राजेन्द्र पः कुर्यान्नक्त भोजनम् ॥ पूजयेच्छुद्ध-  
 यादुर्गा मैत्री नक्षीं तु नामतः ॥ ऐरावत गतां शुभां श्वेत रूपेणा रूपिणीम् ॥ सरोरावत मी-  
 नं कं भुञ्जीत ॥ तदुक्तं भविष्ये ॥ आचार्यो मासि राजेन्द्र पः कुर्यान्नक्त भोजनं ॥ स्त्री यच्छि कुर्यात्

न सर्वभूतहिते रतः ॥ उपवास परो वीरनवम्यां पक्षयोर्द्वयोः ॥ कोमलोत्प्लवनाभ्या  
 ४४५ हिङ्कां पूजयेत्सदा ॥ कृत्वा शेषपक्षयोर्नक्त्या दोषं वै पापनाशिनी ॥ कारुण्यस्य पुण्ये कु  
 म्पयेद्भ्यां गरुडचंदनैः ॥ धूपेन च दर्शनेन बोद्धव्यं भ्यापि पूजयेत् ॥ कुमारी भोजयेच्छक्त्या  
 स्त्रियो विप्रो भूयः शक्तिरतः ॥ भुञ्जीत चाश्वतः पद्म्या हिल्व पत्रलुगाश्च नः ॥ एवं यः पूजयेद्वा  
 यं भद्रं वापय्याच्चितः ॥ स याति परमं स्थानमिति ॥ अथ भाद्रपुक्ल नवमी ॥ नंदानां नृ  
 णां संपूज्य विष्णुलोकं गच्छति ॥ तदेव भविष्यतीति ॥ मासि भाद्रपदे यस्या नवमी बहुलोत्तरा ॥  
 सा तु नंदानां पुराणा कीर्तिता पापनाशिनी ॥ तस्यां यः पूजयेद्भुजां विधिवत्कुरु नंदन ॥  
 सोऽथ गोपकलं विद्याद्विष्णुलोकं समाच्छति ॥ अत्रैव कल नवम्यां देवी मुत्थापयेत् ॥ तदे  
 व देवीपुराणे ॥ कन्यायां कल पक्षे तु पूजयित्वा देभ्योऽपि वा ॥ नवम्यां वोधयेद्देवीं गीतवा  
 दित्रिभिः पद्मैरेति ॥ आश्विन शुक्ल नवमी मन्वादिः ॥ कार्तिक शुक्ल नवमी युगादिः ॥ अ  
 थ मार्गशिर शुक्ल नवमी नंदिनी ॥ तस्यां त्रिरात्रो यो धितः पूजयित्वा देवीं त्राजिमेधफलं प्राप्नो

वि॥ तदेव भविष्ये ॥ आसि मार्ग शिरे दीर शुक्ल पक्षे तुषा भवेत् ॥ सानंदिनी महापुण्यानव  
 क्षी परि कीर्तिता ॥ यस्तस्यां पूजयेद्देवी त्रिश्रोषो विती नरः ॥ सोऽप्यमेधमन्त्राये ह विबुध  
 लोके महीयते ॥ अथ साध शुक्ल नवम्यं महानद्यां स्नान दानादि कृत मक्षयम् ॥ यदुक्तं ॥ मा-  
 धमरेतु या शुक्ल नवमी लोका पूजिता ॥ महानं देति सधो का सदानंद कारी नृणां ॥ तस्यां  
 स्नानं तपो दानं जपौ होम उषोषणम् ॥ सर्वं तदक्षयं प्रोक्तं यदस्यां क्रियते नरे रिति ॥ स-  
 र्व नवमी शु ति धि प्रति त्वे न स र स्व गी दृज्येति दिक् ॥ इति नवमी निरुचिः ॥ अथ दशमी ति सीयते  
 दशमी ति धि न्नवमी युते वोष वासादि द्यू विधेया ॥ शुक्ल पक्षे ति धि प्रीत्या यस्या मभ्युदितो  
 रयिः ॥ इक्ष पक्षे ति धि प्रीत्या यस्या मस्त भितो रयिः ॥ इति कवनात् ॥ उषवा सेतु सर्वा पि पूर्व-  
 व ॥ दशम्ये वा दशमी विद्वानो पो य्या सा कयं च नेति ॥ शिव रहये ॥ आप सं वरु ॥ श्रावृ मी नद-  
 सो विद्वा कर्तव्या फल कांक्षिभिः ॥ दशमी तु भ कर्तव्या सहृ यो दिज सहैर ॥ वैदी न सिधि ॥  
 पंचमो सप्तमी चैव दशमी च त्रयो दशमी ॥ प्रति पन्न वमी चैव कर्तव्या समुत्थी ति धि रिति ॥

यत्तु वचन ॥ सप्रणा दशमी कार्या परया पूर्वया धवा ॥ युक्तान् बुधिता धरणागतः सा सर्वतोभु-  
 र्त्वा ॥ तत्र पूर्व विद्वद्वाग्दाने उदय काल व्यापिनी चास्तेत्येव धरम् ॥ यदा एकादशी जगतो ग-  
 लेना नित्यमाणा दशम्यां एकमक्ता दिवं पर विद्यायां कार्य्यमिति सिद्धं तः एव वै न शुक्लदश-  
 मी ॥ अस्यां य स पूजनं विधेयम् ॥ यद्वहं देवीपुण्ये ॥ चैत्र मासीय तिथिप्रक्रमे ॥ धर्म एजं दश-  
 म्यां वृत्तं यत्ता सुभं धर्कः ॥ विगता रिर्गिरातं क ह्रस्वाते परं पदमिति ॥ मां युयादिति शेषः  
 अथ ज्येष्ठ शुक्ल दशमी दश होत्सुच्यते ॥ यत्तु ज्येष्ठ ॥ ज्येष्ठे मासि सिते पक्षे दशमी हस्त संयुता ॥ ह-  
 रते दश पापानि तस्माद् दश हरणं कुरुतेति ॥ अविष्यो वरेच ॥ ज्येष्ठे शुक्ल दशम्या च भवेद्भोगे यदि  
 नं यदि ॥ ज्येष्ठ्या हस्तार्क्ष संयुक्ता सर्वे पाप हरतिथिः ॥ दश पापानि च भवन्तीति ज्ञानि ॥ पर ज्ये-  
 ष्ठ भिधानं मन सानिष्ट चिंतनम् ॥ दिनयात्रि निवेष्टाश्च मान संजिघं स्तनम् ॥ पर ज्ये-  
 ष्ठमत्तं वैव वैष्णवं चापि सर्वे प्राः ॥ असं वद प्रलापश्च वाङ्मयं स्थानं तु द्विषम् ॥ यदा एकादशी  
 पादनिं हिंसा चैवा विधानतः ॥ पर दशमी पसेचाच काधिकं विविधं स्थानमिति ॥ स्तोत्रे ॥ यम-

काञ्चित्त्वारितं प्राप्य दद्याद्देवति स्तोदकम् ॥ मुच्यते दशभिः पापैस्तु महापातकोद्देशैः ॥  
 मंगायाम् त्वति प्रशस्तम् ॥ पचतत्रैव ॥ स्नानं काले न्यतीर्थं तु जाप्यते जगन्मयी जन्मैः ॥ वि-  
 ना विसृपदीनान्मतीर्थं यच्च विशेषतम् ॥ द्द्वयं च दशहारा यत्रैव योगवाङ्मन्यं तत्रैव-  
 कार्या ॥ तत्र दशयोगाः स्तोत्रैः ॥ ज्येष्ठे मासि सिते पक्षे दशभ्यां बुधहस्तयोः ॥ ज्येष्ठीयाते  
 शरानन्दकन्या चन्द्रे दृषेत्वा विनि ॥ कारहस्ये ॥ कुम्भवाद्योगः ॥ स्तोत्रे ॥ बुधः कल्पयेद्देन  
 यद्विहार्यः ॥ द्द्वयं च योगविशेषात्पूर्वापराया ॥ मलभासयति तु तत्रैव ॥ अथ ग्रहोऽपि ॥ द-  
 शहरा सुतोत्कर्षय्य तुर्व्यपि युगादिषु ॥ उपाकर्ष्य महाधरणी होतुं हुक्मं दद्यादिति ॥ आस-  
 द्देऽपि भवतीत्यपरः ॥ इति दशहरा अथाऽपि न शृङ्गदशमी विजयदशमी ॥ तस्यां नवमी प्रव-  
 णा र्द्धिभुतायामपराजितां पूज्य प्रस्थानं कुर्यात् ॥ स्मृतिचिन्तामणौ ॥ श्याधिनस्याश्चिते पक्षे  
 दशम्यां तारकोदये ॥ सवालौ विजयो ज्ञेयस्सर्वकार्यार्थसिद्धये ॥ स्नानेऽपि ॥ यावत्पु-  
 नवमी युक्ता तस्यां पूजा पराजिता ॥ दद्याति विजयं देवी पूजिता जयवर्द्धिनी ॥ दशमीयस्स-

सुखं प्रस्थानं कुरुते नरः ॥ तस्य संवत्सरं राज्येन क्वापि विजयो भवेदिति ॥ दिनद्वये तार  
 कोदय काला भवेत्परदिने एका दश मुहूर्ते यात्रा विधेया ॥ तत्र भगुः ॥ अथाभिन स्य धिर्ते पक्षे  
 दशस्यो सर्व राशिस्तु ॥ सायं काले शुभायात्रा दिवा वा विजय क्षणे ॥ विजय क्षण एका दश  
 मुहूर्तेः परदिने एका दश मुहूर्तो भवेत् ॥ त्रिपुञ्जायामिव दशभ्यां प्रस्थानमपराजिता ॥ पूजा च भि  
 ज्ये ॥ अथ राक्षसि वृष्ट्या काकुत्स्थः अस्थितो यतः ॥ तदिनं स्निग्धमीमांसा मुस्त्रिंशं दुस्त्रितो नरः ॥ अथ रा  
 भावे तु केवल दशस्य भवेति दिक् ॥ राजचिह्नानां पूजा अपराजिता पूजा अत्र ग्रंथ गौरव भ  
 यान्जोस्त्रिद्विता ॥ इति विजय दशमी ॥ सर्वासु दशमी सुयमः इत्यास्ति थिपति त्वात् इति दश  
 मीति र्भावः अथाशेष दिविषदीन्यस्य भवावतः श्रीगुरु यो वस्य स्मरणमात्रेण सकलाय निवर्तकस्य वैकुं  
 ठगमन निष्प्रेणी प्रिया च मुनि कंदव कै रूपो यिते कादशी निर्णीयते ॥ तत्रैकादश्य पचासो द्वेधा नि  
 षेध प्रतिपालनात्मको द्वादश रूपश्च ॥ तत्राद्यः ॥ न प्रारंभेन पिबेत्तोयं न खादेन्मांसस्य धूकोरो एका  
 दश्यां न भुंजति पक्षयो र्भयो रपीति ॥ कोर्मदेव लापाभ्यां यये ऽपि ॥ यद्दृश्यो द्वाहा चारिवाशा



पंक्ति हिनाग्रि स्वदीवच ॥ एकादश्यां न भुंजीत पक्षयो र्गमयो रपि ॥ न चान्न पच्युदासीनं बल विधिः ॥  
 तदेतद्वनादिप्रव्याभावात् ॥ नतस्य तु नक्षत्रैर्वर्गैः ॥ भाद्रपदसिद्धिदो समय विधाया निमग्नं  
 निधिः ॥ इष्टाया शुप वा शब्द बहुवर्था है खवेवतम् ॥ इदं शिव भक्त्यादि दिग्गमि कार्थम् ॥ शैरप  
 राणे ॥ वेस्त्रिवा वा षष्ठो वो वा सो रोः पूर्वोत्समा चरेत् ॥ इति सोमप्रतिधानित्यः कात्यायन नारदः ॥ ए  
 वीपदे च कर्तव्य मेकादश्या सुपो षण्मिति ॥ अतो वित्यत्वमेव ॥ यदीहिसिद्धिस्तु ता सुख्यं धियं सं  
 नतिता ल्मनः ॥ एकादश्यां न भुंजीतीत्यादि दो र्गमदिदु फलं शुनैश्च काभ्यता ॥ उभये कदापि  
 नतश्च गृहस्थातिरिक्ताणा मेव ॥ गृहस्थाः सुक्ताया भेद न कृताया न् ॥ यद्येव लः ॥ एकादश्यां  
 न भुंजीत पक्षयो र्गमयो रपि ॥ वनस्य प्रतिधनो र्गमभुक्ता मेव सदा गृही ॥ तदेव नारदो अपि ॥ सं  
 मात्या शुप वा सं च कृत्तौ कादशि वा खरे ॥ चंद्रसूर्य ग्रहे चैव न कुट्यां नुजं वा च्छही ॥ तथा च विद्रे  
 योऽपि ॥ एकादश्या ॥ पात्रे ॥ प्रायनी वो धिनी मध्ये पाकसौका दशी भवेत् ॥ शैवो पो व्या गृहस्थे  
 न वान्या कृता कादा च न ॥ यनुम हनन्ते न विद्ये ॥ यथा शुक्ता सथा कृता ह्यदशी नै सदा प्रिया ॥

॥ ३७ ॥ सर्वभुक्ता गृहस्थैः कर्तव्याभोगसंतानवर्द्धिनी ॥ वृषभुक्षितस्तथा कृष्णानतेतेनोपश्रिता ॥ यत्  
 सर्वकृष्णायाम् सर्वगृहिणां संभवत्येव तद्गृहस्य वैलव्यं परं ॥ तथा च नाहः ॥ पुत्राणां भ्रमसंभार्यभ्र  
 वं यदुक्तं तथैव च ॥ उभयोः पक्षयोः कास्यं व्रतं दृष्ट्या च वैलव्यम् ॥ अनेन कास्यं परं पुत्रिणां व  
 र्यते ॥ पुनरपि ॥ विभवाया वनस्य स्य यते श्रेका दृष्टी हृदये ॥ उपवासी दहस्य स्यात्पुत्रमया भिषु  
 क्षिणाः ॥ प्राच्यादिभते वैलव्यं हस्माना भिदे ॥ भर्देका दृष्टी व्रतं नित्यम् ॥ उपवासं निवेदिषि  
 दी चयवोये ॥ उपवासं निवेदिषु किंचिद्गृह्यं प्रकल्पयेत् ॥ ननु व्यत्युपवासं जपपदासं फलं  
 येत् ॥ भद्रस्य मयितत्रैव ॥ नल्लं हविष्यान्मम योदनं च फलं तिलाः क्षीरसां दुग्धं च ॥ यत्  
 श्वराद्येष्टिवापि वाद्युः अशस्तमत्रोत्तरं गृहं च ॥ अगस्त्यैका दृष्टी व्रतं नित्यम् ॥ तथा च सनत्कु  
 मारः ॥ वाक्येति यदा गृहं सका दृष्ट्या सुगोपणम् ॥ सनतेन रत्नं याति रौधवं तथ सा दत्तम् ॥  
 नारद्विद्येऽपि ॥ यानि कानि च पापानि ब्रह्महत्याशानि च ॥ अन्यथा भिरप्यतिर्द्धति संपत्ति ह  
 रित्वासे ॥ एतरे ॥ मातृहा विलह्या वापि आयुर्दा गृहं तथा ॥ एका दृष्ट्यां तु यो भुङ्क्ते पुस्तमो र

भयोऽपि ॥ वरं स्वमातृगमनं वरं गोसां समक्षणम् ॥ वरं हस्तसुखापानं नैकादृश्यां च भोज-  
 नम् ॥ वशिष्ठः सकादृशीसमुत्थेन वहिना पातकैर्धनम् ॥ भस्मतां याति शर्जं द्रव्यपि जन्म  
 प्रतो ज्ञवम् ॥ अथ दृश्यमीवेधो हि ॥ अरुणो दयवेधः सूर्यो दयवेधश्च ॥ पूर्वः वै हवप्रः अप-  
 रस्मात्तपरः ॥ अथः गारुडः ॥ दृशमीशेषसंयुक्तो यदि स्यादरुणो दयः ॥ नैवो वो व्यं वै क्ष-  
 वे न तद्विनेकादृशी ज्ञतम् ॥ अरुणो दयस्वल्पमाधवीयस्कंदे ॥ उदयात्माक्चतस्तनुषटिका  
 अरुणो दयः ॥ इति अंत्यस्वदयवेधः ॥ हेमाद्रौ माधवीये गारुडे ॥ उदयात्माक्चतस्तनुषटिका व्या-  
 पित्येकादृशी यदा ॥ संहिगैकादृशी नाम वज्जैर्यं धर्मकांक्षिभिः ॥ उदयात्मा इजुर्हर्तेन  
 व्यापित्येकादृशी यदा ॥ संयुक्तैकादृशी नाम वज्जैर्यं धर्महृदये ॥ नारदीयेऽपि ॥ त्वं वै-  
 धेऽपि विवेन्द्रशाल्ये कादृशी त्यजेत् ॥ सुगंधा विदुना स्पृष्टं गंगां भद्रवनिर्मलम् ॥ साध-  
 दोऽपि ॥ सेवं कलादिबोधेऽरुणो दयवेधे सूर्यो दयवेधे समानत्वम् ॥ निगमेऽपि ॥ सर्वप्रका-  
 रवेधो यशुषवा सस्य दूषकः ॥ हेमाद्रौ स्वत्यंतरे ॥ अक्षानाद्यादिवां मोहात्कुर्वन्नेकादृशीं नर-

संलि ॥ दशमी शेषसंयुक्तो प्रायश्चित्तमिदं चरेत् ॥ कृच्छ्रपादं नश्यत्वा नाच दद्यात्सवात्सकाभ  
 २५५ ॥ सुवर्ण स्याद्द्विकंदेयं तिलं दोरणं समन्वितम् ॥ अथ च ॥ ब्राह्मणभोजये त्विं प्रति त्रिं दोरा  
 मथापि वा ॥ स्वल्पं त्रेऽपि ॥ दशम्याः प्रांतमादायुधदोदति दिवाकरः ॥ तेन स्पष्टं हरिदिनं द  
 नं जंभासुराययत् ॥ अत्रारुणोदय वेधो वै स्वविषयः ॥ वैलवस्वरूपं माधवीयेत्कोदे ॥ परमाप  
 दसाप्रने हर्षे वासमुपस्थिते ॥ नेकादशीत्यजेद्यस्तु यस्यादीक्षास्ति वैलवी ॥ विस्वर्षि  
 तादिवलाचारः सहि वैलव उच्यते ॥ माधवः ॥ अरुणोदय वेधोऽत्र वेधस्सूर्योदये तथा ॥  
 उक्तो ह्येदशमी वेधो वैलवस्मार्तयोः क्रमात् ॥ माधवमते ॥ वैलवे ररुणोदय विहृत्याज्या  
 एकादशी द्वादशी वाधिका चेत्यज्यतां दिनं ॥ पूर्वं ग्राहं दूतं रस्यादिति वैलवनिर्णयः ॥  
 स्मार्तैस्तु सूर्योदय विहृत्याज्या ॥ यदा त्वेकदा शुद्धासती ॥ चर्हते द्वादशी च ॥ सम  
 न्यूना वा ॥ तदा गृहस्थैः पूर्वापतिभिरुत्तराकार्या ॥ प्रथमे हनि संश्रान् व्याप्या होरा  
 त्रसंयुता ॥ द्वादशी च तथा तात दश्यते पुनरेव च ॥ पूर्वाकार्या गृहस्थे अथपतिभिश्चो

कंलि ज्ञा तया वति शकंते ॥ बर्द्धमानेऽयं वस ॥ अथ दृष्टेऽयं श्रद्धा विज्ञा सर्वेषां परैः ॥ वसु  
 नाहः ॥ संपूर्णैकादशी सप्तप्रभाते पुनरेव सा ॥ सर्वेरेवोत्तरा काल्या प्रभाते द्वादशी मृदि  
 द्वादशी मानद्वहो शुद्धया पूर्ववत् ॥ नरेव नाहः ॥ नचे देकादशी विहो द्वादशी मरुस्थि  
 ता ॥ उपोष्येकादशी ननयदी च्चे मरुमृष्टमिति ॥ मभलोऽपि ॥ द्वादशी मानद्वहो तुषु  
 इविहैववस्थिते ॥ शुद्धपूर्वोत्तरा विहो मृष्टानि संप्रदृष्टाः ॥ मरुतये ॥ विहोऽपि वि  
 द्वाविहोया परतोद्वादशी नचेतं ॥ इति विज्ञापितं विहो मरुतोद्वादशी यदि ॥ माधवः  
 सकादशी द्वादशी चोत्सृभयं नद्वहो यत् ॥ ननु पूर्वदिन त्याज्य स्मात्तारा परदिन स  
 ॥ प्रचेत सोक्षिपि ॥ यद्वा दशी विहो नचेत्तु नैकसे विरोधतः ॥ उत्तरावयति चोत्पत्ति  
 पूर्वा सुपवशे मृही ॥ नयो दश्यां नलयेत द्वादशी यदि किंचन ॥ उपोष्येकादश्या ननु  
 दशमी मिश्रितापि चेति ॥ अज्ञाते के ॥ हेमाद्रिसतेव ॥ अहं समा श्रु न्यूनावाधिक द्वाद  
 शिका चेत्सर्वेषां पूर्वैरेव न्युक्तं देखावपम ॥ समावर्तानां तु पूर्वैरेव स्थविरोधः ॥ हेमाद्रिणा च्चे

यादृशवैकादश्युच्यते ॥ तथा च ॥ शुद्धा विद्वाननन्दो ज्ञेयान्धनसमाधिकैः ॥ षट्प्रकारा  
 न्नस्तेषां द्वादश्यनसमाधिकैरित्यद्यादृशीकादृशीभेदाः ॥ तत्र शुद्धाधिकान्धनद्वादशि  
 का शुद्धाधिकसमद्वादशिका च ॥ सकामेः पूर्वाभिः कारुण्येन कादृशी यत्र प्रभर्तते पुनरेव सा  
 कायां नुविस्तृतीति को मरुपवास इत्युक्तार्थम् ॥ सपूर्णाकादृशी यत्र प्रभर्तते पुनरेव सा  
 ॥ लुप्यते द्वादशी नास्ति न्युपवासः कथं भवेत् ॥ उपयुज्यते त्रिंशो तत्र विस्मृतिरिति तत्पर  
 रिति ॥ ब्रह्मवर्षिणः ॥ नाहो भवि ॥ सपूर्णाकादृशी यत्र द्वादश्या दृष्टिर्गामिनी ॥ द्वादश्या  
 लेपनं कार्यं त्रयोदश्यातु पराणम् ॥ शुद्धान्धना शुद्धाधिका शुद्धसमा ॥ विद्वान्धना  
 विद्वदाधिका विद्वत्समा द्वादशिका चेत् ॥ सर्वेषां परे वेति हे मादिः ॥ मदनं लोभ ॥ शुद्ध  
 धिका परा ॥ अन्यपूर्वा ॥ शुद्धा यदा समाहीना समाहीनाधिको ज्ञरा ॥ स्वकादृशी सुपु  
 वसे न्यशुद्धो वैश्वमी मयीति ॥ स्कंदे ॥ शुद्धा स्वकादृशी ज्ञरा यत्र संपूर्णैर्कादृशी यत्र  
 परतो द्वादशी यदि ॥ उपोष्या द्वादशी शुद्धा द्वादश्या भेद पराणम् ॥ इति वैश्वपत्नम् ॥ स्मा

संज्ञां तु पूर्वैवेति सिद्धान्तः ॥ महानलेव ॥ विद्वन्मना समहादशिकावु ॥ सुसुक्ष्माणं पुनव-  
 तांच परा ॥ अन्वेषां पूर्वा ॥ पुनवतोऽपि पूर्वा ॥ विद्वत्समा समहादशिको नहादशिका-  
 च सुसुक्ष्मभिः ॥ परान्वेः पूर्वाकार्या ॥ दशमी मिश्रिता पूर्वाहादशी यदि लुब्धते ॥ शु-  
 द्धैव हादशी राजन्तु यो य्या मोक्ष कांक्षिभिरिति व्यासः ॥ मोक्षकांक्षि ग्रहाणां दन्द्योऽप-  
 र्वैव ॥ सर्वत्रैकादशी कार्या हादशी मिश्रितान्नैः ॥ प्रातर्भवतु वामा वायवो नित्यमु-  
 पो पणमिति ॥ पाचोक्तैः विद्वाधिक समहादशिका च पूर्वैव ॥ पाणाहि नलभ्ये तद्वा-  
 दशी कलुषादि चेत ॥ तदानीं दशमी विद्वायु मोक्षेकादशीतिथिरिति ऋष्य प्रहो-  
 क्तैः ॥ भाष्यमतैव ॥ ग्रहिणां पूर्वयितेरुत्तरा ॥ विद्वाधिक न्यून हादशिका च मोक्षपाप-  
 क्षय विष्णु प्रीति कार्मेः परा कार्या ॥ ग्रहस्थे ननु नक्तं विधेयम् ॥ तथा च कौर्म्ये ॥ एकाद-  
 शी हादशी च रात्रि प्रोक्षेत्रयो दशी ॥ उपवासं न कुर्वीत पुनर्यौत्र समन्वित ॥ इति ॥ दिन-  
 क्षये उपवास निवेधात् ॥ दशम्येकादशी विद्वा हादशी च क्षयं गता ॥ स्त्रीणां साहाद-

श्रीज्ञेयानन्तेतुगृहिणाः स्मृतमिति ॥ वदद्दृष्टान्तपः ॥ एकादश्यां शुद्धन्यूनत्वे शुद्धसमत्वे

४५३

द्वादश्यां न्यूनसमत्वयोः एकादश्यामुपवासः ॥ संहियेयुववाक्येयुद्वादशीं समुपोषये-

त् ॥ विवादेषु च सर्वेषुद्वादश्यां समुपोषणम् ॥ पारणं च त्रयोदश्या माक्षेयं माभकीमु-  
नेरिति ॥ पाक्षे ॥ वेधसंदेहेज्योतिर्विदां विप्रतिपत्तौवा ॥ वैश्वेदेः पण्यार्थे अित्यल्लम् ॥

अत्रोपयुक्तं किंचिदपि ॥ तत्र दशस्यामेकादशीयोगो ॥ दशमीमध्ये एव भोजनं कार्यम्  
एकादश्या भोजने निषेधः ॥ अत्राधिकारिणे माधवीये कात्यायनः ॥ अष्टवर्षाधिको मर्त्यो दश

तिन्यूनवत्सरः ॥ एकादश्यामुपवसे तपस्योरुभयोरपि ॥ ब्रह्मवेर्वे ॥ ब्रह्मचारी च नारी च  
श्रुक्तामेव सदा दृष्टी ॥ सुभगाया भर्तुर्नुज्ञा परमन्यया व्रतेऽनधिकारः ॥ यत्तु विलुः ॥ पत्न्यो

जीवति यानारीस्तु पोष्यव्रतमाचरेत् ॥ आधुष्यं हस्ते भर्तुर्नरकञ्चैव गच्छति ॥ उपवासा-  
सामर्थ्यं मार्क्षेण्डियः ॥ एकभक्तेन नक्तेन तथैवायाचितेन च ॥ उपवासेन दानेन नित्यं हा-

दप्राप्तो भवेत् ॥ अस्मार्थे प्रतिनिधिना कारयेत् व्रताकर्णेनाप्यश्रितमाह कात्यायनः ॥ अर्पको प्रर्प

४५३



द्ये एनो चतुर्दश्ययमीदिका ॥ एकादश्या गहोरात्रभुक्ता चांदायणे चरेत् ॥ अथ कास्य ज्ञा-  
 विधिं क्षिप्रुगदीये ॥ दशम्यादिमहीप्रातः निदिनपरिवृज्जयत् ॥ अभिनावलमुध्यादिस्त्रीस-  
 योगमहायशः ॥ दशम्याविधिः कोसि ॥ काश्यस्मात्समसूराश्च चणकान्कोरद्वयफान् ॥  
 प्राकमधुपरान्नचत्यजेदुपवसन्दिशयम् ॥ अन्यदपि ॥ अणकाभासमसूराश्च पुनभोजन-  
 मेधुने ॥ दानमस्यवृपान्नचदशम्यावहधस्त्यजत ॥ विधिरिमहमेरुने ॥ अक्षरलवणा-  
 स्सर्वदिव्यान्ननिवेविणः ॥ अत्रनीमरुन्धश्रवणाः श्रियासगक्षवर्जिताः ॥ जलमाल्यहिदेव-  
 लः ॥ श्रुसकजलपानाच्चसकृत्तावलभक्षणात् ॥ उपवासः प्राणशयनदिकास्वापाच्चभ-  
 धुनात् ॥ अशक्तो देवलः ॥ अत्ययचास्वपानेचनोपवासः प्राणशयति ॥ अत्ययेकदे ॥ विसृ-  
 ह्ये ॥ गानास्यगशिराभ्यागतावलचानुलेपनम् ॥ जलस्थोवज्जयेत्सर्वयज्जान्ननिर-  
 हतम् ॥ स्युभ्रायश्चित्रनिर्णयदे ॥ तेन हि सकयोस्सख्यकृत्वावेत्येन्यहिसने ॥ प्रायश्चि-  
 त्तं वतीकथ्य जन्मन्नाभयानत्रयम् ॥ पुनः ॥ मिथ्यादादेदिकास्वापे बहुशोष्मनिषेवणे ॥

संवि  
अथा त्वं वती जज्ञाशतमद्योत्तरं श्रुचिः ॥ अथाक्षरः ॥ उन्मनो नारायणाधीत ॥ येशीतधिरपि ॥

४४

तां वल चर्वणे स्त्री संभोगे मांस निषेवणे ॥ व्रत लोपो न चेत्कुर्यात्कृत्वा वहु जिबर्ज्जनम् ॥  
संभोगो ऋतु कालादित्यत्र ॥ व्यासः पारणे ॥ वर्ज्ये त्पारणे मांसं व्रता हे व्योषधसदा ॥ एकाद-  
श्यां प्राद्व्याहो ॥ मातापितोः क्षये प्राप्ते भवेद्देकादशी यदि ॥ अभ्यर्च्य पितृदेवाभ्यां जिघ्रित्ति-  
सु से वितस्मिन् ॥ अन्यदपि ॥ अलावपः ॥ सक्तादपि व्रतं प्राप्य पितुः संवत्सरं भवेत् ॥ आर्या नृप-  
तनी चैव कथं कर्म्म प्रवर्तते ॥ तत्रैवः ॥ आहं कृत्वा व्रतं कुर्यात्तद्वापि विदित्वा नृपः ॥ सन्ने श्व-  
हं भारीतु ऋतुदानं प्रवर्तते ॥ एते नैकादशी निमित्तं प्राद्व्याहं द्वादश्यां वदतः परास्ताः ॥ निर्मूलं स्वा-  
श्रावतं प्राग्नाहमदन एते देवतः ॥ सर्वं भूतं भयं व्यापिः प्रसादो गुरुप्राप्तनवः ॥ अन्नं प्राणि प्रकृत-  
सकृदेतानि प्राशयतः ॥ स्वादेऽपि ॥ पृथुष्टे तान्यन्नं प्राणि प्रापेध्वलं फलं प्रयः ॥ हविर्वाहा एका-  
स्यां च गुरोर्वचनं मोषधम् ॥ गारुडि ॥ भूतं कुर्यात्तदृणं शोकाः क्षीणानां वरदरिणि ॥ मूलं फल-  
प्रयस्तेषाममुपभोग्यं भवेच्छुभे ॥ अस्याप्रवादेऽपि ॥ प्रयत्ने च महुत्थाने सत्याश्वेष्विर्वर्तने ॥ नरोस-

संस्थितफलं हारीदृष्टिप्रत्ययं मय्ययेत ॥ इदं चाति संकटं विवक्ष्यम् ॥ एते चाविरोधिनी निर्याच्यः  
 सर्ववर्तने युद्धेयाः ॥ तत्रैकादश्यां संकल्पः ॥ एही लोहं वरं प्राप्नोद्वर्थादि ॥ मंत्रश्च ॥ एकादश्यां निरा-  
 हारः स्थित्वा ह्रमपरे हनि ॥ ओं ह्यामि पुंडरीकाक्षप्रणामि भवाच्युत ॥ श्रेवादीनां तु हेमाक्षे  
 कौरप्रणो ॥ सावित्र्या यथा वा नास्मा संकल्पं तु समाचरेत् ॥ श्रेवादिनामयच्यो यजुर्वेदप्रसि-  
 द्धाः ॥ वागहे ॥ इत्युच्चार्यततो विहान्मुखांजलिमथार्चयेत् ॥ वतस्तज्जले पिवेत् ॥ अष्टाक्ष-  
 रेण मंत्रेण विज्जिह्वेनाभिर्मंत्रितम् ॥ उपवासफलप्रेसुः पिवेत्यात्रं गतं जलम् ॥ मध्याह्ने च  
 दयेवाद्यप्रसी चोधेरात्रो संकल्पः ॥ इति माधवः ॥ दशम्या रसं गहोषेण अर्द्धे रात्रौ तपो रणतु ॥  
 वज्रर्जना चतुरो यात्रा संकल्प्या चतयो रसदा ॥ विहो पवासो न शनं खुदिनैर्यज्ञा समो हितः  
 रात्रौ संपूजयेद्विष्णुं संकल्पं च तदा चरेत् ॥ इति नारदीये ॥ तत्रैव पूजामभिधाप्य ॥ देवस्य पुरतः  
 क्षुध्यां ज्ञायां निधत्तो ज्ञानी ॥ हृदयं निवेदनमंत्र उक्ताः कात्यायनेन ॥ अज्ञानतिमिरांधस्य वने-  
 नानेन क्रोधाव ॥ प्रसीद सुमुखो नाथ ज्ञानदृष्टिप्रदो भव ॥ नारदीये ॥ चाक्षुषाणाम्भोजये-

संक्षिप्तं च तदा दद्यात् दीक्षितं ततः ॥ कान्ति ॥ कृत्वा चैवी प्रवांसं तु योऽश्नाति द्वापशी दिने ॥ नैवेद्यं तु ल-  
 ४३३ सीमिर्धं दत्त्वा कोटि विनाशनम् ॥ इदं श्रुत्वा भक्त्या ह ॥ दिवानि द्वापयन् न च पुनर्भोजनं ते  
 धुने ॥ चोदं कां प्रसाधितुं तैलं द्वादश्या भष्टवर्जयेत् ॥ विषुवर्षे ॥ अस्माकं व्याहि संभा-  
 ध्य तुलस्य तं सिकां दत्तं ॥ श्यामलवर्णां फलं चापि प्राणैः प्रापय शुद्धाति ॥ प्राणायामे  
 विशेषः ॥ सनत्कुमारीये ॥ नैवाद्यप्रादे स्वयितीह विष्णुर्वैष्णव्यमभ्युपरि व्रते च ॥ पोस्तस्य-  
 जागर्ति तथा वसनेनो प्राणं तत्र वृषः प्रवृत्तः ॥ राजसत्तां च चां द्रातं भद्रा पात किनंत-  
 वां ॥ मृति कां पतितं चैव रं चिच्छेत् स्रुकादेकम् ॥ जगदिनाथे प्रदद्यात् याद्ये वां ध्वनिं सु-  
 तैः ॥ अंशे च संहसं तु जरे द्वेद्वेद्व्या नरम् ॥ एतद्भूतं सुतकेऽपि कुर्व्यम् ॥ तथा च विष्णुः  
 सुतेके सुतेकं चैव न त्याज्यं द्वादशी व्रतम् ॥ तत्र त्वत्कं दानां दिसु तं कुंते कर्तव्यम् ॥ मातये  
 ॥ सुतेकांते नरः स्नात्वा पूजयित्वा जनां देवम् ॥ एतेनैव त्वा विधानेन व्रतस्य फलमप्नुते ॥  
 रजोदर्शनेऽपि कार्थ्यम् ॥ भुलसिः ॥ एकादश्यां न भुंजीत हरेः स्नात्वा रजस्यपि ॥ यदा द्वादश्यां-



संविद्यविप्रमुख्येभ्यस्तापत्रयविवर्जितः ॥ विसृलोकमवाप्येह मोहनीविसृतासह ॥ इति निर्ज-  
 षधे तैकादशी ॥ अथाथादशुक्लैकादशी हरिप्रयत्नी ॥ तत्र लक्ष्मीनारायणमूर्तिं सोवार्णेभूज्य राज्ञो जा-  
 गराद्युत्सवं कुर्यात् ॥ पुण्यमसुज्ये ॥ अथाथादस्य श्रिते पक्षे एकादश्यामृषोषितः ॥ स्थाप-  
 ये तत्र तिमं विस्त्रोप्रसंखचक्रगदाधरम् ॥ पीतांबरधरां सोम्यां पद्म्यं केश्यां स्तुतेषु मे ॥ शु-  
 क्तवस्त्रसमावृज्जे सोपधाने यथिधिर ॥ रत्नापयित्वा दधिक्षीरघृतक्षौद्रजलैस्तथा ॥ समान-  
 लभ्यषु भैरगे दूषेर्वक्षैरलं कृतम् ॥ पूजितं कुंकुमेभ्युक्लैर्मन्त्रेणानेन पाण्डव ॥ मंत्रश्च सु-  
 द्वैत्वयि जगन्नाथ जगत्सुप्तं भवेदिति ॥ विबुधे त्वयि बुद्धेस्तजगत्सर्वं चराचरमिति ॥ एवं स-  
 पूज्य देवस्याग्नेचातुर्भ्यां स्पृजतं कुर्यात् ॥ तदुक्तेभ्यो ॥ एकादश्यां तु गृहीयात्संक्रांतौ क-  
 र्कटस्य च ॥ अथाथादश्यां वानरो मन्त्राचातुर्भ्यो दितं जतमिति ॥ ब्रह्मरभे मंत्रस्त्रनक्षत्राणां संहि-  
 ताया ॥ दूरं जतं मया देव गृहीतं पुरतस्तव ॥ निर्विघ्नं सिद्धिमाया तृप्तं सन्ने त्वयि केशव ॥ गृ-  
 हीतोऽस्मिन् जते देव यद्यद्गोत्रिषां स्यात्सह ॥ तन्मोक्षवत्सं पूर्णं त्वत्प्रसादात्तज्जनां देव ॥

धर्म इति प्रायनी ॥ अथ भाद्रपदे कादश्यां ॥ रात्रौ नैका दश्या भिवपूजो त्सवादि कुर्व्यात् वदेव भविये

धर्मं प्राप्ते भाद्रपदे मासि एका दश्यां स्थिते हनि ॥ कटु दूतं भवे हि ह्योर्मिहा पूजां प्रवर्तयेदिति ॥ क

ददानं पापं परि वर्तनम् ॥ अथ कार्तिक शुक्ले कादश्यां ॥ तत्र देवपूजा जगते त्सवादिभिर्भुञ्जेत्प्रा

वोध्य रथयात्रोत्सव कुर्व्यात् ॥ तदेव ब्रह्मपुराणे ॥ एका दश्या च शुक्लायां कार्तिके मासि के प्राव

म् ॥ प्रसूतं वोपयेद्वात्रो अद्भुत भक्ति समन्वितः ॥ नृत्ये गीते स्तथा वाद्यैर्नर्तयन्नुत्सासं मंगलैः ॥

स्तोत्रैश्च विविधैस्तुत्वा पूजयेद्दर्शयेत्पुष्पैः ॥ होमैर्भक्ष्यैरप्युपलैः पूजयेत्प्राशसैः ॥

हृद्याभ्यां श्वेत रत्नाभ्यां चंदनाभ्यां च सर्वदा ॥ कुंकुमालकक्राभ्यां च रक्त खट्वैस्सकं करौः ॥ त

स्यां रात्र्यां व्यतीतायां ह्यदश्या मरुतो दये ॥ आदौ दत्तेनै क्षीणे मधुना रूपायै ततः ॥ द

शा क्षीरेण च ततः पंच गुच्चेन शारत्त वित् ॥ उद्धर्तनं माष चूर्णं यस्मै मल कानि च ॥ क्षुद्रं प्रा

श्चाक्षिप्य गुरुचक्रा तुलुंगं गारुतथा ॥ सर्वोद्यम्य स्सर्वगंधाः सर्व वीजानि कंचनम् ॥ मंगला

नियथा काम रत्नानि च कुशोदकम् ॥ सर्वं संशोध्य देवेशं दद्याद्गोचरानां शुभाय ॥ नमस्तु क

सर्व  
४६

लया देवा यथा प्राज्ञा लवले कृता ॥ जाती सुखे संयुक्ता स्त फलाश्च सकां चना ॥ पुरा  
ह वेद षट्ते न वीणा वेणु रवेणा च ॥ एवं संस्नाय्य गोविंदं त्वनुत्तिवं सुखं कतम् ॥ सुखास  
संयुजयेच्च सुमतो भिस्सु कुंकुते ॥ धृते हि मे र्मनो दोश्च पाय सेन च भूरिणा ॥ आसुराः पु  
जनी आसु विस्मो रीदध्याश्च मूर्खयः ॥ यत्तु प्रिष्टा नृतं पश्चाद्दोक्तव्यं वास्यौ स्सह ॥ इति  
भाव्येऽपि ॥ कर्तव्ये भुक्त पक्षे तु रक्ताक्ष्यो पश्चात्तु ॥ भोजेणानेन राजेन्द्र देवमु न्याये  
द्विजः ॥ मनुष्य ॥ इदं विदुर्विचक्रतेति ॥ वैदकाः ॥ यो रणकासु ॥ ब्रह्मेन्द्र रुद्राभि कुबेरस्य  
सो मादितुर्वन्दितवन्दीय ॥ बुध्य स्वदेवे प्रजगच्चिवात्संनयप्रभावेन सुखेन देव ॥ इदं  
च हादशी च देव ॥ अथ पश्चमं नः ॥ अतिथ्योतिष्ठ गोविंदं त्यज निद्रां जगत्पते ॥ त्वयि सुने जग  
त्सुप्तमुत्थिते चोत्थितं जगत् ॥ उत्थापनं च दिवे व कार्यम् ॥ तदपि रेव त्वं चरणयो  
गे न दभावे केवल तिथौ संध्या काले ॥ तथा च भविष्ये ॥ आशु काशित पक्षे शुभे न भव एरि  
वती ॥ आदि मध्याह्नसन्ने पुनस्तथा पावर्तनी तस्मात् ॥ एतच्च संभवाभि प्रयिणा द्वेयम् ॥

४६



तषाच ॥ निशि स्वापो दिवो स्थानं संध्यायां परिवर्त्तनम् ॥ अन्यत्र पादयो गोऽपि द्वादश्या  
 मेव कारयेदिति ॥ विलुभर्त्ता ॥ विसोर्दिवानस्वपि च न च एतौ प्रवृत्त्यते ॥ द्वादशी च द-  
 क्षसंयोग पादयो गोन कारणमिति ॥ एतौ नक्षत्रादियोगलाभेऽपि दिवौ तथाप्यनभि-  
 त्यर्थः ॥ पूर्वोक्तमंत्रेण देवसुत्याप्यपुण्यांजलिं दद्यादनेन च ॥ चरणपवित्रमिति चेदिक्रः  
 ॥ गौणिकस्तु ॥ गतामेधाविव्यञ्चैव निर्मलं निर्मलं निश्चिः ॥ प्रारुहानि च पुण्याणि र-  
 गृहाणाममकैश्रव ॥ महावर्च्यखेणोत्थिते विक्षोतं स्वर्देन संस्थाप्य एतौ जागरणादि  
 विधाय प्रभते चाक्षणा न्मोज्यवाक्षणा भेपूर्वकृतं चातुर्मीस्य व्रतं प्रोच्य विप्रेभ्यो  
 दक्षिणां दत्त्वा श्रीनाथं प्रार्थयेदनेन ॥ मन्त्रः ॥ इदं व्रतं मया देवकृतं प्रीत्यै तव प्रभो  
 ॥ न्यूनं संपूर्णं तां यातु त्वत्प्रसादाज्जानार्द्धेन ॥ इति प्रार्थ्य स्वयमपि भुंजीत ॥ इति वो-  
 धिन्यैकादशी ॥ अथ फाल्गुन शुक्लैकादशी अमर्दकी त्वृच्यते ॥ तत्रासर्दकस्थितं विलुं सं-  
 पूज्य दक्षिणां दद्यात् ॥ तदेव भविष्ये ॥ फाल्गुने मासि शुक्लायामेकादश्यास्त्रिनार्द्धेनः ॥ ४६

वसत्यामलकी वृक्षे लक्ष्म्या सहवनस्पतिं ॥ ततस्संपूज्य विधिवन्न तथा कुर्यात्प्रदक्षिणा-  
म् ॥ उपोष्य विधिवत्कल्पं विष्णु लोके महीयते ॥ इति वृद्धनिर्ययः ॥ अगमलक मूले दि-  
प्तुं संस्थाप्य प्रदक्षिणाः कुर्यात्स्थोत्तरप्रातम् ॥ रत्ने सुवर्णे रत्ने र्वाफले रत्ने र्थ्ये वा-  
दिभिर्वा ॥ तथा च ॥ यश्चा मलक प्राप्या वां पृथे चै वाधिवास्य च ॥ विष्णोः प्रदक्षि-  
णां कुर्यात्तस्य स्यादधिकं फलमिति ॥ इत्यामर्दकी सर्वास्वेकादश्रीभुतिविधय विवि-  
नश्चिवः पूज्येति दिक् ॥ इत्येकादशी निर्ययः ॥ अथ द्वादशी निर्ययते ॥ द्वादश्युपवासादि-  
शुस्कादश्रीयुतेव ग्राह्यायुग्मवाक्यात् ॥ त्रयोदशी चैवस्तु निवेधः कर्मशरणो भव-  
गाविज्ञानुयाययी रुद्रविज्ञो दिवाकरः ॥ कामविज्ञो भवेद्विष्णुर्न ग्राह्यातेतु चामर-  
॥ विष्णुहादश्री ॥ कामत्रयोदशी ॥ यदा भवेदनी वाल्या द्वादशी पाश्यादिने भु-  
यः काले द्वयंकुर्यात्प्रातर्मथ्यान्हिकं तदिदि ॥ स्कंदे ॥ चैत्रशुक्ल द्वादश्यां ह्रमन  
कार्यसाम् ॥ अथादशुक्ल द्वादश्यां तप्तमुद्राधारणम् ॥ तदज्ञाहारा विषयमेव

[illegible]

संक्षिप्तकादशी मुर्पोष्ट्यैव द्वादशी समुपपोषयेत् ॥ नतत्रविधिलोपः स्यादुभयोर्देवनं हर्षिः  
 ३६ ॥ नारदीये ॥ यदानत्राप्यते ऋत्सं द्वादश्यां श्रवणं कश्चित् ॥ एकादशी तदा पोष्या पाप  
 श्रोश्रवणां चितेति ॥ यदेकादशी श्रवणं युक्ता चेत्तदा एकादशी ब्रतं श्रवणं द्वादशी ब्र-  
 तं ह्यमेव कृतं भवति ॥ तदेवमात्ये ॥ द्वादश्यां श्रवणं कर्त्तुं चेत्सुश्रेष्ठे कादशी यदि ॥  
 स एव वैश्वदेवो योगो विश्वसुष्टं रत्नं संज्ञकः ॥ तस्मिन्नुपोष्याविधिवन्तरः प्रक्षीणा  
 कल्पमयः ॥ प्राज्ञो त्यनुत्तमो सिद्धिं पुनरावृत्तिवर्जितामिति ॥ ब्रतं ह्यप्राप्तो ॥  
 खान्ते ॥ प्रथमे हि फलाहारी निराहारी परे हनि ॥ उपोष्ये कादशीं मोहात्पार-  
 यं श्रवणो यदि ॥ करोति हंति तत्पुण्यं द्वादश्यां भवमिति ॥ तदा तु द्विती-  
 यादिने श्रवणं कर्त्तुं चेत्तदा ऋत्सं तोनापेक्षणीयः ॥ ऋक्षानोपायं कुर्या-  
 द्विना श्रवणं रोहिणीमिति वचनात् ॥ अन्ये तु ॥ अमाकाशितपक्षे शुभे न श्रव-  
 णं रोहिणी ॥ संगमे न हि नोक्तं द्वादश्यां द्वादशी क्षयादिति ॥ दिनं ह्ये तत्सत्त्वे-

मंक्रि उदये तद्युक्ता ग्राह्या ॥ उदय व्यापिनी ग्राह्या अवरा ह्यदृशी ज्ञेयति दृह न्नादृहीयात् ॥

४६ अत्रा यो गंतु दृष्टमी विद्यपि ग्राह्या भिषु ग्राह्यात् ॥ एता चोस्तु विप्रेषः ॥ अवरा ह्यदृश्या वाम नावतारः ॥ कृष्ण पूजा प्रवरा ह्यदृश्या जनाई न पूजेयति ॥ अन्न जप होमा-

दिकं कृत्वा सेवणीं हरि प्रतिमां संप्रतिष्ठितां दध्योदनं जलपूणां कुंभं उपानहो क्षत्रं च विप्राय दद्यात् ॥ इति अवरा ह्यदृशी ॥ अस्यामेव दंद्रध्वजो त्याघ्नं कुर्यात् ॥ यहुक्तं गा-

त्स्ये ॥ ह्यदृश्यां च ध्रुवे पक्षे मासि भाद्रपदे तथा ॥ प्रक्रमुत्या पयेद्राजा विष्णु ऋक्षान्न-  
ये सतीति ॥ अथ कार्तिक कला ह्यदृश्यां ॥ गोभूति का काल व्यापिन्यां गोवत्स पूजा काव्या

॥ तस्या स्वत्काल एव विधानात् ॥ दिन दृष्टे तत्काल व्यापित्वे पूर्वैव ॥ तदुक्तं ॥ वत्स पू-  
जा पदं प्रैव कर्तव्या प्रथमे हनि ॥ इति वत्स ह्यदृशी ॥ अथ माघ कला ह्यदृशी ॥ तत्र तिलै-

रात्वा विष्णु मभ्यर्च्य तिलैर्दीपं दत्वा तिल तैलेन नीवेद्यं होम दानानि तिल तैलेनै-  
व कृत्वा तिलाभ्यर्चयेत् ॥ तदेव मात्स्ये ॥ माघे तु कृष्ण ह्यदृश्यां यमो हि भगवान्मुरा ॥ ४६

४६

तिलानुत्थादया सा स त प्रः कृत्वा तु दारुणाम् ॥ राजा दृष्ट्वा ध्यो भूर्मौ न स्मात्ता न व तार प व  
 ॥ तिलानामधिप त्वे तु विस्तु तत्र वृत्त रसुरैः ॥ तस्या भुयो धितः स्नात स्तिलै स्तस्यां यत्रै  
 इरिम् ॥ तिल तैलेन दी पाश्च दया देव गृहे शुच ॥ निवेदये तिलानेव हीन व्याप्त्र वथा  
 तिलाः ॥ तिलान्दत्त्वा च विभ्रेभ्यो भक्षयित्वा तिलानिति ॥ इति तिल द्वादशी ॥ माघ स्यो भ-  
 य द्वादश्यां तैलाभ्यं गोन कार्थ्यः ॥ यहुक्तं मात्से ॥ उपार्थ्ये द्वादशी माघे द्वादश्यां तैल सेव-  
 गत कुरुपं ग्राह वा ने हे पुरा से कः पुरुर द्वादति ॥ त र्ची स्वपि द्वादशी शु विल्व फलं दंत-  
 फाळं च वर्जयेदित्यलम् ॥ इति द्वादशी निर्णयः ॥ अथ त्रयो दशी निर्णयते ॥ सा तु ॥ शुक्ला त्र-  
 यो दशी पूर्वा परा कृष्णा त्रयो दशी ति माथ दीये ॥ एषा तु प्रहोष व्यापिनी दिन दूये व्याप्ता व-  
 या हो वा पूर्वा ॥ शुभन्तुः ॥ त्रयो दशी तु कर्तव्या द्वादशी सहिता पुनः ॥ अहोत्तर स्रव हे ऽपि ॥  
 पक्ष दूये त्रयो दश्यां निराहारे भवेद्विवा ॥ घटिका त्रिरस्त प्रयात्पूर्वे स्नानं स्वप्नान्वरेत् ॥  
 अथ चैत्र शुक्ल त्रयो दशी ॥ अर्चनं त्रयो दशी ॥ ता च पूर्वै चोपो व्या ॥ तथा च संवर्तः ॥ अविद्ये ऽपि

॥ अस्यां स्नात्वा त्रयोदश्या मशौ कारव्यं नमोस्तिरवेत् ॥ सिंहं रजनीयेणेति श्रीतिरुम-  
 न्दितम् ॥ कामदेवं वसंतं च वाजिचक्रं दृषध्वजम् ॥ मध्याह्ने पूजयेद्भक्त्या भर्तुः  
 धैर्यं गौरैः ॥ मन्त्रेणा नैनकोते यनवगाध्यासमाच्यतः ॥ मंत्रः ॥ नमो शमाय कामा-  
 यदेव देवस्य मूर्तये ॥ ब्रह्मचिखु श्रिवेन्द्राणां नमः क्षेमकराय वै ॥ इति ॥ ततस्तस्यां प्र-  
 तोदयामोदकाद्युतपाच्यताः ॥ नानाप्रकारभक्ष्याश्च कामो मे प्रीयतामिति ॥ स्वप्र-  
 तिपूजयेन्मारी वस्त्रमाल्यविभूषणैः ॥ कामो यमिति संचिंत्य ब्रह्मदेव्यां तस्मात्तना ॥  
 राज्ञो जागरणं कुर्यात्सुखरात्रिर्थादा भवेत् ॥ पूजयेद्विप्रसंपत्यं वस्त्रालंकारचंदनै-  
 र् ॥ एवं यः कुरुते पार्थ वर्ये वर्धे महोत्सवम् ॥ वसंतसमये प्राप्ते हृष्टः पृष्टस्तदा भवेत् ॥  
 कौर्मो विरेयः ॥ मधौ शुक्ला त्रयोदश्यां मदनं चंदनात्मकम् ॥ कृत्वा संपूज्य यत्नेन वी-  
 जयेद्वाजनेन च ॥ ततः संधुहितः कामः पुत्रपौत्रसमृद्धिददति ॥ अथमाद्रक्ष्य त्रयोदश-  
 युगादिः ॥ शुक्लचंद्रमासाभिप्रायेण ॥ अत्र मधुद्युतसहितेन पायसेन प्राङ्मुख्यं ॥

के तथा च पितृगाथा ॥ अग्निं न स्त कुले जायाद्यो नो दद्यात्त्रयो दृष्टीम् ॥ पायसं मधुसधिर्यथा  
 ह वै चर्वासु च मया सुचेति ॥ अथ कार्तिकशुक्लत्रयोदशी ॥ तत्र यमदीपं शत्रो वहिर्द्वादत् ॥ तथा  
 च स्कान् ॥ कार्तिकस्यासिते पक्षे त्रयोदश्यां निष्ठाशुवे ॥ यमदीपं वहिर्द्वादपशुत्तु-  
 र्चिनश्च्यति ॥ दीपदानं नञश्च ॥ मृत्पुना पात्रदहाभ्यां कालस्या मलया सह ॥ त्रयो-  
 दश्यां दीपदानात्सूर्य्यजः प्रीयतामिति ॥ अत्र वृंता कानि नभस्येत् ॥ सर्वासु त्रयोद-  
 शीषु अन्नं गाः पूज्यः तिथिपतिस्वात् ॥ इति त्रयोदशी निर्ययः ॥ अथ चतुर्दशी निर्ययते ॥ सा  
 च कृष्णा पूर्वाशुक्लोत्तराह्णपक्षेऽष्टमी चैव कृष्णपक्षे चतुर्दशी ॥ पूर्वविद्भैव कर्तव्या प-  
 रविज्ञानकुत्रचिदिदस्याप स्तं दीर्घैः ॥ शुक्लपक्षेऽष्टमी चैव शुक्लपक्षे चतुर्दशी ॥ पूर्ववि-  
 ज्ञान कर्तव्या कर्तव्या परसंयुता ॥ इति ग्रहस्मृतिः इति चतुर्दशी सामान्य निर्ययः अथ विशेषे-  
 यः ॥ अथ चैत्रशुक्लचतुर्दशी ॥ तस्यां कुंकुमागरकर्पूरदिभिर्द्द्वैतन केन च शिवपूजा ॥  
 तदेव देवीपुण्ये ॥ चतुर्दश्यां तु कर्पूरचंदनागरकुंकुमैः ॥ चत्वारिंशे मणिपूजा च कर्तव्या ॥



३३ महती शिव ॥ वितानध्वजचक्रं चक्षुः प्रज्यास्तु मातरः ॥ महत्पुण्यमवाप्नोति भूधरो  
 ३० यथाताधिकमिति ॥ अन्यच्च मधुमासेतुसंघाते शुक्लपक्षे चतुर्दशी ॥ श्रीकादमनपूर्जे  
 तिस्रिहिरातुमहोत्सवेति ॥ लिंगपुराणे विशेषः ॥ दमनस्तुत्रयोदश्यां तालवृंता नलेन तु  
 हंसयानसमारुद्धकाममंत्रप्रवर्द्धितः ॥ नाशीधिविजितश्चेन्नैलो कयो न्मादमाचर-  
 न् ॥ तन्निर्वापयाधार्येन चतुर्दश्यां महासुते ॥ ततोत्सवं भूयां श्रीकानार्थप्रत्वाथमस-  
 रत्तथा ॥ कुर्वन्ति कर्हमेनैव शाल्मनस्त्वनुलेपनं ॥ निर्वधितानंगपीडाभवत्येव समादा-  
 या ॥ एतदर्थं सदाकार्यं कर्हमेन चक्रोडनम् ॥ प्रातःग्रहस्मार्त्तं च कर्त्तव्यं श्रीडनं नरैः ॥ प्र-  
 क्षालयन्ततः कृत्वा गंधमाल्यानुलेपनम् ॥ वस्त्रतां वूलगीतादि रथ्या हरेषु चारैरत्न ॥  
 चर्चरी घोषिते प्रस्तेव कृत्वा नृत्यं शिवाग्रतः ॥ सर्वकामसमृद्धस्तु वसेच्छिवपुरे नरः ॥ स्वयं  
 तुल्यंगमेकं तु दृष्ट्वा तस्मिन् दिने नरः ॥ ज्ञानं लब्ध्वा नरः सम्यक् शिव एव न संशयः ॥ द-  
 तिर्देव चतुर्दशी ॥ अथ वैशाख शुक्लचतुर्दशी ॥ सा च प्रदोषव्याधिनी ॥ तथा चरकान्ते ॥ वैशाख एव स्व-

चतुर्दश्या सोमवारं नैलक्ष्मिकं ॥ अथ तारो नृसिंहस्य प्रदीप्य संमये द्विजा इति ॥ अग्नि-  
 लक्ष्मिः स्वाती ॥ स्वाती योगप्राधान्यं वैलवा नाथ ॥ अथ ज्येष्ठशुक्लचतुर्दशी ॥ तस्मिन्दिने पं-  
 चतपाः सायं श्रितव्यं श्रीतये हिरण्यं धेनुं दद्यात् ॥ तदेव मात्से ॥ ज्येष्ठे पंचतपाः सायं हेम-  
 धेनुं प्रदीदितम् ॥ यात्यष्टमी चतुर्दश्या रुद्रघ्नतमिदं स्मृतमिति ॥ अथ भाद्रपुक्लचतुर्द-  
 शी ॥ तस्यामनंतं व्रतं सा चोदय व्यापिनी गार्हा ॥ रक्षते मुहूर्त्तमपि चेद्भाद्रपौर्णमास्यां  
 चतुर्दशी ॥ तां संपूज्यो भिद्रुस्तस्या पूजयेद्विष्णुमव्ययम् ॥ मुहूर्त्तमपि त्रिसुहूर्त्तप्रशं-  
 सापरम् ॥ तेन त्रिहर्तः सुख्यः कल्पः द्विसुहर्त्तानु कल्प इति मांधवः ॥ अत्र विधिः ॥ पक्वा प्र-  
 ख्यं दत्ते नैव गोधूमान्नं प्रयत्नतः ॥ अर्द्धविप्राय दातव्यमर्द्धमात्मनिभ्यो ज्येष्ठे इति ॥ च-  
 तुर्दश्यां धियुक्तं सत्तं चाग्ने रक्षी दक्षिणे पुमान् ॥ कोऽथार्ये इति ॥ अनंतं प्रतिभां चन्दनादि-  
 ना सार्पं मूर्तिं रुशेण पूजयेत् ॥ इदं व्रतं काम्यं भक्तश्रवणात् ॥ निर्ययभारकोऽपि ॥ अनंतं  
 रणेण विभर्षि पृथ्वीमनंतं तलास्मी वरहोऽसिमुष्टः ॥ अनंतं लोकां नृददासि लोकोभ्योऽन्वं

संनि तत्पि न कुरु मे प्रसादम् ॥ इत्यनंतश्चामंत्रः ॥ अनंतं संसारमहासमुद्रे मग्ना न्यमि भुङ्क्ते  
 ४३ वासुदेव ॥ अनंतस्थे विनिधौ जयस्व अनंतस्त्राय नमो नमस्ते ॥ इति नैवेद्यादिदानमंत्रः  
 अनंतकामर्दं देवं सर्वकामफलप्रदम् ॥ अनंतधर्मस्यं डीरं पुत्रपौत्रविवर्द्धनम् ॥ वज्रा-  
 नीति प्रोचः ॥ अनेन चतुर्दशप्रथिभयं डीरकं वधीयात् ॥ इत्यनंतचतुर्दशी ॥ अथ कार्तिके  
 षष्ठ्यक्षरदृशी ॥ यमचतुर्दशी सैवे नरकेति ॥ ब्राह्म्यमुहूर्तं ज्ञातः कालव्यापिनी ग्राह्या ॥ अ-  
 नोपसभ्यंगं खानं च कृत्वा ॥ धर्मज्ञानार्थं माघपक्षाश्विनं सैव प्रतिमा पूजनं दीपद्व-  
 नादिकं कुर्यात् ॥ तदेव भविष्ये ॥ कार्तिके षष्ठ्यपक्षे चतुर्दश्या मिनो द्ये ॥ अथ प्रथमेव क-  
 र्तव्यं खानं नरकाभीरुमिति ॥ ह्नोऽत्र चंद्रः ॥ यदि पूर्वो न्हि पंच दशिका नयो दृश्ये दृश्यः  
 पंच पंचाशत् ॥ एवं संभवे त्रयो दृश्ये मध्येऽरणो द्ये स्मायात् ॥ ततोऽन्यत्र खाननिषे-  
 धात् ॥ तथा च यमः ॥ अरणो द्योऽन्यत्र कृत्वा यां क्ताति यो नरः ॥ तस्याद्विक्रमं बोधयति न-  
 थ्यत्येव न संशयः ॥ अत्र पर्वणि ति लोले खानम् ॥ तदेव भविष्ये ॥ आभिवने कृत्वा पक्षे तु च-

किं तु ह्यस्यां विभुदये ॥ तिल तैलेन कर्तव्यं स्नानं नक्तभीतिरिति ॥ अथाधिन प्राद्वीऽन्नाचं द्रव्या-  
 ४०३ स्तपरः ॥ ब्रह्मधुराणे ॥ तैले लक्ष्मी जले यंगा दीप मात्स्याश्चतुर्दशी ॥ प्रातःस्नानं तु यः कुर्या-  
 तयमलोकं न पश्यति ॥ प्रातश्चतुर्धतिकाऽरुणेदय कालं क्षति ॥ संवत्सरं प्रदीपे ॥ पादौ ॥ अ-  
 पा मार्गमथोतुं वीप्रमुन्नादमथापरस् ॥ आसये त्वानमथ्येनुरक्कस्य क्षयाय वै ॥  
 क्षपा मार्गस्य पक्षवान्नामये छिद्रसौपरि ॥ ततश्चतर्पणं कार्यं न्यर्मणस्य नामभिः  
 ॥ क्षपा मार्ग आगल मंत्रस्तु ॥ मीता लोहसमायुक्तं सकंदकदलान्वित ॥ हरपापमपामर्मा  
 न्नास्य माणमुनःपुनः ॥ इति यमतर्पणं नुसव्येन कर्तव्यं ॥ यतस्तस्य देवत्वं पितृत्वं च ॥  
 स्वान्ते ॥ दक्षिणाभिमुखो भूत्वा स्तित्वं समाहितः ॥ देवतीर्थं न देवत्वात् तिलैः प्रेता-  
 धिपो यतः ॥ यमाय धर्मं यज्जपेति चतुर्दशनामभिस्तर्पणं विधेयम् ॥ ततः प्रदोषस्म-  
 र्देही पान्दद्यान्मनो रसान् ॥ ब्रह्म विष्णु शिवादीनां भवने शुभे शुच ॥ प्राकारोद्या-  
 नवापीषु व्रतोल्लीनिऽद्वन्द्वेषु च ॥ संसारासु विविक्तासु हस्तिशालासु चैव हि ॥ लेङ्गे ॥

ततः श्रेत चतुर्दश्यां भोजयित्वा हिजो तमान् ॥ शेषान् विप्रोऽस्त्वष्टा पलाय्य शिवलोको-

महीयते ॥ द्वावं दत्त्वा तृतेभ्यश्च यमलोकं न गच्छति ॥ माय पत्रस्य प्राक् कन्य भुक्त्वा-

तत्र दिने नरः ॥ श्रेता चतुर्दशी काले सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥ नक्तं श्रेत चतुर्दश्यां धः कुच्यते ॥

वश्वमेधे ॥ न तत्कृतु श्रेतेनापि प्राप्यते पुण्यमोदशम ॥ कुमारीर्वदुका नृज्यं तया श्रेतो-

स्तपो धनान् ॥ राजसह्य फलते नैर्ग्राप्यते नान्न संश्रयः ॥ इति ॥ कार्तिक शुक्ल चतुर्दश्यां द्वाह-

सुहोविश्वे प्रवश्याना ॥ सैव पायाण चतुर्दशी ॥ देवीपुण्ये ॥ कार्तिके शुक्ल पक्षे तु या पायाणा चतु-

र्दशी ॥ तस्या मास धयन् गोरी नक्तं पायाणा मस्तकः ॥ ऐश्वर्यसौख्यसौभाग्यरूपा-

णि प्राप्नुयान्तरः ॥ इति ॥ मार्गशुक्ल चतुर्दश्यां पिशाचमोचनयात्रा ॥ अथ माघशुक्ल चतुर्दशी-

शरदत्याख्या ॥ तत्रानुदिते स्नात्वा यमं संपूज्य सप्तभिर्न्यामिभिरसप्तति लोदकां जालिं-

त्वा तिलहोमं च कृत्वा पितृभ्यः श्राद्धं च कृत्वा ब्राह्मणेभ्यः कृश्वारभोजनं च दत्त्वा हव-

यमपि कृश्वारभोजनं कृत्वा सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥ ब्राह्मणे ॥ माघशुक्ल चतुर्दश्यां विष्णोर्दे-

भिक्षु चान्मरी चयः ॥ निश्चेरुसि लका कार प्रणत प्रोदय सहस्रः ॥ अन्न कान्मरी दत काल स-  
 त्सुता राधुके व्यपि ॥ राक्षा च तत्र संप्रज्यो यमः प्रलय भास्करः ॥ निमित्तं पंच तारेयं तत्र प्रो-  
 क्तं यतो भुवि ॥ तदा सा पि निष्ठा ह्येया तारा ए निस्सु दारणा ॥ तत्रो पो व्यत्रयो दृश्यां स-  
 प्राप्ते तु निष्ठा क्षये ॥ स्नात्वा पूज्यो जगद्ग त्ति हरिः पूज्या प्रच ताकाः ॥ नैवेद्ये विविधा-  
 कारैः कृशरेण तु भूरिणा ॥ वह्निः पूज्यश्च भगवान्मृता कै तिल वल्गुलैः ॥ नमः प्राण-  
 व संयुक्ता न्स तिलोश्च जलाञ्जलिम् ॥ यमाय धर्म ए जाय मृत्यवे चान्मका यच-  
 ॥ देव स्वताय कालाय सर्व प्राण हराय च ॥ सप्त सप्त प्रदेया निश्चय कृते वा तिलोदकम् ॥  
 कृशरं भोजनीयाश्च ब्राह्मणा ॥ सततं तन्म ॥ आहुं दत्वा पितृभ्यश्च मृत्यु कं स्स्यात्सर्व पात-  
 कैः ॥ ततो विभज्य दंभुभ्यः कृशरं यक्ष्ये त्वयं यमीत्यदंती च तुष्टिः ॥ अथ शिव ए निभि-  
 रणीयते ॥ फाल्गुन कृश चतुर्दशी शिव ए निस्सा निष्ठी वक्ष्या पिनी ॥ ईशानं संहितायाम् ॥  
 तपस्ये कृश भूता च शिष्य ए निः प्रकीर्तिता ॥ महा निष्ठा चिता यां तु तत्र कुर्व्या दिदं ज्ञात ॥

संस्थिति ॥ दिनद्वये निशीथाव्याप्तौ सुपूर्वा ॥ हस्तपक्षेऽथमीर्क्षे वेत्यापस्तं चोक्तेः ॥ अथ पर-  
४७६ विधायकानि वाक्यानि ॥ स्फान्ते ॥ चतुर्दशी च दर्श प्रचरकी भूय यदा भवेत् ॥ तद्दोषवा-

संकुर्वीत न च काम द्युते हनि ॥ अपस्व ॥ माघासिते भूतदिनं हि राजन् उपेतियोयं यद्विषं  
चदश्याः ॥ ज्या प्रयुक्ता न हि जातु कुर्याच्छिवस्य रात्रिं प्रियक्वच्छिवस्य ॥ अत्र पूर्व वि-  
द्वाप्रतिपार्श्वे वाक्ये ॥ पूर्व विद्वाया मर्दरात्रिद्युतायां चतुर्दश्या भूय वासः ॥ परविद्वायामर्द-  
रात्रिव्यापिन्यां चतुर्दश्या उपवासः ॥ अथ त्राहं रात्रिव्यापिन्यां परविद्वायामेवोपवास-  
द्वतिसिद्धंतः ॥ यत्तु प्रदीप व्यापिनी ग्राह्या शिवरात्रिः शिवप्रिये ॥ रात्रौ जागरणं यस्मान्न-  
स्मान्नस्यामुपेय एव ॥ द्दं वचनं शर्द्दरात्रि चतुर्दश्याभावे वेदितव्यम् ॥ यदुक्तं ॥ यदा न स्या-  
च्छिवरात्रिर्द्दरात्र्यां तदा न य ॥ प्रदीपे व्यापिनी ग्राह्या तदा शिवतन्मातिथिः ॥ अन्यानि  
प्रदीपव्यापिनी विधाधिकानि काक्यानि ॥ शर्द्दरात्राभावे वेदितव्यानि ॥ माघ न मृतेऽपि ॥ म-  
घेयव्यापित्वे सति शर्द्दरात्रव्यापिनी सेतमा ॥ शर्द्दरात्रव्यापिनी मध्यमा प्रदीपव्यापि-

॥ श्री नीचूनेति सिद्धांतः ॥ प्राज्ञपाणाविषये ॥ तिथिमध्ये पाणं श्रेष्ठतरम् ॥ तिथ्यंते पाणं कु-  
 ५७ व्यादिनाशिव चतुर्दशी भित्तिस्कान्हेकेः ॥ साचशिवो पास कानां नित्या ॥ परात्परत्वं ना-  
 स्ति शिवरात्रिः परात्परम् ॥ नष्टजयति भक्तैरंदं त्रिभुवनेश्वरम् ॥ जन्तुर्जन्म सह वैषु-  
 जायते नात्र संप्रप्यः ॥ शिवभक्तानां नित्यम् काम्यं त्वन्येषां ॥ शिवरात्रिं व्रतं नाम सर्वपाप-  
 प्रणाशनम् ॥ आचां डाल मनुष्याणां भक्तिशुक्तिप्रदायकम् ॥ भक्तवाक्यानि ग्रंथ भूयस्त्वा-  
 न्नलिरितानि ॥ दूतचर्द्धप्रणिणयः ॥ श्रव्यश्रुतिमनिणीयते ॥ सावद सावित्री व्यतिरिक्तं व-  
 तादिदृशपरान्वितैव कार्या ॥ भूतविद्वानकर्तव्या दर्शः पूर्णं कदाचन ॥ वर्जयित्वा मुनिश्रेष्ठ-  
 सावित्रीव्रतमुत्तमम् ॥ दूतैव ब्रह्मवैवर्ते सावित्रीव्रतं भाद्रपदपूर्णिमासम् ॥ अथ चैत्रशेषी मासी-  
 ॥ तत्र चित्रायुक्तायां चित्रवस्त्रं दद्यात् ॥ बहुलं विषुस्यते ॥ चैत्री चित्रायुता चैत्स्या न्याहा पुण्य-  
 तमा स्सुता ॥ चित्रवस्त्रप्रदानेन सोभान्य भ्याभुयान्तरः ॥ ब्रह्मपुराणे विशेषः ॥ मंदे चार्केशुरे-  
 दापि वारे ध्येते शुचैत्रकी ॥ तत्राष्टव मेधिकं पूरणं स्थानेन लभते नरः ॥ दानम द्वाय तां ध्याति



के भित्तुणां तर्पणं तथा ॥ अत्र ह मन केन सर्वान्देवानर्चयेत् ॥ संवत्सर कृत पूजायाः फलं प्रा-  
 ३०प्नोति ॥ तदैव वा पुण्ये ॥ संवत्सर कृतार्चाः सा फलदाया रिव लान्मुगान् ह मनोनार्चयेत् सै-  
 न्यां विशेषेण सह शिवमिति ॥ अथैषा एव पूर्णिमा तत्राजिनहनं कुर्यात् ॥ यत्सह विष्णुः  
 ॥ कृत्वा जिने तिलान् कृत्वा हिरण्यं मधुसायिभिः ॥ दद्याति यस्तु विनाय सर्वान्तरिति सुः क-  
 तम् ॥ वैष्णव्यां योगे मास्यां च विष्णवे दत्तः ॥ सप्तसुदंशु हर्षेण सौम्येन वन-  
 कानना ॥ सहस्रदीपान्विता दत्ताष्टविंशतीनां संप्रदायः ॥ अथ ज्येष्ठ पूर्णिमा ॥ तत्र हर्षोपा-  
 नहानं तिलदानं च ॥ यत्सह विष्णुः ॥ ज्येष्ठे ज्येष्ठ्या यदा चेत्या तदहर्षोपापान्नाशनं न-  
 नरो जगदिपत्यमाप्नोति ॥ आदित्यपुण्ये ॥ ज्येष्ठे मासि तिलान् दद्यात्पौर्णमास्यां विशेषे-  
 यतः ॥ अथ संधयस्तु यत्सु यत्तत्पौर्णमासि तिनसं प्रयत्नमिति ॥ अथ यादी पूर्णा ॥ तत्र चतुर्द-  
 श्या सुषोष्प विष्णु पूजनम् ॥ यद्गुरुं ब्रह्मे ॥ चतुर्दश्या सुषोष्पया यथोपासायां यजेद्भूमि-  
 ति ॥ अस्यामेवापादयुतायां अन्नादिस्नानमस्तयम् ॥ यत्सह विष्णुः ॥ अथापाद्या मायाद-

युतायामन्यपानादि दानमक्षयं भवति ॥ यदा चतुर्दश दश नाडका धका भवता-  
 तत्र सावित्री व्रतमपि त्याज्यम् ॥ भूतोऽद्या दश नाडी भिर्द्वय यत्पुनरातिथि भिति ॥  
 स्यते ॥ अन्नप्राद्व न्नित्यम् ॥ पितामहः ॥ अमावास्या व्यतीपात पौर्णमास्या दृका पु-  
 नः ॥ अन्नप्राद्व मकुवाणो नरकं प्रति पद्यते ॥ आषाढी तु कौकिली जतोपक्रमे संख्या-  
 कालव्यापिनी ॥ भविष्ये आषाढ पौर्णमास्यां तु सायं काले ह्युपस्थिते ॥ संकल्पद्वे-  
 न्मास मेकं आचरणे आत्यहं त्विदं ॥ व्यास पूजायां चोदयि को तिमुहूर्त्तः ॥ विष्णुपू-  
 जे ॥ त्रिमुहूर्त्तधिकं ग्राह्यं पर्वक्षौद्रप्राण विनोदिति ॥ अन्ननवरात्रिद्वेः च दोष सप्तद्वेः ॥  
 क्षीरवंशे ध्वजा वंधनं कल्पा द्वादिचायु विचारः कर्तव्यः ॥ अथ आचरणी पौर्णिमा ॥ तत्र  
 पौर्णिमास्यां ग्रहणा संक्रांति होष रहितायां च दय काल व्यापित्वं दोहो व्याधिनाहु-  
 र्भावेऽपि यजुः शारदा व्याधिनः ॥ उषा कर्मकुर्व्युः ॥ आचरणे सात सप्त चण नक्षत्रे  
 धनिष्ठानक्षत्रे बह्व्याः ॥ साम वेदि नस्तु आचरणे मासस्य पंचम्यं हस्तयुजो योक्तु-

अथिः ॥ शेषधि प्राहुर्भविग्रहणदिदोषर हितायां च सर्वेषां तुल्यमिति ॥ तदाह यद्वलम्

४८०

॥ अथाद्यानामुपाकर्म आवाद्या अवरो नवा ॥ हस्तेनोक्थि नावेवापंचस्थां आवाणा-  
स्यतु ॥ उपाकर्मदोषक्रमः ॥ अनाथाद्यानामिति श्रणत्वाभिप्रायेण वचनम् ॥ गोभिलः  
पर्वण्योदयिके ह्युच्यते आवाण्यतेति ह्येककाः ॥ वक्तृत्वाः अवरोर्देतुहस्तर्दिसामवेदि-  
नः ॥ निगमेऽपि ॥ आवाण्यं आवाणी कर्म यथाविधिसमाचरेत् ॥ उपाकर्मन्तु कर्तव्यं क-  
र्तव्यं स्थेदिवाक्ये ॥ हस्तेन शुक्लपंचम्यां अवरो अवरो भवेदिति ॥ चतुर्दश्यां युक्तस्य पर्व-  
ण्ये निवेधाय ॥ चतुर्दश्यां समुत्पन्ना वसु रौमधु कैटभौ वेदान्तौ कुर्वतः पच्यथोने सौ-  
जद्रुतः श्रुतीः ॥ हत्वा तावदुरो देवः प्रानल नल वासिनो ॥ आहव्यताः श्रुती स्वस्ते ददौ रत्नो-  
कगुरुः खयम् ॥ सप्तास्रवान् श्रुतीर्ब्रह्मा पर्वण्योदयिके धुनः ॥ अतो भूतधुने तस्मिन्ने-  
वाकरणा सिध्यते ॥ आसुरं वज्रं वेत्तलं वेदाहरणं कथेति ॥ यत्तु आवाणी दूर्यनवमी  
दूर्वा चैव हुतासनी ॥ दूर्वा विहातु कर्तव्या ॥ शिवरात्रिर्वर्त्तते हि निमित्तं ॥ एतस्य आवाण्यं

४८०

विविधमानं पवित्रं ऐयं विषयम् ॥ उपाकर्मो गभूतमास्तु ह्यप कश्चाद् विषयं  
 वा ॥ अत्र तैत्तिरीयकपदमन्येषामपि यजुः शाखिनामुपलक्षकम् ॥ तेषां कालांत  
 एवियानात् ॥ व्यासः ॥ आबलेन नृपत्कर्म उन्नराषाढसंयुतम् ॥ संवत्सरकृतोऽध्या  
 यस्तत्क्षणा देवनश्रुतिः ॥ धनिष्ठासंयुतं कुर्याच्छ्रावणं कर्मयज्ञवेत् ॥ तत्कर्म  
 सफलं विद्यादुपाकराणं संहितमिति ॥ उपाकर्मप्रकुर्वीत कर्मात्सामान्यं कुर्विदः  
 गृहसक्रांत्यशुक्तेयुहस्तश्रवणं पर्वसु ॥ अथ चेद्देवसंयुक्ते पर्वणि स्यादुपक्रिया ॥ दुः  
 खप्रोक्तमयग्रस्ताशये तस्मिन्नुजातयः ॥ अथाचकर्तव्यमुच्यते ॥ यदुक्ते ब्रह्मचेतसा ॥ भवे  
 दुपकृतिः योर्लमास्यां पूर्वाह्ण एव तु ॥ द्वाक्षणाभ्यो जयेत्तत्र पितृनुहिदप्रयदेवताः ॥ वैश्व  
 नः ॥ भोतमादि जटथी त्सह कृत्वा दर्भमयास्तुतः ॥ पूजयित्वा यथाशक्ति तर्पयेद्ब्रह्मसुखं  
 ततो देवान् पितृंश्चैव तर्पयेत्परमांभसा ॥ उपाकर्मणि गृहणावेधदोषाभावः ॥ नित्ये  
 नोभितिके जापे यद्ब्रह्मेभ क्रियास्तु ॥ उपाकर्मणि चोत्सर्गगृहदोषो न विद्यते ॥ स्य

त्वरे ॥ भद्रायां देन कर्तव्ये श्रावणी फाल्गुणी तस्या ॥ श्रावणी क्षुण्णि हंति श्रावणं दहति फाल्गुणी  
 भविष्योऽपि भविष्ये ॥ ततोऽपराह सप्तमे रक्षा पोतलिका शुभम् ॥ कारयेत्त्वत्तैः प्ररंजैः सिद्ध  
 र्थं हेतु भूषितै रिति ॥ अथोत्कर्षः ॥ याज्ञक्यः ॥ यौवमासस्य रोहिण्या मष्ट काया मया पिवा ॥ ज्ञ-  
 तांते वृहसां कुर्यु र्वत्तर्गो विभि वदहिरिति ॥ श्रावाद्या मथवाष्टम्यं च नृदृश्या शुभापतिं ॥ प-  
 वित्रै रर्द्धयेद्भक्ष्या श्रावण्यो चेतरा न्मुरा निति ॥ अथ भाक्षी पूर्ण ॥ तन्न सा वित्री ज्ञतम् ॥ तदेव भवि-  
 ष्ये ॥ अथ तां पांडव श्रेष्ठ सा वित्री ज्ञतया द्यात् ॥ तयोदश्यां भाद्रपदे दंतधावन या द्यात्  
 तिस्रान्निधनकार्यं उपवास स्य भारत ॥ अथ सोमे तु तयोदश्यां नक्तं कुर्यात्तर्हिरिति ॥ अ-  
 द्या चित्तं च वा कुर्यात्पुनरावेन दर्शयेत् ॥ अथापिन पूर्णिमा ॥ दूयमेव कोष्ठुदी ॥ नस्याभि-  
 रंजयस्मि च दृजयेत् ॥ तदेव भारते ॥ दर्शो न भक्षयुजे यासि कोष्ठुदी परिणीतिता ॥ कुक्षु-  
 दृजयेत्सहस्रो निद्र भैरावत रित्यत च ॥ निश्चिन्ता गरा ॥ इत्या परेऽन्तु सव या चरे रिति  
 ॥ अथ सप्तम्ये पात्रं सुवर्णं निधनं दद्यात्कीर्त्या निर्ववि ॥ यदुक्तं विद्वता ॥ अथ सप्तम्ये ता-

ह्येति वनीयते चन्द्रमसा द्यत पूर्णं पान्नं तु वलीं चतुर्विंशति भाव दत्त्वा दीनाभिर्मन्त्रिते ॥ अथ पुनः  
 ६८ विंशति विंशति ॥ तत्र काव्य दत्तो रत्नं यो ध्याति ॥ द्वाविंशत्यां तु दत्तो तस्यो विवाहः ॥ पुनः  
 तं दत्ताः ॥ काव्यः दुःखं कल प्रोक्तुं दत्ते चोपेयं जनन दत्ता ॥ राजा प्वरश्च दानं च दत्तं चोपेयः  
 द्यत्त दत्ता ॥ नदीयाः पुरा च दत्ति स्तुता स्ता रत्नं दत्तं चोपेयः दत्ति ॥ गाल्ले ॥ द्वाविंशत्यां  
 तु दत्तो त्वर्गं दत्ता नक्तं सया चोपेयं ॥ द्वेवं पदं चोपेयं चोपेयं चोपेयं चोपेयं चोपेयं ॥ जा  
 हे ॥ नालं तुल्यं यं दत्ता च्छुदत्तं तस्यै चोपेयं ॥ सुवास सञ्जा स्तरा विदत्त्वा को नार  
 तारणं ॥ द्या वंति तस्य रोगाणि प्राप्ते संति संव्यथा ॥ तावद्गुणस ह्स्त्राणि स्वर्गो व  
 सति तत्प्रदः ॥ पूजयित्वा ततो विष्णुं रक्तं बाल्यानुलिपनैः ॥ यो रक्तं चोपेयं मोरसं यत्ता  
 त्सुप्तं व्यं संदले स्थितः ॥ अत्रैव शीरसा गृह्णन् ॥ विप्ररात्रा सुयदा भानुः कृति कावु  
 च चन्द्रमाः ॥ सयोगः पच्यको नाम पुष्कोरप्यति दुर्लभः ॥ अत्रैव च यदा तदस्त्रं कांति  
 कं यं भवति कचिद् ॥ महती साति धिर्ज्ञेया ज्ञानदाने चोत्तमा ॥ अत्रा पत्यं नथा

ऋक्षं तिथो तस्यां नराधिप । सामहा कान्तिकी प्रोक्ता देवाना मपि दुर्लभा ॥ आमेयं क-  
 तिका यास्यं अरणी ॥ राजापत्यं रोहिणी ॥ यदा नु यास्यं भवति ऋक्षं तस्यां तिथो क-  
 तित् ॥ तिथिः साधि बहाधुरया मुनिभिः परिकीर्तिता ॥ क्षीरसागरस्ने विशेषो ब्राह्मि ॥  
 पौर्णिमास्यां तु संपूज्यो भक्त्या दामोदरः सदा ॥ ततश्चंद्रोदये पूज्यास्तापसाः कृत्ति-  
 का सुषट् ॥ कान्तिके यस्त्वद्योस्वङ्गो वरुणश्च हुताग्रजः ॥ धान्यैस्सशर्को दूरेरेक्षी भू-  
 धितव्यानि प्रागभी ॥ माल्यैर्द्वये स्नायागंधैर्भक्ष्यै रक्ष्या वचै स्तथा ॥ परमानैर्ज्जले प्रण-  
 केर्वहु ब्राह्मणा तर्पणीः ॥ एवं द्वांश्च संपूज्य दीपो देयो गृहादह्निः ॥ दीपो पाते तद्याग-  
 र्वास्व नुरक्षो मनो हरः ॥ चतुर्विंशं गुलः कार्यः सिते प्रचंदनवाणि ॥ गवां क्षीरेण संदू-  
 र्णि स्संमता त्पारि रक्षितः ॥ तत्र हि मय्यो मत्स्यो मुक्तानेत्रो मनो हरः ॥ प्रक्षेप्तव्यो-  
 विधानेन नमोस्तु हर्य धरेत् ॥ ब्राह्मणा याप्यो ज्यया यद्वा तस्तीरसागरम् ॥ इति कान्ति-  
 की ॥ अथ मार्गशीर्षी ॥ तत्र चन्द्रार्चो ब्रह्मांडे ॥ चामनेत्रं हि यद्विज्ञो स्तदेव भुवनत्रयम् ॥ अने-

सदात्मजश्रद्धः स्याद्वर्तनाभ्यविंशयत् ॥ येषामास्यातु यस्मात्तु तस्यात्तद्व्यप-  
 ४८ यस्मानुलवणंदेवदत्तप्रणपादिभिः सहतं ॥ मातास्वमाचदुहितासंपूज्याश्च कुलांगनाः  
 ॥ कातिरूपं भवेत्स्त्रीणां पूर्णेन्द्रोः पूजनादिति ॥ अस्यां मृगशिरौ युक्तायां प्रस्थपरिभि-  
 नंतूणि तं सुवर्णं युक्तं ॥ सवर्णं चंद्रोदये दद्यात् ॥ विष्णुनोक्तत्वात् ॥ अथ येषां पूर्णा ॥ तत्र  
 यौययुक्तायामलक्ष्मीनां श्रृंगंगारत्नानादिकं कार्यं यथाशक्ति दानादिकं दत्तव्यं स-  
 यमपि दत्तपायसंभोक्तव्यमिति दिक् ॥ इति यौगी ॥ अथ भावा पूर्णा ॥ तत्र मया युक्तायां ति-  
 लैश्चादृक्त्वा तिलपात्रादिदानम् ॥ यद्वक्तव्यं ॥ साध्यां मया सुचतिलैस्संतर्प्य पितृदेव-  
 ताः ॥ तिलपात्राणि देयानि तिलास्स पललोदनम् ॥ केवलानि नरत्नानि मोचकोपायभो-  
 चको ॥ उपानदानमन्त्रैव तिलदानं च प्रस्यते ॥ यत्र वातत्रवास्नानंदानं विमानुरुत्ततः ॥  
 येषां मास्यां तु यो माघे पूजयेद्दिवि स्थितम् ॥ सोऽश्वमेधमवाप्येह विष्णुलोके मही-  
 यते ॥ अथ फाल्गुणी पूर्णा ॥ सा पूर्वविद्धा सा यागव्यापिनी ग्रहा ॥ यद्वक्तव्यं ॥ सा यान्हे होति-



मरि काकुष्यात्सर्वान्ते कोहनं गताम् ॥ स्थितं समाकरोति तु धर्मं सः सनातनः ॥ निष्कामं भू-  
 ४८६ प्रत्येत होलिका सर्वसावुधैः ॥ नदिका प्रवृत्त्येवमुच्चिता हृन्लस्य भवेत् ॥ त्वं मदीयं होलिकं  
 कान दीपयेत् ॥ ययुक्म ॥ अस्माकां दीपिता होला गच्छ भवं करोति हि ॥ नमस्तु नमो देव्यै  
 न्यातां परित्यज्येत् ॥ अस्माकां दीपिता होला गच्छ भवं करोति हि ॥ नमस्तु नमो देव्यै  
 कूर्वात पिशाचां मम होस्तवम् ॥ तथा हि नार्हत्परतोऽपि स्यात्कान्या न्या प्रणिना यदि  
 ॥ रात्रौ भद्रावसानेन होलिकां न ज्ञेयं विधिः परहिने हि नार्हत्परतोऽपि स्यात्कान्या न्या प्रणिना यदि  
 न्या प्रणिना विधानायां ॥ पूर्वविज्ञाया भैरवो भद्रावसाने होलिकां दीपयेदित्युक्तं  
 वसपुनः परहिने पूर्णिमा सार्द्धं यामत्रय व्यापिनी प्रसिपच्च हृदि गामिनी नमस्तवा देव  
 होलिका कार्या ॥ तथा च भविष्ये ॥ सार्द्धं यामत्रयं वास्या हितोय हितसेयम् ॥ प्रतिपद-  
 ॥ यामादि नक्षत्रा होलिका रक्षता ॥ यत् ॥ चन्नेवन्ति परित्यजेदिति वन्ने होलिका-  
 यामन्ति परित्यजेदिति परित्यज्यः ॥ सन्नुसायं काले भद्रा रक्षितवर्ति मायं मे

ति॥ अन्नं चैव नो यथा गस्तदा ग्रहणाद्वर्कः॥ निश्चिन्निर्विद्विष्टपूर्णायां होलिपादीपं नम-  
 स्ति॥ अनाकृतिः नम्यमती पदिन कर्तव्यम्॥ अन्वया॥ भविष्योत्तरवाक्यस्य निरर्थकता स्यादि-  
 त्थ्यपूर्वदिने अस्तमना वधि चतुर्दशी द्वितीयदिने प्रदोष समये प्रसोतदितंतदा पूर्वदि-  
 ने घट्यावधिरात्रिचतुर्थयामे विद्विष्टपूर्वहोलीका काय्या द्वितीयदिने ग्रहणात्तं नरं  
 प्रति वत्सं भवेत्॥ ग्रहणात्पूर्वच दिवा होला प्रज्ज्वन निषेधा द्विष्टपूर्वस्य सर्वकर्म्या  
 हेत्वदर्शनाच्च॥ पञ्चालः॥ दृष्टिष्वोद्यानि कर्मसंगिण शुभान्यप्यशुभानि च॥ तानि सर्व-  
 सिद्धिदाति विद्विष्टपूर्व न संशयः॥ संवत्सरस्य ग्रहोपका सदा होला नरे॥ द्वाविध-  
 ल्यनिषेधे॥ अन्नकल्पम्॥ रघुप्रीतिनाद वाक्पमः॥ अथ पंचदशे शुक्ला फाल्गुनस्य नराधि-  
 प॥ श्रीतकालो विनिःक्रान्तः प्रातर्गोष्ठी भविष्यति॥ अभीष्टदानलोकायां दीयतां पु-  
 रश्च नमः॥ यथा स्य प्राकृता लोकार्गोषा निच हसति च॥ संवत्स्य मुक्ताया लोकां नमः शुक्ला ना-  
 ज्जकारयेत्॥ नमो भूविधि वद्ध्वा रक्षो द्वे र्मन्त्रा विस्तरे॥ ततः किल लोकां प्रादे स्यात्प्र-

अहं मर्मनो रमिः ॥ तामभिं निःपरि क्रम्य गायं तु च हं सं तु च ॥ जल्पन्तस्त्वेच्छया लोका-  
 निश्राकायस्य प्रन्तम् ॥ तेन प्रव्वेन सापाया होमेन च निराकृता ॥ सर्वदुष्टापहो-  
 होमस्सर्वयोगोपप्राणतिदः ॥ अस्यां निश्रामे राजन्संख्या निश्रावो गृहे ॥ गोमये-  
 नोपलिहे च सत्तुल्ये यद्गणणे ॥ आकारयेच्छिशुप्रायान्वद्गव्यप्रकरणं रान्-  
 तेकायवद्गैस्संस्पृश्य प्रव्वेर्हस्य करैः शिशुप्रान् ॥ रक्षन्ति तेषां दातव्यं-  
 शुद्धं पक्वान्नमेव च ॥ एवं दुंदुहितिया तस्याः सदोषः प्रशमंज्जेत ॥ चालानां रक्षां का-  
 र्यं तस्मात्तस्मिन्निश्रामे ॥ इति होलिकानिर्णयः इति पौर्णमासी निर्णयः अथामावा-  
 स्या निर्णयते ॥ अमार्चोपवासादिषु प्रतिपद्युर्नैव वदसावित्री व्यतिरिक्ते च तेषु प्र-  
 स्तायुग्मवाक्यात् ॥ अमार्चवास्या तृतीयेति सा उपोष्या परान्विता ॥ अर्चयेत् ॥ १२५-  
 तविद्वाप्यमावास्या न ग्राह्या मुनिपुंगवैरिति ॥ अथ ज्येष्ठामायां पूर्वविद्वां वदसावित्री च  
 तं कुर्यात् ॥ तत्रायं विधिः ॥ ज्येष्ठकृत्स्नत्रयोदशी मारस्य निश्रामोपोपणम् ॥ अथ-

तया तु तयो दृश्यां नक्तं चतुर्दृश्या मया चितं ॥ अमाया मुपवासं कृत्वा सुवर्णाभातभाद  
 द्यात् ॥ स्कान्दे ॥ अमायां च तथा ज्येष्ठे वटमूले महासती ॥ त्रिरात्रोपोषिता नारी वि  
 धिना नैव दृश्यते ॥ अमाया तु तयो दृश्यां नक्तं कुर्याज्जितेन्द्रियः ॥ अयाचितं चतुर्द-  
 श्या ममायां समुपोषणम् ॥ गृहीत्वा बालुकां पात्रे प्रस्थमानं युधिष्ठिर ॥ नतो वं प्र  
 मये पाने वल्लभु ममेन वेष्टितम् ॥ सावित्री प्रतिमां कृत्वा सर्वावयवशो भिनीम् ॥ सो  
 वसां मिदमर्थो वापि स्वस्य शक्त्या विनिर्मिताम् ॥ सार्द्धं सत्यवता साव्धीफलनैवेद्यदे-  
 पकोः ॥ वटावलं वितं कृत्वा काष्ठभारं युधिष्ठिर ॥ वितादौ स्मन्नधान्यैश्च बहुधा संप्रकल्पि-  
 तैः ॥ रजन्याः कंठस्त्र्येष्वशुभैर्कुंकुमकेशरैः ॥ सावित्र्या रज्यानकं वापि वाचयौ तद्विजो-  
 तसुभिः ॥ रज्जो जागारुणं कृत्वा नृत्यगीतपुरस्सरं ॥ ततः प्रभाते विधिना पूर्वोक्तेन नरोत्तम ॥  
 तामपि ब्राह्मणो दद्यात्प्रणिपत्य समापयेत् ॥ हनमंत्रश्च ॥ ॐ सावित्री ये मया दत्ता सहिर-  
 रथा महासती ॥ ब्राह्मण प्रीण नार्थयि ब्राह्मण प्रतिशुश्रूता चिति ॥ एवं दत्त्वा द्विजेन्द्रा-

१. शि. न रा विनीतां युधिष्ठिर ॥ नैव द्यादि च तत्सर्वं ब्राह्मणस्य गृहं नृपते ॥ स्वयं दशपदं गच्छे-

४३०

त्तव प्रश्नपुनरावृत्ते ॥ तत्र भुक्ता हविष्यान् ब्राह्मणो ब्राह्मणे स्सह ॥ विश्वं दीप्तं ततो वि-  
प्राप्त्या विनीतां युधिष्ठिराभिरिति ॥ अतः नानेन शजेन्दु वैधव्यं नाशुभं त्वं चित् ॥ अविद्वत्सावित्री ॥  
शश्वन्माशमायां कुरुपग्रहणम् ॥ हेमाद्रौ हारीतः ॥ मासे नमस्यमावास्या तस्या न्दभोच्चैर्यो यतः ॥  
अथा तया शस्त्रे दम्भा विनियोज्याः पुनः पुनः ॥ नमस्यो भादपदः तत्कर्मः ॥ शुचौ देशे शु-  
चिर्द्विष्ट्या स्थित्वा पूर्वोत्तरा मुरवः ॥ ऊंकारेण तु मंत्रेण सकृदेव कुर्यात्स श्रेत् ॥ सकृदेव प्रथ-  
मत एव ॥ दर्मो ज्ञातव्यं मंत्रः ॥ विरञ्चिना सहोत्पन्न परमेष्ठिनि सगज ॥ नृदत्तवार्णि वायानि-  
मयस्वस्ति ह्यरो भव ॥ कुशामूलस्थितो ब्रह्मा कुशमय्येतु केशवः ॥ कुशाग्रे तु हरो देव-  
श्चरयो देवाः ॥ कुशोऽस्थिताः तस्मै क्षणं च ॥ शुचिच्छायायां तत्रैव परागिन्स मूलान्दो मन्त्रा-  
न्शुभान् ॥ पितृदेव यजार्थं च सभा दद्यात्कुशान्दिजः ॥ सर्वं परागिन्सुभा दम्भोऽसि लक्ष्मि-  
त्रसमुद्भवाः ते समस्ता नि योक्तव्या देवे पित्र्ये च कर्म्मणि ॥ ज्ञातव्यो भवेत्तर्म्भः साग्रं भू-

लः कुप्रसस्यतः सप्तपर्णस्तु कुतप विद्वन्नामस्तथा चर्यते ॥ अविद्वन्नामा अशुधकाया-  
 इत्याभादेशमात्रकाः कुतपा इति हि द्वेयस्यैतु भाद्रसमाश्नेत् ॥ अथ कार्तिका माघस्या दी-  
 पमाला ॥ सा सुरेशानि रितुच्यते ॥ प्रदोषार्द्रात्रव्याधिन्येव । तेनास्थाः पूर्वीविज्ञात्वं प्र-  
 सिद्धम् ॥ उक्तं च ॥ दीपमाला न कर्तव्या प्रतिपन्मि श्रिता कचिद् ॥ त्रीणि तत्र विनश्यन्ति  
 प्रजा गवो मही पति रिति ॥ अस्यां न ववक्षादि धारणां लक्ष्मी पूजां च कुर्यात् ॥ ब्राह्मे ॥  
 अमायां च तथा देवाः कार्तिके मासिके प्राचता ॥ अभयं प्राप्य सुज्ञास्तु सुरवंक्षीरोदसा  
 शुभु ॥ लक्ष्मीर्हैत्यभयान्मुक्तासुरं सुज्ञास्तु जोदरे ॥ अतोऽर्थविधिवत्कार्या मनुष्यै-  
 स्सुरसुसिका ॥ दीपान्त्वा प्रदोषे तु लक्ष्मी पूज्यप्रयाविधि ॥ स्वलं कर्ते न भोक्तव्यमते-  
 चाला तु सन्जयन् ॥ अथ रात्रे प्रकर्तव्यं ब्राह्मणैः पण्यैः ॥ प्रदोषसमये राजन् कर्त-  
 व्या दीपमालिका ॥ दीपदक्षालना कार्या प्रहत्या देवगृहेषु च ॥ दीपदानं प्रयागर्हिक-  
 विप्रभिन्नगुणलये । चतुःपथे प्रमथानि तु न दीपवर्तयोगे ॥ दीपमाला परिस्त्रिंशे प्रदो-

ये तदन्तरं ॥ आह ॥ आत्मो जयित्वा देवि यमज्य चतुर्भुक्षितान् ॥ अलं हतेन भोक्तव्यं  
नववस्त्रोपशोभिना ॥ अत्रैव राजकोमुदीमहोत्सवहु-<sup>॥</sup>न्यात् ॥ यद्दत्तं ॥ ततो परान्तरम-  
येषोपयेन्मगरेष्टपः ॥ सर्वराज्यं वलं लोकान् यथेष्टं चैव तामिति ॥ लोकोऽपि पु-  
ष्ट्य सुधाश्च वलिता चिते ॥ दक्षचंदनमालाढ्ये चर्चिते च शृहेष्टहे ॥ दीपया नरतो ह-  
त नरनारी मनो हरे ॥ दीपमाला तुल्ये रास्ये विद्यस्तब्धां तसंचये ॥ अदेवि दीपराहिने  
सस्ते दोषा न मे शुभे ॥ वैश्या विलाशिनी सार्धं स्वस्ति मंगल कारिणी ॥ गृहाद्गृहं ज-  
ज्जति च पादाम्यायेव वा यिशिः ॥ ततोऽर्द्धरात्रं तत्र ये स्वयं राजा पुरं जेत ॥ अवलोक-  
यितुं स्वयं पद्मानमेव शर्त्तयेऽनैः ॥ ततः प्रदोष समये नारी भिर्गृहादलक्ष्मीर्निःकाश्य-  
ते ॥ तदपि स्कांदे ॥ एवं गते निशीथे नृजने निद्रादौ लोचने ॥ तावत्तमं नारीभिः सूय-  
द्विष्टि मवाह्नैः ॥ निःकाश्यते ग्रहस्य ॥ भिरलक्ष्मी स्त्वग्रहो गणत् ॥ इति कार्तिकी अमावा-  
स्या ॥ अथ माघी ॥ तस्यां ब्राह्मणं सा विर्वा सहितं संपूज्य नवनीतधेनुं दद्यात् ॥ तदेवम-

संज्ञे विव्ये ॥ अमाया चैव माघस्य पूजयित्वा पितामहम् ॥ गायत्र्या साहवद्वचद्वदगाभू-  
यितम् ॥ नवनीतमयीभ्ये नुं फले नाना विधे र्युताम् ॥ सहिर्यस दत्सं च ब्राह्मणा-  
यनिर्वदेत् ॥ अन्नमाघपौषयो रमावस्या रविचारश्रवणं व्यतीपातयो र्युक्ता

चैदसावर्द्धोदयारव्यः ॥ कोटिग्रहणा सान्निभो योगः ॥ तथा च स्कान्दे सेनमाहात्म्ये ॥ अमा-  
र्क्षे पातश्रवणौ र्युक्ता चेन्माघपौषयोः ॥ अर्द्धोदयस्स विज्ञेयः कोटि सूर्य्यग्रहे स्समः  
॥ दिवे वयोगस्स स्तोयं न तु रात्रौ कदाचनेति ॥ अर्द्धोदये तु संप्राप्ते सर्वंगजा जलं समं  
शुद्धात्मानो हि जास्सर्वे भवेयुर्ब्रह्म सन्निभाः ॥ यत्किंचिद्दीयते दानं तद्दानं मे रुसन्ति  
ममिति ॥ अन्नदानाद्यै विश्रेयः ॥ चतुःषष्टिपलं भूख्यममन्नं तत्र कारयेत् ॥ चत्वारिंश-  
त्यलं चाथ पंच विंशतिमेव च ॥ निषाद्य पाय संतत्र पद्मामय दलं क्षिपेत् ॥ पद्मस्य  
कर्णिकायां तु कर्कमात्रं सुवर्णकम् ॥ तदभावे तर्द्धं चानर्द्धं वाधिकारयेत् ॥ कृत्वा तु तं धूलि-  
पद्मद्वैः पद्मामय दलं शुभम् ॥ अमन्त्रं स्थापयेत्तत्र ब्रह्मविष्णुशिवान्त्रकमिति ॥ तेषां



श्रीति करादाय प्रवेत मास्ते सुभोभनेः ॥ वस्त्रादिभिरलं कृत्य वा स्त्रियाय निवेदयेत् ।  
दानं भोजः ॥ सुवर्णं पायसाभ्रं यस्मादित लयमीभयं ॥ अक्षय्योत्तरात्कं यस्मात्तद्गृहाणा-  
द्विजोत्तम ॥ समुद्रमेव लोप्यं दीसम्यदत्तस्य यत्फलम् ॥ तत्फलं लभते मर्त्योदत्वा-  
दानं समन्तकम् ॥ इत्यर्द्धेयविधिः ॥ अग्नावास्यातु सोमेन सप्तमीभानुना सह ॥ चतुर्थी-  
भूमिपुत्रेण बुधवारोऽष्टमी ॥ चतस्रसि यस्त्वेताः सूर्यग्रहाः सन्निभाः ॥ स्नानं द-  
नं तथा आहं सर्वं तत्राक्षयवेदिति ॥ इत्युपवासाद्यमावास्या निर्ययः अथ आहं मावा-  
स्यानिर्णीयते ॥ सा अपराह व्यापिन्येव ॥ एको द्विष्ट आहं तु अष्टम नवम मुहूर्तं व्यापिन्येव  
ग्राह्या ॥ मास्ते ॥ अष्टमे नवमे यस्मान्मं दीभवति आस्तरा ॥ तस्मादनंतं फलदस्तत्रा-  
भो विशेषत इति ॥ कुतुपे प्रथमे भागे एको द्विष्ट मुपक्रमेदिति व्यासः अष्टम मुहूर्ता-  
ख्ये कुतुपे अष्टमे दत्तितर्कः ॥ अत्र पार्वणां त्वेकादश मुहूर्तैः ॥ अपराहः पितृणां मित्यु-  
क्तेः दिनद्वयेऽपराह व्यासो यत्राचिका नद्यापि नीग्राह्या ॥ अपराह दय व्यापिन्यमावा-

स्थापदाभवेत् ॥ तत्राल्पत्वेन ह त्वारथां निषेधः पितृकर्मणि ॥ श्रयणपवसंवादे ॥ यस्मा  
 दस्याहिमानुस्यादपराहृदये समा ॥ सत्यपूर्वापराहृदौ सात्येऽपि च परास्त्वतेति ॥ हि  
 नहृदयेऽप्यपराहृद्याप्यभवेऽपि परैव ॥ पूर्वधुरेऽपराहृद्यासौ ॥ वो धावनः ॥ घटिकैश्चा-  
 प्यमावास्याप्रातिपत्सु न चैतदा ॥ भूतविहैवसा ग्राह्या देवैर्ये च कर्मणि ॥ प्रातिप-  
 दि घटिकैकापि कर्म कालेनास्ति चेदित्यर्थः ॥ अथ मलमासे वर्ज्यादि निरर्थकः ॥ तत्र  
 काव्यं निधिभ्यते ॥ जावालिः ॥ नित्यनैमिषिके कुर्याच्चूडं कुर्यान्मालिन्त्युचै ॥ निधि-  
 नस्तत्र कारोक्तं काव्यं नैव कदाचनेति ॥ नित्यनैमिषिकयोरेपि यदनन्यगानि कंतदेव  
 कुर्यात् ॥ अनन्यगति कुंकुर्यान्नित्यं नैमिषिकं तथेति स्तराणात् ॥ इत्यपरिग्रहे  
 अवषट्कारहोमाश्च पूर्वचाग्रयणं तथा ॥ मलमासे तु कर्तव्यं काव्यादि विविज्जयेदि-  
 ति ॥ अवषट्कारहोमाभवे प्रवदेवाग्निहोत्रादयः ॥ सर्वदर्शपौर्णमास्योः ॥ तत्रैव सोम-  
 द्यागादि कर्मणि ॥ नित्यान्यपि मलिन्त्युचैः ॥ व्यटी ज्याग्रयणा ध्यान चानुभवादि का-

न्यपि ॥ महालयाष्टकाप्राद्वेषाकर्माद्यापि कर्मभूतत् ॥ अष्टमासविशेषाख्यविहितं व-  
 र्ज्ये न्यलेति यमः ॥ चंद्रसूर्यग्रहेस्नानं प्राद्वं स्नानं जप इति कर्म ॥ कार्याणि मलमासे तु  
 नित्यं नैविति कं तथेति यमः ॥ गर्भेष्वप्युचितेभ्यस्ते प्राद्वकर्मणि मासिके । सपिण्डी  
 करणे नित्यं नापि मासं विवर्जयेत् ॥ तीर्थस्नानं जपे होमो जवद्भीहि तोलादिभिः ॥  
 जातकर्म न्यकर्मणि नवप्राद्वं तथैव च ॥ मयात्रोदराप्राद्वं प्राद्वं न्यपि च योद-  
 रा ॥ मासिके प्राद्वे अमायाः नित्यदाने होमो जपोपाशनः ॥ अन्यकर्मणि दाहोद-  
 कपिंडदानास्थिसंचयनादीनि ॥ गणविः ॥ मन्वादे च द्युगादौ च मासयो रुमयोर-  
 पीति ॥ मास्ये ॥ वर्धे पापहरं प्राद्वं स्नानं च अति वत्सरम् ॥ गोभूतिलहिरण्यानां दानं  
 नैमासे मलिम्लुचे ॥ इति श्रुः ॥ वृद्धिप्राद्वं तथा सोममन्वाधानं महालयम् ॥ रा-  
 ज्याभिधेकं काम्यं च नक्षत्रांश्चानुलंघित इति स्मृत्यन्तरे ॥ नभोवाप्यनभस्यो वा-  
 मलमासोपदाभवेत् ॥ अमापाद्याः समक्षमः पक्षः पितृपक्षस्तदाभवेत् ॥ हारीतः ॥

भस्म असे क्रोतुं हि कर्तव्यमादिकं प्रथमं द्विजैः ॥ तथैव मादिकं प्राद्व सापडा कर  
 ४२६० ति ॥ अगुः ॥ म न मास सुतानां तु पच्छाद्दं प्रति वत्सरम् ॥ मल मासे तु तत्कार्यं  
 नान्येषां तु कदाचन ॥ एवं च शुद्ध मास सुतानां तु प्रथमादिकं मलेऽपि कार्यं  
 निति ॥ द्वादशे मासि सर्वत्र फलंति प्राद्व कान्तरं तु शुद्धे त्रयोदशे ॥ यदा तु मध्ये म  
 ल मास भ्रातस्तदा पित्रयोदशे मासे ॥ यतः ॥ मल मास सुतानां तु मले स्यादादिक  
 कान्तरम् ॥ वृद्धमनुः ॥ अग्न्याभ्येयं प्रतिष्ठां च यद्दत्तं दानं व्रतानि च ॥ देव व्रत दृष्टो  
 त्सर्ग चूडा करणा मेखलासु ॥ मांगल्य मभिवेकं च मल मासे विवर्जयेत् ॥ तथा  
 वापी कुप तडागादि प्रतिष्ठा यद्दत्तं कर्म च ॥ न कुर्व्यां जल मासे तु महा दान  
 व्रतानि च ॥ दृष्टो त्सर्गोऽत्र काल्यः ॥ अथ ग्रहण निर्णयः ॥ वृद्धगोतमः ॥ सूर्य ग्र  
 हे तु नास्तीया दूर्ध्वं यास चतुष्टयम् ॥ चंद्रं ग्रहे तु या मांस्त्री न्वाले दृष्ट्वा तु  
 वै दिविना ॥ वशिष्ठः ॥ ग्रहो दये विधोः पूर्वं नाहर्भोजन माचरेत् ॥ अगुः ॥

प्रला वेवा त्त मानं तु रवीन्द्र प्राप्नु तो यदि ॥ परेष्टु रुहये स्नात्वा शुद्धो अभ्य वह-  
 रेन्नरः ॥ अत्र भोजने प्राय श्रित्त मूक्तम् ॥ कात्यायनेन ॥ चन्द्र सूर्य्य ग्रहे  
 शुक्ला द्वाजा पत्येन पृथ्वाति ॥ तस्मि न्नेव दिने शुक्ला त्रि रात्रे षोडश पृथ्वाति ॥  
 भारते ॥ सर्व से नैव कर्त्तव्यं आहं वै राहु दर्शने ॥ अकु र्वाणस्तु ना त्स्विव क्वा-  
 त्पके गोरे वसी दतीति ॥ साता तपः ॥ आपद्यन गौ तीर्थे च ग्रहणे चंद्र सूर्य्य-  
 योः ॥ आस आहं हिजः कुर्या च्छूद्रः कुर्या त्महे वहि ॥ वह वशिष्ठः ॥  
 सत के सत के चैव न दोषो राहु दर्शने ॥ ताव देव भवे च्छुद्धि र्याव न्मुक्ति  
 र्त्त दृश्यते ॥ वृक्षे पट्टिप्रभते ॥ सर्वथा भवे चरणानां सत के राहु दर्शने ॥  
 रत्नात्वा कर्मणि कुर्वीत सत मन्त्रं विसर्जयेदिति ॥ मेधा तिथिः ॥ आर ना-  
 लं पयस्तर्कं दधि रौहा ज्य पाचितम् ॥ मणि कस्थो द्दकं चैव न दुष्ये द्वाहु  
 सत के ॥ मन्वर्ष मुक्ता वल्याम् ॥ अन्नं पक्व मिह त्याज्य स्नानं स वसनं ग्रहे

॥ वारि तक्रार नाजा दितिल दग्धा नहुय्यति ॥ ग्रहो धितं जलं पीत्वा पाद क-  
 च्छं समा चरेत् ॥ योग विशेषो ग्रहणो व्यासः ॥ रवि ग्रहः सूर्य्य वारे शोभे सोम-  
 ग्रह स्या ॥ चूडा मणि दिति ख्यात तत्र दत्त मनं तकम् ॥ वोरव न्येषु यस्तु-  
 रयं ग्रहणो चन्द्र सूर्य्ययोः ॥ तत्पुण्यं कीदृ गुरितं योगे चूडा मणो स्सुतः  
 ॥ द्विवेदि कुल संभूत सरस् कृत संग्रहे ॥ शिरो मणो समाक्षेया प्रभेयं तत्त्व-  
 संज्ञका ॥ दुर्या नंद पद द्दन्द ध्याना वस्थित चेतसा ॥ तानि तोयं हि सत्नी-  
 त्रै संग्रहाख्य शिरो मणिः ॥ भूरा मादुः शिरो वर्धे वैक्र मीये पृथगे ॥  
 समातोयं सदा भूया द्विदुषां प्रीति दः प्रुभः ॥ यावद् मण्डले सन्ध्या वेदि-  
 कं कर्म सज्जनाः ॥ तावत्स्वस्ति युतो भूया त्संग्रहाख्य शिरो मणिः  
 इति श्रीमद्विवेदि कुल संभव सरस् दत्तविर चिते ॥ संग्रह शिरो मणो  
 नाभि ग्रंथे तिथि निर्णय कथनं नाम चतुर्विंशति तमा प्रभा समाप्ता समा-

सोऽयं संग्रहः शिरो मणिनाम ग्रंथः ॥ सप्तत् १२३५ माघ मासे कृत्ता पक्षे  
 अष्टम्यां एवि वासरे समाप्तः ॥ शुभ मस्तु ॥ त्रिरिव मिरं पुरातनं वैजनाथेन  
 द्वि वेदिना ॥

सोऽयं संग्रहः शिरो मणिनाम चंध्यः ॥ सम्बत् १२६५ माघ मासे कृत्तिका पक्षे  
 दशम्यां शनि चासे समाप्तः ॥ शुभ मस्तु ॥ लिखित मिदं पुस्तकं बीजनाथेन  
 द्वि वेदिना ॥